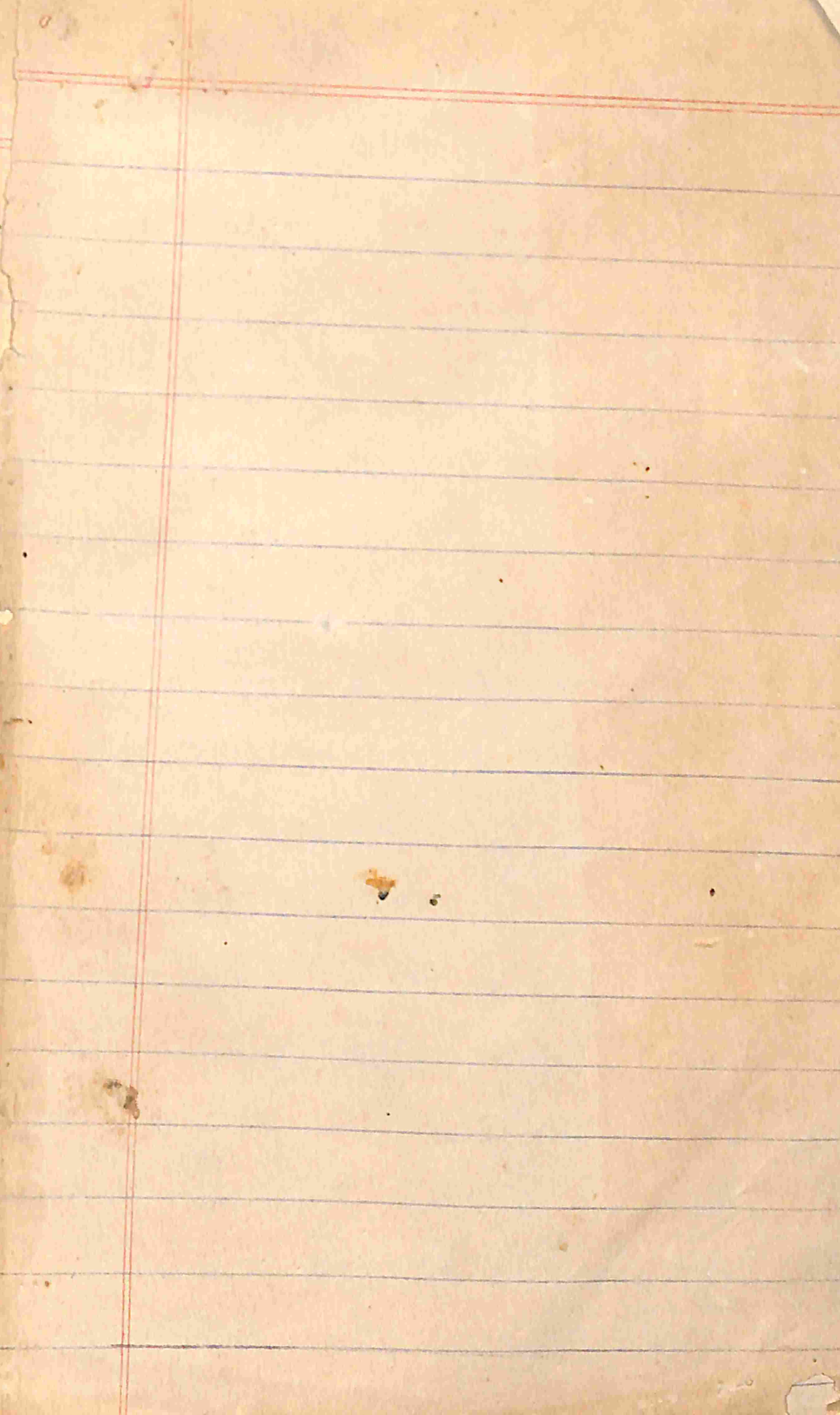
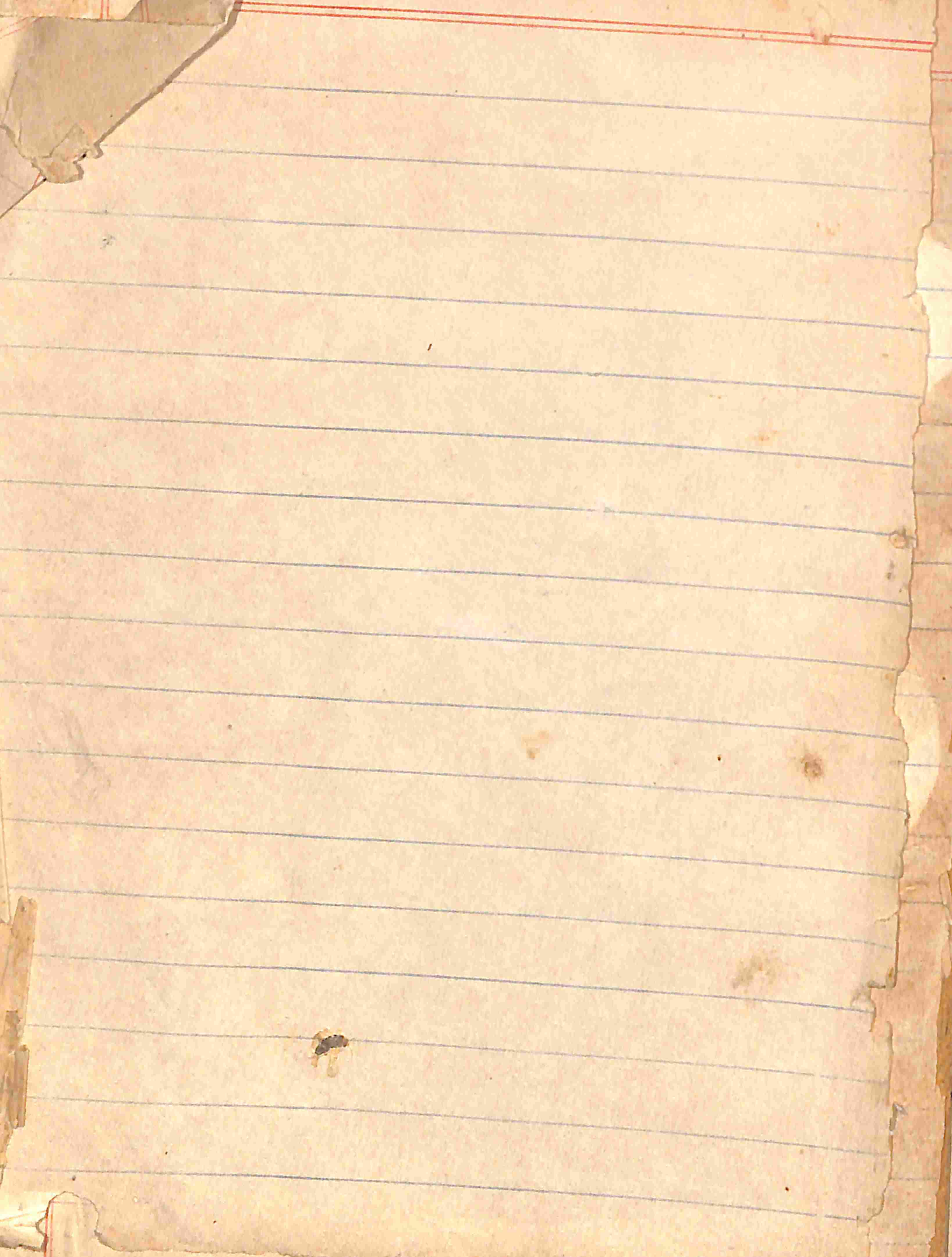










श्री:

परा त्रिंशिका

Page 1 to Page 446.

—o—

پانچ قسم کے اعضا کی ... حس

ان عضووں کی کڑکت سے ... ہر جگہ دکھائی دیتا

जन्म मृत्यु
... ہے ...

← विमलकला = درن کلا

ان نوقسم سے ...

نरसिंह पुराण । सिंहपुरी
... +

اس شوک کی ... ۳ رود

... ہے ۔ ... رود

... ۲ اس ... ۲

اپنے ... ← ۳ ...

مम हृदयं ← میرا ہردے (دبی ہوا اس کو سنبھالتا ہردے) Body
گیا ہے وہ ہردے ← (اور اسی طرح اس کو سنبھال) ...

جو انو شرادت ہردے ہے ۔ وہ وکست ہو جائے ۔
संस्फुरनात् ← وکست ہو جائے
کی بادی یعنی وکست ہو جائے)
(ان کو بند اسے بھار کر کے میرا عفا کرتا ہے)

وہ میرا ہردے ہے ← سنگت سے وکست ہوا ہے ۔
وہ میرے ماں اور پتا (... हृदयं) سے سنگت سے وکست ہوا ہے
اور ہے بھاؤ تو ہے وہ وسترک ہے (Creative) اور وہی یعنی بانی وکست ہو جائے ۔

उभये ←
وہ ہے ایک جنک ہے اور دوسری جننی ہے ۔

جننی ← (میرا ہردے ہے)
یعنی ماں میری ۔ دھلا نام موسوم ہے

भाव ← ہردے ۲ ماں کا نام ...
← (یہ ہردے ہے) وکشت ہوا ہے
دھلا جو نرمل ہے ... سے ... جو ہے
اور جنک یعنی پتا
دھلا نام برابر روپ سے اما کلا صندرم کی ...

← ... (ستیہ (بسٹر) پانچ کھہ (ست ۔ آنند ۔ گیان لور شکتی) کی شکتی والا ۔
یہ میری پورن شو ہردے کی شکتی والا ۔

गुप्त ← ... ہے ← ... ← اس شکتی کی ...
کھلا ہوا ہے ۔

माता ← آ شرایہ ← نام والی ← کتنی ماتا دھلا ← ... میرا ہردے ...
ان تو کھا قسم دینے سے اسکو کہاں ...

30.7.67

ॐ

विमल कलाश्रयाभिनव सृष्टिमहा जननी
भरित तनुश्च पञ्चमुख गुप्तरुचि जनकः।
तदुभय यामल स्फुरित भाव विसर्गमयं
हृदयमनुत्तरामृत कुलं मम संस्फुरतात् ॥१॥

creative

विमल = [illegible] कलाश्रय = [illegible] अभिनवसृष्टि [illegible]

महा = [illegible] जननी = [illegible] भरित तनुश्च [illegible]

पञ्चमुखगुप्त = [illegible] जनकः [illegible]
रुचि [illegible]

तत उभय = [illegible] यामल = [illegible] स्फुरित = [illegible]

भाव = [illegible] विसर्गमयं = [illegible]

हृदयम् "Body" [illegible] अनुत्तर = [illegible] अमृतकुलं [illegible]

मम = ([illegible]) [illegible] संस्फुरतात = [illegible]

Additionally

गुप्त = [illegible] जनकः = [illegible]

विमला = [illegible]

गुप्त → रहित

[illegible]

यस्यामन्तर्विश्वमेतद्विभाति
बाह्याभासं भासमानं विसृष्टौ ।
क्षोभे क्षीणेऽनुत्तरायां स्थितौ तां
वन्दे देवीं स्वात्मसंवित्तिमेकाम् ॥२॥

यस्यामन्तः = [illegible], विश्वम् इतत = [illegible] विभाति [illegible]

बाह्याभासं - [illegible] भासमानं [illegible]

विसृष्टौ [illegible]

क्षोभे क्षीणे [illegible]

अनुत्तरायां = [illegible] स्थितौ = [illegible]

तां = [illegible] वन्दे [illegible] देवीं = [illegible]

स्वात्म संवित्तिम् एकाम् = [illegible]

नर शक्ति शिवात्मके त्रिके
हृदये या विनिधाय भासयेत ।
प्रणमामि परामनुत्तरां [illegible]
निजभासां प्रतिभा चमत्कृतिम् ॥३॥

[illegible]

③ [illegible]

नर-शक्ति-शिवात्मकं = [illegible] त्रिकं = [illegible] या = [illegible]

हृदये या विनिधाय = [illegible] भासयेत = [illegible]

प्रणमामि [illegible] परामनुत्तरां = [illegible]

निजभासां = [illegible] प्रतिभा = [illegible]

चमत्कृतिम् = [illegible]

जयत्यनर्घमहिमा विपाशितपशुव्रजः ।
श्रीमानाद्यगुरुः शंभुः श्रीकण्ठः परमेश्वरः ॥४॥
निजशिष्यविबोधाय प्रबुद्धस्मरणाय च
मयाभिनवगुप्तेन श्रमोऽयं क्रियते मनाक् ॥५॥

जयत्य = [illegible] अनर्घमहिमा = [illegible]

विपाशित = [illegible] पशुव्रजः = [illegible]

श्रीमान आद्यगुरु = [illegible] शंभुः = سمبھو یعنی

श्रीकण्ठः परमेश्वरः [illegible] یا [illegible] =شیو [illegible]

निजशिष्य = [illegible] विबोधाय [illegible]

प्रबुद्धस्मरणाय च [illegible]

[illegible] मयाभिनवगुप्तेन = مجھ ابھنوگپت نے

[illegible]

"O Lord of the universe! I desire to be enlightened on the significance of the All-Transcendent Word which enables one to acquire Self-Knowledge and thereby be united with Thy Omniscient Self."

3/ श्रमा = [illegible] क्रियेत = [illegible] मनोक = [illegible]

अनुत्तरं कथं देव
सद्यः कौलिकसिद्धिदम् ।
येन विज्ञातमात्रेण
खेचरीसमतां व्रजेत् ॥२॥

(O Lord of the world)

देव = [illegible] कथं (All Transcendent Word) अनुत्तर = [illegible]

सद्यः = [illegible] कौलिक = [illegible]

सिद्धिदम् → enables one to acquire

= [illegible]

which — येन = [illegible] विज्ञातमात्रेण = [illegible] (desire to be enlightened)

खेचरीसमतां = [illegible]

व्रजेत् = [illegible]

[illegible] →

परमेश्वरः = [illegible] पञ्चविधकृत्यमयः = [illegible]

सततम् = [illegible] अनुत्तरमया = [illegible]

पराख्यया शक्त्या = [illegible] आक्रान्तो = [illegible]

वस्तुतो = [illegible]

अनुत्तरैकात्मैव [illegible]

[illegible]

5

नहि शक्तिः शिवात् भेदम् = یعنی یہ شکتی شو سے بھن نہیں ہے
आमृशीयत

सा च शक्तिः = اور یہ شکتی लोकानुग्रहविमर्शमयी

प्रथमतः = سب سے पहले परामर्शमय्या = پرا وِمرش

First thought & then word.

पश्यन्त्या आसूत्रयिष्यमाणा →

अनन्त शक्ति = अविभिन्ना

प्रथमतरं = सب سے परमहामन्त्रमय्याम्

अदेशकाल = कालितायां ←

संविदि निरूढा →

ताकत

पश्यन्त्य उक्ति प्रत्यन्त्य
उद्भविष्यत् = پشینتی بننے والی
अविभागेनैव
वर्तते

सैव च → सा परा शक्तिः
= سکل प्रमातृ संविद

अद्वयमयी =

[illegible]

सततमेव = [illegible] वर्तमानरूपा = [illegible]

ततस्तु = [illegible] पश्यन्ती = [illegible]

यत यत = [illegible] प्रभीप्सित = [illegible]

दृश्यमानादि वस्तुजातम्

तत तत एव = [illegible] समुचित = corresponding

कारण = [illegible] नियम = [illegible]

दृष्टादि कारणाम्: प्रबोधित [illegible]

बोधसूत्रमात्रेण = [illegible] विमृशति → सा परा शक्ति

यथा = [illegible] अनेक = [illegible]

भावाभव [illegible] ज्ञान = [illegible]

संस्कार = [illegible] संस्कृताया [illegible]

मेचकधियः = [illegible]

स्मृति बीज प्रबोधक [illegible]

किंचित् इव = [illegible] औचित्यात स्मृति = [illegible]

विमृशति [illegible]

[illegible]

→ पश्यन्त्याम् इत्यमाणादिना
भेदस्याप्रथनात् ॥

न हि प्रथम ज्ञान काले = [illegible]

स्फुरत = ہے   यत्र = جہاں ہے   वाच्यवाचकविशेषयो

[illegible]

भेदः = جہاں امید

मध्यमा = مدھیما   तयोरेव = انہی کا   वाच्य वाचक

भेदमादर्श्य = بھید کو [illegible]   सामानाधिकरण्येन = [illegible]

विस्फो॰व्यापारा [illegible]

यैव परा वाग्भूमिः, सैव .... जडताप्रसङ्गात्.

اسی دشا میں یہی نتیجہ نکلتا ہے۔ کہ دراصل پراوانی ہی مایام کھیتر ہے جو اتی تت شبد شکتی کے سوبھاؤ والی
سادھارن ستففیت کا وشے نہیں ہو سکنے والی والے سوابھاؤ۔ اور پرمارتھک سنسکار کا روپ دھارن
کرنے والی اور آگے کہی جانے والی ریتی کے انوسار منترو پریہ مطلب اشدھ ام درشٹی سے پیتا رکھتا
اشتی سے پرپڑنا جانے والی ہونے کے کارن آگے پرسار میں آنے والی شکتی وغیرہ واسنوں میں بھی ہو
ہی جیون دینے والی شکتی ہے لوک میں انوسیوت ہو کر ورتمان رہتی ہے۔ اسکے انوسیوتا کے بغیر
شکتی وغیرہ واسنا پرکاشت نہیں ہو سکتی اور ان پر جڑتا ہی چڑھ جاتی ہے +

x. اس بیرونی پرسار کی سب سے پہلی منوج ہے 'یہ' - 'اس طرح' 'یہاں' - 'اس وقت' - اس طرح ہم وہاں کی کوئی کلپنا نہیں ہو سکتی - یہاں وجہ یہ ہے کہ وہ پرا وانی (4) پشیانتی مدھیما ویکھری یعنی اسم و رنگ کی پہلی بیرونی سرشٹی کا روپ دھارن کرنے والی شکتی سے لیکر دکھائی دینے والی آکاش میں آخر والے انت دکھائی دینے تک x.

ڈ تدُتّرے = بعد میں ... جو اس سے آگے ہے پشینتیادیشُ (دشا) یعنی حالتوں

سواپی وستو ویوستھتم = ... اُن میں بھی یہ پرا کی کٹھڑی ہے

x. سوتیا وِنا = اس پرا شکتی کے بغیر پشینتیادیشُ

یہ پرا شکتی کے بغیر ہی

اپرکاشات اُپپتیا = اُن پرا پرکاش سے ثابت ہم ہیں جڑتا پرسنگات = وہ جڑ بن جائیگی -

یہ ہم باہر ملک پرسار کی سب سے پہلی منوج ہے ← تتر

تتر چ = وہاں (پہلی حالت میں) اِدم = یہ ایوم = یہ اس طرح

اَتر = یہاں اِدانیں = اب [اس وقت] اِتیادی بھید کلنا = اس کے بعد کلپنا ہوئی نہیں ہے

نہ کاچِت = یہ کوئی نہیں ہے (اُس کی بابت)

تت ایو چ = اس لئے پرم مہا منتر ویریہ

ہم مہا منتر ویریہ

وِسرشٹی روپایا = ...

آرَبھیہ = شروع کرکے ویکھری پرسرت بھاو بھید

... سے لیکر ... پرکاش پریَنتے = اس کے بعد پرکاش تک

یت اِیم = جو = یہ پراواک ہے

سوچمتکرتی مَیی = اپنا وجود ... یعنی ...

سواتمنیہ ایو = اپنے ... میں

... سفر ہی ہے

(9)

یہ تمام اور بھی سب پرکاشت کرنے تک اپنے چت چمتکار کی پورنتا میں ہی ڈوبی رہتی ہے۔ اور پھر ایک دانی ... نستہ تک پرکاشت ہونے والے سروپ میں ہی اوجل رہ کر سپندت ہوتی رہتی ہے۔ اس کا وہ ... سپندن ہی "اہم" ومرش ہے۔ یہ بات آگے صاف ہو جائے گی +

प्रकाशनमये = [illegible] विश्रमये = [illegible]

स्फुरति = [illegible]

तदेवं = [illegible] स्फुरितम [illegible]

अविच्छिन्नता = [illegible] परमार्थम्

"अहम" इति = इति [illegible]

तदेतत = [illegible] स्फुरी भविष्यति

+ [illegible]

तन्मध्य एव [illegible] तु = [illegible] पश्यन्त्याः

यत्र = [illegible] भेदांशस्य

अस्फुटस्य = [illegible] starting [illegible]

यत्र च = [illegible] मध्यमायां = [illegible] भेदावभासः

तत्र उभयत्र = [illegible] ज्ञान क्रिया शक्तिमयेरूपे

सदाशिव = [illegible]

ईश्वर सारे [illegible]

सर्वे [illegible] "एतदहम" इति = [illegible]

चमत्कृति [illegible]

٭ اِس پراشکتی روپ سِنْدۍ م اسفرت ہِی جیاں شکتی والی م سَتہ پر بِندکا سوتر پات مانتر اور پوچھیا والی م
سَتہ پر (اندر کرن منٍ یِنہٕ) بِند چھ صاف اوستھ سپو جانہِ ہِنْدی دوٚن منٍ "مٕس" "نہٕ" اِس طرح م شکتی
پروَہان سُدا اُچھ اَئی اور "نہٕ" "مٕس" اِس طرح م کریا شکتی پروَہان الگ تھ روپ منٍ وُہ "اسِم" وِمرش
رنگ چھنٕہ رس۔ اَننت وِشو ماسی فُرنا ئے اندِ رِ کو پوشُن لگھ دیا چھ

~~स्फन्त~~ : कृत

روپ ووحاون کرنے والہ بیدنا رُنگی چھناکر لکھا ایہی کرگم ملی لکھکر سدا ئی

अनन्त विश्व उदनता चमत्कृति

اَننت وِشو ما اِس سَندما چھ

पूर्णवृत्ति: ← (اسم پوُرن روپ) (اور) (اسم روپ) پوری روپ

چمتکار اُسی کی پوُرن ورتی۔ شکتی سب کچھ اسم روپ منٍ کی

پوُرن شکتی روپ اِسم روپ

اِس پر پشیا شکتی سب ابھی ترتیب پیدا ہوا

तते = "مُجھ اسم" وُہ पश्यन्ती मध्यमा त्मिका = شکتی مدھیما ہو

स्वात्मानमेव ← اپنے آپکو = سوروپ کو ہی वस्तुत: = اصل میں

परसंविदात्मकं = پرسموٚت روپ سے ہی

विमृशति = وِمرش کرتی ہے

परैव च संवित = "ہی پرا سموٚت" "देवी" इत्युच्यते ॥

اُسی کو دیوی کہتے ہیں۔ اور اُسی ہی شکتی سے ہوتی ہے۔ یہاں دیوی کا ارتھ پرا سموٚت ہی لیا۔

⊕ इयता = اِس دیوی شکتی سے پیدا ہوئی पश्यन्त्यादिसृष्टिक्रमेण = شکتی وغیرہ اِس کرم سے ← شکتی کا اُنکار

1/4 دیوی کیوں کہتے ہیں

बाह्यनीलादिपर्यन्तेन = باہر نیل آدی تک ہی۔ بودی

گھڑی۔ گوگری وغیرہ آخر تک شکتی سے سرگ

① "کریڑا شیل"

स्वविमर्शानन्दात्मना क्रीडनेन = اپنے وِمرش آنند سے کریڑا کرتا

اپنا وِمرش آنند سے کریڑا ہو

سوا اِچھا ہرشانو سری

स्व इच्छया हर्षानुसारी

स्पन्द: क्रीडा

(2) ← सर्वोत्कर्षात्वेन = سرو اتکرش ہے۔ सर्वोत्कर्षेणावस्थिते भगवतो भैरवस्य

سارے سے اتکرش روپ میں

स्थातुमिच्छया

سارے دوسرے اور سب سے اُتم ہے

② विजगीषात्मना = ناچ

He alone has survived

1. क्री
2. वि
3.
4.

मानतया......

त्मतागमनेन......

स्मृति = संशब्द

सवित्र च =

द्युत द्योतनने

Shine =

भगवत्या

देवीरूपा

اس پراشکتی روپ سپندن م انترنگ ہی جہاں شکتی والی م ستھ پر بندیہ کا سوتر بات ماتر اور موجھیا والی م
ستھ پر (اپنے کرن میں بنی) بندیہ کا صاف اوصاف ہو جاتا ہے دونوں میں "میں" - "نہ" اس طرح م نشان شکتی
پر دھان سدا شوبھاؤ اور "یہ" - "تو میں" اس طرح م کریا شکتی پردھان ایشور بھاؤ م روپ میں وہ "اہم" ورش
روپ جمکار ہی - اننت وشو اس میں سے اپنے رنگ کو
روپ م وقار کرنے والے بندیا روپی چمکار کو دیکھا

अन्त: कृत

अनन्त विश्व उदनता चमत्कृति
पूर्णावृत्ति:

اہم پرم روپ سے (اور پرما) اہم روپ

انتر دیش میں اپنی پرماں کو دھارتا ہے

चमत्कार اسی کی پورن ورتی - یعنی سب کچھ اہم روپ میں ہی

तत् = पश्यन्ती मध्यमा
त्मिका

شکتی - درجھیا روپ

स्वात्मैव = سو روپ   वस्तुत:

सच में - واستو

परसंविदात्मकं = پرسموت روپ سے ہی

विमृशति = ومرش کرتی ہے

परैव च संवित = یہی پرا سموت "देवी" इत्युच्यते ॥

اسی کو دیوی کہتے ہیں - اور اسی ہی کو شکتی کہنے لگے - یہاں دیوی کا ارتھ پرا سموت ہی لیا -

⊕ इयता = اس دیوی شکتی نے   पश्यन्त्यादिसृष्टिक्रमेण = پشینتی وغیرہ سرشٹی کرم سے

1/4 دیوی کیوں کہتے ہیں

बाह्यनीलादिपर्यन्तेन

باہر م نیل آدی تک - یعنی

① "کریڑا شیل" स्वविमर्शानन्दात्मना क्रीडनेन

اپنے ومرش آنند سے کریڑا کر

स्वेच्छया हर्षानुसारी स्पन्द: क्रीडा

← सर्वोत्तीर्णत्वेन = سب سے اتیت   सर्वोत्कर्षेणास्थितो भगवतो भैरवस्य

स्थातुमिच्छया

विजगीषात्मना

He alone has survived

1. क्रीडनेन ......
2. विजिगीषात्मना ......
3. व्यवहारकरणेन ......
4. द्योतनेन ......

(11)

5. स्तूयमानतया ......
6. सर्वात्मतागमनेन ......

इयद अनन्त = [illegible] ज्ञान = [illegible] स्मृति = [illegible] संशय

निश्चयादि = [illegible] व्यवहार = [illegible]
कारणेन [illegible] सर्वत्र च = [illegible]

भासमाने [illegible] नीलादौ = [illegible]

तत नीलाद्यात्मभासन = [illegible] द्योतनेन
रुपेण [illegible] shine = [illegible]

सर्वैरेव तदीयप्रकाश आवेश [illegible]

तत प्रसरण [illegible]

स्तूयमानतया = [illegible]

यथेच्छं च = [illegible] देशकाल अनवच्छेदेन [illegible]

सर्वात्मतागमनेन = [illegible] स्व

4/ अतस्य मुख्यतो [illegible]
भैरवनाथ स्यैव [illegible] देवत्वमिष्यते [illegible]

= [illegible]

तत शक्तिरेव [illegible] भगवत्या [illegible]
[illegible] देवीरुपा

यद् त्ताम् = [illegible]

اس پراشکتی روپ سنیدن کا اشرت ہی جیان شکتی والی کا سنیہ پر ہید کا سوترپات ماتر اور وہ سمجھا والی کا سنتہ پر (ابھی کرن ملیں ہی) ہید کا صاف اوجاس ہو جاتا ہے جسکی دونوں میں "میں" - "یہ"۔ اس طرح کا ستان شکتی پر دھان سداشوبھاؤ اور "یہ" - "میں"۔ اس طرح کا کریا شکتی پردھان ایشور بھاؤ کا روپ میں وہ "اہم" و ریش روپ جمکتا رہی۔ اننت وشو کا اس [illegible] سے اسے ہو ہی رہی ہو [illegible] پورن [illegible] میں رہتا ہے

अनन्त: कृत

روپ وہ کھاتن رہنے والے [illegible] جمکتا [illegible] اپنے [illegible] لیکر [illegible]

अनन्त विश्व उदनता चमत्कारि

اننت وشو سے [illegible]

पूर्णवृत्ति

الوپ اور کریا شکتی

(اہم پورن روپ سے) اور (اہم روپ) سدا شو روپ

جمکار (شکتی کی پورن ورتی - یعنی سب [illegible] اہم روپ میں ہی

ग्यان شکتی، پورن [illegible]

ततू = [illegible] पश्यन्ती मध्यमा = [illegible]

त्मिका

स्वात्मानेव = [illegible] वस्तुत: = [illegible]

اپنے آپ کو

परसंविदात्मके = پرسموت روپ سے ہی

विमृशति = ومرش کرتی ہے

परैव च संवित = "یہی پراسموت" देवी" इत्युच्यते ॥

[illegible] کو دیوی کہتے ہیں۔ اور اسی کا شوسے بورن [illegible] یہاں دیوی کا ارتھ پراسموت ہی لیا۔

इयता = [illegible] पश्यन्त्यादिसृष्टिक्रमेण = [illegible]

1/4 دیوی کیوں کہتے ہیں

बाह्यनीलादिपर्यन्तेन = باہر کا نیل آدی [illegible]

① "[illegible]"

स्वविमर्शानन्दात्मना क्रीडनेन

स्वेच्छया हर्षानुसारी स्पन्द: क्रीडा

सर्वोत्तीर्णत्वेन = सर्वोत्कर्षेणास्थिते भगवतो भैरवस्य

स्थातुमिच्छया

② विजगीषात्मना

He alone has survived

⊕ इयताघद्यन्तादि ......→ اب دیوی کا ارتھ بتلاتا ہے:- دیوی دراصل پرا شکتی ہی ہے - इयता سے اس دیوی شکتی کا نام کرن ہے - یعنی دیوی نام تب ہی اس پرا پر چرتارتھ ہوتی ہے جب اپنے آپ کا وِمرش یعنی اور وہ چمکا ہوا روپ میں ظاہر کرتی ہے

(۱) یعنی آتما سے پر سر کر جو یہ سارا سنسار ہے - اس سنسار کی لیلا کو اپنے ہی آنند روپ سے دیکھتی ہے - اس سے دیوی کہلاتی ہے

(۲) سروا اُتکرش روپ سے اوپر ٹھہرنے سے بھگوان بھیرو کا ستھا ٹھہرنے کی اچھا ہوتی ہے - اسکے پرایک قدم قدم میں وہ ابھی ہوتے ہے یعنی جیتنے کی اچھا ہے - اسی اچھا کی جے کرتی ہے - اسی کی جے ہے جو سروو پایک ہے - سروا اُتکرش اور سروا اُتکرش سے ہے اسی کی جے ہوتی ہے - He alone survives always

(۳) سب گیانوں میں ٹھہرنے سے دیوہار کرتی ہے - دیکھو یہ وہ دیوہار بھی تب ہی سدھ میں جب یہ دیکھو کہیں پر اس میں ادھیشٹھان ہے -

(۴) جو کچھ بھی پرا شکتی نے سنسار میں پرکٹ کیا ہے - مثل نیل پیت روپ میں - اسکی shine کرتی ہے - جو کچھ بھی اس کی شان سے چمکتا ہے - اسی پرا میں ٹھہر کر یہ سارا دیوہار ہوتا ہے -

P.T.O.

स्तूयमानतया......
सवोत्मतागमनेन......

स्मृति = संशय

सवित्र च =

द्योतनने = shine

आविष्ट

प्रसरण:

काल अवच्छेद

तत्र सब

मिथ्यते

भागवत्या

देवीरूपा

8/

8 Ref " दिवु क्रीडा - विजमीष - व्यवहार - द्युति - स्तुति - गतिषु"

तथा = [illegible] एव विधु = [illegible] मुख्य = [illegible]
च

पारमैश्वर्यमय = [illegible] देवत्व = [illegible]

प्रशाशकता = [illegible] ([illegible])

अनुग्रहात = [illegible] assume [illegible]

विश्व - विश्वियादि षु = [illegible]

देवताव्यवहार = [illegible]

एव भगवती, पश्यन्ती - मध्यमा च स्वात्मानम एव [illegible] = यदा विमृशति

"अहम् एव परावाक् देवता" [illegible]

मयी एवमेवोचम्" = [illegible]

तदा तेन स्फुरता उल्लसन् [illegible]

माया आरम्भतया - [illegible]

स्वात्मापेक्षतया = [illegible]

तन्मायी भेदानुसारात् = [illegible]

[illegible]

اب پرا واک شکتی لیڈر ودھیما کے روپ میں آکر اپنے آپ میں ہی پراورش کرتی ہے کہ میں ہی پرا مایا ہوں

“अहमेव ...... सवमवोचम्” - پرا آکر یعنی شکتی لیڈر ودھیما کے روپ دھارن کر کے میں ہی ہوں کہنے لگی تھی -

“उवाच” ← کہنے لگی تھی اسوقت بنی بھوت کال میں - پرا کو پتہ تھا اور اس کا ادھیو پرش کا بھی پتہ تھا اور اسے پتہ تھا بھی -

بیان ہو رہنے والی پیروش میں ہی لیتی ہے - ”کہ میں ہی اسے کہنے لگی تھی - ‘तदा’ جب اسے پرارش اسکو ہوتا ہے

← तत ... جس سمے اسے پرارش سے مایا کا ادبھو ہوتا ہے - یعنی شکتی لیڈر ودھیما روپ میں - اسے واک مثل سے ←

یعنی اس طرح پرش کا شکتی لیڈر کا تتھا دینے والے کا اس پرا ہوئی تامेव ...... ← तन्मायीद

भद्रसीमाश्रम
کا بھوت کال سے پرارش کرتی ہے - کہ اس مایا روپ میں بعد کو اختیار کر کے اپنے آپ کو بھوت کال میں کھڑی ہوئی

سمجھتی ہے - اسے مانتے ہوئے ہو ← भद्रावभासं [illegible] بعد ادھیاس کو پراپت دینے والی بن کر آگے آگے چلتی ہے اندر کر

फरसा
(شکتی کو) بھوشن کر (ودھیما کو) مارگ سے Label کرتے ہوئے اسطرح یہ پرا روپ ہوتے ہوئے پیروکھیہ روپ بن گیا

جب یہ کہتی ہے کہ ”میں ہی پرا اسے ہونے لگی تھی“ + اب بھوت کال کا نردیش کرتا ہے - پراصل میں یہ سمی ٹیکس +

ہم ہو رہے آدمی کی سنسار سے पद्धतम (آج کا دن) کا ادبھو ہوتا ہے - اسے पद्धतम کا دیاگ کرنا ادھیچھت ہے

لیکونکہ برہما کا دن ہزار آدمی کے سب کال کے برابر ہوتا ہے - اور برہما کا دن ولشو کا ایک سکنڈ کے برابر ہوتا ہے - اسی وقت [illegible]

کا وکاس ہوتا ہے - یوگی کا ایک پران سنسار ونش کے ۶۰ سال کے برابر ہوتا ہے - یوگولہ کا دو ہزار [illegible] پراپتی کی
पद्धतम

۱۰۰ ہزار حصے کا ایک حصہ یعنی اصلی یوگی کا ایک انش ہوتا ہے - یعنی اسکا ایک انش تک گذرتا ہے جب تک پرش

کے اپنے ہزاروں سال گذر چکے ہیں - اس لئے یہ पद्धतम کیول کلپنا روپ ہے اور نہ تحقیق کرنے والا ہے - تو پھر بتلاؤ سموت

یہ سب روپ پرا اسی کلپنا کے سے جاری ہو سکتی ہے - اس نیائے سے لہذا بھوت - اور پیروکھیہ ان درشٹوں سے پری ہو کر

جو پیروکھیہ اتم پرش کے کرم سے ہی ورتش کرتی ہوئی کہتی ہے کہ ”पद्धतम् सा ......“ سمست والیہ واجک کا نشٹ

لعد اس نے اپنے ہو کر سمے اسے کہنے لگی पद्धतम् उवाच روپ سے ملی ہمیں وہی پرا وکہ وہ ہی ان ہو کر پوچھنے لگی تھی

१ तामेव परामुवं = स्वात्ममयी =

भूतत्वेन

अभिमन्वाना

सदा अवभास = प्राराम =

व्यतिवर्तिनीयत्वात्
By Travelling

अन्तः बहिष्करण = पथस्थ

परोक्षतया -

व्यतिवर्तिनीयत्वात =

सर्वात्रि = संचार = अपायात

Continued

तत्तदिना विभागकृत

अयन्त =

अदितन = Present अनवच्छेदात

ब्राह्मण = अनेक कल्प सामिह्रम्

ततोऽपि

अपहे = =

विश्वा प्रमृतै = अनाश =

प्राण चारायै =

اب کے سو ہزار اکر ہے میں اکر دن کا روز گذر ہوتا ہے ۔ یعنی دن ہوتا ہے

9 ? प्राणीय ; ہزاروں کا ہے शतसहस्राण्यपि ~~۳۶۰۰۰~~ سالوں

अह: व्यवहार: = یہ کتنے دن

इति व्यवस्थिते = اس بات کو ٹھہرا دیا ہے अनावस्थिते = بغیر ٹھہرائے

کلپنا روپ میں یہی جو چکر کا آ رہا ہے کال کی گنتی Timeless-ness کا واقعی یہ نقول ہے

काल्पनिके च کلپنا میں جو آیا ہے अद्यतन त्वम्

تصور کئے ہیں جو Past اور Present والا کیا ہے والا کیا ہے Present tense

अकाल्पनिके = جو نہ کلپنا میں آئے संविद वपुषि

شکتی کے روپ میں ہی کال نہیں کیا ہے ؟ اس کے روپ میں ہے

कथम् ? Past اور Present = tense اس کے طرح ہے کیا کو جو ہو سکتا ہے ۔

کیا کس طرح جو ہوتا

इति न्यायात = یہ بات ہے ۔ اس کے روپ میں ۔ اور یہی ۔ اور بہ ترکیب اور بہ ترکیب کے روپ سے ہی پوری ہوتی ہے ۔

اصلی روپ

یہ شبد کال اس سے ترکیب اور بہ شکتی کے اسم سے ہی پوری ہوتی ہے

भूत → अनद्यतन → = Not Present - کال

परोक्षार्थे (Past) future وہ ترکیب کال

اپنی ترکیب اسم کی شکتی کرم سے دیوی

पारिपूरणात درشن کرتی ہے کہ جس میں پورا درکت اس ترکیب کو کرتی

دیوی سمیت واقعی دیکھ سکتی ہیں اور یہ کرتی ہوئی ہے " ذہن واحد "

اس کا کنٹرول اسم اور کہ اسم کی کوئی کا رول سے پورا ہوا ہے

= پوری ہوئی ہے (یہ کالی میں)

ترکیب سے اسم درشن سے ہوتی ہے

अतः

परोक्षोत्तमपुरुष = ترکیب کا اسم پورا क्रमेण = विमृश्यते

اسی کو درشن کہتے ہیں

पहमेव सा परावाग्देवीरूपैव »

ہوا ہوا

ہوں سب جو تو کون ہے / ہو ہی ہے پورا دیوی کا اس کو جو یہ پوری ہی ہے یہ کہاں ؟

یہیں یہی وہ ابراداک دیکھا جاتا ہے جو حصہ میں واجب ادا کا دیا گیا نہیں۔ اس معاوضے سے لکھی گئی تھی

"सर्व वाच्यवाचक ~~ग्र~~ विभक्ततया एवमं उवाच"

نہ اصلی الگ الگ ہوتے ہیں ←

पर भूत → अनद्यतन → परोक्ष → ان تینوں کو سے بڑی بڑھی ہوئی

— یہ تمہید کے کال حرف کہتے ہیں در اصل Tense کوئی چیز نہیں ہیں۔ کیونکہ بھوت کال میں تعذر کی جگہ پر رکھ کر رہنے تھے لکھی ہوئی۔ کیونکہ میں [illegible] سبکی رہنے سے وہ شخص سے وہ پرانی اصطلاح ہونی لگی تھی

↗ १, पप्रच्छेव — सा उवाच । past tense 3 1st person میں ہوتا ہے
— 2 Sanskrit میں

10/ इति तात्पर्यम = یہ ہے اس کا مطلب

स्वप्नोऽहं किल विललाप "

दृष्टान्तः —

سویا ہوا خواب میں رام [illegible] ولاپ کرنے لگا تھا — (سپنے میں)

इति हि स्वमेव उदपादि [illegible]

तथा हि = ویسے دیکھا میں نے

ताम प्रतीतामवस्थां = جو یہ حالت گزری ہوئی دیکھا ہے — سپنے میں تھا

न स्मरति = اس کو نہیں سمرن کرتا ہے

प्रागेव दृष्टत्वात [illegible]

इदानीम् = ابھی — पुरुषान्तर = دوسرا پرش [illegible]

कथित = کہے گئے — महात्म्यात = اس مہاتمے سے [illegible]

प्रति विलाप-गानादि क्रिया = [illegible]

जनित = پیدا کیے — मस्तादि = [illegible]

वा देहविक्रियाविशेषेन [illegible]

[illegible]

(نوٹ: یہ "دنوں وادم" جیسے یہ انوگرہ کیلئے ہے صرف)

یعنی یہ اسی کو ... اور اس والا ... کا ہمنکار کرتا ہے —
پراپت کرتا ہے۔ بعد اسکا ہمنکار ہی کرتا ہے —

تत अवस्था चमत्कारात् = اس اوستھا کے چمتکار کو پہنچتا ہے —

प्रतिपद्यते

नहि = نہیں — وہ اوستھا ایک بار ... ہے

प्रतिपत्तिमात्रमेव = صرف جاننا ... ہی ہے

मत्तः सुप्तो वा स्वप्ने किल विलोप — مست نشہ میں یا سویا ہوا ... وہ نہیں ... رہے گا —

इति = اس ... मदः = نشہ میں ہوکر ... स्वप्न = سپن

मूर्छादिषु हि = جو وغیرہ بے ہوش ہوکر ... वेद्यविशेष = جو وید یا دشیں ہے

प्रनवगमात् = ... (وید کو) ان کو ... — یعنی یہاں بھی ... وید ... کا اثر ہوتا ہے

परीक्षात्वं = اس میں ... دیکھنے کا ... (عام) ... ہوتا ہے

پر اوستھا ... وید ... ہے — وہاں تو ... ... only subjectiveness.

परावस्थायां तु वेद्यविशेषस्य = پر اوستھا میں جو ہے وہ ... وید ... دشیں ... ہے — کیونکہ ... دیکھتا ہے

प्रभाव एव

इति = ... केवलमात्र = کیول ... ہے ...

यहاں ... وید ... صرف ... ہے ...

वेदकतादात्म्य प्रतिपत्त्या = ویدک — جاننے والا ... ہے
اس ... کا ... کی ... ہے

तुर्यरूपत्वात्

— اسی وجہ سے — ... ہے

پر اوستھا میں کیول ... subjectiveness ہے — no objectiveness

... — وہ ... ہے ...

(18)

प्रयत्न → Spiritual path [illegible]

१०/ मदादिषु के = [illegible]

मोक्षविषय प्राधान्यात् [illegible]

[illegible]

इति इयान् विशेषः = [illegible]

परोक्षता तु [illegible]

समानैव → [illegible]

→ Spiritual path

एवं सर्वे एव = [illegible] गुरुशिष्यादि = [illegible]

प्रमाता [illegible] पदे [illegible]

प्रयत्न वा व्यवहारे

[illegible] ← { [illegible] } स्थिता – [illegible]

सर्वकालमेव = [illegible] यत्किंचित् = [illegible] कुर्वाणाः = [illegible]

स्वमेव संविदमुपाविश्य = [illegible]

सर्वव्यवहार भाजनं भवति [illegible]

अतः तामेव स्व ष [illegible]

[illegible] ← अतः = [illegible] तामेव अवस्थाम् [illegible] अवस्थाम् आक्रम्य

वस्तुतो = [illegible] विमृशति देवी = [illegible] उवाच

[illegible] देवी उवाच॥

इति = [illegible] यद्वस्तुतो = [illegible]

अहमेव सततं सर्वमभेदेन विमृशामि परामृशौ

[illegible]

اگر ایسا نہ ہوتا — اگر نہ ایسی ہوتی ہو

॥ अन्यथा = دوسرا پرکار

पश्यन्ती मध्यमा भूमिके — یعنی ناد روپ میں آئی ہوئی — सुपुमिटं

پرکٹ سنبندھ تا نہیں ہو سکے گا — کیونکہ یہ دونوں پراشکتی کے روپ ہیں

प्रथने न स्यात = پھیلانا نہ ہو

तावदेव उक्तं भवति = اتنے ہی میں کہا ہے

" देवी उवाच " इति — اس نے کہا ہے

اس طرح آگے جا کر جب کہا

ہوا एवमेव पुरस्तात = ~~[illegible]~~

→ " भैरव उवाच " = بھیرو نے کہا ہے

इति मन्तव्यम् = یہ ایسے ہی سمجھنا چاہئے ویسی ہی

तत्रापि हि = یہاں بھی — اگر یہ [illegible]

دونوں روپ (ایسا ہی) میں ہیں

अस्यां भैरवरूपतामेव

← तत्रापि = اس میں بھی — हि = کیونکہ

'अहम्' — بھیرو — ← स्वपर प्रातिय अभिन्नागमयो — اپنی جو دونوں شکتی اس سے نہ بن ہونے سے

"अहम्" — دونوں — यहाँ अहम् پراشکتی کی [illegible]

भैरवात्मैव — بھیرو دیو ہی صرف

अहम उवाच - इत्यर्थ = اہم کا مطلب ہے

केवलं शक्तिप्रधानतया सृष्टि स्वभाव = صرف شکتی پردھان سے

अस्यामपि = سرشٹی ہونا کیسی نام ہوتے

سرشٹی — یا — سرشٹی ۲۷۵ "अहम" — "अहम" इति → پر سے پراشکتی — پراشکتی پر

उचिता देवी = اس پر جو اہم ہے

परामर्शः = [illegible]

[illegible]

शक्तिमत्प्रधानतया संहारावेशः = [illegible]

विमर्शः - महेश्वर = [illegible]

"महेश्वर" [illegible] winding up this manifestation of universe

इति भैरवरूपचमत्कारः = [illegible]

स्फुटयिष्यते च एतत् = [illegible]

एतत् च = [illegible] पश्यन्ती मध्यमाभुवि [illegible]

ज्ञानशक्तिमय्यामेव = [illegible]

परस्य = [illegible] इच्छाशक्तिमय्याः [illegible]

संविदः [illegible] विमर्शेन = [illegible]

तदेव च = [illegible] सर्वशास्त्रमं पर्यन्त [illegible]

शास्त्रप्रयोजनम् = [illegible] महेश्वर

एतत् एव = [illegible] ज्ञानशक्तितवेन = [illegible]

सदाशिवमय्यां [illegible]

سفارت یعنی ہم کارن -

پورْوُتّر پد واکیہ کرمے اُلّاسات = یعنی ان کا پیدا ہونا

पूर्वोत्तरपदवाक्य क्रमे उल्लासात =

वास्तव = پیدا ہوا پرमहामन्त्र

वीथ्यौ विसर्गो स्व

दैवी उवाच = दकार - एकार - वकार - ईकार - उकार - वकार - आकार - चकार -

देवी उवाच = भकार - ऐकार - रकार - वकार - अकार - उकार کی

भैरवो उवाच = अकारादि पद वाक्ययोजना।

پد کا ، آگے پیدا ہونے کو آگے آگے پیدا ہوا سالم ملانا

उक्तं च स्वच्छन्दतन्त्रे = سوچھند تنتر میں کہا ہے

" गुरुशिष्यपदे स्थित्वा स्वयं देवः सदाशिवः।
पूर्वोत्तरपदैर्वाक्यैस्तन्त्रं समवतारयत्॥ "

गुरुशिष्यपदे स्थित्वा स्वयंदेव
सदाशिवः = گرو شش پر ہو کر آپ ہی سداشیو

पूर्व उत्तर पदे वाक्य

तन्त्रे समवतारयत

देवी + भैरव
उवाच

इ एवं च = [illegible] अनुग्रहप्राप्ति = [illegible]

सततं = [illegible] सर्वप्रमातृषु = [illegible]

अनस्तमितैव [illegible] सैषा [illegible]

बुद्धिसार शास्त्रैक

प्रास्य: = [illegible]

पर एव संबन्ध: = [illegible]

अन्य अनुत्तरे = [illegible] अन्तरारा[illegible] = [illegible]

संबन्ध: = [illegible]

महदन्तराल [illegible] दिव्यादिव्यौ [illegible]

1 2 3

उक्त उपदेशेन = [illegible]

पर स्वकमयत्वात [illegible]

तदुक्तं त्रिकहृदये = [illegible]

नित्यं विसर्गपरमः स्वशक्तौ परमेश्वरः

अनुग्रहात्मा सृष्टा संहतौ च अनियन्त्रितः "

नित्यं = [illegible] विसर्ग परम: = [illegible]

स्वशक्तौ परमेश्वरः [illegible]

[illegible]

अनुग्रहात्मा सृष्टा संहृता [illegible]

13 [illegible] ← अनियामितः [illegible]

अनरगल

एवम् = [illegible] अमुना क्रमेण = [illegible] सदोदितता =

[illegible]

एवं परमार्थमयत्वात् = [illegible] परमेश्वरस्य = [illegible]

चित्तत्वस्य [illegible] यदेव ? [illegible] अविभागेन = [illegible]

अन्तवस्तु = [illegible] स्फुरिते [illegible]

→ तदेव पश्यन्ती भूमिः = [illegible]

वर्ण-पद-वाक्य विनिर्भाग [illegible] undifferentiated [illegible] Undifferentiated

यिषयां = [illegible]

परामृष्टं = [illegible] मध्यमापदे च [illegible]

भेदेन स्थिते = [illegible]

वस्तु पूर्वकं = [illegible] संपन्ने - [illegible]

यावत् = [illegible] वैखरी [illegible]ते [illegible]

अनुत्तरं कथम्" [illegible] इत्यादि

[illegible] "अनुत्तरम् कथं"

← | भिन्नमायीय-वर्ण-पद-वाक्य [illegible]
| रचनान्तम् - [illegible]

[illegible] } "अनुत्तर कथं"

(24)

[illegible]

एतदेव = [illegible] तत = [illegible] स्मन उपलक्ष्य

भैरववक्त्र = [illegible] सृष्टि परामृष्टा विमृष्

14 अनुत्तरपदे भावसार

[illegible] = अकार आकार

रूप प्रविवर प्राक्कार = [illegible]

= [illegible]

संघट्टसमापत्ति = [illegible]

[illegible] क्षोभात्मके

त्रिकशास्त्र [illegible]

प्रसर बीज [illegible]

ध्रुवपदं = [illegible] सौलिके मौलिके [illegible]

[illegible] सर्वजीवतां जीवनैक रूपम् = [illegible]

एतदेव = [illegible] व्यवहारदाभावात् = [illegible]

स्थाननिर्देशाद्ययोगात् = [illegible]

स्थानादिपूर्वकत्वं [illegible]

न उपपन्नम् = [illegible]

[illegible]

64 [illegible]
18 [illegible]
10 [illegible]
92

14 वस्तु च = [illegible] प्रश्नतदुत्तररसे = [illegible]

सतत उदितमेव = [illegible] प्रथमसमाविभागमयम् = [illegible]

तेन = [illegible] एतावदेव = [illegible]

अत्र तात्पर्यम् = [illegible]

स्वात्मा = [illegible] सर्वभावस्वभावः = [illegible]

स्वयं प्रकाशमानः = [illegible]

स्वात्मानमेव = [illegible] स्वात्माविभिन्नेन = [illegible]

प्रश्नप्रतिवचनात् = [illegible]

प्रष्टृप्रति = [illegible] वक्तृ [illegible]

स्वात्ममयेन = [illegible] सहृदयता

चेत चमत्कृतेन = [illegible]

विमृशति = [illegible]

इति प्रश्नमेव = [illegible] एवं विचित्रचमत्कारेइदु = [illegible]

तथा च = [illegible]

15

तथा = جیسا کہ — یعنی جیسا کہ بالکل ٹھیک — جیسے

तथा = جیسا اسی طرح जामवेव = جانتا ہوں تثैव भवानि = اسی طرح آپ بھی

یہی ہم آگے آگے جیسا بیان کرتے ہیں — یہی سمجھا ہے

इति यावत् = جہاں تک तावदेव = وہاں تک

देवी उवाच = دیوی نے کہا ہے

अनुत्तरं कथम् = یہاں سوال ہوتا ہے انوتر کیا ہے

इत्यारभ्य = یہاں سے شروع کر کے "भैरव उवाच" — بھیرو نے کہا ہے

शृणु देवि = سنو دیوی — Body of the Book

इति मद्यता यावत् = اس جگہ یہاں تک

इत्येतद् रुद्रयामल इति = یہ ہے رودر یامل میں

یہ شلوک — یہ شو شکتی کا سنگم ہے

यद्वा = دوسری طرح सर्वोत्था = سب پञ्चस्रोतः प्रभृतीनि = پانچ پرواہ وغیرہ

द्वासारा = یہ پانچ پرواہ

लौकिकोऽयं = جیسے سب لوگوں کا

व्यवहारः = اس پانچ پرواہ پر ہے

यावत् = جہاں تک

اس میں پوشیدہ اسکا پرام سوم سمبندھ ہے

15/ अथ उक्तः परः संबन्धः

" गोप्यमुपदेशसारं सद्यो भैरव पदावहं सततम् ।

अभिनवगुप्तेन मया व्याख्यातं प्रश्नसर्वस्वम् "

چھپانے کے لائق مخفی رکھنے کے قابل ← गोप्यम् → = پوشیدہ رکھنی ہے۔ उपदेशसारं = اُپدیش سار ہے جو اپدیش کا جوہر ہے

سدھو → जल्दी (تیز رفتاری سے) → فوراً

सद्यो

भैरव पदावहं सततम् = وہ بھیرو پد کی حالت ہے جو ہمیشہ بھیرو پد کو حاصل کرانے والا ہے

अभिनवगुप्तेन मया = میں ابھینو گپت نے پیش کیا ہے

व्याख्यातं = بیان کیا ہے۔ प्रश्नसर्वस्वम् = پرشن روپ سب کچھ ہے۔ مجھ میں (ابھینو گپت نے) اس کی وِیاکھیا کی ہے۔ لہذا اس کو تحقیقات کیا ہے

शिष्यहिततपरतया तु इदमेव संगृह्य अभिदध्महे: = شِشیوں کی بھلائی میں تت پر ہو کر

→ प्रस्तुत करता हूँ।

یہ شِشیوں کا اُپکار رکھنے پر تت پر ہو کر میں اس اُپدیش سار کو مختصر طور پر شلوکوں میں سنگرہ کر کے پیش کرتا ہوں۔

15

सर्वेषु व्यवहारेषु ज्ञेयं कार्यं च यद्भवेत । → ﺑﮭﯿﺪ ﺭﮨﺖ
तत्परस्यां तुर्यभुवि गतभेदं विजृम्भते ॥
भेदासूत्रणरूपायां पश्यन्त्यां क्रमभूजुषि ।
अन्तः स्फुरत्क्रमायोग मध्यायां तद्विभेदभाक् ॥
मध्यमा पश्यन्त्यथ परामध्यास्याभेदतो भृशम्
परोक्षामिव तत्कालं विमृशेन्मत्तसुप्तवत ॥

(۱) سب ویوہاروں میں جو کچھ گیان ونشے ہے اور کریا ونشے ہے یہ سب پرا دیوی تُریہ اوستھا یعنی نربھید دشا میں آنند میں کھلا ہے۔ یہ سب کچھ ابھید رہتے ابھید روپ سے میں پرا دیوی میں کھلا ہے۔

(۲) پشینتی دشا میں کرم بھوگی ~~...~~ آغاز ہے۔ کیونکہ اندر میں وہاں اسفٹا ہے۔ یہ گیان ونشے اور کریا ونشے اسفٹ ہیں۔ اور مدھیما میں آکر بھید نا بھیدوں رکھتے ہیں۔

(۳) مدھیما، پشینتی، پرا پر چڑھ کر ابھید تا کو ... (کیجئے) اس کال کو (देवि सुवाच) معنی پرا کال کو ... (دیوی اوباچ) देवि उवाच ...

15

सर्वेषु व्यवहारेषु = سب دنیاوی کاموں میں ; ज्ञेयं = جانیں ; कार्यं च = کریں دونوں

यदुद्भवेत = جو کچھ ہوگا ; तत् = وہ ; परस्यां तुर्यभुवि =

[illegible]

गतभेदं विजृम्भत = [illegible]

[illegible]

भेदासूत्ररारूपाया = [illegible] ; पश्यन्त्यां = پشینتی

क्रमभू जुषि = [illegible]

अन्तः = اندر ; स्फुटक्रम = [illegible] ; प्रयोगे =

मध्यायां तत् = [illegible] ; विभेदभाक

[illegible]

16

मध्या = مدھما ; पश्यन्त्या = پشینتی ; प्रथ = [illegible] ; पराम = [illegible]

मध्यायास्य = [illegible] ; क्रमेदतो = [illegible] ; भूप्राम =

परोक्षामिव = [illegible] ; तत्काले = اس وقت

विमृष्टौन = [illegible] ; मत्त स्फुप्रवत = [illegible]

"[illegible]" ; "[illegible]"

[illegible]

اسی طرح ہے آگے اب انوتر بھاؤ کا وچار کرینگے

16 एवमेव = [illegible] तत् = [illegible] अनुत्तरत्व [illegible]

निर्वक्ष्यति [illegible]

तदुक्तं सोमानन्दपादैः = [illegible]

पञ्चविधकृत्यतत्पर भगवद्भैरव भट्टारकस्य प्रथम शाक्त स्पन्द समनन्तरम् ॥ [illegible]

[illegible]

देवी उवाच [illegible] भैरवोवाच — [illegible]

[illegible] इत्यादि निजविवृतौ = [illegible] तद्ग्रन्थिनिर्दलनार्थं

[illegible] एव

प्रथमस्माकं = [illegible]

तत्शासन = [illegible]

[illegible]

[illegible]

पवित्रितानां = [illegible] — तच्छासन

यतः [illegible]

[illegible]

शासन → a sheet of paper on which a grant of land etc written & presented

[illegible] "نام"

उक्तः संबन्धः = [illegible] अभिधेय = [illegible] (یعنی نام)

"श्रीद्राका" इति → तिसृरपो = [illegible]

Purport

17

शक्तीनाम = [illegible] इच्छा-ज्ञान-क्रिया

सूक्ष्याद्य = [illegible] - [illegible] उद्योगादि = [illegible]

नामान्तर = [illegible]

रूपान्तर = اندر अनिर्वाच्यानाम = [illegible]

ईद्राका ईश्वरी = [illegible]

ईशनाद्य → ईशितव्य = [illegible] ईशितव्या

व्यतिरेकेणैव = [illegible] भाविनी → [illegible]

इति एतत शक्तिभेद त्रयोत्तीर्णा = [illegible]

तत् शक्तित्रय अवि भागमयी = [illegible]

संविद भगवती [illegible] भट्टारिका = [illegible]
परा

अभिधेयम् = [illegible]

[illegible] Purport [illegible]

اس کا اس لئے ترشکا نام ہے

17 तत् योगादेव च = - اس کا اس کے ساتھ جوڑ نے سے

इदम् अभिधाने = یہ نام ہے   त्रीशिकाख्यम् = ترشکا نام ہے

" त्रिशिका " ترشکا کو لوگ کہتے ہیں इत्यादि गुरवः पठन्ति
پڑھتے ہیں - بڑے لوگ

अक्षरवाद = ... सामान्य च ...

निरुक्तमाहु = ... तिस्र शक्ति = कायति

इति त्रिशिका ...

न तु = نہیں त्रिश चश्लोकयोगात् त्रिशिका
30 شلوک ... 30 ... ترشکا ہے

एतावतोऽपि त्रिशकार्थत्वात्

एतत् = اس ...

तथाहि श्रीतन्त्रसारे = ...

" त्रिशकार्थस्त्वया प्रोक्तः सार्धकोटि विस्तरः
ترشکا کا ... 1½ کروڑ ... ہے

त्रिंशिका   परा
                                             ~~To be named~~

अभिधान = त्रिंशिका
अभिधेय → परा भट्टारिका   Name; designation.

~~इति [illegible] अभिधानाभि [illegible] अभिधेययोस्तु~~

पर एव   [illegible]   संबन्धः

[illegible]   तादात्म्यात   [illegible]   Because they are identical

इति उक्तप्रायम्   [illegible]

[illegible]

(4)
5/8   प्रयोजनं च = [illegible] सर्वप्रमातृणाम् विभो = [illegible]

18

परशक्तिपात अनुग्रह वेशो = [illegible]

[illegible] अपीत = [illegible]

एतावत = [illegible]   अनुत्तर ज्ञान [illegible] भाजन [illegible]

आचारणाम् [illegible]   देशं = [illegible]

निजह स्वरूप [illegible]   इदंसद्भाभावेन [illegible]

निजामोद भर [illegible]

क्रीडाभासित भेदस्य = [illegible]

[illegible]

[illegible]   { निखिल बन्ध आभिमत = [illegible]

तत्त्वज्ञातस्य [illegible]

[illegible] = आमचमत्कारे पूर्णाहन्ता तादात्म्य

भैरवस्वरूप भेद सम

[illegible]

39

اُس بندھن سے بدن کو اپنے سوا تم جمتکار کی اوجھل دیکھتا ہے آکود آتا ہے تو اس ساری سرپا ستارہ کو غیر روپی اپنا میں شمار نہیں کرتا اُسی کا نام ہے جیون مکتی + 18

۔ نحو پران - دیہہ - بُدھی کی بھومی پر بالتر جیتا ہوا ملتی رہے
موجی اپنے باہری اندرونی سُتروں کو اودھوگ کل
اور پریرنا کی پریرنا کی شکتی حاصل کرتے رہتے ہیں اُس سروپ جو ایسے ہو

समावप्राप्तिको

اُسی کا سماوش روپ

سب ہی سے چمتکار کی سلسلہ ہے +

जीवत् = زندہ رہتا ہوا

मुक्तः = یہی مکتی ہے

نفس دیشا میں -
(۱) پران دیشا
(۲) بدھ [illegible] دیشا
(۳) دیہہ دیشا

← प्राणदेहादिभूमावेव हि = پران - دیہہ بُدھی پر ہی اُسی کی اوستھا میں

अन्तर्बहिष्करणा = اندر اور باہر کی حسیں   विषयायो = یہی دیش ہے

ان اندر جو ہو اور پرجو ہو جو مختلف ہیں اُسی پیریرنا

نفی اودھوگ کل ہی

उद्यमो भैरवः یہی جیو کا جیون ہے

प्रेरणाख्यायाम् = پریرنا کی   उद्योगवत् = اودھوگ کل ہی

← जीवनरूपायो = جو جیون کی طرح ہے   रुद्रस्य = اس پر جو شیو کا ہو

جو اندرونی پرکاش ہے
بارشی دیوی اور
اکیلی مکتی جاننے میں

२ बन्धाभिमतेभ्यो = انا نہیں تو سے بندھ ہے اُسی کے بندھن جو مانتے ہیں اُسی کے

मुक्तिः = پر تھوی دیشا جو بندھن ہے مکتی ہے یہی مکتی ہے
اور [illegible] ہے - اُسی سے چمتکار +

इति मीयते = اُسی کو (مکتی) کہا جاتا ہے

त्रुटितेऽपि = ٹوٹ جانے پر ہوا گر - کاٹ [illegible]   मायीये = مایا کا سنسکار مایا کا

[illegible] مکتی کا مطلب ہم پرکٹ میں مگر
سنسکار کی حد تک جو تو ان [illegible] پرکاش ختم ہوئی تو - संस्कारमात्रे (جب ختم ہوا تو)

پر مکتی کتنوں ایک
وابستہ مکتی ہے +

कथं मुक्ति = پر کونسی مکتی ہے   वायोर्युक्तिः = پر مکتی وابستہ مکتی ہے

किमपेक्षायावा = یا کس اپیکشا سے

इति तदुक्तं श्रीस्पन्दे = اس پر شری سپند شاستر میں کہا

इति वा यस्य संवित्तिः क्रीडात्वेनाखिलं जगत्
स पश्यन् सततं युक्तो जीवन्मुक्तो न संशयः

[illegible]

क्रीडात्वेन अखिलं जगत

इति वा = [illegible] यस्य संवित्ति = [illegible]

स पश्यन सततं

इति स्फुटीभविष्यति = [illegible]

जीवन मुक्तो न संशयः = [illegible]

च सतत अविद्व स्व [illegible]

19

तदनेन = [illegible] स्वसंवेदनेन [illegible]

प्रयोजनमेव अग्र = [illegible]

सकल पुमर्थ पर्यवसानम — There ends all effort of Self.

[illegible]

इति = [illegible] प्रयोजन प्रयोजनानां अवकाशः =

[illegible]

उक्तान्येव संबन्धाभिधेय प्रयोजनानि = [illegible]

(19) अथ ग्रन्थार्थो व्याख्यायते

[illegible] (182)

"अनुत्तरम" [illegible]

न विद्यते उत्तरम अधिक यतः = [illegible]

Nothing exceeds that.
No further development.

→ यथा = [illegible] हि = [illegible]

तत्र अन्तरा षट्त्रिंशत

अनाश्रितान्ताः पर्यन्तानि = [illegible] 36 [illegible]

.×.

شو تو سرگتہ بیرونِ میں موجود ہے ۔ ۱

(36) جیسے جس پر سار ادا سرت تو یہ سکر برتھوی تک — ستاتے ۲۶ تتو شبھید ہی تو دقت ہے ۔

اندر تک بھون سے ہی اپنے اپنے دھنگ کی ستا کو حاصل کر سکتے ہیں ۲۶ اناسرت تو بھاؤ ہے

جو وہ ہے

Position
اب ان تو تو ں کی بحث شروع کرتے

19

परभैरव — پرم بھیرو — बोधात्

प्रत्युपवेश — جاتے ہیں — तथा प्रसारित

(x) تتو — तत्त्वानि परत्रिकात्

तथा भावसिद्धी नी ← तत्त्वानि परत्रिकात्

کو بھی اور بھاؤ حاصل ہوتے ہیں =

حاصل کرتے ہیں ۔ (کہتا ہے کہ ناوان شکتی کو الگ ہیں)

یہ شکتی الگ کرتی ہے

संविदमपि प्राधिकयान्ति

بھی سکوت زیادہ زیادہ کرتے ہیں =

اپنے سے الگ کرتی ہے

اور ادھر کو پھیلا جاتے ہیں

یہ بیان پر ادھر ادھر جاتے ہیں اور بن دیکھتا ہے اور پڑا ہے ، جس نے وہ کچھ نہیں

تو ادھر ادھر جاتے ہیں اور اناسرت اور ستھانک — تو دونو حقہ ہے اور کبھی نہیں — جب یہ اشکتی کو سکوت سے شکتی ہوتی ہے تو وہ اوتی کرتے تو وہ ابھی الگ کرتا ہے تو اوپر ادھر جاتا ہے جب تک کہ اناسرت ہیں ملا ہے ۔ پھر ایک وہ جو سب الگ اس کی ادھر کر سکتا ہے ۔

नैव = نہیں ہے اور — (ادھر ادھر کی بات)

परा = پورا — جیسا ہے

पारिपूर्णा — پوری ہوتی ہے

परभैरव संविद — وہ پرکھشت ہے

तस्या सतत → ہر وقت میں ہی ہے — وہ ہمیشہ — स्वयम — اپنی

अनवेक्षित — اپیکشا — प्रत्यपेक्षा — جس کو کسی کی اپیکشا نہیں ہے

या पारिपूर्णा परभैरव संविद —

यथा Cases = یہی بات — چमत्कार सारत्वात्

یہی چمتکار سے ہوتے ہیں (جو اوپر بتلایا ہے)

یہ کر سکتی ہے — نفرت اپنا ہے — وہ سب کچھ کا جبھار کرنے والا ہے

تथा = ایسا — न विद्यते = نہیں ہے — उत्तर = اوپر

प्रश्नप्राति = پرشن کا جواب

वचोरूपं यत्र — یہی ہے

نہ کچھ ہو اور دوسرا ہے

نہ وید ی اور دم ہے جہاں — سوال جواب — جہاں ہے ہی نہیں وہ ہیں

(2)

جن سمجھو جو اندر سے کرتے ہیں۔ گیان سے سنکر سارے ہی جگت گیان میں جو پیدا ہوتے ہیں۔ اُسی میں آتے ہیں۔

⊕ یہاں سے یہی آکر سمجھ اور دیوی کو دیکھ پیدا کرنے دیوی اور ...

20

यत एव = جو ہی हि = یہ محاسंवित = جو سمندر ہے یہاں وہ

स्थितो :

महसदस उल्लासस्य = اُسی میں سے پیدا ہی ہے اُس نے السن ہی

प्रतिभा ~~प्रमादि~~

بے حد سوتی = پانی اور ...

पर्यन्त | धाम = ان انت حد والی سمجھ سندر ہے → دیوی → اسطرح سے وہ اب آتا ہے

اسی پاتر سے نفع یہی ہے سارے سوال جواب

उल्लासस्य = اُسی میں آتا ہے प्रश्नप्रतिभा पात्र = ⊕ سوال پوچھنا وہ بات

भवति = ہے شاید शिष्यः = ہے شاید

तदेव वस्तुतः = وہی ہے اصل سے تत्त्व सततोदितम् = ہمیشہ ادھر نکلی

इति = ہے اس किमेव = کیا ہے

प्रश्नायीयम = ہے آتا اُتر उत्तरमत्सत = کون پوچھتا ہے اور اُتر ہوگا

- یعنی گرو اور شسوتی کو چھوڑ کر کیا اُتر دیگا + स्यात

③ उत्तरराम = پار ہونا उत्तरो = پار جانا - یہ سب ہوتی ہے - اُدھر اُتر جانا - پیدا ہونا جب اب وہ ہی پر آتے ہیں -

3. भेदवादाभिमतो = جو بھید وادی ہے प्रपवगी : =

اب دیکھ (جب سب ایک ہی تو کچھ بھی نہ رہے - السانی)

सा हि वस्तुतो नियतिप्रां रातो नातिक्रामति ।

= وہ دراصل یعنی جو اپنے بھاؤ کو اتنی نہیں کرتا ہے

یعنی اپنی خوشی بھاؤ کو نہیں چھوڑتا - → السا ہی ہے

20/

[illegible]

तथा हि → = [illegible] प्रथमं शरीरात् = [illegible]

प्राणभूमावनुविश्य = [illegible] ततोऽपि बुद्धिभुवमधिप्राप्य = [illegible]

= [illegible] अधिप्राप्य = [illegible]

ततोऽपि = [illegible] स्पन्दनात्मा = [illegible]

जीवनरूपताम् = [illegible]

Successively vanish [illegible]

अध्यवसाय = [illegible] सर्वविवेध्य प्रथमाम्

ततोऽपि = [illegible] सकलमलता- [illegible]

नवतारतम्य ? प्रत्ययपदम् [illegible]

तारतम्य = [illegible]

अधिष्ठाय = [illegible]

ततोऽपि = [illegible] सकलमलतानवतारतम्य

[illegible] = प्रतिपद्य

प्रतिशयधारा प्राप्तौ = [illegible]

शिवत्वव्यक्तयो = [illegible]

प्रसृ = [illegible] प्रपद्यते → [illegible]

[illegible] = [illegible]

20 — क्रोशपत्यर्थे वा त = جو اس پر آ رہا ہے ... پڑھا ہے

یہ تو ابھی تم پر آ ... پڑھا ہے — یہ سب ... فضول ہیں ... آ رہی ... +
[illegible]

इति ईडहा एव = ان ... वामिकृत्कण्ठ तालु ब्राह्म मे स्व विलाय

(5) (4) [illegible] — = تالی ... تالو ... برہم ... ادھر ... اُدھر ... کا

प्राधिष्ठान क्रम प्राप्त — یعنی ایک ٹھکانے سے دوسرے ٹھکانے پر ... — اُن ... ادھر سے ... یہی ہوا

ऊर्ध्वतरता क्रम in succession — اوپر کی طرف جانے کا ... ایک ایک کر کے

(5) उत्तर: — یہی — उत्तर: — ... کیا جاتا ہے

तथा उत्तरन्ति = ... اسی طرح اوپر ... तत = اس سے

उत्तरो बन्धः = ... اس کے ... उत्तर: — یہ ... نہیں ہے — [illegible]

(6) उत्तरमुत्तरो = اب ادھر ... मोक्षः = یہی ... ہے

تب اس ... اوپر ... ہے

तत एवं विधा उत्तरा यत्र न सन्ति = ... उत्तर: ... نہیں ہیں ... उत्तर:

[illegible]

= ... ہے

... उत्तर ... یہاں نہیں ہے — [illegible]

[illegible]

No 7

उत्तरे = [illegible] = [illegible]

Line line line
[illegible]

तथ्य = [illegible] तथ्य संवित्तिः = [illegible] ईदृशी = [illegible]

[illegible] → तादृशम् = [illegible] → [illegible]

limitation [illegible] ← इति व्यवच्छेदकथांत = [illegible]

[illegible] तत् यत्र न भवति = [illegible]

→ अव्यवच्छिन्नम् इदम् अनुत्तरम् = [illegible]

[illegible]

इदम् = [illegible] इत्यादि हि = [illegible]

व्यवच्छिन्नं = [illegible] उत्तर, = [illegible] व्यवच्छेद मायाप्रमात्

[illegible]

इति व्यवच्छेदकत्वात् = [illegible] विकल्पात्मनैव =

22

अत एव = [illegible] यावत् = [illegible] अनुत्तरस्य

प्रविविक्षुः [illegible]

मायीयात् प्रमातृ [illegible]

तावत् कल्पित एव [illegible]

विशेषात्मा [illegible]

[illegible]

(41)

اُس وکلپ سے رہت سشن پرمانند بھاؤ میں بھی ادوکلپا بھاؤ بنتر وکلپ بھاؤ سمجھو دیا جاتا ہے ۔ کیونکہ وکلپ رہت شیتا بھاؤ اُسکے بغیر وکلپ بھی نہیں سکتا ہے

اُسکا ہونا یا نہ ہونا وہاں اپنی کلپنا کی سفورن نہیں ہے ۔

وہ نروکلپا بھاؤ ہے جو وہاں اُس انوتر پر

وہاں پر ۔ لیکن انوتر پر پر

22

तत्र तु = اُس پر [illegible] अविकल्पिते - وہ نروکلپ بھاؤ ہے -

यत् अविनाभावित = جو برات وباہت [illegible] اُس بغیر → तत् विना कल्पितरूपम्

- اُسکا سفورن ہی کا ہو جو وکلپ سے پرمانا اُس بغیر رہتا ہے = अस्फुरस्मात्

اُس نور سے بغیر ادوکلپا بھاؤ نہیں ہے ۔ اور اُسکے بغیر وکلپ روپ بھی سفورن میں نہیں آسکتی ہے ۔

तदेव = سوا وہی वस्तुतोऽनुत्तरम् = اصل انوتر ہے

तत्र हि = اُس انوتر भावनादेः = بھاونا وغیرہ کی

अनुपपत्तिः = اُسکی نہ سدھی ہے ۔ وہاں خود سے ہی نش اُپائیوں کی

ननु इति = اگر کہو کہ अनुपायु भावनाकरा = وہ بھاونا کرنی [illegible] भावना करा उज्झित त्वम्

بھاونا کا نا وغیرہ کا اُپائے چھوڑنے والا بھاؤ ہے - اُس کا چھوڑنی بھاؤ

بھاونا کا نہ چھوڑنے والا بھاؤ ہوتا ہے

उक्तं = کہا ہے तत् = نہیں ہے

अनुपयुक्तित एव = نہ اُپائے سے ہی سدھ ہے =

تو اگر وہ کا ہے اسی طوش میں رہ کر بھی اُس کو ایسا سا دیکھو میں نہ رہنے کی خود ہے ۔ تم بغیر بھی کا وہاں رہنے والی انوتر تو ہے کی اس لیے کی پوسیتی ہے

तत् इह शमनुत्तरे = وہ اس انوتر میں व्यवहार वृत्तिरपि = وہ بیوہار وغیرہ میں بھی

सर्वमेव. = سب ویسا ہی ہے

तदुक्तं मयैव स्तोत्रे = وہی میں نے استوتر میں کہا ہے

वितत इव नभस्य विच्छेदैव

प्रतनु प्रतन विभाव्यते जलौघः।

उपवन तर, वेश्मनी भ्रमागा

ध्रुपाधिवशेन तु लक्ष्यते स्फुटे सः॥

23 ...तद्वत् परभैरवोऽतिसौक्ष्म्याद्
अनुभवगोचरमेति नैव जातु ॥
अथ देशाकृतिकालसन्निवेश-
स्थिति संस्पन्दितकारकत्वयोगाः [illegible]
जनयन्त्यनुभाविनीं चितिं ते
झटिति न्यक्कृत भैरवीय बोधाः ॥"

वितत इव = [illegible] नमस्य = [illegible]
[illegible] विचित्रदेव = [illegible] प्रतनु = [illegible]
पतत्र = [illegible] न = [illegible] विभाव्यते = [illegible]
जलौघः = [illegible]

[illegible]
उपवन = [illegible] तरु = [illegible] वेश्म = [illegible]
नीध्र = [illegible] भागात् = [illegible]
उपधिवशात् = [illegible] तु = [illegible]
लक्ष्यते = [illegible] स्फुटरसः = [illegible]

23 तद्वत = اسی طرح परमैरेव = [illegible]

प्रतिसौक्ष्म्याद [illegible]

[illegible]

अनुभवगोचरमेति = [illegible] नैव जातु = [illegible]

[illegible]

प्रथ = [illegible] दिप = [illegible] आकृत्य = کال सन्निवेशस्थिति [illegible]

संस्पन्दित = حرکت आकारत्वयोगा = [illegible] [[illegible]]

जनयन्त्य = [illegible] अनुभाविवी [illegible]

चिति = [illegible] ते [illegible]

[illegible]

भाटिति = [illegible] चकृत = [illegible] भैरवबोधाः = [illegible]

[illegible]

इत्यादि = [illegible] तथा च वक्ष्यते = [illegible]

"उत्तरस्याप्यनुत्तरम" = [illegible]

NO. (8) व्यरव्यायते च एतत = [illegible] सवमेव = [illegible]

नरात्मनः = [illegible] प्राक्तमुत्तरे = [illegible] ततोऽपि = [illegible]

शाम्भवे = [illegible] तथा तत्वादि = [illegible]

(9) भूत, तत्वात्म, मन्त्रेश्वर शक्त्यादिभेदेन = [illegible]

[illegible]

[illegible]

23 स्वात्मन्येव = [illegible] उत्तरोत्तरत्वे = [illegible]

भूतादिष्वपि = [illegible] पृथिव्यादिरूपतया = [illegible]

जाग्रत = [illegible] उत्तरे स्वप्नः = [illegible]

ततः = [illegible] सुप्तं = [illegible] ततः तुर्यं = [illegible]

ततोऽपि = [illegible] तदतीतं = [illegible]

जाग्रदादिष्वपि = [illegible] स्वात्मन्येव = [illegible]

चतुरादिमतया = [illegible] उत्तरोत्तरत्वम् = [illegible]

24 तदेतत् = [illegible] श्रीपूर्वपञ्चिकायां = [illegible]

मयैव = [illegible] विस्तरतो निरूपितम् [illegible]

इह = [illegible] अनुपयोगात् = [illegible]

ग्रन्थगौरवात् च = [illegible] न = [illegible]

वितत्य उक्तम् = [illegible]

तत् = [illegible] इदम् = [illegible]

उत्तराधर्यं = [illegible] द्वैतं = [illegible]

समोहाद्यापि = [illegible] उत्तरत्वे = [illegible]

तथा = [illegible] विप्र = [illegible]

No. 9 राजन्यवैश्यशूद्रान्त्यजाति = [illegible]

[illegible]

45

24/25

विभागमयम =

ऊनाधिकत्वं =

यत्र न स्यात् =

उत्तरत्वम्

भावप्राधान्यम =

उत्तरशब्दस्य

(10) उत्तरा: =

पश्यन्त्याद्याः शक्तयः

(12) प्रघोराद्या (11) पराद्याः

ता यत्र न स्युः =

(13) नुद → प्रेरणे →

इत्यस्य =

नोदनं =

नुत =

तथा =

तरणं =

→ दीक्षाक्रमेण

→ तरः =

→ शिष्य चैतन्ये =

गुरु =

चैतन्यं =

प्रेयति =

तेन =

हंसः प्राणादि शून्य विषुवत् प्रभृतिस्थान भेद =

परिपाटया =

सकले =

वा विष्कलऽपि =

Central Point

पूर्णाहुति =

Ritual

योनि

योजनिकादिस्थित्या:

25

मोक्षदो = [Urdu gloss]   दीक्षा विधत्ते = [Urdu gloss]

तत = [Urdu gloss]   अत्र = [Urdu gloss]   चैतन्यस्य = [Urdu gloss]

स्वप्रकाशस्य = [Urdu gloss]   व्यापिनो = [Urdu gloss]

देशकालाकार = [Urdu gloss]

विशेषाविशेषितस्य = [Urdu gloss]

कथङ्कारम् = [Urdu gloss]   इमा = [Urdu gloss]

विडम्बना = [Urdu gloss] - a matter for laughter.

तत = [Urdu gloss]   सर्वविधो = [Urdu gloss]

'नुदा' =   प्रेरणान = [Urdu gloss] Drive   तरः = [Urdu gloss]

तरणं = [Urdu gloss]   यत्र न भवति = [Urdu gloss]

तत अनुत्तरम् = [Urdu gloss]

यत् वक्ष्यते [Urdu gloss]

"सर्वं यो वेत्ति तत्त्वेन तस्य निर्वाणगामिनी।

दीक्षा भवति ....

Margin: अविशेषता [Urdu gloss]

Top of page: Master ... preach ... pass ... (40) ... valet [Urdu notes]

अन् → श्वस → प्राण

25/26 प्राणिति = → श्वसिति = इति :

क्विपि = अन् - प्राणु =

आत्मा = देहपुर्यष्टकादि :

तथा = अनेन = → जीवनम् = زندگی

अन् = → देहाद्यन्तर्गतेव प्राणन्

भिन्नाभिन्न प्राणाद्य = शून्यता प्राणप्रायाः

जीवनाख्या = वृत्तिः =

यः = शून्यप्रमाता इति प्राणोऽहंता =

तस्यैव उत्तरत्वे सर्वतः = परमार्थतया =

औपाधिक्ये सत्र = यत्र

भैरवैकमयत्वात् =

जडाजडभारतं जगति =

जडे = जीवदेकमग्नः स्थीयते =

जीवता च = जीवनं नाम

प्राणुक्तं ज्ञानक्रियारूपमेकं =

पारमेश्वर्यं सर्वेषां -

परात्रापि = हि स्ववत् =

(48)

[illegible]

27

देवादेव = [illegible] पृथक्क्रिया भाति = [illegible]

यत् पुनः = [illegible] प्रशान्त = [illegible]

तत् क्रमेदेनैव = [illegible] स्वप्रकाशम् = [illegible]

(Life force) [illegible] एतदेव च = [illegible] परमार्थः = [illegible]

यदुक्तं श्रीमदुत्पलदेवपादैः : [illegible]

"ज्ञानं क्रिया च भूतानां जीवतां जीवनं मतम्"

[illegible]

तथा च = اور جیسا जीवनं = زندگی [illegible]

(15) ज्ञानक्रिये एव इति = [illegible]
या → या कला

→ "क्र" इति च = [illegible] "क्र" या इयम् = [illegible]

प्रमायीया क्रौतनै = [illegible] क्रौत → [illegible]

नैसर्गिकमहा = [illegible]

महाप्रकाशविश्रान्त [illegible]

निस्तरङ्गचिदुदधि = [illegible]

स्वात्म चमत्काररूपा = [illegible]

प्रक्तोल्लासमय = [illegible]

[illegible]

(49)

27 विश्रामस्थानरूप =

परिपूर्णा = प्रतिभाव प्रथम =

पर्यवसानोऽभय = उभयभागिनी :

कला = कला तस्या एव = اسی کی वक्ष्यमाणनयेन :

या इयं = "नुत" → Drive
He drives himself forward

विसर्गान्तता = तस्या एव = اسی کی

"तरः" प्लवने → सर्वोपरि

(16) वाजित्व यत्र =

प्रविवेचमाना = देशकालगमनागमनादि

द्वैतसापेक्षा =

→ "नुतं" → प्रेरणा → क्रमात्मका क्रियामयी =

यत्र = جہاں तत = وہاں "प्रनुत"

प्राकाशादि = लोकप्रसिद्ध्या =

ततोऽपि = सा तत्प्रायम = प्रनुत्तरम

तस्यापि हि = आकाशादि =

संयोगिघटादि = चित्रोपाधिवशात =

समवायिपाकादियोगात् च =

स्थायापि = देहस्थी सक्रमा क्रिया =

[illegible] Admit [illegible] स्वीकृत [illegible] Admit [illegible] apprehend [illegible] ×

(50)

28

संवित्तत्त्वे तु = [illegible] सवितो = [illegible]

अनवच्छिन्न = [illegible] पूर्णस्वातन्त्र्यैश्वर्यसार = [illegible]

"घटात्मकम्" [illegible] विच्छिन्न चमत्कारमय = [illegible]

विश्रान्त्या = [illegible] स्वीकृत = [illegible] ×

प्रोड्क्ष्यमान = [illegible] आविर्भाव [illegible]

सकलेदन्तास्पदभावभू = [illegible]

विराभासे = [illegible] सदाभासमाने = [illegible]

स्वीकार = [illegible] भासीकृतानाभास = [illegible]

इदन्ताभास = [illegible] तदनाभाससार = [illegible]

देशकाल = [illegible] उपेक्षाक्रमाभावात् = [illegible]

[illegible]

[illegible]

28 आत्मैव = [illegible] → स्वात्मविमर्षी = [illegible]

संरम्भमयी = [illegible] मत्स्योदरीमतादि [illegible]

प्रसिद्धा = [illegible] विमर्शाभिधा = [illegible]

क्रिया = [illegible] इति तदेव अनुत्तरम् = [illegible]

29 अतिशयमात्रे = [illegible] Comparative degree superiority — तमपो विधिः = [illegible]

द्विवचन = [illegible] अपि अविभज्योपपदे = [illegible]

अत्र = यहाँ तरप = "तरप" [illegible]

तत्र अयं = [illegible] अयं शुक्लोऽयं = [illegible]

अयं शुक्लः = [illegible]

अनयोः : [illegible] अतिशयेन = [illegible]

शुक्लः = [illegible] इति वाक्ये अयमर्थः = [illegible]

अनयोः = ان دو शुक्लयोः = سفید میں मध्यात् = [illegible]

अतिशयेन = زیادتی Comparatively अयं शुक्लः [illegible] शुक्लतरः

[illegible]

एवं तु = [illegible]

29 प्रशुक्लानामयमतिशयेन = [illegible] शुक्ल:

शुक्ल: इति = [illegible]   कोऽयमधिकोऽर्थ: - [illegible]

तथाहि - [illegible]

अयं = [illegible]   प्रासाद: [illegible] शुक्ल: - [illegible]

अयं पट: शुक्ल: = [illegible]

अयं हंसश्च शुक्ल: = [illegible]

उं, तम   एषां सातिशय: [illegible] - [illegible]

शुक्लतम: इति [illegible] तम: [illegible]

तत्र प्रासादोऽपि शुक्ल: [illegible]

पटोऽपि शुक्ल: [illegible]

इति किमिव = [illegible]

अधिकमुक्तं स्यात् [illegible] — Comparative, Superlative [illegible]

तमपि = तम प्रत्यये = [illegible]

एवं विधवाक्य करणामयुक्तमेव - [illegible]

न च तरप: तमप: [illegible]

29 अधिकमतिप्रायस = [illegible] अभिदध्यात = [illegible]

एवं तावत् तु स्यात् = [illegible]

[illegible] अविवक्षिते = [illegible] प्रतियोगिविशेषे [illegible]

-तम प्रयोगः = "तमः" [illegible]

प्रतियोगिविशेष = [illegible] उपेक्षायां

तु तरप = [illegible]

प्रतियोग्य = [illegible] अपेक्षैव = [illegible]

30 द्विवचन विभज्य = [illegible] उपपदार्थे = [illegible]

एक एव हि = [illegible] प्रतियोगी भवेत = [illegible]

[illegible] अनयो = [illegible] अये = [illegible]

पटु क्लो = [illegible] प्रतिप्रायेन = [illegible]

[illegible] इति न तृतीया = [illegible] प्रतीयते

[illegible] निर्धारणार्थेन प्रथमस्यैव = [illegible]

प्रतियोगित्वागते = [illegible] — [illegible]

न च = [illegible] द्विप्रभृत्यपेक्षा = [illegible]

[illegible]

30/

भवति = [illegible] एकस्य = ایک کا

युगपत = ایک دم → एकैकापेक्षा = [illegible]

मता = سمجھی

इति तस्य क्रमेण [illegible] नाधिकोऽर्थः = [illegible]

कश्चित = [illegible]

"तारतम्यम्" इति = - [illegible]

इति तु प्रयोगः = [illegible]

क्रमातिशये = [illegible] पर्यायत्वेनैव रूढः [illegible]

न तु तरप् - तमप प्रत्ययार्थे = [illegible]

प्रनुगमात = [illegible]

"तार्य ताम्यम" - [illegible] इत्याद्यपि हि स्यात

[illegible]

It is irrelevant here ←

नदलम् = [illegible] प्रकारेण = [illegible]

श्रुतवर्वैकोपाल = [illegible] प्रयत्नेन = [illegible]

[illegible]

Superlative — तरप
Komparative 'तरप'
तम

(55)

30

इह तु = [illegible] उतर क्रमिक = [illegible]

प्रतियोग्य पदार्थो = [illegible]

"अनुत्तमम्" [illegible] इत्यादि [illegible]

प्रयोगे [illegible] अपयमेव अर्थः = [illegible]

तथाहि = [illegible] आगमान्तरे = [illegible]

"अद्यापि यन्न विदितं सिद्धानां बोधशालिनाम्।
न चाप्यविदितं कस्य किमप्येकमनुत्तमम्॥"

अद्यापि = [illegible] यत् = [illegible] न विदित = [illegible]

अनुत्तमम = [illegible] सिद्धानां = [illegible] बोधशालिनाम = [illegible] न च अपि विदितं [illegible]

कस्य = कस्य = [illegible] किमप्येक = [illegible] एकम् [illegible]

सर्व स्वातन्त्र्यसारा = [illegible] अकलित = [illegible]

क्रियाशक्ति = [illegible] शरीरम् = [illegible]

अनुत्तरम = [illegible]

तदुक्तमे उत्पलदेवपादैः [illegible]

31

"सक्रमत्वं च लौकिक्याः क्रियायाः कालशक्तितः
घटते न तु शाश्वत्याः शाश्वत्याः स्वात्प्रभोरिव॥"

[illegible]

Tannie gandv.

[illegible] कालप्राकृत:

सक्रमत्वं च = [illegible] लौकिक्या: क्रियाया: [illegible]

घटते न तु = [illegible] शाश्वतता प्रामाण्या = [illegible]

तत् व्याख्यातमिदुमनुत्तर = [illegible] स्यात प्रभोरिह

षोडशधा = [illegible] 16 ([illegible] 16)

यदुक्तं सार शास्त्रे :- [illegible]

अनुत्तरं तदहृदयं हृदये ग्रन्थिरूपता।
ग्रन्थिं षोडशधा ज्ञात्वा कुर्यात्कर्म यथासुखम्॥

अनुत्तर = [illegible] तदहृदये = [illegible] हृदये ग्रन्थिरूपता = [illegible]

ग्रन्थिं षोडशधा = [illegible] 16 ज्ञात्वा = جان کر कुर्यात = کر

यथासुखम = [illegible]

तथा : [illegible]

'हृदये यः स्थितो ग्रन्थिः ....'

[illegible]

कथं [illegible]

तत् इदृक = [illegible] अनुत्तरं = [illegible]

केन प्रकारेण = [illegible] किम = کیا ہے

उत्तररूप = [illegible] परित्यागेन = [illegible]

अ = उत स्वित = یا अन्यथा = [illegible]

उत्तरता [illegible]

32 इति + कश्च अयं प्रकारः = [illegible]

[illegible] { यदनन्तरे = [illegible] सर्वमिदं = [illegible] हि =

ज्ञान ज्ञेय ज्ञात = [illegible] सर्वत एव = [illegible]

अन्योन्ये = [illegible] भेदमये = [illegible]

विरोधम = [illegible] उपलभते = [illegible]

ततश्च = [illegible] इदम् = [illegible]

अपोत्ताराधेय = [illegible] भवदेव = [illegible]

इति = कस्मिंश्च = [illegible] प्रकारः

मोक्षो एव = [illegible] किं वा = [illegible]

बन्धाभिमतेऽपि = [illegible]

"थ" इति थमुप्रत्ययस्य = [illegible] 'थम' [illegible]

"कथं" विभक्तिविशेषार्थे [illegible]

प्रतियमेन =

प्रकारमात्रे = [illegible] "थम" [illegible] विधानात् = [illegible]

प्रकारमात्रविषय = [illegible] "कथम" [illegible]

एव अयं प्रश्नः = [illegible]

[illegible]

Page 34 (old)

तथात्वदार्ढ्यं परिवृत्य ------ ऽनुत्तरस्वरूपतादात्म्ये ...

भवति —:=

مطلب یہ کہ "परिवृत्ति" — رجعات समूचे کل کو انوتر میں کرنے کی ضرورت یا ہونا
روکی وشو آبھاس کو انہتا روپی انوتر آبھاس میں پہونچتا ہوتے سے وشو آبھاس کو
سمجھنے سے چاروں طرف آسکتے تا سے سری ورش "ترودم" اندھا ہے۔ یعنی سرکوت
کا وناس ہو جاتا ہے۔ اسی سدھی کو دیتا ہے۔ ظاہر بات ہے کہ انوتر بھاؤ ہم
ساکھشاتکار ہونے کی اوستھا میں تمام سنسار کل انوتر سے ہونے لگتا ہے۔ جیسے
کیا گیا ہے "کہ انوتر اور وشو ایک ہم ذریعے یہم بھاؤ اور اس آتما مطلق
سروپ ہوتے ہم بھاؤ کا ساکھشاتکار لیتے اور سنسار کی سرادھ رہنے کو بھی
شو بھاؤ میں کھویا سمجھا جاتا ہے۔ اسی کو کھو کو تک اور سرادھ ہتا
میں نے ہو جاتا کہا کیا جاتا ہے +

— : شلوک ۱۲ سے ۱۳ स२८१ : ۱۲

کوئی بھی سادھک اپنی شکھشا سے بابر ملکی مہر سار روپی وشو کو جب سروپ میں
स२२४ य२ ५ि२
سی سکھرا تا ہے۔ اور اہم سرادھ کہہ دی کو لیکر سفر اور نفوش کا کال سے
کھشند کو گراس کر کے درمیان میں ہی کھشی تم لا اور لا جواب شکتی
کی پراپت کرتا ہے +

36

بھگوان کو انند ...
وہ بھاؤ ...

इदन्तात्मक विश्वाभासम्
अहन्तात्मनि पूर्णाभासे
संस्थाप्य — परिवृत्य

... شرکت سے ہی نئی ہوتا ہے

... وشو: —
... کا سروپ ہی ہے
... سروپ کہیں میں ملتا
... سروپ سے وہ اس
ہے
... خود ہی ہرجانا ہوتا +

[illegible]

32/ "देव" इति व्याख्यातम् = [illegible]

कुले → स्थूल सूक्ष्म पर, प्राणेन्द्रिय भूतादि = [illegible]

समूहात्मतया = [illegible]

कार्यकारणभावात् च = [illegible]

यथोक्तम् इति = [illegible]

33 तथा कुले = [illegible] → बोधस्यैव = [illegible]

प्राधान्यरूपतया = [illegible] [[illegible]]

यथावस्थानात् = [illegible] बोधस्वातन्त्र्यादेव च = [illegible]

प्राधान्यता

परस्य = [illegible] बन्धाभिमानात् = [illegible]

उक्तं = [illegible] हि = [illegible] कुलसंस्थाने बन्धुषु च = [illegible]

[[illegible]] — [illegible]

नाहि = [illegible] प्रकाशैकात्मक = [illegible]

बोधकरूपत्वात् = [illegible] ऋते = [illegible]

34/ किमपि = [illegible] एषाम् प्रकाशमान = [illegible]

वपुरूपपद्यते = [illegible]

तत्र = [illegible] कुल = [illegible] भवा = [illegible]

कौलिकी = [illegible] सिद्धिः = [illegible] → [illegible]

*ارتعاشات پیدا ہو جانا سموت پیدا کرنا [illegible] پیدا ہو جانا + وہ ہوتا ہے سدھی کو دینا

پرکاش روپ جو دھرم روشنی کا دیر ہوتا ہے ←

Pervade
← گردو پیش پیدا کرنا

तथा तु = [illegible] दादये = [illegible] परिव त्य = [illegible]

आनन्दरूपं = [illegible] (روپ) हृदयस्वभाव = [illegible]

→ परसंविदात्मकं = [illegible] शिवविमर्श = [illegible]

तादात्म्यं = [illegible] तां = [illegible] सिद्धिं = [illegible]

ददाति = [illegible] अनुत्तर स्वरूप = [illegible]

तादात्म्ये = [illegible] हि = [illegible] कुले = [illegible]

तथा = [illegible] भवति = [illegible] ([illegible])

यथोक्तम् = [illegible]

इदन्तात्मक विश्वाभासम्
अहन्तात्मनि पूर्णाभासे
संस्थानम् — परिवृत्य

"व्यतिरेकेतराभ्यां हि निश्चयोऽस्य निजात्मनो:।
व्यवस्थिति: प्रतिष्ठाख्य सिद्धिर्निवृत्तिरुच्यते॥"

اوپر کے لئے دو شریک [illegible] نفی ہوتا ہے

ہم ہیں اور تم :-

اگر پرماتما ہر سروپ میں ہے
تو میرا سروپ بھی اس میں ہے

اگر میرے سروپ سے دوا [illegible]
تو میں خود ہی پرماتما ہوں +

व्यतिरेक = [illegible] — इतर → [illegible]
अन्य = [illegible]

व्यवस्थिति: = [illegible]
प्रतिष्ठाख्य = [illegible]

सिद्धि = [illegible]

निर्वृत्ति = [illegible]

{ اوپر کے لئے دو شریک ہے
{ اپنے سروپ کو پرماتما لیکر +

34/35

(60)

सद्यः

सद्य इति शब्दः =

समाने = برابر   अहनि = دن،   इत्यथ वृत्तिः

कात्पनिके च अर्थात नत्वमुख्यकाल्पनिके

उत्तानयेन =   प्रतिज्ञा सविद्ध पुक्ति कथं स्यात्॥

अनवस्थितत्वात् =   समाने = برابر -

क्षणे =   सद्यः इत्यत्र =   अर्थे =   वर्तते -

समानत्वे च =   क्षणस्य   न सादृश्यम्:

अपितु =   तत्त्व पर्यव सायि एव =

एवमेव =   सद्यः शब्दात =   सद्यः

प्रतीति

अतः =   तस्मिन्नेव =

क्षणे इति =   वर्तमानक्षणस्य =

It is restricted to that very moment when Saksha... takes place.

सावधारणत्वेन =

भूत भविष्यत क्षणान्तर =

निरासे =   तदुभया पेक्षकलना =

(past + future)

प्राणे =   वर्तमानस्यापि =

कालतो =   निरस्यते =

established

35

कुलका विशेषण →

यतो = यावत् = इदम् =

परमेश्वरस्य = मरैव माना

रश्मिचक्रात्मकं = निजाभासस्फारमयं

कुलमुक्तम् =

तत् च = सतत् =

सततमुख = परमैव संवित्तः

तादात्म्यलक्षणा

gets established ← निरोधमेति = Rests itself तदा =

This 'Kula' is only expansion of His Self

तदेव = परमानन्दामृतास्वादमयम् =

eternal state of consciousness

देशकालं कालितम् = अनुत्तरं =

ध्रुवं = विसर्गरूपं =

सततोदिते =

तदुक्तं श्रीवाद्यतन्त्रे =

" संरुध्य रश्मिचक्रं स्वं पीत्वामृतमनुत्तमम् ।

कालोभयापरिच्छिन्ने वर्तमाने सुखी भवेत् ॥

(۱) پُران پرماٹا
(۲) پور لیکھ
(۳) دیگر پرماٹا
(۴) ...

संरूढ्य = ... रश्मिचक्रं स्व = ...

पीत्व = ... अमृतमुत्तमम् = ...

काल = کال उभय = دونوں परिच्छिन्न = ...

वर्तमाने ... सुखी भवेत = سکھی ہوگا

Tense ... past & future ... वर्तमान

36

विस्तारितश्च = ...

विस्तरतोऽन्यत्र = ...

मयैव = ... कालोभयापरिच्छेद = کال اور دونوں ...

तथा = اسی ... कुलाल = کمہار

प्रासादहाद = ... प्रागता = ... सिद्धि

भेदप्रासाना = ... नीलसुखादीना = ...

निश्चयरूपा = ... तां = اس ... ददाति इति = ...

प्रासीरादयो ... हि = ... भागिति = ...

अनुत्तर ध्रुव विसर्ग = ... वीर्यावष्टान =

(...)

[illegible]

[illegible]

36/ अकाल कलितन = [illegible]

प्रासादि मध्यम = [illegible] सोपानारोहणेव [illegible]

[illegible] Connecting God [illegible]

भावानां = [illegible] तथात्व = [illegible]

निश्चयरूपां = [illegible] सिद्धं = [illegible]

विदधते = [illegible]

यथोत्तमम् = [illegible]

अपि त्वात्मबल स्पष्टीत पुरुषस्तत्समो भवेत"

[illegible]

तथा: [illegible] ...... करस्थानीव देहिनाम!

[illegible]

तथा कुल = [illegible] द्विवद्धनयात्मनि = [illegible]

संनिहितेऽपि = [illegible]

सिद्धिरुत्तानयेन = [illegible]

Confirmation [illegible]

→ जीवन्मुक्ततामयी = [illegible]

समभिलषितासामाद्द [illegible]

प्रसवपदे = [illegible]

[illegible]

36 ततो सद्यः = [illegible] अनाकालमेव = [illegible]

भावनाकरणादि [illegible] रहितत्वेनैव = [illegible]

ददाति = [illegible] → [illegible]

यदुक्तं श्रीसोमानन्दपादैः = [illegible]

"भावाकरणाभ्यां किं शिवस्य सततोदितेः।"

[illegible]

37 तथा = [illegible] "एकवारं प्रमाणेन शास्त्राद्वा गुरुवाक्यतः

[illegible]

ज्ञाते शिवत्वे सर्वस्थे प्रतिपत्त्या दृढात्मना

करणेन नास्ति कृत्यं क्वापि भावनयापि वा॥"

ज्ञाते शिवत्वे = [illegible] सर्वस्थे = [illegible] = [illegible]

प्रतिपत्त्या दृढात्मना = [illegible] करणे = [illegible] नास्ति कृत्यं = [illegible]

क्वापि भावनयापि वा = [illegible]

इति। कुले जाता = [illegible] सिद्धिः = [illegible]

[illegible]

प्राक्त-ह्रादिरूप = [illegible] प्रसरणात् = [illegible]

[illegible]

[illegible Urdu handwriting] … بیرا و باس … push کرتا ہے

37

آرम्भ = [illegible] बहिर्भाव = [illegible] पटल = [illegible]

विकास = [illegible] पर्यन्ते = [illegible]

भेदावभासना = तां = [illegible] ददाति [illegible]

→ तदेव हि = [illegible] अनुत्तर = [illegible]

महाप्रकाशात्म = [illegible] स्वतः कृतबोधमय = [illegible]

विश्वभाव प्रसरम = [illegible] अनुत्तरत्वादेव = [illegible]

निरतिशय = [illegible] स्वातन्त्र्यैश्वर्य [illegible]

चमत्कार भरात = [illegible] भेदं = [illegible]

विकासयति = [illegible] न हि = [illegible]

अप्रकाशरूपं = [illegible] भावविकासप्रकाशो = [illegible]

कारणं भवेत = [illegible] प्रकाशात्मके = [illegible]

चेत = [illegible] नूनं = [illegible] तत = [illegible]

परमेश्वर भैरव भट्टारक रूपमेव = [illegible]

इति किमपरेण = [illegible] वाग्जालेन = [illegible]

[illegible Urdu handwriting]

Left margin notes:

اور [illegible] accept کرتا ہے [illegible]

It is all digested in Samvith

[illegible Urdu handwriting]

38/ तथा = ایسا येन = جس अनुत्तरेण = [illegible]

"येन विज्ञातमात्रेन"

विशेषेण = اس خصوصیت سے → ज्ञाता = جاننے والا → मात्रा = ماترا

मानेन = ماننے → प्रमात्मना = [illegible] त्रेण → [illegible]

पालने = پالنا पतित्वे = → यासौ = [illegible]

प्रमातृ-प्रमाण प्रमे = جاننے والا - پرمان - [illegible] → [illegible]

प्रमितिरूपाणां = [illegible] ता मात्रा = [illegible] ماترا

[illegible] विज्ञाता = [illegible] येन = جس तत् = [illegible]

विज्ञातमात्रं = [illegible] جاننے سے

तथा = ایسا विशेषेण = خصوصیت سے - [illegible]

[illegible] प्रतिपत्ति = [illegible] दार्ढ्यबन्धने = [illegible]

ज्ञाते = [illegible] तत् = وہ

[illegible] विज्ञातमेव = [illegible] न पुनः = [illegible]

جب ایک وقت میں جانی ہوئی

کسی وقت

39 भावनीयं = بھاؤنا کرنی

सकृद्विभातात्मत्वात = جس میں ہر وقت پاس جان ہوتی ہے

[illegible] ہے

→ तथा = ویسے ہی

ज्ञातमात्रं = جانا ہوا

→ ज्ञातमेव = جانا ہوا / وہ جانتا ہی

→ ज्ञेयैकरूपत्वात = گنی ہر سمے ایک ہی ہونے سے گنی اس لیے بن نہیں ہے

न तु = نہیں ہے

कदाचित् = کسی وقت

ज्ञातृरूपे = گیانی روپ

घटादि = گھٹ نہیں بن سکتا / وہ گنی ہے

وہ ایسے ہی

تथा = ویسے ہی

ज्ञाता = جانتا

گیان کا روپ [illegible]

ज्ञेयरूपा = گنی روپ ہوا

भेदमयी = بھید سے بھرا ہوا

इयं = یہ

→ माया = مایا

तदुभयं = وہ دونوں

گنی اور گیانی (دونوں)

विमते = دور ہیں ہوا

यत्र = جہاں

तत् = وہ

विज्ञातमात्रेण

विज्ञातमात्र = [illegible]

घटादयो = گھٹ وغیرہ

यत्र = جس میں

ज्ञात्रेकरूपत्वेन = گیانی کے ساتھ

[illegible]

نوٹ - ابھی تک 96 [illegible] زیر بحث ہوئی

Subject and Object میں جا پایا جاتا ہے - بے بھید [illegible] approach [illegible]

[illegible] (ابھید بھیتر) [illegible]

37/ स्वप्रकाशात्मनि :

यत्र च माया न प्रभवति = جس اندر میں مایا سمرتھ نہیں ہے

तेन विज्ञातमात्रेण = لہٰذا اس کے [illegible] جانتا ہے

[illegible] → खे ब्रह्मणि = برہم آکاش میں - "खेचरी समता" [illegible] Find out

अभेदरूपे = وہ ابھید روپ ہے   स्थित्वा = اسی میں رہ کر

برہم میں سے جب آکاش میں گذر کر وچار کرتی ہے - جہاں ابھید روپتا ہے

चरति → چلتی ہے - وہاں کھیچری ہے

وشیوں کو جانتی ہے [illegible] - وہ وشے [illegible] جانتی ہے

विषयमवगमयति = وشیوں کا [illegible]

[illegible]
(1) کھیچری
(2) گوچری
(3) [illegible]
(4) دکچری

तथा = اور [illegible]   स्नानदानादि चेष्टा = [illegible] [illegible] - [illegible] ایسی چیشٹائیں کرتی ہے -

विधत्ते = کرتی ہے   स्वरूपे च आस्ते = [illegible] - ابھید میں ہی

इति खेचरी = اسے کھیچری [illegible]

अन्तर्बहिष्करणं = اندر - باہر [illegible]   तत्रस्थे = اس کا [illegible]

सुखादि नीलादिरूपा = [illegible] - [illegible]

[illegible]

[illegible]

३१ [illegible]

तथाहि = [illegible]   वेद्यवेदकभाव = [illegible]

अनुल्लासिपदे प्राप्त्य = [illegible]

संवित् मात्र हृक = मात्र [illegible]

उल्लासे = [illegible]   संवेद्यगतान्तर = [illegible]

एकरूपदिश्यमानभेद = [illegible]

उल्लासे [illegible]   स्फुटभेदोद्रेके च = [illegible]

क्रमेण = [illegible]   व्योमचरी = [illegible]

गोचरी - दिक्चरी - भूचरी भूता था: प्रातय: = [illegible]

ता वस्तुत = [illegible]   उक्तनयेन = [illegible]

स्वभावचर खेचरीरूप प्रातय विमत्ता एव = [illegible]

इत्येकैव = [illegible]   सा = [illegible]   परमेश्वरी = [illegible]

शक्तिः = [illegible]

यदुक्तम् = [illegible]

40/ प्रक्रियोऽस्य जगत् कृत्स्ने शक्तिमोऽस्तु महेश्वरः

~~[illegible]~~ ان پرکرتیوں کی شکل میں سارا جگت — آپ شکتی مان ہے —

یہ سارا جگت اسی شکتی والے شکتی مان کا ہی روپ ہے — خود شکتی مان ہے

इति। ततः स्त्रीलिङ्गेन = اسی لئے استری لنگ سے   निर्देशः = نام لیا گیا ہے

नहि = نہیں   आत्मनो = آتما کو   मनसः = من کو

इन्द्रियाणां = اندریوں کو   बाह्यानां च = باہر

भेदविषयस्य = بھید وشئی کا   व्यवस्थापने = ٹھہراؤ

व्यवस्था च युज्यते = یہ دونوں بلکہ ٹھیک ہے

अभिसंधानाद्ययोगात् = جو اس کا انوسندان کا پرکاش ہوگی

अप्रकाशत्वात् च = اپرکاش کا

सर्वे खेचरी = [illegible]

काम क्रोधादिरूपतया = [illegible]

वैषम्येन = [illegible]   लक्ष्यते = [illegible]

50

تسیا (तस्या) = اُس کی   समता = اُس کی برابری کو

सर्वत्रैव = ہر ایک جگہ ہی   परिपूर्णभैरवस्वभावात् = پورن بھیرو کے سوبھاؤ سے جو ہر وقت ہر جگہ پورا ہے

अणुमात्रमपि = تھوڑا سا بھی - اگر اس میں تھوڑا سا بھی

अविकलानुत्तरस्वरूप = نہ گھٹنے والے انتر سروپ کا

اور کل و انتر سروپ کا - اس کا اپری گیان ہو جانا تھوڑی سی بھی چوک ہونا

अपरिज्ञानमेव = اُس کو نہ جاننا   चित्तवृत्तीनां = چت کی ورتیوں کی

वैषम्यं = نہ برابری   सत्त्वं च = سب ہی ہے

संसार = سنسار ہوتا ہے

अपूर्णाभिमानेन = نہ پورن ماننے کے ابھیمان سے   स्वात्मनि = اپنے سروپ میں

अणुत्वापादनात् = چھوٹا بنانے کا گرہن کرنے سے

आणवमलस्य = اس انو مل کا   तदपूर्णरूप = وہ جو نہ پورن روپ

परिपूर्णाकाङ्क्षायां = [illegible] پورنتا چھوڑ کر اپنے آپ کو

भेददर्शनात् = بھید دیکھنے سے / بھید کو پرانت کرنے سے   मायाख्यस्य = یہ مایا مل ہوتا ہے

मलस्य = یہ مایا مل کا پیدا ہوتا ہے

یہ جو پورنتا ہے اس پورنتا میں بھید دیکھنا ہے - یہی مایا مل ہے - [illegible]

५/ तत् शुभाशुभा = [illegible] वासनाक्लेश = [illegible]

कार्ममलस्य च = [illegible]

उल्लासात् = [illegible] स्वरूपापरिज्ञानमय

[illegible]

तत् वैषम्यनिवृत्तौ = [illegible]

मलाभावात् = [illegible] क्रोधमोहादिवृत्तयो

[illegible]

हि = [illegible] परिपूर्णभगवद्रूपस्वभट्टारक

[illegible]

संविदात्मिका एव =

यदुक्तं श्रीसोमानन्दपादै: [illegible]

"...... ... उत्सरत्प्रकृतिः शिवः।"

[illegible]

(73)

तत्तत्स्फुरत्ता सांकर्य लब्ध प्रसरस्थैर्यरूपा =

तथा: "सुखे दुःखे विमोहे च स्थितोऽहं परमः शिवः

दुःखेऽपि प्रविकासेन स्थैर्यार्थे धृतिसंगमात्"

क्रोधादिवृत्तयो =   हि =

चित् चमत्कार तादात्म्यात् =

अन्यथा =   तत्स्वरूपलाभास्यैव:

प्रयोगाच्च =   परमैश्वर्य: =

करणदेवता एव =   भगवत्यस्तास्ता:

क्रीडा वितन्वत्य: =

शिवकीयस्य =   तथा त एव → दीधितिरूपा =

तत्तदुच्चाटन - मारण - शान्त्यादिरूपेषु =

कर्मसु =   परिकल्पित =

तत् तत् समुचित =   [illegible] =

- 48 -

ہر ایک دو دو پرکار میں - رودر روپ
سومیہ روپ - لہذا رودر روپ

42 सौम्यरौद्रप्रकारा: = سومیہ رودر - کرودھ والی اور شانت سوروپ کی شکتیاں

कृत्यादिभेदात = ان کاموں کے بھید سے / ان کرموں کے بھید سے   देवतात्वेन = ان کو دیوتا سمجھ کر

उपास्या = پوجا کی جانے والی   उक्ता: = کہی گئی   मतादिशास्त्रेषु = مت آدی شاستروں میں

भगवद्भैरवभट्टारक = بھگوان بھیرو بھٹارک کی

परिवारभूताश्च =

यथोक्तम = جیسے کہا ہے

उच्चारने काकवक्त्रा .....

جس وقت کوئی اچارن ہو - جس دیوی کا منہ کوے کا سا ہے اس کی اپاسنا کی جاتی ہے

इत्यादि उपक्रम्य = یہاں سے شروع کر کے

کا وغیرہ کو دھارن [illegible]   "ता एव देवदेवस्य रश्मय: कादिधारिका:"

وہی دیوتاؤں کے دیوتا کی رشمیاں ہیں - یہی क آدی ورنوں کو دھارن کرنے والی

इत्य   'क' آدی ورنوں کو دھارن کرنے والی مندرجہ شکتیاں

دیوتاؤں کے بھی دیوتا شو کی رشمیاں یعنی اپنا شکتی پریوار ہے

(75)

جب اس کی اصلی پہچان نہ ہو جائے تو یہ وشیشر اکو شکتی کو اختیار کرنے والا نہایت کٹھن

وکلپ روپ شکتیاں جانی اور ان کے ذریعے سے حجت رب سروپ ڈال کر اور آگھنی وا لی شکتی بھادتی ہے

43 तथात्वेन = اس تु = تو अपरिज्ञातस्वरूपा =

نہ جاننے کے روپ ہونے سے جب یہ سروپ شکتیاں نہ جانی ہوں

चितचमत्कारे = اس چت چمتکار کو विकल्पदशि = جو وکلپ میں ہی

دونوں کو اٹھاتی ہیں وکلپ بعد از وکلپ تو یہ چت چمتکار کو تردد دینے والی ہیں۔ اچھادت کرتی ہے

निर्विकल्पैकसारे = نروکلپ ہی جس کا سار ہے तेन तेन = اس اس

कर के

विचित्रवर्णाक्षरपुञ्जात्मना = نانا پرکار کے اکھشروں کے سموہ

घोरतरात्मना = اس سے بڑھ کر گھور سروپ विकल्परूपेण = وکلپ روپ سے

سروپ میں گورتری شکتیوں کے دوارا | مطلب شکتیاں روپ سے

देवतात्मना = اس دیوتا بھاؤ سے प्राक्तनकर्मप्रवेशेन =

شکتیاں روپ سے مطلب اس اندر جانے سے

اس سے پہلے کرموں کے

*. तिरोधत्स्व: = ڈھکنے میں لاتی ہیں

اس سے یہ چت چمتکار پر دے ڈال کر سروپ کا تردد ہو جاتا ہے

کبھی دیوتا بھاؤ وکلپ میں آتی ہے کبھی ادھر بھاؤ وکلپ میں آنے سے اب یہ شکتی پر چھا جاتی ہے

संसारिक पापयु पशुभाव दायीन्य:

سنساری جو ہے اس پشو بھاؤ کو دینے والی ہیں

اس حالت میں تب یہ گورتری شکتیاں (اگھوری و شمبھا بھاؤ روپ) سروپ کو اچھادت کر کے

پشو بھاؤ کو دینے والی بنتی ہیں یعنی نروکلپ چت چمتکار کو ڈھکنے میں لاتی ہیں

43 यथा उक्तम् = جیسا کہا ہے

पीठेश्वर्यो महाघोरा मोहयन्ति मुहुर्मुहुः ॥

اس پیٹھ پر جو شکتی روپ دیویاں ہیں بہت بھیانک ہیں۔ وہ بار بار اپنی طرف سے [illegible] کو موہ میں ڈالتی ہیں

تथا = ایسے ہی

گور شری شکتی

विषयेष्वेव = وشیوں میں ہی [illegible]

संलीनानधोऽधः = [illegible] نیچے [illegible]

पातयन्त्यणून् =
جیووں کو گراتی ہیں

तथा = ایسے ہی

शब्दराशिसमुत्थस्य शक्तिवर्गस्य भोग्यताम्
कलाविलुप्तविभवो गतः सन्स पशुः स्मृतः

شبد راشی سے اتپن ہونے پر جو کلا شکتی گور شری شکتیوں (دیوتاؤں) کو بس میں ہو جاتا ہے - ان کی بھوگ
کو [illegible] میں [illegible] جاتا ہے - deep [illegible] جاتا ہے - وہ پشو ہوتا ہے - [illegible]

جس وقت جاتی سروپ پرکاش ہوتا ہے

45 ज्ञातस्वरूपा: = گیان سروپ   ता एव = وہی

उक्तयुक्त्या = کہی ہوئی یکتی سے   जीवन्मुक्ततां प्रदा इत्य: = کو یہ جیون مکتی کی دینے والی بنتی ہیں +

तथा उक्तम् = ایسا کہا ہے

جس کے لئے

यदा त्वेकत्र संरूढस्तदा तस्य लयोद्भवौ
नियच्छन्नु भोक्तृतामेति ततश्चक्रेश्वरो भवेत् ॥

यदा तु एकत्र = جب ایک جگہ سروپ میں ہی   संरूढ: = روڈ ہو جاتا ہے   तस्य लयोद्भव: = کو اس کی لے ہو نکلنے ... فکر میں نہیں ہوتا ہے

وانشرتا ہے - नियच्छन → handle کرتا ہے - اس کی کو - وہی ... - اس کا ادھیکار hold کرتا ہے

دیکھتا ہے کہ خالص کیا ہوتا ہے

इति। स्वरूपापरिज्ञाने च = ... سروپ کا جاننا ... ہے اور جو ان ورتیوں پر ...

→ एतासु = ان میں   वृत्तिषु =

उदयसमय = اٹھنے کے وقت   निर्विकल्पैकरूपासु = جو نروکلپ ...

विकल्पोऽपि = جو وکلپ ایک ہے   उदयमानो = اٹھتا ہوا

वरीराशि समारब्ध =   جو شبد راشی ... سے شروع کیا ہوا

तत् तत् = وہ وہ   विचित्रशब्दारूषितत्वेऽपि = نانا پرکار ... رنگی

न = نہیں ہے   ताद्दशेन = اس ورتی والے ... سے

(78)

ہوگی ان شبدوں پر depth میں نہیں جاتا ہے - اوپر ہی اوپر سے ہی شروع کرتا ہے

44/

वशीपुञ्ञात्मना = [illegible]

اگر شکتی چکر میں ملتا ہے ۔ دل پر ۔ کال ۔

शक्तिचक्रेण = اس شکتی چکر — युज्यते = ملتا ہے

اس شکتی چکر الٹا تمام نہیں ہوتا ہے تب سروپ گیان نہیں ہو

اسکا شکار نہیں بنتا ہے

اگر ملے — यत् = شکتی چکر ۔ तस्य = اس کا

प्राक्तन = پہلا — निर्विकल्पैकव्यवहारमयस्य =

جو پہلے نروکلپ ۔ ۔ ۔ نروکلپ ۔ ۔ ۔

विकल्पात्मनो = وکلپ روپ ۔ ۔ ۔

اس ۔ ۔ ۔ مانا ۔ ۔ ۔

माता = اس کا ۔ स्वरूपे = اپنے سروپ

खण्डयेत् = ٹکڑے ہوتا ہے ۔ — [illegible]

(۱) نروکلپ کا سروپ اس کا ۔ ۔ ۔

(۲) شبد اشتریں سے ٹکڑے ٹکڑے نہیں ہوتا ہے

45/

न च विकल्पा = وکلپ ہیں نہیں (ہم اپنی شبد نہیں کرتا ہے ۔ ۔ ۔) ملتی نہیں ہوتا ہے

अनुभवात् = (انوبھو سے) ۔ ۔ ۔ نروکلپ ۔ ۔ ۔

विकल्पान्तराद्वा = دوسرے وکلپ — भिन्नाः = الگ نہیں ہیں

جو اس وکلپ ۔ ۔ ۔ ہے ۔ ایک ہی نروکلپ گیان ہے ۔ ۔ ۔

अपि तु स एव एकः = وہ ایک ہی ہے

45

स्वतन्त्र्यमोदितभाव = آزادی کی انتہا پر پہنچے ہوئے   भाव = بھاؤ

उपरागलब्ध भेदभूताद्य = اس کا جو رنگ لگا ہے اس سے جس سے بید بھوت آدی ہیں جو

(وکلپ آیا وی سے رنگ نے چڑھے)

अभिधविज्ञान चक्रप्रभु: = جو نام ہیں - ہر دو گیان چکر اس کا جو مالک ہے

तदेवं = ویسا - (یہ ہی شد)

खेचरी = آکاش میں چلنے والی   साम्यमेव = سامیہ ہی ہے

मोक्ष: = موکش ہے   तत् च = وہ

अपन तरस्वरूप = اُوتر سروپ کا

परिज्ञानमेव = گیان جاننا ہی - سمجھنا کی پہچان ہے   सततोदित: = وہ ہمیشہ اُدت میں ہے

(یہ اُوتر سروپ ہر سمے اُودت ہی ہے)

परमेश्वर्यी: = جو پرمیشوری ہے - شو سروپ میں ہی سنگھٹ پرابت ہونے پر Sup

(پرمیشوری کا شو سروپ میں ہونا)

शिवात्मनि = اسی شو سروپ میں - आत्मा میں ہی ہو

संघट्ट समापत्त्या = جوڑ سے ملنا ہونے سے ملتا ہے establish ہوتا ہے

उभय विमर्शानन्दरुपि = جو دونوں کا ورش آنند ہی سے وہ ورش شا ہے - اس آنند وشا میں دونوں کا ورش ایک جیسا ہوتا ہے

(سنکلپ ہونے سے ملتی ہے)

शिवो = جو شو ہے   हि = کیونکہ

[illegible]

क्रिवोहि

५८ परवाङ्मय = [illegible]

महामन्त्रवीर्य [illegible]

विसृष्टिमय : [illegible]

परमेश्वरी विसृष्टया = [illegible]

तद्वीयेधनतात्मक = [illegible]

प्रसूननिर्भरया = It gets blossomed [illegible]

सृष्टया = [illegible] युज्यते = [illegible]

तथा हि सर्वेषामन्तर्बहिष्करणानां =
[illegible]

यत् यत् = [illegible]

अनुप्रविशति = [illegible]

तत्तत = [illegible] मध्यनाडीभुवि =
[illegible]

Compare [illegible] Tones [illegible]

بے جان سی ہو جاتی ہے - سب انگوں کو حرکت میں لاتا ہے - sensation gets distributed - [illegible] - watches them aware [illegible]

46) सर्वाङ्गानुप्राणनसाधया = جو سب انگوں کو جو پران دیتی ہے [illegible]

प्राणात्मना = پران روپ سے   चेतनरूपेण = چیتن روپ سے

establish [illegible]

आस्ते = ٹھہری ہے   यत् = جو ہے

اسی کو اوج کہتے ہیں   ओज = اوج   इति   कथ्यते = اسی کو اوج کہتے ہیں

तदेव = وہی   सर्वाङ्गेषु = سب انگوں میں

अनुप्राणकत्या = جو پران دیتا ہے - [illegible]

तदविभक्त = وہ جو ان سے جدا ہے - It is not used yet.

[illegible] expand [illegible]

वीर्यरूपत्वेन = ویریہ روپ ہونے سے   ततोऽपि = اس کے بعد بھی

पुनरपि = پھر   नयनश्रवणादि इन्द्रियद्वारेण = آنکھ - کان آدی اندریوں کے ذریعے سے

بڑھتا ہوا ہی [illegible]

बृंहकरूप = دنیا میں آتا ہوا - بڑھتا ہوا   रूपशब्दादि = جو روپ شبد آدی کر

अनुप्रविश्यात = اندر جا کر   बृंहकत्वा = بڑھنے والا ہونے سے   देव =

46/ तत वीर्यक्षोभरूपकामानल प्रबोधके =

[illegible]

It means to get more excited.

भवति = ہوتا ہے

यथोक्तम् = جیسا کہا

"ज्वालापादगात्र संस्पर्शात् ॥

([illegible])

[illegible]

एकेनैव च = [illegible]

रूपाद्यन्यतमेन = [illegible]

उद्रिक्त = [illegible]

प्राक्तन बलोपबृंहितस्य = [illegible]

सर्वविषयकरणीयोक्त = [illegible]

[illegible]

क्षोभकरणा = [illegible]

समर्थत्व = [illegible]

सर्वस्य = [illegible]

सर्वसर्वात्मकत्वात् = [illegible]

समरण = سمرن   विकल्पादिनापि = وکلپ سے بھی

सर्वमय मनोगतः = سرب مے یعنی من میں گیا

अनन्तर = بعد   शब्दादि = شبد وغیرہ

बृंहराव शात = [illegible]   जायत सव = [illegible]

क्षोभः = کھوبھ

शाक्तवीर्य संवेदनम्

परिपुष्टसर्वमय महा वीर्यमेव = [illegible]

पुष्टिसृष्टिकारि = [illegible]   न तु = نہیں

पूर्ण = [illegible]   नापि = نہیں ہی کچھ

क्षीणं = [illegible]   समुचित = [illegible]

प्रशाक्वाद = [illegible]

वीर्यविक्षोभे च = [illegible]

वीर्यस्य = [illegible]   स्वयमत्वेन = [illegible]

[illegible]

[illegible]

48

अभिन्नस्यापि = [illegible]

→ प्रदेशकाल कालि = [illegible]

स्पन्दमयमहाविमर्शरूपमेव = [illegible]

परिपूर्ण भैरव संविदात्मक = [illegible]

स्वातन्त्र्यमानन्द शक्तिमयं = [illegible]

सुखप्रसवभूः — [illegible]

[illegible]

← नयनयोरपि = [illegible] हि = [illegible] रूपं = [illegible]

तदीय शोभात्मक = [illegible]

Indulgence [illegible]

← महाविसर्ग = [illegible] विश्लेषरायुक्त्या स्व: [illegible]

([illegible])

सुखदायि भवति = [illegible] नयनयोर्हि रूपं = [illegible]

श्रवणयोश्च = [illegible] मधुरगीतादि [illegible]

48 अन्यत्रापि = ... इन्द्रिये = ... स्पन्दते :

केवलं = ... विश्लेषण युक्त्या विना

परिपूर्णासा सृष्टिर्ता ... न स्पन्दते :

स्वात्मन्येव = ... उच्छलनात :

तथा च = ... तद्वीयानुपबृंहितानाम् : in absence of excitement

in absence of

पविद्यमानतथाविधवीर्य =

क्षोभात्मक मदनानन्दानां ... → in absence of

3 पाषाणानामिव ... रमणीयतर : → He does not accept to unite with that object.

तरुणीरूपमपि = ...

नितम्बिनी, वदन घूर्णमान = ...

काकली कल = ... गीतमपि = ...

49 न परिणामब्ध पर्यवसायि ... यथ = ...

न हृदके भवति =

यथा यथा च = ...

तथा तथा = ... Excite ...

Sexual act ...

یہاں شنیار کا چمتکار ہے۔

परिमित = محدود — Limited   चमत्कार = چمتکار [illegible]   पर्यवसानं = [illegible]

59 [illegible]

सर्वतो = ہر طرف   हि = کیونکہ   अप्रचमत्कार = نہ چمتکار

जडतैव = [illegible] — on the Contrary   रूपाधकचमत्कारवपुष्ट्व = [illegible]

[illegible]

वीर्यक्षोभात्मा = [illegible]

[illegible]

सहृदयता उद्भवति = [illegible]

[illegible]

यस्यैव = جس کی   एतद्भोगासङ्गाभ्यास = [illegible]

विवेकता = [illegible]   अनन्तवृत्तक = [illegible]

[illegible]

वीर्यविहितं हृदयं = [illegible]

[illegible]

तस्यैव = اسی کا   सातिशय चमत्क्रिया = [illegible]

[illegible]

दुःखेऽपि = دکھ میں بھی   एष एव चमत्कारः = اس کا چمتکار ہوتا ہے —

[illegible]

[illegible] کا چمتکار سمجھنا چاہیے

49 अन्तर्व्यवस्थितं = اندر ہوا ہے = [illegible] यत्‌यत् : ?

६ दयितसुत सुखादि [illegible]

वीर्यात्मके = [illegible] तदेव : [illegible]

भावना सहृदय = [illegible] सहृदय हृदय कुन्दादि बोधन = [illegible]

That takes me quite another shape.

क्षोभात्मके [illegible] विकासमापन्ने [illegible]

पुनर = [illegible] न भविष्यति इति : [illegible]

नैरपेक्ष्य, [illegible] = [illegible] सविशेष = [illegible]

चमत्क्रियात्म = [illegible] दुःख = [illegible]

सततम = [illegible] तदु[illegible] = [illegible]

"दुःखेपि प्रविकासेन......"

[illegible]

Conclude [illegible] — At the time of sexual act = [illegible]

50% → यदा = [illegible] सकलेन्द्रिय नाडीभूत = [illegible] all elements of the body

Life force — मरुदादि = [illegible] परिपूरणे = [illegible] तु = get agitated

मध्यमध्यम = [illegible] सौषुम्नपदानुप्रवेशे [illegible]

निजशक्तिक्षोभ = [illegible] तादात्म्य = [illegible]

प्रतिपद्यते = [illegible] fully agitated तदा = [illegible] when fully excited

सर्वतो = [illegible] द्रुत गलन = [illegible]

भर = [illegible] परिपूर्णस्वशक्तिभर = [illegible] विमर्शाहन्तामय = [illegible]

चमत्कारानुप्रवेशे = [illegible]

परिपूर्णसृष्ट्यानन्दरूप = [illegible]

रुद्रयामलयोगानुप्रवेशेन = [illegible]

तन्महामन्त्रवीर्य = [illegible] विसर्गविश्लेषणात्मना = [illegible]

He gets absorbed in the state of Lord Himself — ध्रुवपदात्मक = [illegible] निस्तरङ्गकुल = [illegible]

भैरवभाव = [illegible] शाभिव्यक्तिः = [illegible]

तथाहि = [illegible] तन्मध्यनाडीरूपस्य = [illegible]

उभयलिङ्गात्मनोऽपि = [illegible]

तद्वीर्योत्साहसबललब्धावष्टम्भस्य = [illegible]

50 कम्पकाले = [Urdu gloss] सकलवीर्यक्षोभोज्जिगमिषात्मकम्

after the stage of full excitement [Urdu gloss]

अन्तः स्पर्शसुखं = [Urdu gloss] स्वसंवित्साक्षिकमेव =

[Urdu gloss]

न च = [Urdu gloss] स्वतत्कल्पित = [Urdu gloss]

[Urdu gloss]

शरीरनिष्ठतयैव = [Urdu gloss] केवलं = [Urdu gloss]

[Urdu gloss]

तद् = [Urdu gloss] अभिज्ञान = [Urdu gloss] उपदेशद्वारेण =

[Urdu gloss]

इयात = [Urdu gloss] महामन्त्रवीर्य = [Urdu gloss]

[Urdu gloss]

विसर्ग = [Urdu gloss, struck through] विश्लेषण = [Urdu gloss]

प्रवाप्तध्रुवपदे = [Urdu gloss] परब्रह्ममय [Urdu gloss]

शिवशक्तिसंघट्टानन्द = [Urdu gloss]

स्वातन्त्र्यसृष्टि = [Urdu gloss] परामहारिकारूपे = [Urdu gloss]

अनुप्रवेशः = [Urdu gloss]

[Urdu marginal notes]

51/52 तद्वक्ष्यते = وہ کہا جاتا ہے

"ततः सृष्टिं यजेत......"

اس کے بعد سرشٹی کو پوجا کرتا -

तथा = اسی طرح

यथा न्यग्रोधबीजस्थः........"

جس طرح برگد کے بیج میں یہ سارا درخت بھرا ہے — اسی طرح پورن اتما میں ہی یہ سارا جگت بھرا ہے

तथा = اسی طرح

"...........इत्येतद्रुद्रयामलम्"

If he remains aware of himself.

اگر سمرن رہے - (شو شکتی سنگم - پرکاش ومرش سنگم) یہی ہے رودریامل

अन्यत्रापि उक्तम् :- دوسری جگہ بھی کہا ہے -

صرف سمرن کرتا -

"लेहनामन्थनाकोटैः स्त्रीसुखस्य भरात्स्मृतेः
शक्त्यभावेऽपि देवेशि भवेदानन्दसंप्लवः"

[illegible] -

[illegible] ← - اگر عورت نہ بھی ہو - (آنند میں ڈوبتا ہے -)

भरात् = [illegible]

इति अभिप्राये

-भरात = ... → स्मयीमाणो = ... हि = ...

संस्पर्श: = ... तत्स्पर्शक्षेत्रे च =

मध्यम कृत्रिम = ...

परात्मक = ... शक्तिनालिक = ...

अप्रविविक्त: = ...

तन्मुरन्य शक्ति स्पर्श भावोऽपि = ...

तदन्तर्वृत्ति शक्ति = ... स्पर्शात्मक वीर्य =

क्षोभकारी भवति = ...

इत्यभिप्रायेण = ... तथा = ...

"शक्ति संगम संक्षोभ शक्तियावेशावसानकम्।
यत्सुखं ब्रह्मतत्त्वस्य तत्सुखं स्वाक्यमुच्यते॥"

शक्ति संगम = ... संक्षोभ agitation = ...

शक्तिावेशावसानकम = ...

यत्सुख = ... ब्रह्मतत्त्वस्य = ...

तत्सुखं = ... स्वाक्यमुच्यते = ...

Love making سے
وکترسوں سے پیدا ہوئے

52 इति :

स्नेहात्कौलिकमादिप्रोत् ।

یہ بات ہے کہ ایک اور ... اسی کا اور کرتا ہے -

इति च = اور بھی   महावीरेण = مہاویر نے

भगवता = بھگوان

व्यासेनापि = ویاس نے بھی

"मम योनिर्महद्ब्रह्म, तस्मिन गर्भं दधाम्यहम् ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ।।"

مجھ برہم (مہت) کی یونی وہ بہت بڑی ہے - سمپورن بھوت جو ہے - اسی میں - اسی وقت میں

جو بھی کوئی یونی ہے اس سنسار میں بڑی
ورنیت شکتی اس میں گربھ دھارن کرتی ہے
- گربھ (سمشٹی چیتن کو) دھارن کرتا ہوں میں

کو   संभवः = اسی کا پیدا ہونا   सर्वभूतानां = سب پرانیوں کا

ततो = اس سے   भवति = ہوتا ہے

भारत = اے بھارت

[illegible]

इत्यादि = [illegible] गीतम = گایا گیا ہے

सोमानन्दपादैरपि = [illegible]

निजविवृत्तौ = [illegible]

in the State of sexual intercourse

भगवत्या रतस्थायाः प्रश्न इति परैकमयत्वेऽपि

तन्मय महदन्तरालाभिप्रायेण

[illegible]

तदलम् = [illegible] प्रमुना =

[illegible] possible

त्रिकशास्त्र रहस्य = [illegible]

उपदेश = [illegible] कथाम्पि = [illegible]

श्रुति प्रस्तावेन =

तदिदम् = [illegible] प्रत्युत्तरं [illegible]

उक्तानयेन = कौलिक = [illegible] सिद्धिदे = [illegible] येन = جس

ज्ञातमात्रेण = [illegible] جس کو جان لینے سے खेचरीसाम्यम् = [illegible]

53/ 54

एतत गुह्यं महागुह्यं
कथय स्व मम प्रभो।

एतत गुह्यं = [illegible] महागुह्यं = [illegible]

कथय = کہو स्व = [illegible] मम = مجھے प्रभो = سوامی

गुह्यम = [illegible] → अप्रकटत्वात = [illegible]

यतो = [illegible] गुहायां = [illegible] → मायायां [illegible]

← स्वरूपापरिज्ञानमय्यां = [illegible]

~~मय्यो = [illegible]~~ स्थितमपि = [illegible]

अप्रकटम = [illegible] – [illegible] – हृदयस्थानी भावना

In addition

अथ च = [illegible] महत = سب अप्रगुह्यं = [illegible]

→ सर्वस्य = [illegible] सर्वविध = [illegible]

चमत्कारमयत्वात = [illegible]

← मातृमानमेयमय = [illegible] भेदाविभाग = [illegible]

शालिनी = [illegible] भगवती = [illegible]

प्रकृदावि दैव = [illegible] त्रिकोणा =

[illegible]

मायायाम = یہی مایا میں — प्रतिछाय =

प्रतिफलित = — भेदावगाह्य =

भवति = بنتی ہے — (ہوتی ہے)

54 इति | मायापि = — जगत जननम =

وہ विद्येव = — वस्तुत: = اصل میں

तत = وہ — उक्तेन = — नयेन =

सा = — सर्वेश्वरत्वेन =

अपरिज्ञायमानत्वात =

असेद्य माहात्म्य =

तिरोहित — तत्प्रमात्रादि =

कालत्रयत्वात =

महामुद्रा इति उच्यते =

सेव च = — वस्तुत: =

पूजाधाम = — त्रिस्थलं त्रिकोणे =

= شرف ساتواں

جنوں بھادوں میں آتمی شاموں کا ہے

54/55

तदुक्तम् = جیسا کہا ہے

सा त्रिकोणा मातृविद्या त्रिका सर्वरसास्पदम् ।
विसर्गपदमेवैष तस्मात् संपूजयेत्त्रिकम् ॥

सा त्रिकोणा = وہ تین کونوں والی ہے — महाविद्या = اسی کو مہا ودیا کہتے ہیں — त्रिका = تین کا مجموعہ ہے
सर्वरसास्पदम् = سب کا رس اس میں ہے — ان کا آسن ہے
विसर्गपदमेवैष = اسی کو وسرگ پد کہتے ہیں — तस्मात् = لہذا اس لیے — संपूजयेत् = اسی شری کی پوجا کرنی چاہیے — त्रिकम्
तथा = اسی طرح — کہا ہے

उदेत्येक: समालोक: प्रमाणाथ प्रमातृग:

उदेत्य श्री = اتپن ہو کر — एक: = ایک ہی — समालोक: = پرکاش — प्रमाणाथ प्रमातृग: = جو پرمان اور پرماتا میں ہے

श्रीमदभिनवगुप्ताचार्यकृतव्याख्योपेता

अ ततश्च = इ = اس — इच्छयां = اچھا میں
महागुह्यायां = جو بہت گپت ہے — शुद्धविद्या = جو شدھ ودیا ہے
हृदयमय्यां = ہردے ہی ہے — महासृष्टिरूपायां = جو مہا سرشٹی روپا ہے
जगत् जन्मभूमौ वा = جو جگت کی جنم بھومی ہے

Subject
object
Cognition

प्रमाण
प्रमेय
प्रमाता

external side

एतेन हि आत्मविमर्शविश्रान्तिरूपं उत्तमम् — विमर्शरूपं — स्वातन्त्र्य

परचमत्कार — स्वचमत्कार ← महत्

स्वचमत्कार रूपत्वं = [illegible]

भवति = [illegible] — यत् = "महत्" इति

तत् — महत् — एतत् = [illegible]

गुह्यम् = [illegible] — एतेन = [illegible] — हि = [illegible]

तत् = "महत्" — इदमेव हि अनन्तभैरवभासा = [illegible]

विमर्शरूपं = [illegible] — स्वातन्त्र्यं = [illegible] महत्

भावस्य = [illegible] — स्वरूपप्रत्यवमर्शात्मकमेव = [illegible]

म कार से — अकार — [illegible]

आत्मविमर्श = [illegible] — विश्रान्तिरूपत्वे उत्तमम् स्यात्

म को हु

प्रकाशस्य = [illegible] — हि = [illegible]

स्वाभाविक = [illegible]

अकृत्रिम = [illegible] — परवाङ्मयी = [illegible]

वीर्य चमत्कारात्म = [illegible]

अस्मीति = [illegible]

महत् [illegible]

55/56 यथोक्तम् :

"प्रकाशस्यात्मविश्रान्तिरहंभावो हि कीर्तितः ।"

[illegible]

इति । तदेव = دہی [illegible] गुह्यम् = [illegible] →

अतिरहस्यं = [illegible] तथाहि = [illegible]

सृष्टिक्रमेण = [illegible] यथा = یعنی

अविकृतानुत्तर = [illegible] ध्रुवरूपविश्रान्तो = [illegible]

"अ" — भैरवभट्टारकः = [illegible]

{ सकलकलाजालजीवनभूतः = [illegible]

सर्वस्य = [illegible] आदिसिद्धो = [illegible]

अकलात्मकः = [illegible] "अ"

स एव = "अ" [illegible] प्रसरात्मना = [illegible]

रूपेण = [illegible]

विसर्गरूपताम् = [illegible] अभ्युवानो — [illegible]

"अः"

(७९)

१ अयो पसंहारे → [illegible]

तद्विसर्ग विश्लेषणयो ← [illegible]

56

विसर्गस्यैव = [illegible]

कुण्डलिन्यात्मक = کنڈلنی روپ

- ह - शक्तिमयत्वात् = "स" شکتی مے ہونے سے

पुनरपि = ½

तच्छक्ति प्रसर [illegible] ½ [illegible]   अभेद = [illegible]

ह कलो ↑ अ ह म (·)

वैदिक रूप = باطنی روپ سے -

एकलौतमक

बिन्द्वात्मना = [illegible]

नररूपेण = [illegible]   प्रसरति = [illegible]

[illegible] Digest 'म' [illegible]

तथा = [illegible] → पुनरपि = ½   परशक्ति = [illegible]

तत् = [illegible]

मूले = [illegible]

'अ' = [illegible]

तन्मूल = [illegible]   विशाल = [illegible]   प्राण = [illegible]

~~विसृज्यते च~~ = [illegible]

तत

सतत् = [illegible]   अविदूर एव = [illegible]

महेपरमानन्दरूपे = मह → [illegible] —

पूर्वोक्त = [illegible]   यादृशम् = [illegible]

[illegible] 'अ' [illegible] म = रूपे इति 'अ' < 'महे'

57/ उत्तानयेन = [Urdu annotation] अ इति रूपं = [Urdu annotation]

तदेव गुह्यम = [Urdu annotation] - [Urdu annotation] महा

एतदेव च = [Urdu annotation] महा महागुह्यं = [Urdu annotation]

जगत जननधाम = [Urdu annotation]

तथा उभय समापत्त्या = [Urdu annotation]

आनन्देन = [Urdu annotation] अगुह्यं = [Urdu annotation]

सर्व चमत्कारमयं = [Urdu annotation] - [Urdu annotation]

स्व = [Urdu annotation] → आत्मन्नेव = [Urdu annotation] स्व → कथय

स्व [Urdu annotation]

हे प्रभो = [Urdu annotation] सर्व विधवैचित्र्य = [Urdu annotation]

कारितया [Urdu annotation] [Urdu annotation] secret [Urdu annotation]

प्रभवन प्रील [Urdu annotation] - [Urdu annotation]

आमन्त्रणमेतत = [Urdu annotation] - [Urdu annotation] - स्व

[Urdu annotation]

संबोधन प्रथिमा
प्राप्यादिकं:
[illegible]

51 [illegible]

Called Called
[illegible]

[illegible]

तत् च = [illegible]

union between प्रामन्त्रयस्य [illegible]

प्रामन्त्रकं प्रति = [illegible]

[illegible]

तादात्म्याभिमुख्य = [illegible]

प्रातिपदिकार्थात = → [illegible]

प्राधिकार्थिद्वार्य = [illegible] It is something more than mere calling. Infact it is union between caller & called

यथोक्तम् = [illegible]

संबोधन
↓
[illegible]

→ संबोधनाधिक: प्रति प्रातिपदिकार्थ: = [illegible]

इति = [illegible]

निराति च = [illegible]

एतत = [illegible]

मयैव = [illegible]

पूर्वपाद्धिकायाम = [illegible]

एतत कथय = [illegible]

→ परावागूपतया = [illegible]

(102) اگر اُوتر پر اک ... بھی ... ہو گیا ہے

5/7 — 5/8

प्रविभक्तं = ... ہوا ... ہے ‖ स्थितमपि = اگر ... ہے

पश्यन्त्यादिभुवि ...

~~पश्यन्त्यादिभुवि~~ = ... لیکن ... (گرو اور شش ... پر اور ...)

[illegible]

वाक्य प्रबन्ध क्रमासङ्गरीन = واکیہ ... ایس ... ہے

... سنی ... ہو ... میں ... کرم

योजय = جوڑو

यथोक्तं प्राक् = جیسے پہلے کہا

"गुरुशिष्यपदे स्थित्वा ...."

گرو شش پد میں ٹھہر کر ......

[illegible]

यत्यादि = اس ... سے

परामट्टारिकायाश्च = پرا ... کا

पश्यन्त्यादितादात्म्यं = پشینتی آدی ... سے ... کا

निराणीतं = ... ہے

प्राग्व = پہلے

[illegible]

तथा = ویسا

मम = میرا ... connect ... attached to individual

... मम ... "मम" ...

ममइति इत्यस्य = اس ...

प्रत्यगात्मसंबन्धित्वस्य = ... اندر آتم ... ہے

58 इदं भावस्य = [illegible] यत = [illegible]

गुह्यं = [illegible] महत्म इति" → [illegible]

अद्भुतम् = [illegible] ब्रह्मेति = [illegible]

तथा = [illegible] हि = [illegible] "मम = [illegible]

इदं = [illegible] भासते" = [illegible]

इति = [illegible] यत = [illegible] मम भासते —

भासनं = [illegible] तस्य = [illegible]

विमर्शः [illegible] पुनरपि = [illegible]

ब्रह्मभावैकसारः = [illegible] (०)

स पुनः = [illegible] ब्रह्मभावो = [illegible]

भावप्रत्युपसंहारमुखेन = [illegible]

इति "महत्म" [illegible]

Secret 'मम' [illegible] "महत्म" [illegible] in Secret [illegible] it महत्म [illegible] open [illegible]

in Secret words it is 'ब्रह्मत्व' महत्म' & in clear word it is ब्रह्म. @ Rives [illegible]

58 इत्थे तद्रूप एव =

यथोक्तं प्राक =

यदुक्तम् =

"इदमित्यस्य विच्छिन्नविमर्शस्य कृतार्थता।
या स्वस्वरूपे विश्रान्ति विमर्शः सोऽहमित्ययम्॥"

इदम् इति यस्य = विच्छिन्न = विमर्शस्य

when curiosity is over. कृतार्थता =

in other words i.e.

या = स्वस्वरूपे = विश्रान्ति = قرار

विमर्शः = सो अहम् इति अयं =

इति। अन्यत्रापि =

"घटोऽयमित्यध्यवसा नामरूपातिरेकिणी
परेशशक्त्यात्मैव भासते, न त्विदन्तया"

घटो अयं = इत्य अध्यवसा

नामरूप अतिरेकिणी = परेश = शक्ति आत्मैव

59 इति। तदुक्तं श्रीसोमानन्दपादैः = [illegible]

निजविवृतौ = اپنی [illegible]

"ऽबीजं प्रुद्धशिवरूपम्" [illegible] (شیو روپ) [illegible]

तदेव = [illegible] ऽस्माभिः = [illegible]

विपश्चितामिति = [illegible]

[illegible] तथा = ایسا स्वमाम =

स्व = सुष्ठु = [illegible] ऽविद्यमाने = [illegible]

मम = [illegible] इति = [illegible]

यस्य = "ऽ" [illegible] ऽहन्ताभर = [illegible]

एकरूपत्वात् = [illegible]

विश्वं = [illegible] न = [illegible]

किंचित् = [illegible]

یستی [illegible]

یس کا

यस्य = جس کا   व्यतिरिक्त निर्देश = [illegible]

[illegible]

प्राप्य षष्ठ्यर्थयोगि = [illegible] - جن   भवति = ہے

शास्त्रान्तर दीक्षातानां = جو دوسرے شاستروں [illegible]

ہے جو [illegible] نہیں ہوگی -

विज्ञानाकलानां = وہ [illegible]

प्रलयकेवलिनां च = [illegible]

[illegible]

यद्यपि = اگرچہ   "भवति" = "ہے"

व्यतिरिक्तं = جُدا   नास्ति = نہیں ہے

तथापि = تو بھی   यत् = جو

भेदयोग्यतावसाना = [illegible]

स्यादेव = [illegible]

جب وہ ہار ان میں سماتی ہے

59 پیدا کیونکہ

प्रबोधसमये = جاگنے کے وقت

ताद्दृशीं = ویسی

महाभावरसादि = اس وقت بہت اعلیٰ رس سے

तदपाकृत्य = وہ بات دور کر کے

सुष्ठु प्राबदाय = خوشی سے

सुः = سو

यदुक्तं = جو کہا

मयैव = میں نے ہی

स्तोत्रे = استوتر میں

3. यन्न किंचिन ममेति दीनतां
प्राप्नुवन्ति जडजन्तोऽनिशम्
तत्र किंचन ममास्मि सर्वमि-
त्युद्दुरां धुरमुपेयिवानहम्॥

यत = 3. न = نہ किंचिन = کچھ मम = میرا इति = اس کو
दीनतां = عاجزی 3. प्राप्नुवन्ति = حاصل ہوتے ہیں जडजन्तो
(نفس دولی)
नेति नेति

This is a ditcable condition

अनिशम्

(106)

अन्धिमम् = اندھیرا   तत = وہ   न = نہ   किञ्चित = کچھ

मम = میرا   अस्मि = ہوں

इति = ایسا   हृदयम = دل   दुरम = دور   रूपवान = صورت والا

इति — प्रौभनेन → द्वैतकलङ्क =

अङ्कनाकालुष्य =   कालुष्य =

लेपशून्येन =   प्रमेन =

परमार्थी पदे प्रादुर्यात्मनो =   ज्ञानेन = گیان سے

نوٹ: گیان کا استعمال ... گیان -

मानम =   अवबोध =   Base

यस्य =   स्वप्रकाशैकरूपत्वात =

अमतीति = رہتا   अहम = میں "ہوں"

अ इति मा = अ → मा   यत्र = جہاں

अविद्यमाने = جہاں نہ ہو   मा = کا   माने —

निषेधश्च = جہاں اندھیرا نہیں   यत्र = جہاں

नित्योदितत्वात =   संहारश्च —

यत्र = جہاں   नास्ति = نہیں ہے → وہ "اہا"

सा = وہی   भगवती = بھگوتی

अहमा = اہا ہے   इति = ایسا   उच्यते = کہا جاتا ہے

60/ सुषमा स सम

सा = → प्रोन्मना = [illegible] → सततोदिता = [illegible]

यत्र = [illegible] / मायां = [illegible]

प्रमाणा = [illegible] प्रमेय = [illegible] व्यवहृतौ = [illegible]

ब

सा = وہ तादृशी = [illegible] उन्मा = [illegible] उन्मना [illegible]

यस्य = [illegible] इति = [illegible] बहुव्रीह्यन्तरो = [illegible]

बहुव्रीहि = [illegible]

परमेश्वरो = [illegible] हि = [illegible]

प्रमाणादि = [illegible] व्यवहारोऽपि = [illegible]

परशक्तिमय एव = [illegible]

सर्वथा = [illegible] अद्वैतरूपत्वात् = [illegible]

तस्य = [illegible] उन्मनत्वमात्मन एव = [illegible]

इदमेव = [illegible] सार्धश्लोक = [illegible]

निरूपिता = [illegible] अनन्त प्रश्न = [illegible]

तात्पर्य = [illegible] संग्रहेण = [illegible] एतदुक्तं भवति = [illegible]

[illegible] बहुव्रीहि [illegible] उन्मना [illegible]

61/ इति निर्णेतुं निरूप्यते = [illegible]

हृदयस्था तु या शक्तिः
कौलिकी कुलनायिका ।
तां मे कथय देवेश
येन तृप्तिं लभाम्यहम् ॥२॥

[illegible]

हृदयस्था = [illegible] तु = ہی या = جو शक्तिः = شکتی →

कौलिकी = [illegible] कुलनायिका = [illegible] तां = اس

मे तां = مجھے कथय = کہو देवेश = [illegible]

येन = جس سے तृप्तिं = ترپتی लभाम्यहम् = لبھوں میں

[illegible]

सर्वस्य = [illegible] नीलसुखादेः [illegible] देहप्राणबुद्ध्यादेश्च = [illegible]

परं प्रतिष्ठास्थाने = [illegible] संविदात्म हृत = [illegible]

तस्यैव = [illegible] निजस्वातन्त्र्य = [illegible]

कल्पितभेदा = [illegible]

हृत-श्रया (हृदयांश)
श्रया — [illegible]

हृद-श्रया-स्था

(111)

भेद = Plural

श्रीया का विशेषण है — निजस्वात्म्य कलित भेदा

श्रया → विचित्रचारी = [illegible] घटादिरूपनानी = [illegible]

तत्स्था = [illegible] या इये = [illegible]

स्फुरत्तामयी = [illegible] — शक्तिः = [illegible]

कुलस्य = [illegible] नायिका = [illegible]

अवभास-यन्त्री

शरीर प्राण सुखादे = [illegible] स्फुरत्तादायिनी [illegible]

ब्रह्मादि देवता चक्रस्य = [illegible]

वीर्यभूता = [illegible] निखिलाक्ष, नाडी चक्रस्य = [illegible]

मध्य - मध्यमरूपा = [illegible] — universal ~~Shakti~~ place

जननस्थान = [illegible]

place of creation of Ring shape ← कारी कालिङ्गतमा = [illegible] प्रसित = [illegible]

तत्रैव च = [illegible] कुले = [illegible] Beyond [illegible]

भवा = [illegible] कुरूपा = [illegible] कौलिकी = [illegible]

Can be found in कुल [illegible]

यद्वा = [illegible] कुले [illegible]

कौलं = [illegible]

भवस्य कुलात्म = [illegible]

[illegible]

(112)

مل کر - جیسے دودھ پانی میں ہے -

62/ तत = [illegible] - جو کہ   यस्मामन्त : = [illegible] +

[illegible] तादात्म्येन = [illegible]   आसित = [illegible]   सा = وہ

कौलिकी = [illegible]

[illegible] → कुले = [illegible]   हि = [illegible]   सब अकुलप्रकाशरूपमेव = [illegible]

[illegible] तथा भवति = [illegible]

युयुत्ताम् = [illegible]   तथा = [illegible]

"यदि त्वात्मबल-स्पृष्टात् ।

"तदाक्रम्य बलं मन्त्रा सर्वज्ञबलशालिन ! प्रवर्तन्तेऽधिकाराय करणानीव देहिनाम् ॥"

मन्त्री → [illegible]

प्रवर्तन्त ⟶ [illegible]

[illegible]

[illegible]

62 برہما، وشنو، رودر آدی → देवेश

[illegible] देवानाम् = دیوتاؤں ब्रह्मविष्णुरुद्रादीनाम् = برہما، وشنو، رودر آدی

ईशस्य = [illegible] श्रीमन्त्रराट् = [illegible]

तन्मे = [illegible] कथय = [illegible] इत्यादि = [illegible]

पठन्ति = پڑھتے ہیں श्रीसोमानन्दपादाः [illegible]

- ہے کیا استعمال یہاں پر 'तत्' نے

व्याचक्षते च = त [illegible]

[illegible] तत् तत् → तस्मात इति = اس وجہ سے

[illegible] तत् यद्वा = یا پھر तत कथय येन = [illegible]

तृप्तिं = تریپتی → परमानन्दमयी = [illegible]

लभे = [illegible] → परमाद्वयनिर्वृति = [illegible]

[illegible] स्वातन्त्र्यरसा भवामि = [illegible] इति =

समन्वयः = [illegible]

62/

[illegible] व्रजामि = [illegible] इत्यपि = [illegible] पाठः = [illegible]

लभास्यहे → प्रह्मित्यनेन = [illegible]

— सर्वप्रमातृ [illegible] जीवनरूपमेव = [illegible]

[illegible] सततं = [illegible] परामृश्यते = [illegible]

तत् च = [illegible] एवमभिहित स्वरूपः = [illegible]

उपदेशेन = [illegible] प्रत्यभिज्ञाय = [illegible]

निजमीश्वररूपं = [illegible]

परिपूर्णभावात्मिके = [illegible] हृदि = [illegible]

विन्दति = [illegible] इति प्राक् = [illegible]

प्रकटितमेव = [illegible]

तदुक्तं सोमानन्दपादैः = [illegible]

69 स्वविवृतौ = اپنی تشریح میں

"हृदि ज्ञयो मंमने ज्ञानम्"

इत्यादि = — یعنی دل میں جانا وہ ہے جو دل کی گیان ہے

"इति शिवरसे पातुं येषां पिपासाति मानसे
सततमशिवध्वंसे सत्तां शिवेन निवेशिताम्
हृदयगगने ग्रन्थिं तेषां विदारयितु हठाद्
अभिनव इमां प्रश्नव्याख्यां व्यधात्त्रिक
तत्त्वगाम्"

इति शिवरसे = اس طرح شِو رس میں — पातुं = اس کو پینے کے لئے — येषां = جن کا

मानसे = من میں — पिपासाति = پیاسا ہے

सततं = ہمیشہ — अशिव = اشو — ध्वंसे = اس کو ہٹانے

सत्तां = ہستی — शिवेन = شو سے — निवेशितम् = رکھا ہوا ہے

हृदयगगने = دل کے آکاش میں — ग्रन्थिं = گانٹھ

तेषां = ان کا — विदारयितु = چیرنے کے لئے — हठात् = with force

अभिनव = ابھنو — इमां प्रश्नव्याख्यां = اس سوال و جواب کو

व्यधात् = کیا — त्रिक तत्त्वगाम् = ترک شاستر کا

63/

तदन्न = [illegible] प्रश्नसर्वे स्वे = [illegible]

اُسی [illegible] بھیرو کہتا ہے :— श्री भैरव उवाच = شری بھیرو [illegible]

व्याख्याते = [illegible] प्राग्एव = [illegible] सतत =

किं = [illegible] पुनरुक्तापादनेन = [illegible]

Repeat [illegible]

भैरवो → بھیرو → मरस्यात्मका = [illegible]

[illegible] → महामन्त्रस्वात्मकृष्णा = [illegible]

[illegible]

केवलम् = [illegible] अत्र = [illegible]

[illegible]

प्रोक्तामत्प्राधान्य = [illegible]

[illegible]

संहारस्वरूपेण = [illegible] मत्स्वरूप = [illegible]

उल्लेखे = [illegible] रूपम् = [illegible]

प्राक = [illegible] स्फुटीभविष्यति न्व = [illegible]

प्रागत एव = [illegible]

तत इयान् = [illegible] अत्र तात्पर्यार्थ = [illegible]

1st mount of flow — 64 [illegible]

परा भगवती संवित्प्रसरन्ती स्वरूपतः ।

This is the movement of its flow:—

परेच्छाशक्तिरित्युक्ता भैरवस्याविभेदिनी ॥

परा = [illegible] भगवती = [illegible] संवित् = [illegible] स्वरूपतः = [illegible]

प्रसरन्ती = [illegible] पर = [illegible] इच्छा शक्ति [illegible] युक्ता = [illegible]

भैरवस्य = [illegible] विभेदिनी = [illegible]

तस्याः प्रसरधर्मित्व ज्ञान शक्त्यादिरूपता । She has to go out — out — out & out.

परापरापरारूप पश्यन्त्यादि वपुर्भृतिः ॥ (understood)

तस्याः = [illegible] प्रसरधर्मित्व = [illegible] ज्ञान शक्तियाः = [illegible] रूपता [illegible]

परा [illegible] परापर = [illegible] अपरा = [illegible]

पश्यन्त्यादि = [illegible] वपु = [illegible] भृति = [illegible]

तदेवं प्रसराकार स्वरूप परिमर्शनम् ।

प्रश्न इत्युच्यते देवी तन्मयप्रश्नकारिणी ॥

[illegible]

तदेवं = [illegible] प्रसर आकार = [illegible] स्वरूप परिमर्शनम् = [illegible]

प्रश्न इत्युच्यते = [illegible] देवी = [illegible]

तन्मय = [illegible] प्रश्नकारिणी = [illegible]

[illegible]

तस्य प्रसररूपस्य परामर्शनमेव यत् ।
तदेव परमं प्रोक्तं तत्प्रश्नोत्तररूपकम् ॥

तस्य = اس کا पसररूपस्य = [illegible] परामर्शनमेव यत = [illegible]

तदेव = وہی परमं = [illegible] प्रोक्तं = کہا

तत् = وہ प्रश्न उत्तर = [illegible] रूपकम् = [illegible]

तदेवापरसंवित्तरारभ्यान्तस्तरां पुनः
परसंविद्घनानन्द संहारकरणं मुहुः ॥

तदेव = وہی अपरसंवित = [illegible]
परस्य [illegible] अन्तस्तरां = [illegible] पुनः = پھر
परसंविद = [illegible] घनानन्द संहारकरणं = [illegible] मुहुः = بار بار

अन्तर्भावित निःशेषप्रसर भैरव वपुः ।
प्रति वक्तृ स्वरूपेण सर्वदैव विजृम्भते ॥

अन्तर = [illegible] भावित = [illegible] निःशेष प्रसरं = [illegible]
भैरवं वपु = [illegible] प्रति वक्तृ स्वरूपेण = [illegible]
सदैव = [illegible] विजृम्भते = [illegible]

'परमं' — [illegible]
परमं वक्त्राम्

[illegible]

[illegible]

65

एतौ प्रसर संहाराव काल कलितौ यतः ।

तदेक रूपमेवेदं तत्वं प्रश्नोत्तरात्मकम् ॥

एतौ = [illegible] प्रसर संहार = [illegible] एवकाल कलितौ = [illegible]

[illegible]

यतः = [illegible] तत एकरूपम इव = [illegible] तत्वं = [illegible]

इदं

प्रश्नउत्तरात्मकम = [illegible]

= [illegible]

तदेवं प्रस परसंबन्धमनुत्तरतयान्वितम् ।

षडर्धसार सर्वस्वं गुरवः प्राङ् व्यरूपयन् ॥

[illegible]

तदेवं = [illegible] प्रसरसंबन्धम = [illegible] अनुत्तरतया = [illegible]

अन्वितम = [illegible]

षडर्धसार [illegible] सर्वस्व = [illegible] गुरवः [illegible]

प्राक् = [illegible] व्यरूपयन = [illegible]

[illegible]

(120) وسیع ہاضمے والی — of Vast Digesting Capacity

بڑے بھاگ والی

65 शृणु देवि महाभागे
उत्तरस्याप्यनुत्तरम् ॥३॥ [illegible]

कौलिकोऽयं विधिर्देवि
मम हृद्व्योम्न्यवस्थितः।
कथयामि सुरेशानि
सद्यः कौलिकसिद्धिदम् ॥४॥ کولک سدھی کو دینے والا

शृणु = سنو देवि = اے دیوی महाभाग = بڑے بھاگ والی / جو ہر ایک چیز ہضم کر جائے
Capacity to digest everything

उत्तरस्याप्य = اعلیٰ سے اعلیٰ अनुत्तरम् = اعلیٰ

कौलिको = کولک अयं विधि = یہ ودھی

देवि = اے دیوی मम = میرے

हृदव्योमन्य = دل کے آکاش میں अवस्थित = ٹھہری ہوئی (موجود)

कथयामि = کہتا ہوں

सुरेशानि = اے دیوتاؤں کی مالک (ایشانی) सद्यः = فوراً

कौलिक सिद्धि = کولک سدھی इदम् = دینے والی

66

महाभागे

देवि = [illegible] इति प्राकवदं = [illegible]

(1) महान् = [illegible] भागो = [illegible] यस्या = [illegible]

(2) या = [illegible] मज्यमाना = [illegible] →

→ उक्तवक्ष्यमाणा = [illegible] उपदेशानुशीलनेन = [illegible]

सेव्यमाना = [illegible] पारमेश्वर्याख्यमहाबलदा = [illegible]

भवति = [illegible] इति = [illegible]

(3)

महत = [illegible] परममहत रूपतया = [illegible]

उपनाश्रित शिवरूपः = [illegible] सा यस्या [illegible] भाग [illegible]

प्रसिद्धोऽरमेश्वरी = [illegible] हि = [illegible] शक्तिः = [illegible]

clear

अनन्त षट्त्रिंशदादि = [illegible] 36 [illegible]

तत्त्वगर्भिणी = [illegible]

(4)

महान् = [illegible] → बुद्ध्यादि = [illegible]

तत्त्वविशेषो = [illegible] भागो = [illegible]

→ विभागकलापेक्षि = [illegible] रूपं = [illegible]

यस्या = [illegible] परमेश्वरी = [illegible] हि = [illegible]

संविदेकघनशक्ति = [illegible]

स्वातन्त्र्य = [illegible]

67

उपकल्पित = [illegible] भिन्नज्ञेयकार्ये = [illegible]

प्रतिज्ञापदत्वे = [illegible] बुद्धिरित्यच्यते =

यदुक्तं = [illegible] श्रीसोमानन्दपादैः

.... अपरस्थितौ,

सा बुद्धिर्यत्पुनः सूक्ष्मं सर्वदिक्कमवस्थितम्
ज्ञानं बोधमयं तस्य शिवस्य सहजं सदा॥

सा = [illegible] बुद्धि = [illegible] यत् = [illegible] पुनः = [illegible] सूक्ष्मं = [illegible]

सर्वक्रम = [illegible] अवस्थितम् = [illegible] ज्ञाने = [illegible] बोधमयं = [illegible]

तस्य शिवस्य = [illegible] सहजे = [illegible] सदा = [illegible]

(5) इत्य मार्गो = → भेदे [illegible] स = [illegible]

यत्र = [illegible] अस्ति = [illegible] रूपे = [illegible]

इति मत्वर्थीयाकार = [illegible]

प्रत्ययान्तेन = [illegible]

[illegible] project [illegible]

(123)

جیسے کہ آدمی [illegible] اپنے اپنے روپ سے یعنی [illegible] نہیں کرتا - کیونکہ [illegible]

[illegible]

67

भाग प्रवेदन = [illegible]   विभक्त = [illegible]   रूपम: = روپ - بنا

उच्यते =

विभक्ति च = [illegible] (clear)   वपुषि = سروپ [illegible]

→ परिच्छेदो = [illegible] (limited)   अन्योन्य = ایک دوسرے سے

व्यवच्छेदेनैव = [illegible]   भवति = بنتا ہے

इति = اس طرح   प्रसादात्मक = [illegible]

विषय निश्चयो = [illegible]

बुदाबुपजायमानो = [illegible]

अपर रम्या रम्यादि = [illegible]   विश्ववर्तिनो = [illegible]

भावान् = [illegible]   अस्पृशन्नेव = [illegible] (Project)

प्रत्युत = [illegible] (on the contrary)   तान = [illegible]

व्यवच्छिन्दन = [illegible]   उपजायते = [illegible]

सुखवृत्तिबुदे : [illegible]   धर्मैश्वर्यादि रूपत्वात = [illegible]

[illegible]

(124)

67/ सत्त्वात्मको = [illegible] गुणानिष्यन्दः = [illegible]

इति गीयते = [illegible]

[illegible] यदि = اگر तु = لیکن तत्रापि = [illegible]

[illegible] अन्तस्तमाम = [illegible]

अनुप्रविश्यते = [illegible] तत् तत् = [illegible]

तद्द्वारेणैव = [illegible]

[illegible] तन्मूलवर्तिनि = [illegible] परमानन्दधाम्नि = [illegible]

भवेदेव = [illegible] सततमुदयः = [illegible]

[illegible]

महस्य
अभागा
महाभागी
महस्य
[illegible]

अत एव = [illegible] महस्य = [illegible]

सर्वतो = [illegible] ~~[illegible]~~ अखण्डित = [illegible]

परिपूर्णो = [illegible] निमित्त = [illegible]

निरपेक्षा = [illegible] स्वातन्त्र्य = [illegible]

68 "महद्"

जगदानन्दमयस्य =

ईषत = ... भागा =

सुखलक्षणात = ... प्रज्ञा =

यतः = | यत् यत् =

किल = सुखं = तत् =

महानन्दानिवृत्ति = परमधाम्नि =

विस्मशक्तौ = अनुप्रवेशात =

तथा = प्रचत्यमानतया =

Page 68 "महदस्य"

दीक्ष्यते।

इति ~~प्र~~ सविन्दुं [illegible] ते = [illegible]

वन्दे = [illegible]

देव = [illegible] आनन्दसागरम् = [illegible]

इति प्राङ्न्यायेन = [illegible] यदुक्तं = جو کہا

"महेश्वरः" इति = [illegible] रूपं = [illegible]

तदेव = وہی भजनीयं यस्या = [illegible]

परमेश्वरस्य = [illegible] हि = کیونکہ

स्वचमत्कारबृंहित = [illegible] यत = جو

"अहम्" इति "अहम्" तदेव = [illegible]

प्राप्तं वपुः = [illegible] तदेव च = وہی [illegible]

पराभट्टारिकारूपमिति उच्यते = [illegible]

~~एव~~ एव = [illegible]
सैव परमेश्वरी = [illegible] सर्वं आक्रामति = [illegible]

आवेशाख्यया = [illegible] सत्तया = [illegible]

त्रिभुवनी = [illegible]

She has the capacity to understand all sounds

[illegible]

[illegible Urdu note]

69/70

श्रवण संपुट = [illegible]   स्फुट = وہ پرگٹ

[illegible Urdu note]

क्रमिक = [illegible]   स्वस्पन्दमय = [illegible]

शरीरादि = [illegible]   निष्ठमैकात्म्य = [illegible]

आपादनरूप = [illegible]   संकलन = [illegible]

identify ← अनुसंधानाख्यं = [illegible]   स्वातन्त्र्यम् = سوانترتا

तेन = اس سے   हि = کیونکہ   विना = بغیر

identify [illegible]

कलकल = [illegible]   कल कलीन = [illegible]   शब्दविशेष = شبد [illegible]

Confused Sound

शृण्वन्नपि = [illegible]   न शृणोमि [illegible]

इति व्यवहरति = [illegible]   प्रमाता = پرماتا

कलकलमात्र = [illegible]   विषयमेव = [illegible]   तु = لیکن

संकलनमिति = [illegible]   तत्रैव = [illegible]

श्रुतमिति = سنا   व्यवहारः = [illegible]

वस्तुतस्तु = در اصل   स = وہ   कलकलध्वनिः [illegible]

[illegible]

श्रोत्राकाशे = [illegible] अनुप्रविष्टान् = [illegible]

न वैरागान = [illegible] अनुप्रवेशायन = اندر جانے سے

[illegible]

तथा = اسی طرح भवेत [illegible] तद्गतातिरिक्तस्य: [illegible]

कल कलस्येव = [illegible] भावात = [illegible]

तद्गता विशेष विवक्षायां च [illegible]

कल कलस्य च = [illegible]

कारणाभवाद्व = کارن کا ابھاؤ [illegible] अनुपपत्ति: स्यात = [illegible]

तद्धि तद्विक्षोत्पन्न = [illegible]

स्फुट वर्णामय = [illegible] शब्दकायत्वेपि: = شبد اگر [illegible]

सजातीय = [illegible] शब्दोत्पत्त्यनुपपत्ते = [illegible]

सर्वथा = [illegible] त एव = [illegible] वर्णा: = [illegible]

तेन = اس स्फुटरूपता = [illegible]

[illegible]

(نوٹ) "منتروں کا ستا" دراصل میں ایک قسم کی شکتی ہے سوا نندا یہ ہے اسی کو ترک شاستر میں سنکلپ (انوسندان) کہتے ہیں

نئی انوسندان میں آ جانا

11/ संकलनाम = لگن میں آ جانا गृह्णन्तः = پکڑتے ہیں

भवन्ति

कलकलशब्द वादयोः = بولنا اور شور دینے

awareness

तत्संकलनावधान = اسی کی لگن کا دھیان

Capacity

उदुत्तास्य = اٹھی ہوئی भवेदेव = ہوتا ہے Capacity to understand

कियन्मात्र = کچھ ماتر स्फुटोपलम्भः = ہر ایک انوبھو کرنا

इति संकलनमेव = اسی طرح سے شکتی انوسندان अत्र = یہاں

उपयोगि = یوگ ہے (یعنی انوسندان) संकलने च = انوسندان میں

भगवती = بھگوتی सर्वे = سب परा = پرا

परमेश्वरी = پرمیشوری करोति = کرتی ہے (یہ انوسندان) is produced

यदुत्तम् = جو کہا ہے तदाक्रम्य बले मन्त्राः

वस्तुतो = دراصل हि = بھی शृणोति = سنتا

पश्यति = دیکھتی वक्ति गृह्णाति

11 इत्यादि = وغیرہ   भगवत्या = [illegible]   एव रूपम् = [illegible]

यथा उक्तम् =

[illegible]

येन रूपं रसं गन्धं स्पर्श शब्दौ च मैथुनम् ।
एतेनैव विजानाति किमत्र परिशिष्यते ॥

[illegible]

येन = [illegible]   रूपं रसं गन्धं = [illegible]   स्पर्श शब्दौ च

मैथुनम् = [illegible]   एतेनैव = [illegible]   विजानाति = جانتا ہے

किम् = کیا   अत्र = یہاں   परिशिष्यते = [illegible]

[illegible]

इति वेदान्ते = [illegible]   परमेश्वरेण = [illegible]

न तु = نہیں   श्रवणं नाम = [illegible]

स्फुट कल कलात्मकतः = [illegible]

तार गद्गदादि रूपः = [illegible]   वशी करानमेव = [illegible]

तथा हि = [illegible]   श्री परमेश्वर एव = [illegible]

श्रीस्वच्छन्द शास्त्रे = [illegible]

जपविभाग = [illegible]   निरीयमसर = [illegible]

25/12

एवमेव = ایسے ہی   निरूपितवान् = بیان کیا ہے

"आत्मना श्रूयते यस्तु स उपांशुरिति स्मृतः"

[illegible]

[illegible] अत्र = یہاں   हि = کیونکہ   मध्यमापदे = [illegible]

आत्मैव = آپ ہی   संशृणुते = سنتا ہے

12 नापरः = [illegible]   इत्युक्तम् = [illegible]

[illegible] स्थानादि = [illegible]   प्रयत्न = [illegible]

स्फुटतायां = [illegible]   दन्तौष्ठ = [illegible]

पुटादि = [illegible]   संयोग विभागेन = [illegible]

low voice

[illegible] अतिनिभृतमपि = [illegible]   शब्दोच्चारे = [illegible]

निकटतरवर्ति = [illegible]   परश्रवणसामीप्य = [illegible]

स्यात् = ہے   इति = [illegible]

[illegible] श्रावकतापत्तिरिव = [illegible]

72/ परैः संश्रूयते यस्तु सशब्दोऽसौ प्रकीर्तितः ॥

[illegible]

इत्युक्तम् = یہ کہا گیا   यतः = کیونکہ   न च = اور نہ   अग्र = [illegible]

निकटादि = [illegible]   विशेषः = فرق   कश्चित् इति = [illegible]

परप्रमातृ = [illegible]   दर्शनमात्रगोचर = [illegible]

जिह्वेषु = [illegible]   पुत्रादिसंयोग = [illegible]   तु =

यद्यपि = اگرچہ   आत्मन एव = [illegible]   श्रवणं = [illegible]

स्यात = ہو   न परस्य = [illegible]   तथापि = تو بھی

मध्यमापदमेव = [illegible]   एतत = یہ   संपद्यते = [illegible]

वर्णस्य = [illegible]   बाहिरात्मलाभाभावात = [illegible]

वाग्व्यभिधानात = [illegible]   हि = کیونکہ

स्फुटवर्णनिष्पन्नः एव = [illegible]

12 न च तत्र = [illegible] वाय्वभिघातो = [illegible]

[illegible] → बाध्यतापत्ति पर्यन्त: स्यात् = [illegible]

प्रोष्ठादि चलनमपि = [illegible] न तत्र = [illegible]

[illegible] वर्णांशो = [illegible] अनुप्रविष्टोत: = [illegible]

[illegible] अपि तु = بلکہ स्वात्मनिष्ठमेव = [illegible]

[illegible] तात्कालिकं = [illegible] तत्स्यात् = [illegible]

तात्कालिकोद्गीत = [illegible] निमिषित = [illegible] winding up

करण्यापारादिस्थानीय = [illegible]

स्फुटस्थानक = [illegible] करण प्रयत्नयोगे = [illegible]

तु = تو वर्ण निष्पत्तावपि = [illegible]

यदि = اگر नाम = [illegible] ध्वनीनां = [illegible]

तारतम्येन = [illegible] तारमन्द्रादि = [illegible]

73/ विभागे = दूरादूरादिश्रवणे स्यात् = اس وقت نہ صرف میں السی شروان ہے

सर्वथा = ہر طرح   परैः = دوسروں سے   श्रूयेते = سنے جاتے ہیں

इति वैखरीपदमेव सतत् = یہ وکھری پد ہی سنا جاتا ہے   इत्यलं = بس اس کو رہنے دے

प्रसक्तानुप्रसक्त्या = جو پرسنگ میں آیا رستے اس کا کوئی جواب نہیں ہے۔

پیرا सैव = وہی   परमेश्वरी = جو شری شکتی سروپ ہے۔

छवि श्रुतौ आमन्त्रणायोगेन = جب آمنترن یوگ سے (دھارن کرتی ہے)   स्फुटे = ظاہر ہو

शक्तिरूपतयोक्ता = شکتی روپ سے کہی گئی ہے।

नर- शक्ति- शिवात्मके = نر - شکتی - شو روپ

[illegible]   हि = کیونکہ   इदं = یہ   सर्वं = سارا (पर रूप, परापर रूप, अपरा रूप)   त्रिकरूपमेव = ترک روپ ہی ہے

پیرا [illegible]   तत्र = وہاں   यत् = جو   केवलं = صرف   स्वात्मनि = اپنے آپ میں — اپنے آپ میں ہی ٹھہرا ہے۔

[illegible]   अवस्थितं = ٹھہرا ہوا ہے   तत् = وہ   केवलं = صرف — جو اپنے آپ میں ہی ٹھہر کر [illegible]

जड़रूपयोगि = جڑ روپ جیسا   मुख्यतया = اس پر زیادہ [illegible]

[illegible]   केवल ज्ञेयरूपतया स्थितम् एव।

नरात्मकं = یہی نر روپ → घटः = گھڑا

نر روپ کہا گیا ہے۔

گڈ گڈ کھاتا ہوا یہ بڑے ہیں سکتا - یہی ہوا
شریف کھاتا
سے پکڑنا -
74

اسی کا نام ہے پرتھم پُرش

तिष्ठति = کھڑا ہے (پرتھم پُرش) इतिवत् =

پرتھم پُرش ہی کی طرح

एष एव = یہی प्रथम पुरुषविषयः =

اسی کو پرتھم پُرش کہتے ہیں ان تینوں میں تیسرا پرتھم پُرش ہے -

प्रथमः "सः" प्रेषः = شیش ہوا यत् = جو آیا ہے - جو سامنے

पुनर्दीमित्यपि = پھر ایسا دکھائی دیتا ہے भासमाने = چمکتا ہوا

جو آمنے سامنے ہے - دوسرا پُرش

यदाम... यमारातया

سامنا کرنے والا ہے

सामान्यकालमाव = آمنے سامنے ہونے والا समाच्छादित = ڈھکا ہوا

तत् तत् = وہ وہ भिन्न इदं भाव = دونوں ہی دکھائی دیتے ہیں

"त्वम्"

युष्मच्छब्द व्यपदेश्य

یہی ہے یشمد شبد کہا جاتا ہے - جس کو "تو" کہتے ہیں

तद्दृशात्ता रूपे = وہی ہے یہ شاکت

त्वे = "मैं" तिष्ठसि = کھڑا ہے

इत्यत्र = یہاں हि = کیونکہ एव एव = یہ ہے

युष्मच्छब्दार्थः = یشمد شبد کا ارتھ - त्वम्

आमन्त्रणातत्त्वं च = یہی ہے آمنترن کا روپ

"آمنترن کہا جاتا ہے" - آمنترن کا مطلب بھی یہی ہے
بلانے کا مطلب بھی یہی ہے

نسمٹ ارتھ میں اسمٹ یعنی چمتکار رہا سو اشر ادھ پایا جاتا ہے جب میں اس کو پکارتا ہوں - اس وقت میں دوسرے کو اپنا یا پکارتا ہوں +

148

74 → तथा हि = جیسا کہ   यथा अहं = جیسے میں   तिष्ठामि = ٹھہرا ہوں -

तथैव = ویسے ہی   अयमपि = یہ بھی

इति = [illegible]   तस्यापि = اس کو بھी

अस्मद्रूपावच्छिन्नाहंभाव = [illegible]

चमत्कार =   स्वातन्त्र्यम =

तत् / विच्छिन्नाहं = نہ ہی   अहं चमत्कारसैव =

75 अभिमन्वान = مانتا ہوا -   आमन्त्र्यते = آمنترن کیا جاتا ہے

यथार्थेन = سچ مچ   3 → मध्यमपुरुषेण = مدھم پرش سے

व्यपादिश्यते = کہا جاتا ہے   त्वम्   सः = وہی

हि = کیونکہ   भगवती = بھگوتی   परापरा = پراپرا

3 سے 13 → सर्वथा = ہر طرح سے   पुनर्विच्छिन्न =

[illegible]

चमत्कार = ...   निरपेक्ष =

स्वातन्त्र्य = ...   स्फुरद्विमर्श =

स्फुरं ... तिष्ठामि =

इति परामहारिकोदय:

उत्तमाय

यत्र = جہاں

पुरुषस्य = ...

यदुत्तमम् = ...

"यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥"

यस्मात् = جس کارن سے   क्षरमती = ...

अतीतो = ...

ता: ऽहम् अक्षराद् ऽपि = ...   च उत्तमः = ...

अतो = ...   अस्मि ...   लोके = ...

अस्मि = ...

वेदे च = ویدوں میں بھی   प्रथितः = مشہور ہوں

पुरुषोत्तमः = ...

[illegible Urdu notes]

75/75 अत्र = یہاں   क्षराक्षररूपात = [illegible]

उभयतोऽपि = دونوں سے   हि = کیونکہ   उत्तमत्वम् = [illegible]

'I' — अस्मि = first person ہے   इत्यस्मदर्थेन = [illegible]   उत्तमम् = ہے

न हि = نہیں   अत्र = یہاں   सर्वत्र = [illegible]

अहमिति = [illegible]   परिमित = [illegible]

शरीरादि = جسم آدی   अपरिदृश्यत = [illegible]

तस्य = [illegible]   प्रत्यक्षेणैव = [illegible]

तादूप्याविरोधात् = [illegible]

[illegible]

तदेवम् = [illegible]   इदम् = [illegible]

→ स्वयं = خود آپ   प्रथात्मके = [illegible]   शिवात्मके = [illegible]

रूपम् =

[illegible]

एतत एव = [illegible]   बाधस्यास्य = [illegible]

[illegible]

स्वसंवित् [illegible]   प्रथात्मकस्य = [illegible]

किंचिन्न = [illegible]   अन्ने = [illegible]

नाप्यधिकं = [illegible]

[illegible]

139

76

उपचय =

अपचय

उपचय

This is Correct meaning

तस्याः प्रकाशरूपस्य =

चिन्मये =

अनुप्रवेशात् =

तदपेक्षया च =

मोदयस्थयमपि =

न किंचित =

त्वं

इत्युपचयापचय =

ऊनत्वाधिक्य

रहितस्य, मध्यस्थानीये =

इदन्ता =

त्वं

निर्दिश्य =

प्रमाव =

लब्धप्रतिष्ठाने =

न =

प्रभवन्ति =

तत् बोधाविच्छेदरूपः =

अस्मदर्थे = =

in other words they are one with

विच्छेदितोऽपि

त्वं

युष्मदर्थे =

त्वं

एवमेवेति =

अत एव =

(140)

neuter gender — neutre gender

76/77 "अलिङ्गे युष्मदस्मदी" =

गीते =

देहगत =

संख्याद्युपचारश्च =

परा परादि शक्ति गर्भीकारात =

संख्यायोगस्तु =

उपपद्यते =

तथा हि =

स्वस्वातन्त्र्योपकल्पित =

भेदावभासस्य =

अनन्तशरीराद्यैः =

एकतयैव =

विमृश्येत =

"अहं युवां वयं यूयं"

इति च

उपचयाद्यास्तु =

देहगता =

उपचरितुमपि =

न शक्याः =

They are not Connected

"سب کچھ میں ہی ہوں"

⊕ नररूप → शाक्तरूप → शिवरूप
प्रथम पुरुष → मध्यम पुरुष 'त्वं' → उत्तम पुरुष

तंत → पूर्व जडरूपता

चिद्रूपस्य = [illegible] अनाधिकता = [illegible]

अनुपपत्तेः = [illegible]

सर्वं हि = [illegible] सर्वात्मकामिति = [illegible] इति न्यायेन.

नरात्मानो = [illegible] जडा अपि = اگر وہ [illegible]

त्यक्त तत्पूर्वरूपाः = [illegible]

शाक्त - शैवरूप भाजो भवन्ति = [illegible]

⊕ श्रागत = [illegible] ग्रावाणः = [illegible]

मेरुः = [illegible] हिरण्यसामहे = [illegible]

भवामि =

अपरे च = [illegible] सोऽहं = [illegible] ब्रवीमि = [illegible]

इत्यपि = [illegible] प्रतीतेः = [illegible]

शाक्तामपि = [illegible] युष्मदर्थरूपमपि = [illegible]

नरात्मकता = [illegible] भजत एव =

[illegible]

(42)

مثال: تم دن جسکا خصم ... [illegible]

[illegible]

یہاں آخر ... [illegible] ... بتایا گیا ہے

77 ज्ञातारूपम = [illegible] उडिमत्वा = چھوڑکر

त्वे = ? मतमय धैर्य ज्ञाकारिति = [illegible]

प्रनामन्त्रण = [illegible] योगेनापि =

[illegible]

प्रतिपत्तेः = [illegible]

भवानित्यनेन = [illegible]

یہاں آخر ... [illegible]

पादा = پاد मुरत = [illegible]

पादा कथयन्ति

इत्यादि प्रत्ययविशेषैश्च = [illegible]

उचित

अपरा = اپر अवस्थोचित = [illegible] (شیبا)

[illegible]

नरात्मक = [illegible] प्रथम पुरुष विषयत्यादि =

[illegible]

प्रतीतिस्वभावात = [illegible]

त्यक्तज्ञातारूपस्यापि च = [illegible]

अहंरूप = [illegible] शिवात्मकत्वमपि स्यात =

[illegible]

[illegible]

2nd person

[illegible] 3rd "

78

वयस्ये = اے پیاری   दयिते = پیارے

~~[illegible]~~ त्वमेव = [illegible]

अहं भवामि इति = "میں ہوں"

प्रत्ययात् = اس بات سے | शिवस्वरूपमपि च = [illegible]

उज्झित = چھوڑ کر   कंपचिद्रूपमिव = [illegible]

वरशक्त्यात्मकं = [illegible]

वपुराविशत्यत = [illegible]

कोऽहम् = کون ہوں میں   स्मोऽहम् = [illegible]

अहो अहं = [illegible]   धिक् माम् = [illegible]

अहो महाम् = [illegible]   इत्यादौ = [illegible]

हि = کیونکہ   अहमिति = "میں ہوں"

गुराीकृत्य = [illegible]   आविहिष्कृते = [illegible]

स्वातन्त्र्यं = [illegible]   मुख्यतया = [illegible]

[illegible]

[illegible]

تو = ۔ निश्चितमेव = [illegible]

इदन्ता प्रतीयते = [illegible] यत्र = جس

भगवत्या = [illegible] अपराया = [illegible] उदय: [illegible]

अहं इदम् इत्यादौ = [illegible]

परापर शाक्तस्पन्द स्पर्श एव = [illegible]

शिवस्य = [illegible] किं तु = [illegible]

~~पूर्वं = [illegible]~~ पूर्वम् = [illegible] अव्यभिचारितम् = [illegible]

उत्तरत्र = [illegible] तेन = اس سے

नररूप = [illegible] स्फुरत्येव = [illegible]

प्रतिपत्त्या = [illegible] शाक्त - शांभव = [illegible]

धुरमारोढु = [illegible] प्राकनुयादेव = [illegible]

न [illegible] पुनः = [illegible] वैपरीत्येन = [illegible]

جہاں فقط آپ ہی کو ہی ہے - وہ گھوڑا نہ تھا
وہ دونوں - وہ شکل نہ بنا ہے

travel میں آتا ہے جتنا بھی مگر اپنا سوچ نہیں چھوڑتا -

79

ग्रासेलशां = [illegible] → स्फट = [illegible]

प्रतीतिमयम् = جانتے ہیں - مگر لفظ سوچ کی نہیں چھوڑتا

آنکھ اپنے روپ کو نہ چھوڑتے ہوئے پرتیں روپ

प्रत्यक्त = [illegible] * overleaf निजनिजरूपतया = اپنا اپنا اصل روپ سے

आत्मकत्वात् = [illegible]

(ایک شکتی - دو شکتی) ایک میں - دوسری اور انیک میں بیشمار ہے -

एक - द्वि - बहुरूपभागित्वमेति = [illegible]

प्रत्येकमेतत = ہر ایک ہر - त्रिकम = تینوں

उक्तं हि = کہا ہے

"एकं वस्तु द्विधा भूतं द्विधा भूतमनेकधा"

"ایک چیز ہو جاتی دو ... ہر ایک ... ہے"

इति। एकात्मकत्वे = [illegible] हि = کیونکہ

अप्रतियोगित्वात् = [illegible]

शिवताप्रती = [illegible] प्रतियोगिसंभवे = [illegible]

धात्मत्वम् = [illegible] प्रते - [illegible]

[illegible] (148)

ایکتا کی شکتی کا سپھار ہے سب

ایک ہی میں نر - دیو دوئی میں شکتی - بہو روپ میں نر

وہ اندر کھائی دیتا

79/ अनेकतायां = جہاں انیک   भेद एव = بھید ہی

नरात्म भाव = وہ نر آتم بھاؤ   एकस्यैव घट = ایک ہی آتم

घट: घटो घटा = [illegible]   घट पट पाषाणाम् = گھٹ - پٹ - پتھر

इत्यपि = بھی   स्ति = ہے   तिष्ठति तिष्ठत = [illegible]

तिष्ठन्ति = سب میں ٹھہرے   इति च एकेनैव = اسی طرح ایک ہی ہے

क्रिया शक्ति = یہ کریا شکتی   स्फुरितमेव = (ایک ہی) ہوتی ہے

एतत = یہ کریا شکتی کا سپھار   यथोक्ते = ایسی طرح کا

یہ سب ایک ہی نر کی شکتی د کریا کا سپھار ہے

"अनेकमेकधा कृत्वा को न मुच्येत बन्धनात"

سب (جو نر آتم بھاؤ ہے) وہ ایک ہی کر (ایک ہی کر - نر بھاؤ) ہو کر کون نہیں مکت ہو جاتا

एत एव = اسی   नर - शक्ति - शिवात्मनो = نر - شکتی - شو آتما (ان کی)

युगपदेकत्र = ایک   पस्मा परामर्शो = پرا مرش

उत्तरोत्तर स्वरूपानुप्रवेश इव = ایک روپ میں اندر جانا

person तस्यैव = اسی کا   वस्तुत: = واصل

तत्= तत्परमार्थरूपत्वात् = وہی ہے [illegible]

۲۰ | स च त्वं च तिष्ठथः = اس کے وہ بھی اور تم بھی - دونوں ٹھہرتے ہو

स च = وہ بھی | त्वं च = اور تم بھی = میں بھی

तिष्ठामः = ٹھہرتے ہیں | इति प्रतीतिक्रमएव = اس طرح سے بیان کا کرم ہی ہے

अकृतक संस्कार सारः = کامیابی کے بغیر سنسکار کی سار

शाब्दिकैः = صرف و نحو کے علماء سے | लक्षणैः = لکشن سے

अनुगम्यते = جانا جاتا ہے | तथा च = اسی طرح

निजभाषापदेष्वपि = اپنی زبان کے لفظوں میں بھی

संस्कारस्य = سنسکار کا | यत्र = جہاں | नामापि = نام بھی

न = نہیں | अप्रविश्यते = پایا جاتا ہے

बौद्धाद्यविडादिषु = بودھ وغیرہ

तत्रापि = ان میں بھی | अयमेव = یہی

वाचनिकः = ادنیٰ کرم | क्रमः = کرم ہے

80 वचनक्रमश्च = [illegible] ह्लादीमेव = [illegible]

प्रतीतिं = [illegible] मूलतोऽनुसरन = [illegible]

तत्प्रतीतिरसरूपतया = [illegible]

प्रतीतेरपि = [illegible] एवंरूपत्वम् = [illegible]

प्रवगमयेत = [illegible] यथोक्तमेवैव =

"..... न हृदयंगमगामिनी गीः ।"

[illegible]

तत् सर्वथा = [illegible] मेवच्छन्दो = [illegible]

नार्थो = [illegible] नापि = [illegible] चित्तेर्गतिः = [illegible]

श्रीमालिनीतन्त्रेऽपि = [illegible]

"एवं सर्वाणुसंघातमधिष्ठाय यथा स्थिता ।
तथा ते कथिता शंभो शक्तिरेकैव शंकरी ॥"

एवं = [illegible] सर्वाणुसंघात = [illegible] अधिष्ठाय यथास्थिता = [illegible]

यथा = [illegible] स्थिता = [illegible] तथा = [illegible] ते = [illegible]

कथिता = [illegible] शंभो = [illegible] शक्तिरेकैव = [illegible]

40/41

श्रीतन्त्रसमुच्चयेऽपि = ...

"नर-शक्ति-शिवावेशि विश्वमेतत्सदा स्थितम्।
व्यवहारे क्रमीणां च सर्वज्ञानां च सर्वशः॥"

[illegible]

नर-शक्ति-शिव = نر شکتی شو विश्वम् एतत् = [illegible] सदा = سدا स्थितम् = [illegible]

व्यवहारे = [illegible] क्रमीणां च = [illegible] सर्वज्ञानां च = [illegible]

सर्वशः = سراسر ([illegible])

तदेव = وہی नरशक्तिशिवात्मक = [illegible]

स्फुटप्रतिपत्ति = [illegible] सम्प्रदायोपदेशेन = [illegible]

दर्शितं = [illegible] नरः शक्तिः शिव = نر شکتی شو

इति = तु = [illegible] सर्वसह: = [illegible] ([illegible])

[illegible]

प्रतिपत्तिक्रमः = [illegible] परमेश्वरे दृढा = [illegible]

स्वातन्त्र्यसृष्टः = [illegible] इत्यलं = [illegible]

परशक्तिपात = [illegible] पवित्रित = [illegible]

बहुश्रुत = [illegible] सहृदय = [illegible]

मूलप्रेरसादिमयस्य =

यत् = जो अनुत्तरं = अनुत्तर

विश्रान्तिस्थाने = | किं तत्? =

इत्याह = ~~ततः स्यात्~~ =

यस्मात् प्रसृत:

अये = कौलिको विधिः =

कौलिकः = कुलाकुलात्मा =

प्राक् = व्याख्यातो =

विधीयमानत्वात् =

Construction

विधिः = महासृष्टिरूपो =

गर्भीकृत अनन्तसृष्ट्यादिकोटिद्वातो =

~~यस्मा~~ यस्मात = प्रसृत =

एतदेव = तदनुत्तरं =

84 यदुक्तम् = کہا گیا ہے ... ततः सर्वं [illegible]

तदा हि = [illegible] इदं = یہ [illegible]

विश्वं = [illegible] → चिच्चित्प्राणदेह = [illegible]

सुखदुःख = سکھ دکھ इन्द्रियभूत = [illegible]

घटादिमयमेकस्यां = [illegible] वा = [illegible]

परस्यां = [illegible] परमेश्वर्यां = [illegible]

भैरवसंविदि = [illegible] अविभागेनैव = [illegible]

बोधात्मकेन = [illegible] रूपेण = [illegible]

आस्ते = [illegible] यद्यपि = [illegible]

बोधात्मकं = [illegible] रूपं = [illegible]

85 नास्तमेति = [illegible] जातुचिदपि = [illegible]

तदस्तमेय = [illegible] अप्रकाशमानता = [illegible]

आपत्ते = [illegible]

तथापि = [illegible] परस्पराभावात्मको = [illegible]

अवच्छेदः = [illegible] तत्र नास्ति = [illegible]

See Next

[illegible]

(ابیدیں) - [illegible]

[illegible] سر بحثا ہاں میں سبھی بھاو ذات محفوظ سکی ہے - بھاو ذات میں پیراستا کا ادوم نہیں ہے - अप्रनुदित بھاو ذات

میں سندا بھا ادوم نہیں ہے - شروکلپ ردوپ (164) ادو سندا میں بھی وستو کی سرشتی نظر سکتی ہے -

یہ نیند بنا ہم نے زبردستی بنائی ہے - انیا بھاو Adjust 2 b [illegible] بھاوی شروکلپ میں بھی [illegible]

88

विश्वात्मान एव = [illegible] भावा = بھاوی میں -

तत्र नास्ति = [illegible] نہیں ہے विश्वात्मान एव भावाः

तत्र च यदि = [illegible] एषामवस्थितिः ان بھاوی کی [illegible]

न स्यात = نہیں ہوتی तत = وہ

प्रथमानुसंधानादिकमेव = [illegible]

प्रक्षेपेरोपयोग्यापि = [illegible] تو بھی

न भवेत = نہیں ہوگا इति समुचितानुदिते = [illegible]

इद इदन्ताकम = [illegible] प्रत्युपरामर्शः = [illegible]

मात्राभिन्नमिव = [illegible]

भावजात = بھاو ذات [illegible]

अप्रनुदित इदन्ताकम

विगतभेदकलन = [illegible] तिष्ठति = भावजातम् [illegible]

न तत्र कश्चित = [illegible] کوئی

بھید کلنا [illegible] - [illegible] بھاو ذات میں کوئی ادھ بھید نہیں ہے अप्रनुदित

[illegible]

156 [illegible]

96 अवच्छेदः = [illegible] तथा यदि = [illegible]

अत्र स्पष्टः = [illegible] सन्नयं = [illegible]

अयं विधिः = [illegible] कौलिकः = [illegible]

स्थितौ = [illegible] → विश्रान्ति = [illegible]

प्राप्तः = [illegible] सर्वमिदं = [illegible]

हि = [illegible] षट्त्रिंशदात्म = [illegible] 36 [illegible]

ततः = [illegible] सामान्य स्पन्द = [illegible]

संविदात्मन = [illegible] शक्तिमतः = [illegible]

प्रसरस्थानात्

परशक्ति प्रधानात् = [illegible] शिवात् = [illegible]

स्वशक्त्या = [illegible] सूक्ष्ममपि = [illegible]

सत् = [illegible] तत्रैव = [illegible]

भैरव विशेष स्पन्दात्मनि = [illegible]

शक्ति प्रधाने = [illegible] स्वस्वरूपे = [illegible]

[illegible]

جو ہر وشیش شنید ویسے بنایا کہ اسی پرم وطرا جیسو اوپر اوپر ترچھ میں - تا کہ سامانیہ سنید میں جا سکے

(156)

بیران اپان پرم وطرا

विश्राम्यते = قرار پاتا ہے — ٹھہر جاتا ہے तदेव = وہی

स्वस्वभावनिष्ठितत्वे = اپنے اپنے سوبھاؤ میں رہنے والا

سو سوبھاؤ میں مکمل

भावानां = بھاوؤں کا

یعنی

یدُکتم् – जो कहा गया यदुक्तं = [illegible]

यस्मिन् सर्वं यतः सर्वं ...

جس میں سب کچھ ہے، وہ جس سے سب کچھ ہے

तदतत् = وہی یہ

शिवप्राकट्यात्मैव = شو کا ظاہر ہونا ہی

सामान्यं = سامانیہ — شو وہی विशेषरूपमेकात्मकमपि = ایک ہی [illegible]

परमेश्वरे सौव = پرمیشور میں ہی उपदेशोपाय = اپدیش اپائے

प्रवेशाय = اس میں داخل ہونے کے لئے पृथककृत्य = الگ الگ کر کے

निरूप्यमाणा = [illegible] वस्तुतः = دراصل

पुनर् = پھر एकमेव = ایک ہی

स्वतन्त्रचिन्मयमहामित्यौ = [illegible]

ऐश्वर्यशक्ति = [illegible] सारम् = سار

अनुत्तरम् = [illegible]

यत्र = جس میں कीदृशं = کیسا ہے

स्वस्वरूपेऽवस्थितः = اپنے سروپ میں [illegible]

"मम हृद्व्योम्नि" → = [illegible]

ममेति = [illegible] → यत एतत् = جو یہ ہے

مہ ہرت [illegible]

मम हृत् व्योम

87 → हृदय = → सर्व भावानां = स्थाने =

→ प्रतिष्ठाधाम → नीलादीनां हि =

प्रत्तात: क्रिमिपर्यन्तं =

चिदेकात्मनि विश्रान्ता = न किंचित =

नीलादि = रूपमिति

प्रमातुरेव = यत् ममेति भातम्

प्रविविच्छन्न = चमत्कार

उपरोहितत्वे = → मम नील भातम

इति तदेव =

नीलादिरूपत्वमिति =

तस्य = → ममेत्यस्य =

नीलघनन्त = सर्व भाव हृदयस्य =

→ यत = व्योम = → यत्र = तते =

ममकारात्मकं = मम विश्वं = वीतं =

→ सम्यक = धृतम = प्रतं एव =

त्यक्तभिन्न = निजरूपतया =

शून्यरूपं = व्योम = यत्र =

तथा = ममेत्यस्य →

'मम हृत्स्थिते' 87

भिन्नाभिन्नरूप = [illegible] परापरसंविदात्मनो = [illegible]

यत् हृदयं = [illegible] → [illegible]

पर्यन्त = [illegible] प्रतिष्ठाधाम = [illegible]

"अहमिति" [illegible] तस्यापि = [illegible]

व्योम = [illegible] संहाररूपकलनेन = [illegible]

'म ह अ' → इति [illegible] नरात्मके = [illegible]

'म' कारात्मक [illegible]

लीनील = [illegible] बिन्द्वात्मप्राक्तौ [illegible]

म-इति = [illegible] "म" [illegible]

कुण्डलिनी = [illegible] ह-कलारूपाया = [illegible]

[illegible] 'ह' [illegible] ह [illegible]

प्रविश्य = [illegible]

परिपूर्णानिरर्गल = [illegible] चमत्कारे [illegible]

सर्वाविच्छिन्न = [illegible]

रूप-इत्यनुप्रविष्टं = [illegible] "रूप" [illegible]

तथा चकास्ते! - तथा भवति = [illegible]

सदैव = [illegible] मम = [illegible]

یہ شلوک اگر اس میں مول آورن ہم ساتھ ساتھ لے نہ ہو تو یہ آورن میں بالکل غیر ممکن ہے۔

44

हृद्व्योम् = دل کا آکاش [illegible] सर्वं यतः उदेति = [illegible]

प्रसृते = [illegible] → यत्र च = اور جس میں

विश्रान्ते = [illegible] قرار [illegible] तदेव = وہی ہوتا ہے

चित् नित्यमनावृत स्वभावं = [illegible]

स्वयं = خود [illegible] प्रथमानम् = [illegible]

अनपह्नवनीयम् = [illegible] अनुत्तरम् = اُتر

यथोक्तम् = جیسا کہا ہے

"यत्र स्थितमिदं सर्वं कार्यं यस्माच्च निर्गतम्।

तस्यानावृतरूपत्वान्न निरोधोऽस्ति कुत्रचित्॥"

आवरकत्वेन = [illegible] निरोधकाभिमतोऽपि = [illegible]

हि = کیونکہ तदावरणादि स्वतन्त्र्येण = [illegible]

प्रकाशमानो = [illegible] इति क्रियात्मक एव = [illegible]

परमेश्वरः = [illegible] यदित्ययं = [illegible]

निपातः = [illegible] सर्वविभक्त्यर्थवृत्तिः = [illegible] "यत"

अपरवाक्यीय = [illegible] सम्बन्धादि त्यात

अन्य वाक्य [illegible]

विशेषे = [illegible] स्यास्तनुरत्नः = [illegible]

उदं सर्वं स्थितम् 'यत्र' [illegible] उदं सर्वं निर्गत यस्मात् [illegible] विश्रांत [illegible] उदं सर्व → [illegible] → [illegible] यत्र → यस्मात [illegible]

इदं सर्वं स्थितम्
इदं सर्वं निर्गतं

यस्मात् इति — यत्र इति

88/89 — पञ्चम्यर्थे = [illegible] सप्तम्यर्थे च = [illegible]

वर्तते = [illegible] अयं हि = [illegible]

[illegible] आञ्जस्येन = [illegible] अथ = [illegible]

यदर्थं = [illegible] कौलिकः = [illegible]

[illegible] यस्मात् — सृष्टिप्रसरः = [illegible] यत्र = [illegible] मम = [illegible]

हृदन्योर्मि = [illegible] अवस्थितः = [illegible]

तदेवानुत्तरम् = [illegible] |

[illegible] एवं तस्यैव = [illegible]

प्रसरविश्रान्त्यु = [illegible]

उभयस्थानत्वं = [illegible] निरूप्य = [illegible]

[illegible] प्रसरक्रमस्वरूपं = [illegible]

i.e. its practical shape ← क्रियाशक्ति = [illegible] स्पन्दविसर्गः = [illegible]

निरूपयति = [illegible] → i.e. its practical shape "कथासि" [illegible] "[illegible]"

इत्यादि = [illegible] | तदेव = [illegible] हि = [illegible]

रूपम् = [illegible] अहं = [illegible]

[illegible] → परानुत्तरात्म, परापरादिमय = [illegible]

पश्यत्यादि = [illegible]

[illegible]

89 प्रसर परिपाट्या = [illegible] श्रीविद्यैकैकतापरमार्थैः =

कथयामीति = "کہوں گا" समुचितव्यपदेशं = [illegible]

पराभट्टारिकोदयभागि = [illegible]

वैखर्यन्ते = [illegible] वाक्यप्रबन्धं = [illegible]

शास्त्रीय [illegible] लौकिकादि = [illegible]

बहुभेदं = [illegible] व्यक्तयामीति = [illegible] (कथयामि)

तदुक्त = [illegible]

"... सर्वेश्च यः" = [illegible]

प्रथम पर्यन्त भुवि = [illegible] पराभट्टारिकात्मनि = [illegible]

तत्प्रसरात्मनि च = [illegible] परापरात्मैव तावपुषि = [illegible]

अनुत्तर = [illegible] ध्रुवपदविजृम्भमेव [illegible]

तदाहुर्निजे वृत्तौ = [illegible] श्रीसोमानन्दपादाः = [illegible]

90 कथयामि इति = "[illegible]" → उच्चारयामि = [illegible]

उत्कलितात इति = [illegible]

in other words → तथा हि एव = [illegible] सर्वस्य = [illegible]

पन्त विश्व रूपेण = [illegible] कथयामीति = "کہوں گا"

तदेवास्माभिः = [illegible] युक्त्युपदेशं = [illegible]

संस्कारै = [illegible]

[illegible]

सत + थ: → सत्थ:

तत सत

निर्मलस्य = हृदयङ्गमीकृतम्: =

स्वरूपं चास्य = परमेश्वरस्य =

"सत्य" इति = सत

"य एव च परमेश्वरो

भैरवात्माकुलानुत्तर =

ध्रुवधामतया" =

उक्तम् = तदेवेदं =

सर्वं सत = कौलिकविधिरूपं =

न हि = प्रकाशविमर्श =

शुद्धभैरवस्वरूपातिरेकि =

किंचित = भावानां =

सत्त्वं = सत्तासंबन्धार्थक्रिया =

कारित्वादीनामपि =

सत्ताहेतुता

पराभिमतानामपि

[illegible] clear [illegible]

सत्तायोगे = [illegible] तथात्वानुपपत्तेः = [illegible]

सत्त्वान्तर = [illegible] अर्थक्रियान्तरयोगे = [illegible]

चानवस्थापत्तेः = [illegible] प्रथमत एव = [illegible]

तथा = [illegible] विमर्शजीवित [illegible]

प्रकाशमेयत्वमेव = [illegible] सत्त्वे = [illegible]

तत् च = [illegible] → स्वातन्त्र्यविमर्श = [illegible]

सोऽहंभाव = [illegible] भरितमिति = [illegible]

भैरवरूपमेव = [illegible]

यद्वा = [illegible] सति = [illegible] सद्रूपे = [illegible]

यस्यति [illegible] → यत्ने = [illegible] करोति = [illegible]

यत
यः यत्नम् करोति

क्रियाशक्तिप्राणत्वात् = [illegible]

तत = [illegible] सद्य = [illegible] इति क्रिया [illegible]

नपुंसकनिर्देशः = Neuter Gender [illegible] सदादिति = [illegible] सत् - यत

केचित् = [illegible] गुरवः = [illegible] पठन्ति = [illegible]

तदुक्तं = [illegible] श्रीसिद्धसन्ताने = [illegible]

सद् यत [illegible]

[illegible]

91 प्रकाशमाना भासैव यद्भूतिस्तत् सदैव हि।"

भूति - glory [illegible]

श्री स्पन्देऽपि :- [illegible]

.... तदस्ति परमार्थत: ।"

[illegible]

इति श्रीसोमानन्दपादैरपि : [illegible]

[illegible]

यत्सत्तत्परमार्थो हि परमार्थस्ततः शिवः'

[illegible]

इति स्वरूपमुक्तम् - तदुक्तं = [illegible]

"यः सर्व ---- "

इति अस्यैव = [illegible] क्रियाशक्तिप्रसरं = [illegible]

निरूपयति = [illegible] "कौलिकसिद्धिदम्" इति =

[illegible]

कौलिकं = [illegible] यत् = [illegible] व्याख्यात =

तस्य = [illegible] सिद्धि: = [illegible] [illegible]

कौलिकभाव दार्ढ्य

तथात्वदार्ढ्यं = [illegible] तत = [illegible]

[illegible]

* اس کی "شدھی" کا مطلب ہے اس کو ایک بھاؤ میں لانا یا پراپت کرنا۔

यतो = جو भवति । = ہوتا ہے तत्राहि = اُسی میں

परमार्थ प्रमातरि = پرم پرماتا میں सकल = سب

کُل - اکُل وغیرہ = कुलाकुलादि तथा भवति = ویسا ہی ہوتا ہے

यत्र = جس میں प्रतीयमान = جانا جاتا ہے स्फुरत्तम्

* सर्वे = سب तथात्वे सादृश्य भजते =

तदुक्तं = کہا ہے = ... परात्परतरं त्रिकम्"

بڑے سے بڑا ہے ترک

92 इति अन्यत्रापि = اس طرح دوسری جگہ بھی کہا ہے

"वेदाद्वैष्णवं ततो वामं ततो दक्षं ततः कुलम्

ततो मतं ततश्चापि त्रिकं सर्वोत्तमं परम्॥"

वेदाश्च = ویدوں سے بڑھ کر वैष्णवं = شیو مت ततो वामं = اس سے بڑھ کر وام مارگ

ततो दक्षं = اس سے دکشن مارگ ततः कुलम् = اس سے بڑھ کر کُل مارگ

ततो मतं = اس سے بڑھ کر مت ततश्चापि त्रिकं = اس سے بڑھ کر ترک

सर्वोत्तमं परम् = سب سے اعلیٰ ہے

१३ इति श्रीनिद्राचारेऽपि = ...

वाममार्गाभिषिक्तोऽपि दैशिकः परतत्त्ववित्

संस्कार्यो भैरवे सोऽपि कुले कौले त्रिकेऽपि सः ॥

वाममार्गाभिषिक्तोऽपि = اگر وام مارگ میں ابھی شیک

दैशिकः = گرو

परतत्त्ववित् = پر تتو کا جاننے والا

مگر

وہ سنسکار کیا جاتا ہے

इति श्रीसर्वाचारेऽपि =

वाममार्गाभिषिक्तोऽपि दैशिकः परतत्त्ववित्।

क्रमाद्भैरवतन्त्रेषु पुनः संस्कारमर्हति ॥

وام مارگ میں دیکشا لیا ہوا = گرو

= پر تتو کو جاننے والا بھی ہو

= بھیرو تنتر میں

= دوبارہ سنسکار

کیا جاتا ہے

इति। क्रमश्च एष एव = یہ ترتیب بھی یہی ہے

सर्वे = सब यत = जो सर्वलोकवेदसिद्धान्त = سارے لوگوں کے ویدوں کے سدھانتوں میں بھی

वामदक्षिणा कुलमत भूमिषु = [illegible]

परमार्थप्रमातृ भावः = [illegible]

यथोक्तक्रमः = [illegible]

"यश्च सर्वमयो नित्यं तस्मै सर्वात्मने नमः" =

[illegible]

तदेवान = [illegible] अनुत्तरम् = [illegible] एतत सर्वं = یہ سارا

गर्भीकृत्योक्तं = [illegible] निजविवृत्तौ = [illegible]

सोमानन्दपादैः = سوماننداپاد [illegible] किं बहुना = [illegible]

सर्वमेवा = سب ہی [illegible] अनुत्तरम् अनुत्तरत्वात इति =

अयं तात्पर्यार्थः = یہ مطلب ہے [illegible]

93

इतीहक = [illegible] व्याख्याने त्यक्त्वा = [illegible]

यत = जो अन्यैः = [illegible] व्याख्याते = [illegible]

तत्प्रदर्शने = [illegible] दूषणम् = [illegible]

यद्यपि = اگرچہ पदवाक्य संस्कार विहीनं

[illegible]

168

اس میں اعلیٰ کا انکشاف ہوا شر کی بات ہے

93/94 सह = [illegible] क्रीडावह = [illegible] गोष्ठी कृता =

भवति = [illegible] तथापि = [illegible]

سگر جو حضرت شیش بدھی ماں تھی

सचेतसो [illegible] अनुत्तरम = [illegible] अवबोधयितु

तत = [illegible] एकवार = [illegible] तावत = [illegible]

लिख्यते — [illegible] "अनुत्तरम्" [illegible] इत्यादिना =

सार्धेन श्लोकेन = [illegible]

शिवविषय: प्रश्न = [illegible]

"हृदयस्था" इत्यादिना श्लोकेन = [illegible]

शक्तिविषय: = [illegible]

तथा 'भगवदेवी' = [illegible] उत्पन्न = [illegible]

प्रतिवचनग्रन्थे = [illegible]

उत्तरस्यापि अनुत्तरम् इति = [illegible]

तत्रार्थ: = [illegible] उत्तरं च = [illegible]

श्रृणु = सن अनुत्तरं च इति = [illegible]

اتر یعنی سنگر اور انوتر بھی — تم سوال بھی ہو اور جواب

یعنی سوال اور جواب ایک ہی ہیں

ادھر اور انوتر

९५ अत्र = [illegible] यदि = [illegible] सखा = [illegible]

[illegible] त्रिकार्थ [illegible] अभिप्रायेण = [illegible]

व्याख्यातत [illegible] - नरविषयतृतीय = [illegible]

प्रश्न प्रसङ्ग = [illegible] अथ तु = [illegible]

यामलाभिप्रायेण [illegible] तत्रापि = [illegible]

द्वे वस्तुनी = [illegible] शिवशक्त्यात्मके = [illegible]

यामलमुच्यते = [illegible]

येन = [illegible] पृथक् [illegible] प्रश्नविषयात् = [illegible]

उत्पन्न आपत्ति = [illegible]

अर्थशब्दार्थयोः = [illegible] न संगच्छते = [illegible]

स हि [illegible] सजातीय विषय = [illegible]

अनन्तर्यवृत्ति = [illegible] → उत्तर स्वरूप = [illegible]

अवधारणमन्तरेण च = [illegible]

अनुत्तर विषयस्यैक [illegible] एकप्रश्नस्य = [illegible]

अनुपपत्ति = [illegible] तथाहि = [illegible]

केषुचित् = [illegible] वृद्धपुस्तकेषु =

[illegible]

95/96 ईदृक २ ایسے ۔ श्लोकान्तरे = دوسرے شلوک دوسرے اشلوک دृश्यते = دیکھا - پایا جاتا ہے۔

"श्रुतं देव महाज्ञानं त्रि-त्रिकाख्यं परमेश्वर
اسی طرح ہی سنا - گیان کو
उत्तरे च तथा, ज्ञानं त्वत्प्रसादावधारितम् ॥"
اپنے ہردے میں

سنا ہے ساتھ ہی ترک کا گیان میں نے سنا - اور اُتّر گیان بھی میں نے آپ کی مہربانی سے سن لیا ہے۔

یہ ہر ایک ظہور میں ترک نام موسوم ہوا گیان مشکل تھا۔ اور اُتّر سے عہد پر شِو گیان بھی

تمہارے پرساد سے میں نے لیا ہے۔
اور رکھا ہے

तस्मात् श्रीसोमानन्दपादनिरूपित = اس واسطے سوماننداپاد
نے جو تشریح کی ہے۔ اسی وجہ جو گرو آپ نے دی

व्याख्यानुसारेणैव
انوسار ہی

यत् गुरवः समादिशन् = جو کچھ ہدایت دی ہے - یا اُپدیش کیا ہے
سب کے گرو صاحبان نے

तदेव = وہی सर्वस्य = سب کی / سب کو
करोति = کرتی शिवम् = شِو

جو سوماننداپاد نے تشریح کی وہی سب کو شِو کرتی ہے -
وہی سب کا کلیان کرتی ہے

इत्यसंस्कृत दुर्व्याख्यातामससोन्मूलन व्रतः

षडर्धशासनापूतहृदम्बुज विकासकः

इति = [illegible] असंस्कृत = [illegible] दुर्व्याख्या = [illegible]

तामसम् = [illegible] उन्मूलन = [illegible]

व्रतः = [illegible] षडर्धशासन = [illegible] पूत हृदम्बुज [illegible]

विकासकः [illegible]

संस्त्यानानन्त पापौघ विलापक लसद्रुचिः

श्रीमोऽभिनवगुप्तेन व्याख्यामानुः प्रकाशितः॥

संस्त्यान = [illegible] अनन्त = [illegible] पापौघ = [illegible]

विलापक = [illegible] लसद्रुचिः = [illegible]

श्रीमो = [illegible] अभिनवगुप्तेन

व्याख्यामानु = [illegible] प्रकाशितः = [illegible]

एवं = [illegible] यतोऽयं = [illegible] कौलिको = [illegible]

विधि = [illegible] प्रभवति = [illegible] → यत्र च = [illegible]

प्रतिष्ठापदवीं = [illegible] भजते = [illegible]

यन्मयं च = [illegible] इदं = [illegible] कौलिकं = [illegible]

95/96

तदेव = [illegible]　　अनुत्तरमित्युक्तम् = [illegible]

تत्र = وہاں　　कस्तावत् = کون سا - کیا ہے [illegible]

कौलिको विधि = [illegible]

कथं च = کس طرح　　अस्य = اس [illegible]

परोऽनुत्तरात् = [illegible]

कथं च अस्य प्रतिष्ठा? = کس طرح اس انوتر [illegible]

कथं च अनुत्तरैकरूपत्वं = کس طرح یہ انوتر روپ [illegible]

यथोक्तम् = جیسا کہ کہا ہے

उत्तरस्याप्य अनुत्तरमिति = [illegible]

तत् सर्वं = وہ سارا　　युक्त्यागम = [illegible] - شاستر

स्वसंवेदन = [illegible]　　निष्कर्षण = [illegible]

तत्त्वबोधावाप्त = [illegible]　　विमर्श = [illegible]

Churning out the Reality

त्रिपुराणाम् = [illegible]

शिष्यान् प्रति = [illegible]

[illegible Urdu marginal notes]

[illegible]

96 वितत्य = [illegible] निरीक्षिते = [illegible]

भगवान् [illegible] प्रस्तौति = [illegible]

3 Part [illegible] ग्रन्थान्तरम् = [illegible] |

एतावद् [illegible] दृढोपदेश = [illegible]

निर्दलित भेदाभिमान = [illegible]

विकल्पानल्प संस्कारारणां [illegible]

तु = [illegible] सर्वमेतावतैव = [illegible]

"अनुत्तरम् कथम्" [illegible]

इत्यादि सार्धश्लोक युगल निगमितेन = [illegible]

प्रश्नेन = [illegible] | 'शृणु देवी' = [illegible]

इत्यादिना = [illegible] सार्धश्लोक = [illegible]

निरीतेन = [illegible] च उत्तरशा = [illegible]

अनुत्तर पद प्राप्ति = [illegible] उपावप्राविष्ट = [illegible]

97

जीवन्मुक्तभावानो = جیون مکت ہونے والے [illegible]

कृतकृत्यता = [illegible]

अतस्तावन्मात्र एव = انہیں ہی شلوکوں کا۔ اس لئے انہیں بس ماتر ہی [illegible]

इह प्रतिपाद्ते = [illegible]

पवित्रीकृते = [illegible]

विश्रमणीयम = ان ہی چار شلوکوں میں [illegible]

इत्युपभुज्य: = [illegible]

फूत्कुर्म: = [illegible]

तदनुत्तर = [illegible]

परमेश्वपद = [illegible]

विमलदर्पना = [illegible]

अन्तर विविधु = [illegible]

कौलिकपद = [illegible]

प्रविविक्षये = [illegible]

ग्रन्थान्तरमवतरति = [illegible]

Part II [illegible]

इत्युक्तम् = [illegible]

[illegible] Part III [illegible]

(175)

II Part of the Book

This part is the explanation of I part:—

97

तद्यथा

सुधाद्यास्तिथयः सर्वे
स्वरा बिन्दुसानगाः।
तदन्तः कालयोगेन
सोमसूर्यौ प्रकीर्तितौ ॥५॥

पृथिव्यादीनि तत्त्वानि
परुषान्तानि पञ्चसु।
क्रमात्कादिषु वर्गेषु
मकारान्तेषु सुव्रते ॥६॥

वाय्वग्निसलिलेन्द्राणां
धारणानां चतुष्टयम्।
तदूर्ध्वं शादि विख्यातं
पुरस्ताद्ब्रह्म पञ्चकम् ॥७॥

अमूला तत्क्रमाज्ज्ञेया
क्षान्ता सृष्टिरुदाहृता।
सर्वेषामेव मन्त्राणां
विद्यानां च यशस्विनि ॥८॥

तत् = तस्मात्

श ष स ह क्ष

अ आदि क्षान्ता
सृष्टि

indicate ... से ... (176)

97

इयं योनिः समाख्याता
सर्वतन्त्रेषु सर्वदा।

Why Prithvi Tattva after Shiv tattva

पृथ – पृ ... प्राद्य =

स्तिथयः = ... सर्वे स्वरा =

बिन्दुवसानगाः = بندو تک (...) तदन्तः =

= ...१०७ कालयोगेन = by touch of Time

सोमसूर्यौ = سوم سورج प्रकीर्तितौ =

पृथिव्यादीनि = پرتھوی آدی تتو तत्त्वानि

पुरान्तानि = ... पञ्चसु =

क्रमात् = ... कादिषु वर्गेषु = क ...

मकारान्तेषु = म कार تک सुव्रते =

आरोहण — To ascend

'य' (ब) वायव = ... (व) अग्नि = ... (र)

अवरोहण To Descend

सलिल = (बी) ... (ल) इन्द्राणां = ... (ल)

धारणानां = ... चतुर्दशम्

establish

177

98

तत ऊर्ध्वे = اس کے بعد   प्रक्षादि = ڈک پر

विख्याते = مشہور ہے   पुरस्तात् = آگے آگے

ब्रह्म पञ्चकम् = پانچ برہم (پانچ مکھ سے)

प्रमूला = ان سب کی مول   तत्क्रमात = اسی کرم سے

ज्ञेया = جاننا چاہیے   क्षान्ता = ...

सृष्टि = [illegible]   उद्धृता = لی ہے

सर्वेषामेव मन्त्राणां = [illegible] سارے منتروں کی

विद्यानां च = سارے ودیاؤں کی

यशस्विनि = [illegible]

इयं योनि = [illegible]   समाख्याता = [illegible]

सर्वतन्त्रेषु सर्वदा = سارے تنتروں میں ہمیشہ [illegible]

य indicate → [illegible]
र " ودیا
ल " کالا [illegible] → کال [illegible]
व " مایا

سبب بدائے ظاہر داد سے =

وچار کی = اُسی جو کچھ سے =

جو شور ہم اندر سے
ہے شدھ دیہہ بدھی تک
یا کرو دیہہ اُدوسفا =

الٰہی کو کشف لی ہے =
حکم ہو شوق
بعد بدائف کی ہے الہام ہوتے
بن گیا =

مرکز تا شرتا سا علم ہوتا = گیا اندر =

(اُسی اندر گیا)
دوسفا گذا =

اُس نقل رنگ ہوتی = زبانی سے جو وچار تھا = فی الحال = ہے = ہا

لیکن اگر اپنا کول

بعد میں =
(بس میں اپنے گئے =
بار بار
حکم = مگر اُس کا نام ہوتا ہو =
وہ کشف وچار کرنے والے
بس مجذوب صاحب ہی تھے

لہذا وچار ہوا سے جو کچھ کوں کی =

جو اور میں =
زبانی جو ورش سے دیں جو بدھی ہو اُسی کا =
جو رہا بار بار

اُس پر جو بھی آ سے کہا =

وہ اکول میں اپنی تھی
وہ حال ہے کوئی = 1948

دہی ہے مہی محبت =
سنبھل کر رہا =

وچار کرے ہم نے =
ابھار ہے دیکھ اس پر =

اُس سے تھا کی =
الہام پر اکتفا سے =
جو وچار کر کے میں =

نہ = اپنے آپ کو کشف ہی بنا سے =
اپنے آپ جو کشف ہے

ہے آگے تجھ

اس = گھٹ کو =

جو ادھو گر کرن = لنبا ہے = کھل =

جس کی گود بڑا ہے

پرکھ ... =

ھونی = پرا بھار کے الٹے = ان کو = پیو =

(جو دھوئیں میں ادر / اسانی میں) پرنام کرتا ہیں = سیدہے = گیا =

لھو جو برہم ھالی ہو گئے =

ملی میں - ادکو ... میں کرمن سے نکال ہو گے = جو کبھی برہم میں ... = برہم میں ... =

جو کمر جڑ = جیو ھکر کو = وہ کم کھل میں =

الیح

گنڈل یا بوندی - گنگ کے / واسکے دشمن کرتا = اپنے ہاتھ بنا کر =

دھکیلو کے کھول سے = ہاتھ دو ھکر =

اس وھار = بھار اوجھ = وہ گھر واپس آیا =

اگریا لیو جانا / نگے ہوئے لھو اکٹھے ہوئے = ... وہ ... لائے =

وہی یا شین جو / انکو ... ہیں = ان سچوں کو =

کہی گیا = زیادتی کے لائے ... =

شیجی = گیان ... گول =

तत्र = وہاں   अकुलम = اکل → अनुत्तरमेव = انوتر ہی

कौलिके = [illegible] →

सृष्टिरूपमिति = [illegible]   निर्णीयते = [illegible]

अथ = [illegible] तत्सृष्टिरिति सम्बन्धः [illegible]

तदेवानुत्तरे पदे = [illegible]

सृष्टिरित्यर्थः = [illegible]

यद्यपि च = [illegible]   सृष्टावपि = [illegible]

प्राक्तनमयन = [illegible]   कालापेक्षा = [illegible]

पौर्वापर्यं = [illegible]   न स्यात् = نہیں ہے -

तथापि = تو بھی   उपदेश्योपदेशभावलक्षणो = [illegible]

भेदो यावत् = [illegible]

स्वात्मनि = [illegible]   स्वातन्त्र्यात् = [illegible]

परमेश्वरेण = [illegible]   भास्यते = [illegible] →

तावत्पौर्वापर्यमपि = [illegible]

इति तदपेक्षया = [illegible] - भास्यते → [illegible]

अथ शब्देन = [illegible] न आनन्तर्यम् =

[illegible]

अथ → [illegible]

अथ → [illegible] Step [illegible]

[illegible] (प्रश्न) अनन्तर [illegible]

अनन्तरम् कुलमेव =

सृष्टिरूपमिति = [illegible] यावत् = [illegible]

न तु प्रश्नप्रतिवाक्यामानन्तर्यमर्थः

[illegible]

अथ शब्देनोक्तम् = [illegible] "अथ" [illegible]

एक प्रघट्टकगतसजातीय = [illegible]

प्रमेयापेक्षाक्रम = [illegible] तात्पर्यतीति = [illegible]

प्रवणत्वादस्य = [illegible] अस्य → [illegible]

अन्यथा = [illegible] तूष्णींभावादनन्तरमिदम् =

[illegible] Break [illegible]

इत्यपि = [illegible] सर्वत्र = [illegible]

तत्प्रयोगावकाशः = [illegible] "अथ" [illegible]

अस्तु — [illegible]

क एव प्रश्नः = [illegible] भवतः = [illegible]

क्लेशः ? = [illegible]

इति चेत = [illegible]

न कश्चित — [illegible] ऋते = [illegible]

[illegible]

[illegible]

100 प्रतीत्यभावात् = [illegible]

यत्तु श्रीसोमानन्दपादाः : [illegible]

प्र * थ

"थकारः शिव इत्युक्तस्थकारः शक्तिरुच्यते।"

[illegible] 'थ' [illegible] ← [illegible] कार 'थ' [illegible]

इत्यागमप्रदर्शनेन = [illegible]

प्रथ इति = [illegible] एतावदेवानुत्तरम् = [illegible]

[illegible]

इति व्याचचक्षिरे = [illegible]

'थ' कार 'ह' कार थकार हकार समव्याप्तिकत्व- [illegible] 'ह', 'थ' [illegible]

अभिप्रायेण = [illegible] 'ह' [illegible] 'थ' समव्याप्त है। [illegible]

सर्वत्र = [illegible] प्रथमोल्लासे [illegible] प्रथम प्रस्रे

प्रसरदनन्तानन्त वस्तु = [illegible]

सृष्टिप्राकट्यभेदरूपत्वात् = [illegible]

सर्वभूतस्थजीवनरूप = [illegible]

परनादवलम्बनरूपत्वात् च = [illegible]

[illegible]

धूलिभेद [illegible] } प्रदर्शनेन = [illegible] तेनैव आभिप्रायेन = [illegible]

(83) This granth can bear any number of explanations

धूलिभेद → [illegible]

100

अथ शब्दार्थस्य : [illegible]

तत नास्माभि = [illegible]

विततय विविचितम = [illegible]

तादृशस्य = [illegible]

आगमस्य - [illegible] यतो न = [illegible]

साक्षादयमभिज्ञा = [illegible]

तैस्तु = [illegible] तथा विधैः = [illegible]

विधा आगमसाक्षात्कारिभिर = [illegible]

अनेकयुक्त्यात सहिष्णुता = [illegible]

सूत्रग्रन्थस्य = [illegible]

तैरितश्च = [illegible]

अमुतश्च विततम = [illegible]

सूत्रितम [illegible]

वयं तु = [illegible] तच्छासन पवित्रता:

तद्ग्रन्थग्रन्थि - [illegible] निर्दलनाभिलषित:

स्वात्म पवित्रभावा: [illegible]

[illegible]

ते निमीलिषु = [illegible]

सर्वमादिषु = [illegible] प्रथेषु उदासीना सर्व:

[illegible]

धूलिभेदादिना च = [illegible]

कल्पित सामयिक लिप्य पेक्षामपि = [illegible]

भवेदपि = [illegible]

कस्यचित् उपाया = [illegible] that may strike some one only

but it can't do any to general find in

न तु = [illegible] तत्सकलदेशकालगत शिष्य विषय

[illegible]

इति न अस्माभि: वितत्य = [illegible]

विपश्चिताम = [illegible] generalise [illegible]

स तदनु भवयुवयान् प्रविष्टानां च = [illegible]

[illegible]

تدवाप्यकर = To them which is of no use. — स्वकल्पनामिश्र

سکرم् = अवस्थित च =

अन्येषां च = اور دوسروں کو بھی — सतत उपदेशानभिज्ञानां

तदुपदेशनमपि = اس بات کا اپدیش کرنا بھی

अकिंचित्करम् = ان کے لئے بے فائدہ ہے — इत्यलमनेन :

अनेन प्रकृतविद्याविधायिना =

प्रस्तुतमनुसरामः –

'अ' → आद्यो = येषां स्वराणां –

यदि वा थकारेण = "थ"

सुखोच्चारणार्थेन सह

अथ आद्यो =

येषामिति | आद्य प्रादक्ष

अत्र न व्यवस्थामात्रेण अपि =

... Seat ...

(نزدیک ہی ہوتی ہے) [illegible]

~~प्राप~~ नापि समीप्यादौ = ~~[illegible]~~ نزدیک [illegible]

अपि तु = [illegible] प्राप्तौ भव [illegible] : [illegible]

[illegible]

तथापि = پھر بھی [illegible] समीक्षा वर्णाना = ان اکھروں کی

[illegible]

परावाग्भूमिरथमित्र = [illegible] پراواک [illegible] یہاں

निर्णीयते = [illegible]

यत्रैव = جہاں [illegible] پراواک [illegible] एषाम् सामयिक → [illegible]

ان اکھروں کا سامیک [illegible]

نتيمكृत्रिम

नित्यमकृत्रिम = ہمیشہ رہنے والا [illegible]

संविन्मयमेव रूप = [illegible]

संविन्मये च वपुषि = [illegible]

सर्वसर्वात्मकता = سب میں سب [illegible]

सततोदितैव = ہمیشہ [illegible]

[illegible]

सा च परमेश्वरी पराभट्टारिका

[illegible Urdu marginal notes]

(workpoint undergoing change) [illegible Urdu]

10. तथा विधि = [illegible Urdu] निरतिशयानन्दमाग्यपि = [illegible Urdu]

पश्यन्त्यादिका :: [illegible Urdu]

परापरभट्टारिकादि स्फारस्वरूपा = [illegible Urdu]

अन्तः कृत्य = [illegible Urdu] तत्तत् अनन्त-त: = [illegible Urdu]

वैचित्र्यगर्भमयी = [illegible Urdu]

नहि तत्र [illegible Urdu]

"यन्नास्ति तत् क्वाप्यस्तिइति" = [illegible Urdu]

त्यादयम् = [illegible Urdu]

परामृशत च = [illegible Urdu] प्रथमां = [illegible Urdu]

प्रतिभाभिधानां = [illegible Urdu]

संकोच कलङ्क कालुष्य = [illegible Urdu]

लेशशून्यां = [illegible Urdu] भगवतीं संविदम् = [illegible Urdu]

10/ तथाहि — [illegible] → [illegible]

यत्किंचित् = [illegible]

सम्यक् च = [illegible]

तत् पारमार्थिकेन = [illegible]

प्रमाणेन = [illegible]

रूपेण = [illegible]

वीर्यमात्रसारात्मना = [illegible]

तदुच्छ्वविच्छेदीज़्द स्फुटतम [illegible]

सेषद् स्फुटतरपद — [illegible]

स्फुराविवर्तद्युत = [illegible]

It shines like this successively in parabatanka at the time of creation.

It is perceived there in that state.

परमेष्ठिकालेऽपि लक्ष्यमाण = [illegible]

तत् तत् अनन्त वैचित्र्य = [illegible]

प्रथोद्भीयमान = [illegible] push [illegible]

तथाभावेन = [illegible] push [illegible]

103

सर्वविदि भगवद्दैवभट्टारिकात्मीन =

तिष्ठत्येव = तथावधानातिशयरूपे

सहसैव = सा — सर्वरातामुमिर संकुचित =

परमार्थी = اُن کے اودھان کرنے والے نرشٹوں کا اپنا اپنا

प्रकृत्रिमतद्रूपा = प्रदिदर्शयते एवं =

परानुग्रह पवित्रितैरभ्यासै =

क्रमप्राणाविर्भावितरूपेषित —

तद् प्रत्यरूपकम्पाद्य

प्रावन्नत = प्रपर्याय =

विचिकित्सामले =

सविचिकित्सैरपि =

प्रतिभातकियन्मात्र =

105

This borrowed likeness is not real.

वस्तु दत्तसंकोचा = [illegible]

न तु कृत्रिमा = [illegible]

यदाहुः श्रीकल्लटपादाः - سنری کالٹ نے بھی کہا ہے

"त्रुटिपाते सर्वज्ञत्व सर्वकर्तृत्व लाभः"

One has to reimburse oneself for this gap.

[illegible]

इति - एवमेष = स्वप्रकाशैकरूपोऽपि = [illegible]

[illegible]

अथो = (Subject) युक्त्या = प्रदर्श्यते = [illegible]

[illegible]

यत् यत् = स्वसामर्थ्योद्भूत = [illegible]

उत्तरकालिकार्थक्रिया = [illegible]

योग्यतादिवपुः = विशेष्यमाण [illegible]

सत्यतावपुः = भावाभावविचलत्संवाद = [illegible]

विरोधावभासि = [illegible]

सम्मतकामक = [illegible]

विकल्प्यमान = [illegible]

तत्तद्विकल्पनीय विरुद्धमत

नीलादिनिष्ठ = نیلی وغیرہ میں   विकल्प = یعنی وکلپ

पूर्वभावि = پہلے ہونے والا   निर्विकल्पसंविद्रूप

नीलपीताद्य = نیلی پیلے وغیرہ   आभास = ان کے آبھاس

अविभागि = غیر منقسم   भवति = ہے

यथा = جس طرح   चित्रज्ञानशिखरस्थ =

Dark-blue colour

संविन्मेचकबोधादि =

यत्तु = جو   तद्विरुद्धरूप नीलपीताद्याभास =

विभक्त न भवति = تقسیم شدہ نہیں ہے

तत्तदनन्त = وہ وہ   स्वसामर्थ्योद्भूत नीलपीताद्य =

आभासाविकल्प पूर्वभाग्यपि =

न भवति = نہیں ہوتا

यथा नीलैकसाक्षात्कारि ज्ञानम् =

भवति च =   उद्भूतमिति =

उद्देश्यद्वयं =   उभयं विकल्पज्ञाने =

(192)

[illegible]

~~ब~~ ~~ज्ञान~~ ज्ञानान्तरालवर्ति [illegible]

उन्मेष प्रतिभादि = [illegible]

पूर्वदागमगीतं = [illegible]

निर्विकल्पकं = [illegible] | ससंवाद विरुद्धाभिमत = [illegible]

नीलादिविकल्प पूर्वभावि = [illegible]

तस्मात्तदनन्त = [illegible] सर्वभासा = [illegible]

प्रविभागमयमवैति = [illegible]

उभयोश्च ज्ञानयो = [illegible]

ज्ञानयो ~~रन्~~ तरालमन, पह्लवनीय = [illegible]

ज्ञानयोर्भेदा एव = [illegible]

तच्च संविदात्मकमेव = [illegible]

अन्यथा तेनैव = [illegible]

संवित्संस्कारोच्छेदे = [illegible]

There shall nothing
Connecting the

ان معنوں کا ہونا ہوگا ۔ پھر سمرن دور انوسندان [illegible] [illegible] نہیں رہیگا ۔

प्रयोग

107 स्मरणाद्यनुसंधानद्योग इति — جو سمرن ہوگی نہ انوسندان

(جو انتر ال میں نہ ہو)

इति प्रतिभाख्यस्य = اس طرح پر معانی نام ہوئے

धामिण: = [illegible] सविवादिन: प्रति = [illegible] والی

प्रति प्राविवाद एव = [illegible]

इति न प्रसिद्धि: = اس لیے نہیں ہے اسدھی [illegible]

संकेतव्युत्पात्तकालीन = [illegible] اور سنکیت کال [illegible]

पदावलम्बनात च = [illegible] Moment [illegible] तस्य = لہذا اس کو

Differentiation [illegible]

सविकल्पत्वमेव = [illegible] وکلپ [illegible]

सहजासामायिकत्व = [illegible]

तथा परामर्शी योगो = ویسی طرح ہی پرامرش [illegible] हि = [illegible]

अउविलक्षण सांविद्रूप ~~तस्य~~ → [illegible]

तस्य → [illegible]

~~[illegible]यिको~~ = नान्तरीकस्य

न विकल्पतुल्यत्वं = لہذا وہ وکلپ جیسا نہیں ہے

وکلپ کا [illegible] [illegible] ہے

SAHAJA [illegible]

204/

उदं नीले उदं पीते

کیونکہ یہاں بھید کا اُلّاس نہیں ہے۔

اس نروکلپ سموت کو

– भेदानुल्लासात = بھید نا اُلّاس ہونے سے

جب یہ سموت آگے بھید کو پکڑتی ہے

भेदसारता = لبدھاتیا =

त = ... अर्थभावं कुर्यात =

व्युत्पत्ति काल

– وکلپوں کو ... ان کی پیدائش ...

→ विकल्पानां च = وکلپوں کا

अविकल्पं विना नोदयः = سموت

اس نروکلپ کے بغیر وکلپ سموت کا ادے نہیں ہو سکتا

vikalpa is dependent on nirvikalpa

– परस्वातन्त्र्यात – کیونکہ وکلپ ... dependent

अस्वातन्त्र्यं च = ...

– संकेतादिस्मरण

उपायत्वात

संकेतादिस्मरणं च = سنکیت وغیرہ کی سمرن ...

तथा अनुभवे विना कुतः = ...

संविदृश्य = ... प्राङ्न्यायेन =

...

195

107/108

कालादि परिच्छेदाभावः = [illegible]

इति सकैव सा परमेश्वरी = اس طرح ایک ہی وہ پرمیشور کی بڑی بھاری شکتی

प्रतिभा =

अस्मद्युक्ति माहात्म्यकल्पिता = ہماری دلیلوں کی [illegible] سے کلپت کی گئی ہے

एवंविधा = اسی قسم کی

अपरिच्छिन्नस्वभावापि = بے حد سوبھاؤ والی ہوتے ہوئے بھی

सर्वात्मैव = اس میں سب کی آتما ہے

मध्येऽपि = درمیان میں بھی

वर्तमानभूत भविष्यद्रूप = [illegible]

विकल्पान्तर प्रसव भैरव = [illegible]

तथा च = اور ایسے

विवेककुशलैरत्र = بے وچار والے [illegible] جانتے ہیں

साक्षं पालं विज्ञातमेवमेवोपगतं = [illegible]

ससावीत्वं च = [illegible]

तदनन्तर भाविना = [illegible]

विकल्पानां = [illegible]

दर्शितमत = [illegible]

(196) 109

[illegible Urdu annotation]

इति = [illegible] न प्रसिद्धो हेतुः

[illegible Urdu annotation]

Objective

साध्य धर्मिणि = [illegible]

न च एकावभासि विकल्प संविभागकारिणि

[illegible Urdu annotation]

न च ससंवादत्वम्

प्राविकल्पक = [illegible]

प्रविपक्षे = [illegible] ससंवादत्व

[illegible Urdu annotation]

कदाचित प्राप वा वतत = [illegible]

[illegible Urdu annotation]

न च ततोऽस्य = [illegible]

व्यावृत्ति संदिग्धा = [illegible]

[illegible Urdu annotation]

इति न विरुद्धो [illegible]

[illegible Urdu annotation]

नानैकान्तिको = [illegible]

[illegible Urdu annotation]

[illegible]

संदिग्ध विपक्ष व्यावृत्ति = [illegible]

दृष्टान्त धर्मिणि = [illegible]

चित्र ज्ञानादौ = [illegible]

हेतोरेवमेव [illegible] → हेतु = [illegible]
निर्विकल्परूप
कारणस्य

असिद्धतादि दोषा = [illegible]

परिहृता = [illegible] भवन्त्येव = [illegible]

हेतुदोषेषु तु = [illegible] परिहृतेषु = [illegible]

दृष्टान्तादिदोषा = [illegible] निरवकाशा एव = [illegible]

इत्यादि बहु = [illegible]

विनीत कल्पम परैरेव = [illegible]

[illegible]

इति किं तदनुभाषणक्लेशेन =

[illegible]

सिद्धं तावत् ह्येतत् = [illegible]

यत्प्रातिभं निखिलवैषयिकावबोध-

पूर्वापरान्तरचरं निखिलात्मकं तत् ।

तस्याः प्रलीनवपुषः परशक्तिभासि

ग्लानिर्धरेत किमभावविप्रोपक्लृप्ता ।।

विकल्पज्ञान / अभाववपु

यत् = प्रातिभं = निखिलवैषयिकावबोध =

पूर्वापर =

चरं =

अन्तरचरं = तत् निखिलात्मकं तत्

तस्याः = परशक्तिभासि =

प्रलीनवपुषः =

ग्लानि = किम धरेत = کیا سدھ ہوگا

अभाववपु =

उपक्लृप्ता =

111/

زبان میں تو نہ آوے گی

शरीर प्रमादौ = شریر - بیرانی کو

[illegible] - पर धन सुख स्वाद = ... पटल मग्न =

आलोक्य = اُسی کو دیکھ کر - اُس سب کی طرف دیکھ -

स्वस्मिन् स्पृशति हृदये = اپنے ہی دل میں - صرف اپنے ہی دل کی طرف دیکھ - اُسی کا سپرش کرتا ہے

ग्लानिम् समाम् = ... کو بانی ...

[illegible]

प्रविष्टा = ... चिद = ... अन्तः निखिल जगती = اُس میں ...

सूति सरसा = ... اُسی کا پیدا ہوتا ہے

परा देवी = ... हन्त = ...

प्रविलसति = ... पूर्णा = ... हुतिरिव = ...

[illegible]

तदुक्तं स्पन्दे = وہی کہا ہے سپند میں

"ग्लानिर्विलुण्ठिका देहे तस्याश्चाज्ञानतः सृतिः ।
← तदुन्मेषविलुप्तं चेत्कुतः सा स्यादहेतुका ॥"

... جو گلانی اس دیہہ کو لوٹنے والی ہی ہے ... اُسی کو ... تو اگیان ہے

اُس کو ... کرنے والی وہ اُنمیش وِلُپت ہے ... تو گلانی کہاں رہی -

111/

इति :

"एक चिन्ता प्रसक्तस्य यतः स्याद परोदयः ।
[illegible] उन्मेषः स तु विज्ञेयः स्वयं तमुपलक्षयेत् ॥"

इति च :

मायीय कार्म मल मूलमुशन्ति तावत्
प्रज्ञान नाम मलमाणवमेव भद्राः ।
बीजं तदेव भवजीर्णतरोः परस्मिन्
संविन्निपातदहने दहते क्षणेन ॥

मायीय = [illegible] कार्म = [illegible] मल = [illegible] मूलम् = [illegible]

उशन्ति, तावत्, भद्राः = [illegible]

प्रज्ञान नाम मल = [illegible]

प्राणमेव बीजं = [illegible] तदेव भवजीर्ण = [illegible] तरोः

परस्मिन् संविद् = [illegible]

निपात = [illegible] दहने = [illegible]

दहते क्षणेन [illegible] क्षणेन = [illegible]

[illegible]

111/112

यथाहुः

"मलमज्ञानमिच्छन्ति संसाराङ्कुरकारणम्।"

मलम् = میل (مل) = [illegible] इच्छन्ति = چاہتے ہیں संसार अङ्कुर कारणम् = سنسار کا انکر [illegible]
अज्ञानम्

इति : तदेवोक्तम्

"तदुन्मेषविलुप्तं चेत् ...... ।"

[illegible]

[illegible]

एतेन एवमेव च = [illegible] - व्याख्यातम् = [illegible]

अतोऽन्यथा → [illegible] ग्लानेः = [illegible]

विलोपकत्वमस्याश्च = [illegible] →

[illegible] अज्ञानात् सरणम् = [illegible]

अज्ञानस्य च = [illegible] उन्मेषेण विलोपः = [illegible]

([illegible]) - [illegible]

[illegible] इति किं केन संक्षिप्तम् = [illegible]

इति (सु) निरूपणप्रायमेव भवेत्. [illegible]

([illegible]) - [illegible]

112

तद्देवं = [illegible] भगवती = [illegible]

परावाग्भूमिः = [illegible] गर्भीकृत = [illegible]

स्वस्वातन्त्र्य = [illegible]

सत्तोद्भविष्यत् = [illegible]

पश्यन्त्यादि = [illegible] विनिविष्ट कर [illegible]

परापरा भट्टारिकादि प्रसरात् [illegible]

तद्गर्भीकार वशा = [illegible]

अविवादघटित्कार सारा = [illegible]

परमेश्वर भैरव भट्टार का = [illegible]

आविर्भाव प्रथित → [illegible]

तथाविधाद्भुत भूत = [illegible]

परमार्थस्वरूपा = [illegible]

स्वात्मविमल दर्पण = [illegible]

निर्भासित = [illegible] उपनन्त = [illegible]

सृष्टिस्थिति संहारैक्यमय = [illegible]

महासृष्टि प्राक्कारादि = [illegible]

[illegible]

अ से अः तक → سولہ
113 क से ङ तक پانچ
च से ञ तक
त से न तक
ट से ण तक

(203)

प से म तक
यरलव = چار

- क्षान्त रूपा = ... प्रथाद्या

इत्यादिना =   ग्रन्थेन =

निःशेषं =   भगवता =

निर्णीयते =   इति स्थितम् =

तदेवं स्थिते =

ग्रन्थार्थो निर्णीयते =

अकारादि - विसर्गान्ते =

शिवतत्त्वं =   कादि-ङान्ते = तक ङ से क

धरादि - नभोऽन्ते भूतपञ्चके =

चादि - ञान्ते = तक ञ से च   पादादि - वागन्ते = व से प

कर्माक्षपञ्चके =

तादि - नान्ते = तक न से त → घ्राणादि - श्रोत्रान्ते :

बुद्धिकरण पञ्चके =

पादि - मान्ते = तक म से प   मनोऽहंकार बुद्धि - प्रकृति

पुरुषान्त्ये पञ्चके = →

वारवादि शब्दवाह्या यादयो = यरलव

... से व

بھگوان خود پرکاشک ہے - کیونکہ انکی وائبریشن سے اپنے آپ کی اس سکوپ روپی نیٹ دھارن کر لیتی ہے -
بعد پر دھاتا بھی پرکاشک ہیں - کیونکہ یہ بھی انکو پرش کو بتا دیتی ہیں - جیسے (204)

113/

वकारान्ता = ... व   राग - विद्या - कला - मायाख्यानि

پر راگ ودیا کلا مایا ہوتی ہیں -

प्ररलय के घर कुंचक अन्तरगत हैं।

तत्त्वानि = ... ہوتے   धारयन्ते -

بھی دھارن کرتے ہیں -

पृथग्भूततया = الگ الگ ہو کے بھاؤ سے

अभिमानयन्ति = ابھیمان ہوتی ہیں ... میں   इति धारणानि = یہ مطلب ہے اس دھارن کرنے والے لفظوں کا

اس سے کہتے ہیں - بھی دھارن کرتے ہیں پر الگ الگ ہو کے

द्वौ = دو   पञ्च = پانچ   निचौ = ... میں

→ प्रयोज्य प्रयोजक भाव = ایک پریرک اور دوسرا پریرت کا بھاؤ

द्वैरूप्यात् = ... دو دو روپ ... (اس دھارن کرنے کے)

तथाहि - ... ध्रियन्ते = دھارن کرتے ہیں →

स्वात्मनि एव स्वैर्भावैः

प्रकाशात्मनि = وہ کون سا ہے جو پرکاش ... ہے -

परमपरिपूर्णे पदे = پرم پرپورن پد میں

-*- स्वात्मनि = ... اپنے آپ کو ... دھارن کرتے ہیں پر ...

[illegible Urdu notes]

205

114

[illegible Urdu notes]

सर्वात्मनि = यथोक्तं शिवदृष्टौ – [illegible]

"आत्मैव सर्वभावेषु स्फुरन्निर्वृतचिद्विभुः ।
अनिरुद्धेच्छाप्रसरः प्रसरद्दृक्क्रियः शिवः ॥"

आत्मैव = [illegible] सर्वभावेषु = [illegible] स्फुरत् = [illegible]

निर्वृति = [illegible] चित्स्वरूप = [illegible]

अनिरुद्ध = [illegible] इच्छा प्रसरः = [illegible] प्रसरत् = [illegible]

दृक् क्रिया [illegible] यः शिवः [illegible]

इति यथोक्तं स्पन्दे :

"यत्र स्थितमिदं सर्वं ..... ।"

सर्वं = [illegible] स्वात्मत्वेन = [illegible] प्रभास्वरे = [illegible]

प्रकाशनेन = [illegible] ध्रियमाणान् = [illegible] भावान् = [illegible]

धारयति = [illegible] स्वयम् प्रकाशी भावेन [illegible]

[illegible]

→ जडता स्वभाव इदम्भाव = [illegible]

आस्पदता [illegible] = [illegible] अर्पणेन → [illegible]

प्रकाशयति = [illegible]

परमेश्वर एव [illegible]

[illegible Urdu notes]

* اُسکا جب سے ڈھانپنے کی پرتیا کو جب سے پرتشا ہو ۔

114

پुनरपि = اور پھر ~~अहम् भानमेव~~

आच्छादयति = ڈھانپتا ہے (ڈھانپتی ہے) तदिदं = اس کارن سے

भगवत् = پربھو भगवत सदाशिव ईश्वर देशा — بھگوت سداشو - ایشور دیشا

प्रबुद्ध विद्यामयी — شدھ گیان مئی → "प्रबुद्ध ज्ञानमि"

एकेन निचा ध्वनिता = پر ایک نچے سے اشارہ ہو جاتا ہے

तत्रापि च = اس پر بھی यत = جو इदन्तया

परदन्तया = اسی طرح परमाच्छादने = آچھادن کو کرتا

اس پرتیا کو ۔ آچھادن میں لگا

तदाच्छादनीय = پر پرتیا उपपत्तौ = اس کی جو سدھی ہو گئی — उपपद्यात

इदन्ता

(یعنی یہ بھی پرتیا سدھ ہو جاتی ہے) = ہو گیا ہو جاتا ہے

न च = نہیں ہے प्रबुद्धपरमेश्वर = شدھ پرمیشور چिन्मयरूप

دونوں ہی روپ ہے ۔

परपक्ष = اس شدھ روپ کو भिन्न प्रथात्मक

اسکا کھلا ہوا

جو بن رہا ہے ۔ پرتیا ہے

इदन्तारूप = نام روپ پر پرتیا روپ उपपद्यात = ہو گیا ہے

(یعنی وہ پرتیا روپ میں پرکاش شدھ ہو ہوجاتی ہے ریتا میں بچھا نہیں سکتی ۔)

इति = اس سے आच्छादनीय = آچھادن کرنی ہے

अनुपपत्तौ = نہ سدھ ہوتی ہے

Margin notes:

ڈھانپتا ہے ۔

ڈھانپنا —

شدھ ہونے سے ان کا یہی آچھادن ہے پرکاش روپ ایک شدھ (روپ)

اسکے آچھادن کرنے سے اس کی پرتیا ہی ہے

جب اسکو اسکا آچھادن کرتی ہے ۔

مطلب وہ شدھ روپ ہی ہے - اسکے دل پرتیا کو اسکا یہی ہے

لہذا جب پر آچھادن (ڈھانپنا) نہ ہو تو آچھادن کرتا ہے نہیں ڈھانپنے کی سدھی نہیں ہے

یہ ایک باتیں جو ہے یہ سمجھ کر سرو کلپ گیان سے الگ ہو کر باتیں ہے - لیکن
تو کبھی باہر کو کبھی اس سے وکلپ ہے - جیسا کہ یہ کون کرتا ہے -
یہ پرکاش جو ہے - یہ پرمیشور شکتی کی یہی پرکاش ہے - بانس ہے

207

کیونکہ وہ آکاش بھی نہیں ہوگا - اس کی سر
اس کی سوائے شکتی بھی نہیں ہے -
یہ کارگی ہے - اور الیپسا

तत्त्वज्ञान

तदा इच्छादिकल्प

इस الموں کو

अप्रहभावस्य

न उपपन्ना

इति तथा विधं = اس سے وہ بھی

ईश्वर बोधं = ایشور گیان अनुपपत्तौ च = اگر اس کی نہ ہوتی

न किंचित् भासेत = کچھ بھی بانس نہیں ہوگا

कारण अभावात = کیونکہ کارن نہیں ہے - کیونکہ اس کا کوئی کارن نہیں ہے -

इत्युक्तम् सकृत् = اس طرح پر وقت کہا ہے - یہ بات بار بار کہی گئی ہے

18/7/81.

भासते च इदं = बाتیں بھی تत् भासा - وہ اس کی بانس ⊕

व्यतिरेकौ इति तस्य पि = اگر وہ سرو کلپ گیان سے الگ ہے

परमेश्वर शक्ति एव बहि प्रथते = یہ پرمیشور کی شکتی ہو رہا ہے - پرکاش اس کی شکتی ہی بھاتا ہے

कारणान्तरम् असंभवात = دوسرا کارن وہ نہ سمجھو

स्वसंविदि च = اپنی ہی سمجھ میں संविद एव = اس سموید کو ہی

सर्वमयत्व = سروے سر प्रथनात् = چھپے ہے

کیونکہ الیپور سرو کلپ گیان ایسا ہے - وہ بانس نہیں آتا ہے -

118

तदेव = اسی طرح سے   स्वात्मरूपं जगत्
اسی طرح جگت کو اپنا آتم سروپ سمجھے

— भेदेन भासमानं = اگر بھید میں بھاسمان ہے

प्रकाशात्मन्येव = مگر وہ بھی پرکاش آتما میں وہ آتم روپ ہے → آتم روپ ہے ایک ہی
एकस्मात्मनि भासते   اسی میں بھاستا ہے۔

(ایسے آتما میں) सामानाधिकरण्येन = برابر ادھیکرن سے ایک جگہ ہے   एकत्र स्थित

इति = ایسے   इयता = اتنی

एतावत = اتنا   एवमेव = ایسے ہی

आक्षिप्तं = آکھیپت ہے

مثال   यथा = جیسے   ईश्वर एव = ایشور ہی

कस्यापि वेदितु = کسی کے جاننے والے = ہر ایک

भिन्नान = اس سے جدا وید
`वेद्यान्   جاننے کو

एकत्वतया पश्यति = ان سب ویدوں کو ایک سا ہی دیکھتا ہے۔

115/116

~~यश्च असौ~~ कोऽपि = [illegible]

वेदयिता = [illegible] सोऽपि = [illegible]

आसनात् = [illegible] स्वात्ममय एव = [illegible]

इति = [illegible] स्वात्मनि = [illegible]

तथा विधा = [illegible] प्रतीति = [illegible]

अधिशेते = [illegible]

यामि = [illegible] रूपस्तौ = [illegible]

तदैव = [illegible] भिन्नवेद्य वेदकीभावम् [illegible]

उपाश्नुवीत = [illegible]

[illegible] रागादिभिरेव च = [illegible] तथाविधत्वम् = [illegible]

रूपस्य = [illegible] इति = [illegible]

रागादय एव = [illegible] अध्रियमानान् = [illegible]

भावान् = [illegible]

116/

उक्तन्यायेन = اوپر بیان کیے گئے طریقے سے   धारयन्तमी = جو اس کو دھارن کرنے والا ہے (خود الٰہی)

ईश्वरं प्रति = اسی الٰہی پر ہی

[illegible] - ہی ہے

प्रयोजकता = پریرک ہونے والا ہونا   गच्छन्ति = جاتے ہیں - آن پڑتا ہے

= پرایت کرانا

ہونا ہی ہے پریرک ہونے میں ہی

अतः तस्यैव = اسی کا   = اسی الٰہی کو

पुंस्त्व व्यपदेश = ہم وقت نام سے - پرش شبد

कारणैकभूता = ہی ایک ہی کارن بنا ہوا

द्वितीयेणिचि उत्पन्ने = دوسرے - ہے ہی کا دوسرا [illegible] ہے

धारण शब्द वाच्या = نئے شبد دھارن کے پر [illegible]

سے بیان کیے شبد کے ہی سے

(11) णिस उत्पत्तावपि = نئے کی اسی پر

सर्वत्रैव = ہر جگہ   प्रकृत्यर्थे = دھاتو کا جو اصلی - ہے

دوسرا اصلی معنی

116

[illegible]

अन्वयानपायो = [illegible] अनपायो

= اُسکا کبھی نہ نابش ہوا (ختم نہ ہوا)

ध्रियमाणतया = [illegible]

प्रकाशमानस्यैव = جو پرکاش مان ہے - اسی کا

हि

ध्रियमाणता = [illegible]

प्रकाशनासंज्ञा

उपपद्यते = [illegible]

यतः यथोक्तमयैव शिवदृष्ट्यालोचने = [illegible]

"प्रेरकोऽपि स भवेद्यस्य शक्तता नाम विद्यते"

[illegible]

प्रेरको = [illegible] स = [illegible] भवेत = [illegible]

यस्य = جو शक्तता = [illegible]

नाम विद्यते = [illegible]

[illegible]

इति। भर्तृहरिरपि = بھرتری ہری بھی ہے

" अप्रवृत्तस्य हि प्रैषे प्रच्छदे लोड् विधीयते।
प्रवृत्तस्य यदा प्रैषस्तदा स विषयो णिचः ॥"

हि = ہی

अप्रवृत्तस्य = نہ شروع کئے ہوئے کو   प्रैष = حکم دینا

प्रच्छेद = چھوڑنا، کاٹنا   लोड् विधी इति
(امر) کا صیغہ آتا ہے

प्रवृत्तस्य = جب شروع کر چکا ہو   प्रैषस्तदा = حکم دینے کو تب

स विषयो = اس میں اس کو

णिचः = نچ آتا ہے (زائد)

तदेवे = اسی کا نام ہے   धारण प्रावदन = دھارن شد ہے

अपरपास्त्रेषु = اور شاستروں میں   कञ्चुक नाम

प्रसिद्धान्येव = مشہور ہیں

×. جو سومانند نے پر ینچھ کی ماٹی اولی بات کو اپنا کر "دھارن" شبد سے انگوں کا مطلب نکالا ہے وہ تو اجنوں نے طرف رشن بات کو جاننے کا نام ہے لیکن اپنے ینچھ لوگوں کو پر مکھیہ کی ساری باتیں جاننی چاہئیں +

तत्त्वानि = تتو   इह = یہاں   निरूपितानि = نروپن کئے گئے

यदुक्तं श्रीतन्त्रसारे = تنتر سار میں کہا ہے

"धारयन्ति पशोः पाशान्भावान्स्वात्ममयांस्तथा।
विद्या माया नियत्याद्याः शोध्यास्तेन प्रयत्नतः॥"

धारयन्ति = دھارن کئے ہیں (دھارن کرتے ہیں)   पशो = جیو – جو پشو کہلاتے

पाशान् = پاش بندھن   भावात् = یہ بھاؤ سے

स्वात्ममयो = یہ اپنے آتم مئی ہیں   तथा = یہ – ویسے ہی

विद्या माया नित्याद्याः = ودیا، مایا، نیتی آدی (یہ تتو ہیں)

शोध्यास्तेन = یہ شدھ کئے جاتے ہیں

प्रयत्नतः = محنت سے

×. अत्रयत = یہاں   तु = تو   श्रीसोमानन्दपादैः = شری سومانند نے

धारणशब्देन = دھارن شبد سے   अङ्गानि = انگوں کو

نروپن کئے انگ اور تو تتو کے ہیں

निरूपितानि = نروپن کئے گئے ہیں

पक्षान्तर = دوسرا پکش   (व्याख्यायणेन = بیان سے)

دوسرا پکش

Viewpoint

∴. جس دیکھنے کو اپنے پکھ اور پر پکھ کے وچار ودھا کا کچھ گیان نہیں ہو وہ تو اپنے آپ کو
شک کے سمندر میں ڈوبا ہوا ہے دوسروں کو کیا پار کر سکتا ہے +

(214)

117

اس بات پر

तत्र = وہاں   परपक्षा = دوسروں کے ... [illegible]

सर्वैहप्रयत्न = سارا دیکھنے والوں کا [illegible]   प्रथनमात्मानि [illegible]

अभिप्राय: = دل کی غرض   (دل کا منشا اس دیکھنے کا)

तेषां हि ईदृशी = ان کی یہ جیسی ساری بات
शैली.
یہ دوسرے اس طرح

∴. " स्वपक्षान्परपक्षांश्च निःशेषेण न वेद यः ।
स्वयं स संशयाम्भोधौ निमग्नस्तारयेत्कथम् ॥ "

स्वपक्षान् = اپنے پکھوں کو (new points)   परपक्षांश्च = دوسرے view points کو (new points)

निःशेषेण = پوری طرح - بالکل   न वेद यः = جو نہ جانے
صرف یہ نہ جانا ہے - یہ دوسرا view point

स्वयं स = وہ آپ ہی   संशय अम्भोधौ = شک روپی سمندر میں

निमग्न = ڈوبا ہوا ہے

तारयेत्कथम् = وہ دوسروں کو پار کیسے کرتا ہے
وہ دوسروں کو شک سے کیسے پار کر سکتا ہے

11) प्रादि - क्षान्तं = 'प्र' سے 'क्ष' تک महामाया = مہامایا

विद्या- ईश्वर- सदाशिव = شدھ ودیا - ایشور - سداشیو - شیو

प्राकट्याख्यं (ظاہر ہونا نامی) تتو کے پانچ तत्त्वपञ्चकं

तथाहि = جیسا کہ یہ ہے

جو मायातत्त्वस्य = مایا تتو کے (جہاں یہ ہے)

उपरि = مایا تتو سے
جو اوپر ہے

विद्यातत्त्वाद्यश्च
ودیا تتو کے نیچے = شدھ ودیا کے نیچے

अवश्यं = ضرور तत्त्वान्तरेण = دوسرا تتو

مایا سے اوپر اور شدھ ودیا سے نیچے ایک اور تتو ہے

भवितव्यम् = ہونا ہی

यत्र विज्ञानाकलानां स्थिति = جہاں وگیاناکلوں کی حالت ہے

यथोक्तम् = جیسا کہا ہے

"मायोर्ध्वे शुद्धविद्याः सन्ति विज्ञानकेवलाः"॥

تک مایا = مایا سے اوپر

شدھ ودیا کے نیچے - وگیان کیول رہتے ہیں

114/ तथाहि = اور یہی مہامایابھاوے [illegible]
([illegible])

मायापदे = [illegible] प्रलयकेवला = [illegible]
[illegible] - नाम अवस्थिति

विद्यापदे च = اور [illegible] विद्या-ईश्वर उपादि = [illegible]

इति = [illegible] किमिव = کیسا؟

तत = وہ विज्ञानकेवलआस्पदं = [illegible]
स्यात् [illegible]؟

अत एव = [illegible]

विद्यापद प्रच्युत नामापि = [illegible] ऐषां = [illegible]

भेदमयभावराशिगत भिन्नवेद्य प्रथानुस्यात्
[illegible]

मायीय अभिधान = [illegible]
अनउल्लासे = [illegible]

118 तत्र = [illegible] विज्ञानकेवल = [illegible]

मलैकयुक्त = [illegible]

[illegible]

इति अज्ञानात्मक आणव मल अवलम्बित्वं

[illegible]

श्रीपूर्वशास्त्रे कथितम्. = [illegible]

त एव = [illegible]

119 शुद्धविद्यापदानुग्रहात् = [illegible]

बोधिता [illegible]

मन्त्रतद - ईश आदि [illegible]

भाव भागिनो भवन्ति - [illegible]

इति तत्रैव उक्तः :— = [illegible]

"विज्ञानकेवलानष्टौ बोधयामास पुद्गलान्"

[illegible] [illegible]

119/ "मन्त्र महेश्वर ईश्वते संनियोज्य ......"

ان کو منتر (سوم ومعیا) ایشر، اید، رمس ایشا کی پر ایدر =

केषुचित तु = کئی ایک शास्त्रेषु स = شاستروں میں

सा = وہ महामाया = مہامایا

भेद मल प्रभाव = بھید مل کا پربھاؤ اپچار اور وہ اس اپچار उपचारात =
وہ اپچار سے

विद्यातत्त्व प्रोषतयैव = وہ ودیا تتو شدھ ودیا ہی ہے निर्णीयते —

क्वचित = کہیں کہیں पुनर = پھر

प्रज्ञानमल = اگیان مل - اگیان سدبھاؤ सद्भाव = سد بھاؤ

उपरोधात = رکاوٹ سے - اس رکاوٹ سے

मायातत्त्व पुच्छतया = مایا تتو کو ایک پچھ سے
اس کا حصہ ہے

یہی مایا کی پچھ ہے

यथा केषुचित = جیسے کئی ایک شاستروں میں
?
शास्त्रेषु

११) रागतत्त्वं = وہ راگ تتو پुंस्येव वर्तमं = یہ پرش میں ساتھ ہی رہتا ہے

इति न पृथक् परामृष्टम् = اس لئے ان دونوں نے یہاں پر الگ بیان نہیں کیا ہے

کہ یوں یथा वा = جیسے इहैव = اسی شاستر میں

श्रीत्रिकागमेषु = شری ترک شاستروں میں नियतिकालौ = نیتی اور کال دونوں

न पृथक् निरूपितौ = الگ نہیں سمجھے ہیں ان کو ساتھ ہی رہتے ہوئے ان دونوں کو دکھلایا ہے۔

अत्र मते = اس مت میں

विद्यादानाश्रित शिवान्ते = سو ودیا سے لے کر شو تتو تک

ब्रह्मपञ्चकं = اس کے رہتے ہوئے اور کو برہم پنچک بولا جاتا ہے

निर्णीयते च सतत = یہ آگے فیصلہ کی جاتی

ان تتووں کا بڑھیاپن یا بڑا ہونا एषां च तत्त्वानां (बृहत्त्वं) = ان تتووں کی جو ورتی ہے

→ बृहकत्वं च = بڑھاپن اور [illegible] प्रायो = زیادہ تر

भेदसमुत्तीर्णत्वात् = بھید سے اوپر جانے سے

[illegible] संसार सूति कर्तृत्वात् च = سنسار کا جو پیدا ہونا ہے وہ کرنے والا ہونے سے

([illegible]) [illegible] سنسار میں ساتھ [illegible]

نوٹ: یہ سمجھ میں نہیں آتا کہ (کریا پردھان) سرشٹی کرم، سنہار کرم (اچھا پردھان) سنہار کرم

(220)

اور (گیان پردھان) کھچی کرم دس سو کرم ۳۴ ہندسوں میں سے یہ کون سا کرم اپنایا گیا ہے؟

(سنہار کرم)

एवम् एतानि = اس طرح یہ

चतुस्त्रिंशत्तत्त्वानि = یہ 34

प्रक्रियात्मना = اس پرکریا سے — स्थितानि
ٹھہرے ہوئے

एकाशमेव अशादिरूपतया भजन्ति = یہ سارے ایک کو ہی روپ سے
ادا کرتے ہیں

तत्र = وہاں इदं विचार्यते = یہ وچار کیا جاتا ہے

प्रथमतः = پہلے शिवतत्त्वम् = شوتتو

'अ' वर्गे = 'ا' ورگ

ततो = اس کے بعد भूतानि इत्यादि = بھوت
کچھ

यावत् अन्ते = جب تک انت

शक्तितत्त्वम् = شکتی تتو

इति कोऽयं सृष्टिसंहार त्रिप्रि = اس سے کون سا
स्थित्यवतार क्रमाणां = मध्यात् क्रमः

سرشٹی سنہار کرم — کیا ہے — ان تینوں کا بیان ہے۔ یہ کون سا کرم ہے —

جو کرم بیچ میں ہے اور اس کے بعد ...

برائے شکار میں کی شکل ہے پرتھوی تتو سے اندر
ستار ہیں شاستروں میں الگ الگ ہے لیکن ہر جگہ شکار

(221)

پہلی کلا ← نورتی کلا ۔ دوسرا نام اسکا دھارکا ۔ پرتھوی اندر میں
دوسری ← پرتشٹھا کلا ← ودیا کلا ۔ (اپو سے شنتی کلا)
تیسری ← شانتا کلا
چوتھی ← شانتا تیت کلا

121

सर्वत्र च = ہر جگہ شریمالنی وجئے उत्तर = شری مالنی میں

सिद्धातन्त्र – سدھ تنتر

स्वच्छन्दादि शास्त्रेषु – یا سوچھند آدی کتابوں میں اسی سب

यہاں 'क्ष' کار سے پرتھوی کوں
से शتتوں تک جاتا ہے
تک – ایک ترم کی
کر "एवरोह"

क्षकारात प्रभृति एवगान्त = 'क्ष' کار سے لیکر الف تک

पार्थिवादीनां शिवान्तानां = پرتھوی وغیرہ کا

तत्त्वानां निवेशः = تتوں تک قائم

उक्तः = کہا گیا ہے → کونسی کہا گیا ہے

[تتوں کا انتا یا اسو طرح کہا گیا ہے]

एवाद्य धारिकया व्याप्तं तत्त्वकं तत्त्वमिष्यते ॥
एकमेकं पृथक क्षाणे पदानीमनुषु स्मरेत ॥ } See Shlokas کا مطلب

پہلا اندر کو ہے وہ پرتھوی اندر

ہے تو پہلا एवाद्य | धारिकया = پہلی تو دھارکا نے → धारिका → پہلی کلا ۔ نورتی کلا *

اس نے پرتھوی اندر کو پھیلایا ہے

व्याप्तं = پھیلایا ہے ۔ तत्र → پرتھوی اندر میں ۔ وہاں एकं तत्त्व ایک تتو
(وہ پرتھوی تتو ہے ۔ جانا ہوا ہے)

indicate – وہی
ہے indicate

ایک ایک 'क्ष' एकं एकं = ایک ایک پृथक = الگ الگ क्षाणे = 'क्ष' اکو indicate ہے پن →

'क्ष' وغیرہ indicate – पद णि ← पदाणीमनु = پد الگ ہے ۔ अनुषु = منتروں میں

स्मरेत = شمار کرنا ہے Successively.

پہلی پرتھوی اندر میں 'क्ष' ورن ہے ۔ 'क्ष' کا پد ہے ۔ 'क्ष' ہی منتر ہے۔

भिन्नयोनि = सम्मयुक्त → [illegible]
अभिन्नयोनि → असम्मयुक्त — [illegible]

222

[illegible] → [illegible] they have no separate room here

121/122

इत्यादिना = [illegible] तत्रैव च = [illegible]

पुनर = ½ भिन्नयोनि = [illegible] मालिनी = مالنی

— भट्टारिका अनुसारेण [illegible] फ कारादीनाम = 'फ'

अभिन्नयोनि = [illegible] मातृका = [illegible]

[illegible] they have a separate place

निवेद्य = order [illegible] अवाप्त = [illegible]

तत्वान्तर = [illegible] स्थिती चामीप [illegible]

[illegible]

फ धरा तत्वमुद्दिष्टं मादि- आन्ते ऽनुपूर्वशः।
त्रयो विंशात्यं वादीनि......

'फ' = 'फ' धरा तत्वम उद्दिष्टं = [illegible]

अ आदि म आन्ते = [illegible]

अनुपूर्वशः = [illegible] त्रयो विंशात्यं = [illegible] 23 [illegible]

[illegible] 23

[illegible]

اثر۔ اس سوتر میں کوئی روشنی ماتی نام والے کرم میں جو انقسم 'ف' ورن سے ہی شروع کرکے پرتھوی
وغیرہ کی پوجا کی گئی ہے۔ جانئے اس پوری روشنی نام کی ماترکا نام کا ورن کرم میں اسی ورن
میں ~~دیکھ~~ سے تتوں کی دیا گیا بھی ہے

(223)

12.3

1.✱ { इत्यादिना = اس طرح — पार्थिवादि = پرتھوی
तत्त्व योजना = تتوں کی جگہ — निरूपिता

पुनरपि च = پھر بھی، तत्रैव = وہیں ماتی ہے — श्रीविद्या = شری ودیا
— تتوں ودیا کا آشرے لیکر نیز — तत्त्वानुसारेण
(پرا ودیا — پرا پرا ودیا — اپرا ودیا)

पرا ودیا / پرا پرا ودیا / اپرا ودیا }

निष्कल पदमेकार्णं त्र्यर्णैकार्णद्वयं द्वये

निष्कल = کلا (इ) पदम् एक वर्णं = ایک ورن → ॐ ایک اکچھر

ह्रैं, ह्रूं, ह्रीं — त्र्यर्णि एक वर्णि द्वये = تین اکچھر — ایک اکچھر — द्वये ... ए تین ورن
द्वये — دو دو

इति परापराभट्टारिकानुसारेण = اس طرح پرا پرا بھٹارکا کے مطابق

ॐकारे शिवतत्त्वम् = ॐ پیاں شیو تتو ہے — شکتی تتو
'अघोरे' इत्यत्र = اگھورے میں — शाक्ति तत्त्वम्
इत्यादि क्रमेण = اس طرح کے کرم سے — पार्थिवादि = پرتھوی وغیرہ تتوں کا نروپن
तत्त्व निरूपणा योजिता

पुनरपि च = پھر بھی — तत्रैव श्रीविद्या = شری ودیا میں
तत्त्वानुसारेण

Repitition ✗ { फकारादिनाम = 'ف' کا، جسے
भिन्नयोनिमातृका = بھنن یونی ماترکا
निवेशावाप्त = اس طرح

اب ان کا دوبارہ انوسار :-

121 { साधैनाण्डद्वयं व्याप्तमेकैकेन पृथग्द्वयम्।
अपरायाः समाख्याता व्याप्तिरेषा विलोमतः॥

½ स = [illegible]

1 साधैन = स & half अण्डद्वयं = [illegible]

व्याप्तम = [illegible] एकेन पृथग्द्वयम् [illegible]

अपरायाः = [illegible] समाख्याता = [illegible]

व्याप्ति एषा

विलोमतः = [illegible]

इत्यादिना = [illegible] 'फ' कार = फट् [illegible]

पार्थिव प्राकृत = [illegible] अण्डद्वयमे = [illegible]

हुंकार → मायीय [illegible] ह्रींकार → शाक्त अण्डं च

इति तत्त्व निक्षेपः = [illegible]

श्री परभट्टारिकाव्याप्ति = [illegible]

निरूपणं च

फट् → [illegible]

हुं → [illegible]

ह्रीं → [illegible]

क्रम (विलोम)

ह्रीं हुं फट्.

225

सौः → ह्रैं क्रः → ہرا

स कृष्ण → (ہرنول ہیٗ) الگ

124
125

गणैरिति = मम → त्रितयं

व्याप्तं = त्रिशूलेन

चतुरशीकम्

सर्वातीतं → विसर्गेण =

एवं व्याप्तिरुदाहृता

इति मन्त्रैरेव =

प्रक्रिया योजनं = निरूपितम् =

पुनरपि =

मातृकासद्भावरूपं इति श्रीखरकुलं = कुलेश्वर तन्त्र

ईश्वरादि मन्त्रसहा-
रिकाद्यभिप्रायेण

अन्यथा अन्यथा =

अपरतन्त्रेष्वपि = एवमेव =

विपर्यस्तप्राये =

बहुबहुधा = निरूपितम् =

(226)

125/

तत् = ... पुनर = ... इह = یہاں सर्वमेव = سب

अन्यथा = [illegible] इति परिदृश्यते →

इति महान् प्रयास = [illegible]

प्रागमाविदः = [illegible]

स्वकण्टकशोभ इव = [illegible]

सर्वविनाशक = समुद्भूतः [illegible]

[illegible]

न च = نہیں اور सांकेतिकसिद्ध = [illegible]

येन = جس पुरुष इदृशी = [illegible]

वस्तु उपकल्पितेन = [illegible]

रूपेण च

अन्यथा अन्यथा = [illegible]

निरुप्यमाणाम = [illegible]

इह = یہاں संगते भवेत =

125/6

यथा = جیسے दाक्षिणात्या = دکھن میں رہنے والے [illegible]

चौर प्रावेदन = چور شبد [illegible] 'ओदन' व्यपदिशन्ति = بتاتے ہیں [illegible]

सैन्धवास्तु = سندھ میں رہنے والے तेनैव = اسی [illegible]

दस्युम् = چور 'ओदन' तु = بھات کو

क्रूर श्रुत्या = [illegible]

तया तु = اسی سے काश्मीरिका = کشمیر میں رہنے والے

वितुषि = [illegible] यव = جو गोधूम = گندم

तण्डुल 'पादनं' तुषलान = چاول [illegible]

[illegible]

[illegible]

इति = یہ سب सांकेतिकत्व = [illegible]

अनवस्थितत्वात् = [illegible] अपारमार्थिकत्वात् = [illegible]

[illegible]

125/126

प्रोद्य शोधक भावार्थ — अनुपयोगात्

अनिरूपणीयत्वमेव स्यात्

संकेतस्यापि

परमार्थ सत्त्वे

नहि = संकेतो नाम

अन्यः कश्चित =

ऋते परमेश्वर इच्छातः

प्रसिद्धो हि न संकेतो

भगवदिच्छा

प्रकल्पितः

तत = नाम = अक्षर

लिप्यादि = गत =

अप्यायनादि कर्मविधि =

126

जाति ... = اُس سے ایسے ... तत्र ह श्लोके कादि फल = اُس کے پھل ... نتیجہ ...

संपत्ते = برابر ہے ... इति चेत् = اگر یہ بات مانیں —

تو اب سب چیزوں کی تیاری ... ہو جاتی ہے

तर्हि = تو ... एकेनैव संकेतेन ایک ہی سنکیت سے

सर्ववस्तुसंपत्तौ سب چیزوں کی تیاری میں किं संकेतान्तराश्रयेण =

تو اور اور سنکیتوں کا سہارا لینے کی کیا ضرورت ہے —

مانو اگر سنکیت کا ایک ہی اکثر ہیں — तदाश्रयेण वा ... ایک ہی سنکیت ہے — Uniform ہے۔

— اپنے اپنے شاستروں میں دئے گئے اپنے اپنے سنکیت

تو स्वशास्त्रित = اپنا وہ شاستر یا ... اپنے علم شاستروں کا शास्त्रान्तरीय = اور اور شاستروں کا علم

Geographical Conventions میں آتے ہیں سنکیت

लौकिक = لوگ دو ... اور ... سنکیت

दैशिक = گروہوں کے ذریعے ... سنکیت ... धन ...

اُس سے سنکیت کیا ہوا کاش خاص طریقوں والے سنکیت

कृत = رکھوں کیا ہوا प्रति पुरुष = ہر ایک پرش کو — لوگوں کا سادھا ...

नियताश्च = ... अनन्त संकेत विरूपान

اننت سنکیتوں کا ... ہو ...

पूर्वके ... اور ... ہوتے

اُن کا بھی ... کیا جاتا ہے —

तदपि निरूप्यमेव ... بھی ... ہے —

न तावद्विनियोगः اُن سے بھی کوئی مطلب نہیں

اُن میں بھی کچھ ... نہیں ہے ... ہوتا ہے ... ہے ... — ہے ...

یہ اس سمندر میں کئی لوگ کہتے ہیں۔ کہ سماں کا ہی سانکیت سے ہی ہے

سماں کا تاب عملی اسی طرح ہوئی

126 → एतावत एव कार्यसिद्धि: = اس سے کام کی سدھی نہیں ہو جاتی

یعنی → इत्यादि = یعنی निरक्षर = ان پڑھ

ببیٹ کی گڑائی

کوشو = پیٹ कुहरे = چھپا ہوا [پیٹ کی گڑائی میں]

اُس پیٹ کی غار میں کوئی بھی الفاظ نہیں آتا ہے یعنی وہ دور رکھو ہیں

उच्यमान श्रूयमाण च = اور کہے جاتے ہیں یہ لکھا ہے سنا بھی ہے

शोभत एव

اُن کو بھی یہ شوبھا دیتی ہے اس کی باتیں +

شوبھا دیتا ہے۔ اور بکھیر بھی لکھا ہے

اگر تعریف اچھی ہے تو مگر وہ بعد میں ہے

सविकला भगवदिच्छा = ساری تعریف اچھی ہے

کئی لوگوں کو اچھا لگتا ہے

کہ تعریف اچھا لگتا ہے

اگر یہ کہیں کہ تعریف اچھا کسی کی سمجھ میں نہیں آئی

न विचार पदवीम् अधिरोहते = نہ وچار پد میں آتی ہے

لعد ہے (تعریف اچھا کسی کی سمجھ میں نہیں آتی ہے)

इति चेत = اگر وہ یہ کہیں

تو اس کا جواب یہ ہے کہ جو اگر سمجھ میں نہ آئے

تیرا ہو

फल = کو ہے ग्रन्थ धारण वाचन व्याख्यान

= گرنتھ کا دھارن

اس کی ٹیکا =

تو کچھ لکھا ہوا ہے جو پڑھا جا سکتا ہے۔ اُن کی وچار کرنا کہ اس میں باتیں دیکھتا لعد ہے

تو ان کا سمجھ لیا ہے جو بیکار محنت ہو جاتی ہے۔

विचारणादि = اس کو

मिथ्या प्रयासेन = جھوٹی ہے یہ محنت

السا شرح کرنا یہ فضول محنت ہی ہے

اُن لوگوں کو بسبب [illegible] Pressure [illegible]

[illegible] give up [illegible]

गुरु भार: — Pressure from the Guru

परित्याज्य = [illegible]

तूष्णीं भाव प्रसङ्गैरेव = [illegible]
स्थेयम् = [illegible]

भगवत् उद्देश्य = [illegible] उच्चारणीयम् = [illegible]

उच्चारयेत् = [illegible]

तदिदं हैव = [illegible] = [illegible]

अनुग्रहात्मा = [illegible] = [illegible]

एवं विचारणायां = [illegible] पर्यवसाययति

न खलु = [illegible] पाद प्रसारिकयेन = [illegible]

सुखं = [illegible] शयाने = [illegible] भुञ्जानेश्च

स्वयम् = [illegible] प्रविसृप्राद्भि: = [illegible]

स्वापेक्षा = [illegible] तीव्रतरादि = [illegible] परमेश्वर = [illegible]

अनुरु [illegible]

उत्पन्न = [illegible] अधिक अधिक [illegible]

सूक्ष्मतम = [illegible] विमर्श = [illegible] कुशल

धिषणा = [illegible] परिशीलन = [illegible]

124 [illegible] (232) [illegible]

वा

पराङ्मुखे = [illegible] स्यात व्यथित: =

[illegible]

तत = [illegible] सर्वेश = [illegible] विश्वप्रयस उदं =

[illegible]

वितत = [illegible]

इति एतावत् = [illegible]

न जहीम: = [illegible]

{ [illegible] }

{ [illegible] }

Alternative

ततं = [illegible] सूत्रं = [illegible] = [illegible]

पवधार्य स्थीयतां = [illegible] यावत् = جب تک

परिहराम: = [illegible] सर्वैमिर: = [illegible]

(किंचित न वस्तुत): = [illegible]

कुर्द चोद्य जात = [illegible]

[illegible] | परमेश्वया पराबागमुखि [illegible]

[illegible]

اگر ہم ... [illegible] - समूची [illegible] اور ہوری [illegible]
ایسی پڑا ہوئی میں وہوی پڑی ہے - [illegible] ہم دیکھا ہے اس मतिभेद کو دور [illegible]

दुर्घटकारितात्मक = [illegible]

अनुसार = [illegible]

निरपेक्ष [illegible] — स्वातन्त्र्यसाराया = [illegible]

पारतन्त्र्यांश लेशमात्र = [illegible]

परमाणुतादि [illegible] اور [illegible]

अणुपरमाणाम् = [illegible]

इति प्राय: = [illegible] — प्रागेव = [illegible]

प्रति समासितम् = [illegible] — पदै: = [illegible]

तथापि = [illegible] — विस्तरत: = [illegible]

परिक्ष्रियते = [illegible]

यत् तावदुक्तं = [illegible] — प्रिव तत्त्वं = [illegible]

तत: पृथिवी इत्यादिकोऽयं = [illegible] — क्रम: इति = [illegible]

तत् न कश्चित् क्रम: = [illegible]

इति नूनम्: = [illegible]

अक्रमे यत् एतत् [illegible] पर पारमेश्वर

विचित्र → [illegible]

128 गर्भीकृत अनन्त वैचित्र्य = دو انتہائی ترکھ میں رکھی ہوئی وہ عنبریا ۔ بیمی ہوئی

स्वातन्त्र्य = اور شرک روکی جو اکرام کو انشہ ہے برتو رتی ہو ۔ ساشرنر

[illegible] - त्रिकार्थ रूपं = ۔ بیمی بیمی شرک روپ ۔ بہ شرک روپ دو ہے

तदेव एतत = بیمی ہے وہ

तथाहि = بیمی وکھوو تعیں گاب

येयम परा = جو یہ اپرا ہے (پرش)

परा परा = پرا پرا ۔ پرا اپرا

परा भट्टारिका = پرا بٹارکی

पारमेश्वरी भैरवीया = بیمی پرمیشوری بھیروی

सत्ता सा = دیکی سس

सदाशिव तत्त्व = سداشو توت سے تو ش تک

[illegible] - अनाश्रित - بسکھوں تر ہے

प्राकृत तत्त्व स्यापि = بیمی پر یا رکاشو رکھو

उपरिवृत्ति = ان رکھی رکھو

[illegible] ← तदन्तस्यापि = وصی انت ہو سند (شی)

प्रासन पक्षीकृत तत्कात = میرد ساین رکھیں ہے ۔ بیہ تابے

* 1. ان شلوکوں میں ناتھ جی نے دلی والے سوامی کے آسنم کو [illegible] وستار میں کہا

(245)

तथाहि = [illegible]

128 "ईश्वरे च महाप्रेते प्रहसन्तम चेतनम्"

ईश्वरं च महाप्रेतं = ایشور [illegible]   प्रहसन्तम = [illegible]

प्रचेतनम् = [illegible]

[illegible]

इत्यनेन = اس سے   सदाशिवान्तम आसं = [illegible]

नादान्त पक्षाविबिंदु = [illegible]

श्रीपूर्वे शास्त्रे परिसंहृतम = [illegible]

"इत्येतत् सर्वम आसनम्" [illegible]

इत्युक्तवा = اس طرح کہہ کر   [illegible] آسن

See Page 48

"तस्य नाभ्युत्थिते शक्तिशूल शृङ्ग त्रयं स्मरेत्"

तस्य = اس [illegible]   नाभ्युत्थिते = [illegible]

शक्ति = شکتی   शूल त्रयं = ترشول

स्मरेत = اس [illegible]   [[illegible]]

इति = [illegible]   शक्ति   शक्त्य   व्यापिनी समनात्मकं

शृङ्ग त्रयम् ____ उक्तं = [illegible]

ترشول [illegible]

तत्रापि = [illegible] उन्मनस = [illegible] उध्र्व कुण्डलिका

पद = [illegible] परमधाम = [illegible]

सित कमल = [illegible] त्रयरूपतया = [illegible]

त्रिरूपतया = [illegible]

इत्येतत् = [illegible] परमासन = [illegible]

परापर्यन्तत्वात = [illegible] तदुपरि च

द्वीबीनां स्थिति: = [illegible]

इति तदेतत्पद = [illegible]

पश्यन्त्याख्य = [illegible] ज्ञानशक्तिरेव = [illegible]

पर्यन्तधाम = [illegible] नादारूंय = [illegible]

प्रतिक्रमणीय = [illegible] रूपम

त्विनेव स्थिति

यथोक्ते प्रिवद्दृष्टी = [illegible]

"पथास्माकं ज्ञानशक्तिर्या सदा प्रिवरूपता।
वैयाकरणसाधूनां सा पश्यन्ती परा स्थिति:॥"

पथ पस्माकं = [illegible]

ज्ञान शक्तियाँ = [illegible] सदा प्रिवरूपता = [illegible]

वैयाकरणसाधूनां = [illegible]

पश्यन्ती परा स्थिति = [illegible]

Boundary [illegible]

129/130

(238)

See Notebook Page 203 First note.

"प्रत्यगात्मनि हि बुद्धि पश्यन्ती रुद्रदेवता"

प्रत्यगात्मनि = اندر آتما میں हि = یقیناً बुद्धि = بدھی

पश्यन्ती = دیکھنے والی ہے रुद्रदेवता = رودر دیوتا

परं = صرف सदाशिव ज्ञान शक्तावेव = سدا شو کی گیان شکتی میں ہی

अनाश्रितशिव = سدا شو کی ...

विश्राम्यति = آرام کرتی ہے

मनो अहंकारयो = من اہنکار (اب) ब्रह्माविष्णु देवतयो

वैखरीमध्यमापदे = ویکھری مدھیما پتیو =

ईश्वर सदाशिव = ایشور سدا شو کی क्रियाशक्ति पदमेव

परा प्रतिष्ठाम् = پرا ... भगवती

इति तावत = اتنا आगम सिद्धं =

स्वसंवेदनं ब्रूहिते च = ...

तत → तस्मात् = ... पश्यन्त उपरि = ... पराभूमि =

भवती = ہوتی ہے यत्र सर्वम् = جہاں سب

अभेदनैव = ... भाति च =

विमृश्यते च

130/

यद्यपि = اگرچہ   हि = کیونکہ   विद्यापदे = ودیا پد میں

मायापदेऽपि = مایا پد میں بھی   अभेदेन = ابھید سے
स्थितापि - بھاستا ہے / ٹھہری ہوئی = پر بھاتش   भासना = بھاسنا ہے

اس ابھید کا

तत्र = لیکن وہاں [illegible]   विमर्शो अन्यथा |

بھی

विद्यापदे हि = کیونکہ ودیا پد میں "इदमिति" = یہ ہے "[illegible]"

→ प्रमातृ-प्रमेयजातम = پرمیہ جاتم [illegible]
एकता [illegible] - [illegible]   अहमात्मीति
[illegible] (پرماتا و پرمیہ) - [illegible] میں [illegible]   संक्रामेत
↓
[illegible]

[illegible]

तत = [illegible]   आच्छादित = [illegible]
विमृश्यते = [illegible]
[illegible]

→ 'अहमिदम् इति'   [illegible] ([illegible])

ततएतत = [illegible]   समाने चिदात्मनि [illegible]
↓
अधिकरणे [illegible]   उभये = [illegible]
प्रतिबिम्बतम [illegible]

1. ✗ . انجور خود پرابرا وت میں نہیں تھا۔ [illegible] ابھی [illegible] میں پیا شدہ تھا [illegible] میں پیدا رہتا۔ [illegible] جاتے ہیں۔ [illegible] ان کو بعد [illegible] لیکن پایا میں اپرا [illegible] +

(31)

अनवेनैव = [illegible] = [illegible] प्रवभासमाने

→ सामानाधिकरण्यम = [illegible]

उक्तम् - [illegible]

अत एव = [illegible] ईश्वरावस्थायां = [illegible]

परा परात्मिका [illegible]

पराپरا ← दृष्टा = [illegible] भावा भजन्ते =

[illegible]

✗

यथैव = [illegible] मायाद्दवानि = [illegible] ([illegible])

अपरा = [illegible]

✗ न तु = [illegible] सेवे = [illegible] परा परा शक्ति: [illegible]

वा अपरा इति = پا اپرا

([illegible])

अत एव यत ईश्वर तत्व = [illegible] श्रीमदुत्पलदेव पादै: = [illegible]

अभिहिते प्रति [illegible]

[illegible] तत = [illegible] प्रदाप्रीत = [illegible] आगम विपर्यास [illegible]

आप्राङ्का युक्तम [illegible]

= [illegible]

इति न मन्तव्यम [illegible] الی بات نہیں

[illegible]

132

[illegible]

मन्त्रमन्त्रेश्वरादिषु = [illegible] तु रूपं = [illegible]

बोधैकपरमार्थिमापि = [illegible]

रूप पर = [illegible] बोध = [illegible] एक परमार्थात

"प्रत्ययदहम" [illegible]

इदं इदम् [illegible]

इदम् وہاں — पुनर = [illegible] इदम् इदं = [illegible] इति संवित्

विज्ञानकलानां = [illegible]

तु

बोधैकपरमार्थेनापि = [illegible]

रूपेण

"प्रेम न इदम्" [illegible] (دوسرا [illegible])

[illegible] ← इति संवित् [illegible]

प्रबोधात [illegible]

"अहमित्येव" [illegible]

तत्र = وہاں प्रबुद्धम = جو بودھ [illegible]

[illegible] विज्ञाना इदम् [illegible]

(248)

132

[illegible]

प्रत्ययकोवलि नाम = [illegible] इदमहम् = [illegible]

इत्य प्रबुद्धमेव = [illegible]

प्रत्र मायापदे = [illegible] तत = [illegible] निर्विकल्पताभासन = [illegible]

यद्यपि प्रस्ति = [illegible]

२८ तथाविध एव = [illegible] प्रमाभूता = [illegible] विमर्श = [illegible]

[illegible]

तथापि = [illegible] तत रूप व्यवहार [illegible]

[illegible]

तत = [illegible] प्रसाद = [illegible] प्रसादित

सत्ताकस्यापि = [illegible]

का. तदव्यतिरिक्तस्यापि = [illegible]

३ पश्चात् तनस्य विमर्शस्य = [illegible] इदं शरीरादि अहमहं

= [illegible]

[illegible] = [illegible] योऽसौ = وہ

ज्ञाता = جاننے والا → इदं घटादिकम्

= یہ [illegible]

[illegible] (Urdu handwritten notes, three lines)

इदं = यह यत तत् ... इति

ज्ञेयम्

भेदेनैव विमर्श रूपतया [illegible]

व्यवहारो विकल्पात्मैव [illegible]

तत्र तु = लेकिन तथाविधत्वे [illegible]

कारणान्तरस्य [illegible] असंवेदनात् [illegible]

[illegible]

कल्प्यमानेऽपि च [illegible]

कारणे

पुनरपि = [illegible] तथाविधबोध, अविनिर्भाग मात्र

पर्यवसानात् [illegible]

तस्यैव = [illegible] अविकल्प [illegible]

संविदात्मनः

तथा सामर्थ्य [illegible]

[illegible]

तथा सामर्थ्य योगादेव च [illegible]

तदनन्त वैचित्र्यात्मकत्वम् [illegible]

सिद्ध्यत इति [illegible] ऐश्वर्यमस्य अनपायि

[illegible]

[illegible] (Urdu marginal notes, left side)

[illegible]

اس سرکار کا view point کو سامنے رکھ کر

133/

अस्यां च = [illegible] सत्तायाम्

ऐश्वर्यम् अनपेते = [illegible]

यत: = [illegible] वैश्वयात्मनि एव = [illegible]

मायीये वेद्योऽपि वा = [illegible]

धाम्नि = [illegible] → मध्यमनुमये = [illegible]

भास्वती = [illegible]

प्रतिरेक्यपि = ~~[illegible]~~ संभाव्य एवं [illegible]

विमर्श: = [illegible]

पत्र तु = [illegible] परसंविदि [illegible] यथैव भासा = [illegible]

= [illegible] तथैव व्यवहारमयोऽपि विमर्श:

[illegible]

तेन = [illegible]

भेदरूपतया विमर्श: [illegible]

जल इव जले [illegible]

ज्वालायामिव ज्वाला = [illegible]

सर्वथा = [illegible] अभेदमया एव भावा [illegible]

भासन्ते = [illegible]

[illegible]

[illegible]

न तु = [illegible] प्रतिबिम्बकल्पेनापि केवल

For Devoni Sole only

यावत = جب تک एषादि परमेश्वरी उपदेशाय

निरूप्यते = نروپن کیا جاتا ہے

134

तावत = [illegible] पदार सत्ता = [illegible]

कृपा = [illegible]

तथा भवति = ایسے ہی ہے

सर्वे च = [illegible] भासात्मकं = [illegible] भैरवरूपं

स्वतः सिद्धम् = آپ ہی سے [illegible] प्रमादि

प्रथमे = پہلے तथा चरमे च = [illegible]

तु = لیکن सर्वतश्च = [illegible]

वर्तमानमिति = [illegible]

किमपर = [illegible] तत्र किंपर = [illegible]

= [illegible]

उच्यताम् = [illegible]

[illegible]

⊕ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

134

तत्त्वभावविकासी = [illegible] आत्ममयमात्मैकयेनैव =

[illegible]

स्वप्रकाशं = [illegible] → प्रकाशयाति = [illegible]

तथैव च = [illegible] विमृशति = [illegible]

अनपेत = [illegible] तथा चमत्कारत्वेडापि = [illegible]

यत च = [illegible] तत् = .. तथाविमर्शने =

[illegible]

तत् = [illegible] भावि ~~मायीया नन्त~~ [illegible]

मायीयानन्त सृष्टिसंहार लक्षकोटय बुंद = [illegible]

परार्धे साक्षात्कारिणि [illegible]

भासने भवेत = [illegible]

तथा भव [illegible] तत् = [illegible] यदि = اگر [illegible]

सृष्टौ = [illegible] प्राथमिके = [illegible]

माध्यमिके वा पदे = [illegible]

भासनात् = [illegible] विमृशेत = [illegible]

तत = [illegible] पूर्वस्य = [illegible]

उत्तरपद [illegible]

तदुत्तरव्यभिचारना = [illegible]

134/135

कथं = کیونکر — अनिबूढ = نہ رہی ؛ परमेश्वर = پرمیشور (246)

महाधाम (تجلی گاہ) اس کی تجلی گاہ

समाश्रित — اس پر ٹھہری ہوئی

शंकासंभावना = شک کا ہونا — अनापदमात्र = [illegible]

अपरिपूर्णम = نہ پوری ہوئی ؛ अप्रथिततर = اور نہ سمجھی گئی

भावराशिविण्डिता ध्वस्तन = [illegible]

पद्म्यन्त्यादि = پشینتی وغیرہ — निष्ठ = ٹھہری

भेदासूत्रण कलङ्क = [illegible]

तथाविध = ویسی — वस्तवदोषणवद्ध = [illegible]

नाममात्रीभूत = اس سے نام ماتری بنا ہوا

135 पराभट्टारिकारूपं = پرا بھٹارکا روپ

तत = وہ — किमपि रूपं भवेत = کیا بن جائے گا

एतादृशा धारा शे हणाभावे च = [illegible]

न = نہ کوئی — किंचित = — इदं = یہ

विजृम्भमाणं = اس میں آیا ہوا — भासेत = بھاسے گا

विजृम्भत इति = [illegible]

[illegible]

135

न व्रजतु = [illegible] पूर्णता = [illegible]

मा = [illegible] प्रतिष्ठभावराशिप्रभेदकथा =

खण्डयताम् = [illegible]

मा = [illegible] निर्वीक्षीयैः स्वाश्रयता = [illegible]

भेदकलङ्कमुद्वहतु = [illegible]

नामधेयमात्रेण परत्वम् = [illegible]

न → इति वक्तुं युक्ताम् [illegible]

तत् = [illegible] एतदेव = [illegible] भवति = [illegible]

संगच्छते च = [illegible] यदि प्रथमतरे [illegible]

सविचरमे = [illegible] एवमाभासा = [illegible]

पतन्ती = [illegible] तत्रैव = [illegible] → सविचरमेव

विमर्शेनापि परे = [illegible]

प्राप्येत

बन्धयेत् = [illegible] स हि चरमो = [illegible]

भागः = [illegible] तथा = [illegible] तावत् = [illegible]

स्वात्मरूपं = [illegible] विश्रान्त = [illegible]

[illegible]

135

तत्स्वात्मरूपनान्तरीयकता = [illegible]

स्वीकृत = لے لیا، قبول کیا ہوا ततदनन्त = [illegible]

निज पूर्व पूर्वतरादि = اپنا اگلا اگلا - [illegible]

भागान्तरो = [illegible] بھاگ भासमानो = [illegible]

विमृश्यमानश्च = [illegible] पूर्ण एव [illegible]

तत्पूर्वोऽपि भागः = جو اب اس کا پہلا [illegible]

तदुत्तरभाग = اس کے بعد [illegible] पृष्ठपाति वृत्तः [illegible]

पूर्व [illegible] परिपूर्णताम = [illegible]

जहत् = نہ چھوڑا ہوا स्वयं च = آپ

स्वरूपनान्तरीयकता = [illegible]

उत्कृष्ट = [illegible] स्वपूर्व =

पूर्वपूर्वतरादि = پہلا اس سے پہلا भागान्तराभोगो

[illegible]

135 भासमानो = [illegible]

[illegible] विमृश्यमानश्च = [illegible] तथैवाखण्डित: = [illegible]

इत्येवं = [illegible] तत्पूर्व पूर्वगताभासा = [illegible]

तत्तद्द्वित्रादि = [illegible] 2, 3, 4, 5, 6 ... [illegible]

विज्ञानिजोत्तर = [illegible] (उत्तर) भागाभासाविभागे = [illegible]

लब्ध भैरवभाव = [illegible] स्वभावा = [illegible]

[illegible] अव्यभिचारानुरोधबल = [illegible]

स्वीकृत = [illegible] स्व स्वपूर्वभाग चमत्कार = [illegible]

एकैकमपि = [illegible] पर = [illegible]

[illegible] पूर्णा = [illegible] भवति = ہے यावत: = [illegible]

स्वप्रकाशा = [illegible] निजभैरव = [illegible]

[illegible] प्रमित = [illegible] निकटतरवर्ति रूपं = [illegible]

[illegible] तदेव = [illegible] स्वेच्छाविश्रान्तिधाम को [illegible]

136

भैरवाख्यं वपुः = [illegible] स्वयमेव = [illegible]

तद्विमर्शाकुशला = [illegible] भवत = [illegible]

प्रसंख्यानपराः = [illegible] addresses his disciples.

छेदगिरि - तरा प्रभृत्य = [illegible]

उपाधि संकोचेन = [illegible]

रहिते = [illegible] तद्वत्यापि वा = [illegible]

प्रख्यानी प्रवेशे = [illegible]

पूरादखण्डिता [illegible]

दृष्टिरेवमेव = [illegible]

अखण्डिततामुपाश्नुवाना = [illegible]

भैरवबोधानुप्रवेशं प्राति = [illegible]

संप्रदायतामासादयेत = [illegible]

(250)

درختوں کے بغیر پہاڑی پروردش یا سنسان دیوار وغیرہ کی طرف ٹکٹکی لگا کر دیکھتے رہنا چاہئے

136

"निवृक्षगिरिमित्यादौ देशे दृष्टिं विनिर्दिशेत्"

(بغیر درخت کے پہاڑ وغیرہ کی طرف دیکھنا) - وغیرہ جگہ پر نظر جمانا - (بغیر درکار لفظ ۔۔۔)

इत्यादि, = اپنا وغیرہ

अन्यथा भागशः पाते = دوسری طرح سے بار بار نظر ڈالنے سے

प्रथमभागात् आरभ्य = پہلے حصہ سے شروع کر کے

यदि वा = یا اگر - مطلب پہلے نظر - ایک ہی نگاہ کرے

निरवयवमेव = بغیر اعضاء کے ہی (یہاں بھی اندر لگانا ہے)

एतत् = یہ

तत्क इव = اس کا کیا - وہ کس طرح

अपर-संवेदनेभ्यो = دوسرے گیانوں سے ← بیدار دیکھا گیانوں میں

अपूर्णाभिमतेभ्यो = جو پورا نہیں مانا گیا

अस्य भैरवबोधस्य ! कः विशेषः ॥

विशेषः = بھید - فرق

विशेषस्तु = فرق تو

گبھیکرت - اس کو

गर्भीकृतानन्त = جو اندر لیے ہوئے ہے - بے انت

वैचित्र्य चमत्कारकृतः इव = عجیب چمتکار

अपूर्ण संविदन्तरेभ्यः = نا پورے گیانوں سے

पूर्णाभिमत संवेदनस्य = پورا جو مانا گیا

इति स्वयमेव = اس طرح آپ ہی

जानन्तु = جانیں

सोपदेशाः = جو اپدیش سے

و اپدیش سمیت ہوں

جو وہ آپ ہی میں ہیں

13) पारमेश्वरः = پرم ایشور کو

परमेशशक्तिपात किरणविकासिते = پرم شو کی انوگرہ کی کرنوں سے نہ کھلے ہوئے

तु = لیکن पशुजन हृदय कुशेशये = پشوؤں کا ہردے روپی کملوں

न अस्मदीयैर्वचन शतैरपि = ویسے صفا نہ کھلا ہو - ہمارا سنکلپوں جیسے نہیں کہیں سے

अगرچہ تیز دھار والی بھی ہی اکٹھی ہوتے ہیں

अति तीक्ष्णाभिधेय सूचिभिरपि = جو سب تیز نام والی سوئیوں سے

सम्भेदोऽस्य = اکٹھی سے - (ہر روپ سے ایسا ہوا)

اُس کے ہر دو روپ کو ہم دیکھ سکتے ہیں -

विकासोऽस्य = وکاس وितरीतुं = شری کی اُلٹا - (بار بار ہم ہی) (بیکنی میں)

نہ اُس کے صرف کمل ہی کھلیں گے نہ یہ بات آسان ہو گی

शक्यः = घटेऽपि = لگے گئے ہی

एवमेव = اسی پरिपूर्णो दृष्टिपातः = پوری پوری طرح دیکھی ہوئی ہے - بیت اس پر بھی پوری طرح ہے -

ता तत्रापि हि = اس پر بھی اس جگہ پر بھی

अविकल्पा संवित् = جو ہی وکلپ سے رہت ہے - (جو وکلپ صورت)

अवरोहक्रमेण

इयति = اب ~~[illegible]~~ चरमभाग एव = اس گتی کا جو آخری حصّے ہے

[illegible Urdu notes]

137

निपतति = [illegible] ततस्तु = [illegible]

क्रमात = [illegible] विकल्पसंविद = [illegible]

अपायान्त्ये [illegible] रूपा चरमं निकटभागात् = [illegible]

निर्विकल्पकस्थान

अन्तरन्तराम् अन्तस्तमां च = [illegible]

अनुप्रविशन्ति = [illegible]

इति किमन्येन =

तदेवमेव = [illegible] इत्यापि = [illegible]

प्राक्तत्त्वे = [illegible] सदा = ہمیشہ

अविकल्पमेव = [illegible] विकल्पसति = [illegible]

स्वातन्त्र्य सरस्समनादि = [illegible]

सर्वादिमतं = [illegible] सिद्धम = [illegible]

अत्र = یہاں तावत् = وہاں न विमतिः = [illegible]

تو وہ तत्तु = ✗ परिपूर्णं = [illegible]

[illegible]

All
264

138 तथा भवति = यदि =

सर्वचरमो = पार्थिवीमेव =

भुवमधिशेते =

धरासंवित हि =

तथा धरा = विषयतयापि =

रूपमदेनाभास विमर्शो =

विमृशत च = यदि =

तत्स्वरूपमसर्वे स्व रूपवभास =

विमर्शयो: = व्याप्रियेत =

स्वरूपसतत्वे च = Travel

अस्या: =

परिपूर्ण प्रसर तत्स्वातन्त्र्य

कृता = परादभेद =

سداشیو تک

[illegible]

138

तत्पूर्वक = [illegible] सकरसभेद = [illegible]

[illegible] भेद प्रवभास विमर्श = [illegible]

तद्धशोदित = [illegible] संकुचाद्वित = [illegible]

स्वातन्त्र्य सत्तामय = [illegible]

माया ~~ग्राहक~~ ग्राहक = [illegible]

तत ग्राह्य चक्र = [illegible]

विभिन्नात्मक = [illegible] प्रधान द्विकार धी = [illegible]

तत्त्व = [illegible] तत्परिणामात्मक = [illegible]

अहंकार = [illegible] तन्मुल कारण पूर्वक = [illegible]

[illegible] तन्मात्र वर्ग प्रसूत = [illegible]

खादि = [illegible] जलान्त भूत वर्ग = [illegible]

अधर वृत्ति तया = [illegible]

अवस्थाने = [illegible] धरायां = [illegible]

सा = [illegible] हि = [illegible]

यावदाक्षेपेणैव = [illegible]

वर्तमाना = [illegible] तावत् = [illegible]

स्वरूपसतत्त्वैव [illegible]

[illegible] यावदेव = [illegible] पञ्चगुणत्वात् = [illegible]

آکھیپ = کرآس کرنے کی کھینچنا

(258)

پکڑتی ہے

تن ماترا کا آکھیپ

138

तन्मात्राणि आक्षिपेय =

तावत → तानि आक्षिप्यमाणानि =

(پہلے) تب ہی ہوا — تن ماترا

निजस्वरूप = اپنے سروپ کو   उपकल्पये = کلپنا کرتے ہیں

समाक्षिप्त = آکھیپ کیا ہوا   प्राक्तन प्रतिक्षिक -

मूलान्तर = مول کا   परम्परा

अनुबन्धि स्वक = سمبندھ   स्व पूर्वक =

मूलान्येव = مول ہی   नहि = نہیں ہے

उपादानाभिमत = اپادان کارن مانا ہوا

कारण स्वरूप = کارن روپ

उपानन्वयः =

कार्यसत्तायो स्यात् کاریہ

इति न्याय्यम् = ٹھیک ہے

निमित्तकारणादीनि = نمت کارن

ایسی بات نہیں ہے؟

[illegible] ؟

134 कथंचित = کیونکر   न =   अन्वीयुरिति =

उच्यतापि = [illegible]   कदाचित् = کبھی

एतच्च = [illegible]   प्रकृत विघातकमन्यत्र = [illegible]

तदभिधान प्रवण = [illegible]

प्रासे = [illegible]   निष्कृष्य = نکال کر

निष्कुषितम = [illegible]   अस्माभिरेव = ہم نے ہی

इति = [illegible]   न इह = [illegible]   विततम = [illegible]

तदेवं = یوں   प्रथमं = پہلے   तावत् =

धरा = پرتھوی   ततोऽपि = پھر   जलं = جل

तथैव = [illegible]   स्वरूप साकल्येन = [illegible]

भासमाने = [illegible]   विमृश्यमाने च = [illegible]

तद्भासा = [illegible]   विमर्श चमत्कारम् = [illegible]

अन्तःकृत्य = [illegible]   तथाविध = ویسے ہی

धराणितत्त्व = [illegible]   संस्कार सत्ताकं = [illegible]

[illegible]

[illegible]

139 पूर्यदेव = [illegible] इति यावत् = [illegible]

अन्ते सैव = [illegible]

पूर्णसंविद्भगवती = [illegible]

शिवात्मैव = तत = [illegible]

एनेनैव = [illegible] उपदेशयुक्तिनयेन = [illegible]

प्रदेशमात्रमपि = [illegible]

ब्राह्मण: = [illegible] सर्वरूपम = [illegible]

[illegible]

एकैकत्रापि च = [illegible] तत्त्वं = [illegible]

[illegible] षट्त्रिंशत्तत्त्वमयत्वं = [illegible] 36 [illegible] | [illegible]

शास्त्रेषु = [illegible] निरूपितम् = [illegible]

एवं च = [illegible] श्रीस्पन्दशास्त्रोपदेशो - [illegible]

× جو سادھک پرتھوی تتو میں ہی ۳۶ تتوں کو دیکھے - تو سمجھا ہے سب پدارتھوں کو دیکھ لیا (۳) سمجھ کر [illegible]
[illegible] - ایک دوسرا (254) نمبر پر [illegible] -

140 "दिदृक्षयेव सर्वार्थान्यदा व्याप्यवतिष्ठते ।
तदा किं बहुनोक्तेन स्वयमेवावभोत्स्यते ॥"

[illegible] - [illegible] تو خود ہی سب
(جاننا) دیکھنے کی اچھا سے ہی تب پدارتھوں کو (سب [illegible]) ان کو دیکھا ہے [illegible]
× کہنے سے کیا فائدہ ہے - یہ آپ ہی خود سب سمجھ جائے گا - [illegible]

[illegible] ۳۶ [illegible]
26

इत्ययं = [illegible] हृदयंगमीकर्तव्यः = [illegible]
चरमेण पादेन = [illegible] तदेवात्र = [illegible]
[illegible] सूचितमिति = [illegible] इति किमन्यत् = [illegible]
[illegible] यत् च = [illegible] येन बिना [illegible] बिना न भवति = [illegible]
तत् = [illegible] तावत् = [illegible] स्वरूपं = [illegible]

[illegible] यथा = [illegible] × शिंशपात्वं = [illegible]
वृक्ष [illegible] वृक्षस्य स्वरूपं = [illegible]
पारमेश्वर स्वतन्त्र्यातिरोहितं = [illegible]
नियति = [illegible] Exception [illegible] विजृम्भमाया = [illegible]
plant [illegible]
यत्तु = [illegible] यावत् = [illegible] स्वरूपं न भवति = [illegible]

140/

اس کے بغیر

تت् = وہ   तेन विना = اس کے بغیر   भवत्येव = ہوتا ہے

यथा = جیسے   वृक्षात्वमृते = درخت کے بغیر   शिंशपात्व = شیشم پن

अपवादो = استثنا   न भवन्ति च = نہیں ہوتے ہیں

च धरादीनि = اور زمین وغیرہ   उत्तरोत्तर तत्त्वानि: = [illegible]

न भवन्ति

जलादि पूर्व पूर्व विना = [illegible]

इति तावत्स्वरूपाण्येव = [illegible]

धरादितत्वानि शिवस्वरूपाणि भवन्ति।।

धरा = زمین   हि = ہے   न जलं विना भवेत् = [illegible]

धृतेरेव = زمین کو   काठिन्य स्पर्शनात् = [illegible]

इत्येवं = اس طرح   भूतानि = [illegible]

तन्मात्रैर्विना   कथं = [illegible]

तान्यपि = وہ بھی   इन्द्रिय ग्राह्यतां विना = [illegible]

इन्द्रियाण्यपि = [illegible]

140 तत = वہ तथा विध = ویسا ہی अध्यवसायेन विना = [illegible]

सर्वाणि = سب چैतदाद्य = [illegible]

[illegible] अविभक्त = [illegible] अन्वित = [illegible]

सूक्ष्मरूप = [illegible] मूल कारण = [illegible]

विना कृतानि न भवन्ति = [illegible]

मूल प्रकृतिरपि = [illegible]

भोग्या = [illegible] भोक्तारं विना = [illegible]

तद्भोग्यविभाग भागित्वादेव = [illegible]

संकुचितं = [illegible]

संकोच वशादेव च = [illegible]

स्वात्म आरोपित काल कलादि = اپنے آپ پر [illegible] کال وقت یعنی وغیرہ

पाशजालं = [illegible]

[illegible] संविदात्मकं च = [illegible] आन्तरंग कथं = [illegible]

संविदश्च = [illegible] परखण्डरूपाया: = [illegible]

× ,प्रसंकुचितपद = [illegible] — [illegible]

विकासि = [illegible]　　विकस्व = [illegible]

140 विना = स संकोच कारण स्वातन्त्र्य :

[illegible]

माया पर प्रमपरयाय विना = [illegible]

[illegible]

संकुचितत्वं = [illegible]　　स्वातन्त्र्ये च = [illegible]

संकोचे = [illegible]　　संकुचिततासारं = [illegible]

तारतम्यापेक्षि → [illegible]

तत्संकुचित　　भवदीषद संकुचित, प्रसंकुचित,

× / इषद्विकासिविकस्व = [illegible]

रूप　विरहय्य नैव भवेत् = [illegible]

[illegible]

सर्वमेव = [illegible]　　चेद = [illegible]　　प्रथमान = [illegible]

स्वतन्त्र्य = [illegible]　　परिपूर्ण प्रथासार भैरवं विना:

[illegible]

किंचिदेव न = [illegible]

इति स्वसंवित्सिद्धोऽयं = [illegible]

تسمجھنا چاہیے -

तत्त्वक्रम: = [illegible]

(※) सर्वं तत्त्वमयाकारः तच्च इदानीं
पृथ्वी काठिन्यत्वेन प्रवर्तमानः
प्रकीर्तितः ॥ (263)

ٹھوس شکل میں اپرا کا سروپ
ٹھوس شکل میں پراپرا کا سروپ
درمیان شکل میں پراپرا کا سروپ

141

श्रुतिरपि = [illegible] जलात्मिका = [illegible]

(×) काठिन्यं विना क - [illegible]

इति धरादि - [illegible] पूर्विका = [illegible]

सलिले पूर्विका ~~सलिलेषु~~ तु = [illegible] इति कथ्यमानम् अपि - [illegible]

किं न छेदयेत = [illegible]

प्रत्युत = [illegible] परिपूर्ण सर्वात्मक भैरवभट्टारकात्मक

परा संवित्परिपोषणायैव स्यात [illegible]

सर्वेश्वर्य = [illegible] परापरा भट्टारिकादि रूप = [illegible]

पृथ्व्यादि सत्ता समय = [illegible]

उद्विषयदीव्र स्फुट स्फुटतरादि = [illegible]

तत्त्वभेद = अनुसारेण = [illegible]

पराभट्टारिका भट्टारि = [illegible]

तदुचितेनैव = [illegible] वपुषा = [illegible]

विराजते = [illegible]

.×.

अपरा षोडशो यावत काल: सप्तदशा परा:
परा वस्तुय: काल: प्रष्टादशा स्मृत:॥ (264)

तत्र हि = [illegible] निरवस्येव = [illegible]

द्राविडाम सन्न = [illegible] न कोचिदपि स्यात =

भाविष्यदपि = [illegible] वस्तु हि = [illegible]

चरममपि = [illegible] प्रथम प्रकाशे = [illegible]

भासेतैव = [illegible] केवलमेकरसे =

तदैवसार = [illegible] स्फुटरूपापेक्षाया = [illegible]

भाविष्यत्ता = [illegible] | तथा हि = [illegible]

भविष्यतिकल्की = [illegible] अनिष्यत्य धर्मपरान

इत्यादि = [illegible] यदि न प्रकाशेत = [illegible]

तत कथं = [illegible] पुराणेषु वितद्रम् = [illegible]

कोचन सर्गे = [illegible] बभूव = [illegible] कल्की

तथैव व्यवव्याघात = [illegible]

[illegible]

→ $\frac{18+17+16}{3} = 17$.

152 इति चेत् - कि = اگر ایسا کہیں

स्वासावस्य = [illegible] एव वा = [illegible]

अन्यश्चेद् अप्रकाशोऽसौ = [illegible]

स एव चेत् = [illegible] कथं कालभेदः = [illegible]

[illegible] अकालकलितश्चेत् कथमिव = [illegible]

[illegible] - चित्त्वादि स्वरूपत्वात् = [illegible]

इति चेत् = [illegible] तर्हि = [illegible]

अकालकलिते = [illegible] संविदात्मनि = [illegible]

→ सतत विश्व प्राकट्य श्री वियुक्ते = [illegible]

→ स्वातन्त्र्य वशा [illegible]

संकोच विकास अवभासित = [illegible]

संहृति सृष्टिमत्ता = [illegible]

अविरुद्धैकरूप = [illegible] एकतदात्मक वपुषि = [illegible]

परमेश्वरे = [illegible] अस्मत् =

→ जिह्वाग्र - हृदय = [illegible] अनपायिनि = [illegible]

143

भैरवभट्टारके = [illegible]   सर्वमस्ति = [illegible]

इत्यस्माभिरुप = [illegible]

उपन्यस्यमानमेव = [illegible]

मुक्तमन्दाक्षं = [illegible]   कथं न = [illegible]

समाद्रियते = [illegible]   विवृततरकण्ठमेव वा = [illegible]

स्वयमेव = آپ ہی   न निर्णीयं निरूप्यते = [illegible]

तस्मात् = اس لیے   प्लावितत्त्वम् = [illegible]

उद्गमाद्यन्त = [illegible]   स्वयं = [illegible]

प्रथमान = [illegible]   पूर्णतात्मक = [illegible]

निरपेक्षतामात्र = [illegible]   सतत्त्व = [illegible]

स्वतन्त्र्यसारम = [illegible]   अन्तः क्रोडीकृत्यात्मत = [illegible]

एकपरमार्थ = [illegible]   तत्त्वजात = [illegible]

परसंविदि = [illegible]   सततोदितत्वात् = [illegible]

सर्वाविरोधित्वात् = [illegible]

[illegible]

अस्मत् [illegible] सम्प्रदाय = [illegible] शुद्ध परसत्तया = [illegible]

सर्वस्यैव = [illegible] सर्वैकैतत्त्व स्व = [illegible] निखिलस्य च = [illegible]

संपुटीकरणात् = [illegible] सत्तयाऽऽधेयं [illegible]

143 निखिलानुग्राहकत्वात् च =

अनपायिनि = भैरवभट्टारके सर्वमस्ति =

इत्यस्माभिरुप = अन्यस्यमानमेव =

मुक्तमन्दाक्षं

अवस्थाशब्द = [illegible] व्यपदेश = [illegible]

अपसंहरणौ = [illegible] यावद् = [illegible]

कालकलितमासीन = [illegible]

भैरवरूपस्वातिष्ठते =

तावदेत = [illegible] शास्त्र समुचितेनैव = [illegible]

महासृष्ट्यादिरूपेण = [illegible]

न तु = [illegible] मितसृष्ट्यादिक्रमेण = प्रकास्ते [illegible]

इति सिद्धम् = संपुष एव = [illegible]

एव = सम्पुटीकरणात् (सम्प्रयोग) = [illegible]

वक्ष्यते = [illegible] चाप्येतत् = [illegible]

As we look into a Concave mirror our shape looks inverted.

پشنتی دشا سے مکر سی ببدکھاوے کا اکثر شروع ہونے کا وجہ سے پانوں کا ظہور بھی ہونے لگتا ہے۔ [illegible]
[illegible] ہے۔ 268

پشیتی دشا سے [illegible]

पश्यन्ती दशायाश्चारभ्य :

भेदा सूत्रणात्म = یہاں سے بیدکا [illegible]

पाश प्रशं अंशात् उल्लास : = [illegible]

इति, [illegible] तत : = [illegible] प्रभृत्येव = یہاں سے

शोध्य शोधक भाव = [illegible]

इति = [illegible] तावत = [illegible]

व्यवस्था = [illegible] अपह्नवनीया = [illegible]

यथोक्तम् = [illegible]

"यत्सदाशिवपर्यन्तं पार्थिवाद्यं च सुव्रते
तत्सर्वं प्राकृतं ज्ञेयं विनाश उत्पत्ति संयुतम् ॥"

यत् = جو, सदाशिवपर्यन्तं = سداشو تک, पार्थिवाद्यं = پرتھوی سے

सुव्रते = [illegible], तत्सर्वं = وہ سارا, प्राकृतं = [illegible]

ज्ञेयं = جاننا چاہئے, विनाश उत्पत्ति = [illegible]

संयुतम् = [illegible]

[illegible]

144

इत्यादि = [illegible] पश्यन्ती च = [illegible] → परा परा भट्टारिका = [illegible]

सतत्त्वा = [illegible] परप्रमातेरेव = [illegible]

स्वात्मशक्ति = [illegible] दर्पणकल्पा = [illegible]

यत्र = [illegible] तत्परा भट्टारिका स्वरूपमेव = [illegible]

चकास्ति = [illegible] प्रतिबिम्बवत = [illegible]

यत् च = [illegible] → रूपे = [illegible] सदा [illegible] बिम्बे = [illegible]

प्रतिबिम्बे च [illegible] एकता = [illegible]

परमार्थं मुख = [illegible] मुख परामर्श मात्रामेव = [illegible]

न = [illegible] तत्प्रतिबिम्बात्मम = [illegible] उच्यते = [illegible]

[illegible]

तन्मात्र = [illegible] सतत्त्वादेव = [illegible]

[illegible]

यत्तु = [illegible] तत्रान्यथा = [illegible] तथा च = [illegible]

भाति = [illegible] मुखाकार इव = [illegible]

पूर्वापरवामदक्षिणतादि = [illegible]

विषयात् = [illegible] एतदेवापि = [illegible]

तदेवापि = [illegible] तदेव = [illegible]

प्रतिबिम्बात्मम = [illegible] उच्यते = [illegible]

तत्र च = [illegible]

[illegible] ہو جاتا ہے —

145 / [illegible]

तत्समानधर्मैव भवति = [illegible]

न तु = [illegible] विजातीयम् = [illegible] — ([illegible])

([illegible]) एवं च = [illegible] पश्यन्ती = [illegible] सतत्त्वप्रसरा = [illegible]

[illegible] अविमलमुकुरिकायां = [illegible]

तत्तत्तथाविधोक्त क्रमम = [illegible]

अपूर्ण पृथिव्यादि तत्त्व = [illegible]

सामग्री निर्भरम् = [illegible]

अन्तस्तथाविध = [illegible] सहजाकृत्रिम = [illegible]

पारमार्थिकानपायिकादि = [illegible]

[illegible] परामर्शा = [illegible] क्रोडीकारेणैव = [illegible]

वर्तमानमपि = [illegible]

श्रीपराभट्टारिकावपुः = [illegible]

प्रतिबिम्बमर्पयत् = [illegible]

[illegible] स्वरूपान्यथात्व = [illegible]

[illegible] सहिष्णुकादि = [illegible]

परामर्शान् = [illegible] अन्यथा भावेनैव = [illegible] प्रकाशयति।

तत्परैकरूपे = [illegible]

परामर्शं = [illegible]

— [illegible] विपर्यास [illegible] ⊕

धरण्यम्भ = [illegible] प्रभृति = [illegible]

तथा = [illegible] उल्लसद्भेदसूत्रणतया = [illegible]

सजातीयायां = [illegible]

विमलायां च = [illegible] यावत् प्रतिबिम्बयति = [illegible]

तावद्धरादितत्त्वानां = [illegible]

[illegible] | विपर्यास = [illegible] एवोपजायते = [illegible]

[illegible] ⊕

यत = [illegible] परसंविदि = [illegible]

प्राक्तितत्त्वं = [illegible] तदेव = [illegible]

परापरात्मनि = [illegible] पृथिवीतत्त्वे = [illegible]

यत्तु = [illegible] धरातत्त्वे = [illegible]

[illegible] तच्छक्तितत्त्वम् = [illegible] इति = [illegible]

क्षकारात् = [illegible] प्रभृति =

धरादीनां = [illegible] स्थिति = [illegible] — [illegible]

[illegible] (279)

146

भगवद्भैरवभट्टारकस्तु = [illegible]

सदापूर्णो = [illegible] अनन्तस्वतन्त्र एव = [illegible]

न = [illegible] विपर्यस्यते = [illegible]

जातुचिदपि = [illegible]

चिद्रूपातिरेकाद्यभावात् = [illegible]

इति उक्तं बहुशः = [illegible]

x परात्मनि = [illegible] परामर्शो = [illegible]

परामर्शैकतत्त्वनान्येव = [illegible]

तत्त्वानि = [illegible]

परामर्शश्च = [illegible] कादिक्षान्त = [illegible]

शक्तिरूप परमार्थ इति = [illegible]

तत्र = [illegible] अभेद एव = [illegible]

परापरायां तु = [illegible]

भेदाभेदात्मकता = [illegible]

भेदस्याभेदात्मकता [illegible]

प्रतिबिम्बन्यायेन = [illegible]

सा च = [illegible] परापरामर्शमयी = [illegible]

[illegible]

[illegible] (273) [illegible]

149/117 कादि-क्षान्त वर्णमाला प्रसीर =

यावत्स्व = [illegible] स्वऊर्ध्वे व्यवस्थित = [illegible]

पराभट्टारिका = [illegible] निविष्टत्व = [illegible]

प्रतिबिम्बानि = [illegible] धारयति = دھارن کرتی ہے

तावत = اتنے تک तेष्वेव = [illegible] प्रमातीय = [illegible]

प्रश्रोत कादि-क्षान्त = [illegible]

परमार्थ परामर्श प्रोक्षु = [illegible]

ऊर्ध्वाधरविपर्यासेन = [illegible]

तत्त्वानि = تتو सम्पद्यन्ते = بنتے ہیں

ऊर्ध्व बिम्बाधर = [illegible] प्रतिबिम्ब धाम = [illegible]

स्वभावमाहिम्ना = [illegible]

इति तात्पर्यम् = یہ مطلب ہے

ततः = اس لئے पृथिवी = [illegible] क्षकार = [illegible]

इत्यादि = وغیرہ शोध्यरूपापेक्षया = [illegible]

न = نہیں किंचित = [illegible] विरुद्धम् = [illegible]

तत्रापि = وہاں بھی परदशा संनपायात = [illegible]

[illegible] (274)

147

[illegible]

एवं इव = [illegible]   कादिवर्णसंतानः = [illegible]

तत्रैव च = [illegible]   स्वांश ~~श~~ उद्देकात् = [illegible]

स्वांशान्तर्वर्तिमध्यमा पदी = [illegible]

उल्लासात् = [illegible]   स्वरूप, वर्तमान = [illegible]

वैखरीरूप = [illegible]   प्रावण्यया च = [illegible]

वर्ण - मन्त्र पदरूपता = [illegible]

प्रोदयात्प्रवृत्ति = [illegible]

इत्यास्ताम = [illegible]

अप्रकृतमेतत = [illegible]   subject matter

निर्णीतं च मयैव श्रीपूर्व प्रभृति पञ्चिकासु = [illegible]

यद्यपि

~~यथायुक्तं~~ = [illegible]   श्री मालिनी भट्टारिकानुसारेण

See Page 120-125 [illegible]

अन्यथा = [illegible]   च अन्यथा स्थिति = [illegible]

[illegible]

147 इति तदपि निर्णीय = [illegible]

निरूप्यमाणं = [illegible] विमृशन्तु = [illegible]

त्रिकोपदेश, विशीर्णा ज्ञान ग्रन्थय = [illegible]

परमेश्वरा: = [illegible] | अनाश्रित = [illegible]

शाक्त्यात्मक = [illegible] पश्यन्ती = [illegible]

परमकोटिमतिक्रम्य = [illegible]

पारमेश्वर्या = [illegible] परसंविद् = [illegible]

देवतास्तिस्त्र" = [illegible]

इति यदुक्तं = [illegible] तत = [illegible] तावत् = [illegible]

[illegible] प्रस्मतुमतेनेति = [illegible]

तत्र भवन्त: = [illegible] एव च परसंविद् = [illegible]

अन्तर्वर्तीनि = [illegible] मध्यमापदे = [illegible]

परापराभट्टारिका = [illegible]

विजृम्भास्पदे = [illegible]

148 स्थितिविमृश्यते = ایسا طور پر دیکھی جاتی ہے

मध्यमा = درمیانی   तावत्स्वाधिकारपदे = اپنے اختیار کے پد پر

क्रियाशक्त्यात्मनि = کریا شکتی روپ

ऐश्वरे पदे = (کریا میں) ایشوری پد پر   स्फुटवेद्य = واضح پرکاش ویدیہ

प्रच्छादकवेदनरूपा = (ڈھکنے والا علم یا گیان روپ) اسے چھپانے والا اور

واچک واچیہ میں واچیہ کو ڈھکتا ہے واچیہ کو Cover کرتا ہے

वाच्ये = واچیہ میں   वाचकं = واچک کو اسی   तत्रापि = اس میں بھی

वाच्यमध्यस्थितं = واچیہ کے اندر رہنے والا

विश्वत्र = سب   वाच्ये = واچیہ میں

واچیہ واچک کو بھی ڈھکتا ہے

विश्वात्मनि = وشو روپ میں   वाचकमपि = واچک کو بھی

यदि =   विश्वात्मैव =   तदेव = اسی طرح

परस्पर = آپس میں   प्रच्छादन = چھپانا

جب واچک واچیہ آپس میں ایک دوسرے کو Cover کرتے ہیں

मिश्रीभावात्मनि = ملے ہوئے روپ میں

[illegible]

निविहत = [illegible] अभ्यासः = [illegible] नत =

न्यथा = [illegible] नहि = نہیں ہے

त्रिचतुरङ्गुलन्यूनतामात्रेऽपि = تین چار انگلی [illegible]

पठः = [illegible] पठान्तर = [illegible] आह्लादकः स्यात् =

विश्वात्मकत्वे च = [illegible] परस्पर स्वरूपव्यामिश्रतया =

स्यात् = [illegible] बीजात्मनां =

स्वराणां = سُر वाचकत्वे = [illegible]

योनिरूपाणां च = [illegible] व्यञ्जनानां =

वाच्यत्वे = [illegible] Play Part [illegible]

कर्मेण = [illegible] शिवशक्त्यात्मकत्वात् = [illegible]

"बीजमन्त्र शिवः शक्तियोनिरित्यभिधीयते"

बीजम् = [illegible] मन्त्र = [illegible] शिवः = [illegible] शक्ति योनि [illegible]

इति अभिधीयते = [illegible]

१५९ तथा =

बीज योन्यात्मकाद्भेदाद्द्विधा बीजं स्वरा मताः ।

कादिभिश्च स्मृता योनि .... ॥

बीजयोन्यात्मकात् भेदात् = द्विधा

बीज = स्वर योनि

इति श्रीपूर्व शास्त्र निरूपणात् =

शिव एव हि =

प्रमातृभावमत्यजन् =

वाचकः स्यात् = प्रमेयांशावगाहिनी

शक्तिरेव = वाच्या = भेदऽपि =

हि = वाचकः = प्रतिपाद्य प्रति =

पादको = भयरूप = प्रमातृस्वरूपः

प्रविच्छन्न एव प्रथते =

शिवात्मक = 2 स्वरबीजरूपा

[illegible] Copulate [illegible]

प्रयानतेव = [illegible] प्राक्व्यञ्जनयोनिभावो = [illegible]

बीजादेव = [illegible] योने: = [illegible] पसरणात = [illegible]

इति समनन्तरमेव = [illegible] निर्णयाम: = [illegible]

प्रतरव = [illegible] स्वरात्मक बीजव्याप्ति श्रीभावश्चयोने [illegible]

तत्समस्त फल पसावो = [illegible]

हन्त = [illegible] नियत्तिः = [illegible]

इत्यपवर्गे = [illegible] भोगाव कुष्ठ पद्यावेव भवतः = [illegible]

बीजवर्णोऽपि = [illegible] स्वात्मनि = [illegible]

योनिवर्णोऽपि = [illegible] तथैव = [illegible]

इति किं कस्य भेदकम् = [illegible]

इति कथ्यमाने = [illegible] नास्मानाकलयेत् = [illegible]

ये वयमेको = [illegible] तावदनन्त = [illegible]

चित्रतागर्भिणी = [illegible] तो = [illegible]

संविदात्मिका = [illegible] गिरं = [illegible]

संगिरामहे = [illegible] मायीयेऽपि = [illegible]

149/150 व्यवहार पदे = [illegible] लौकिक = [illegible]

क्रमिक = [illegible] वर्णपद = [illegible] स्फुटतामयी: = [illegible]

एकपरामर्शस्वभावैव = [illegible]

स्वात्मस्वभावानुसंधानकारिणी प्रत्यवमर्शकारिणी = [illegible] प्रकाशरूपा = [illegible]

वाक् = [illegible] अन्यैश्च = [illegible]

एतत्प्रयत्नसाधितम् = [illegible] इह च = [illegible]

एतावत् = [illegible] उपदेश = [illegible]

धाराधिशयनशालिनाम् = [illegible]

अप्रयत्नत एव = [illegible] सिद्धाति । सिद्ध्यति = [illegible]

इति = [illegible] नास्माभिरत्र = [illegible] वृथा = [illegible]

वैयाकरणगुरु = [illegible] गुरु गमन = [illegible]

धूत = [illegible] शरीरता = [illegible]

श्री । विधिक्रियामात्रफले = [illegible]

150/ निर्बन्धो = [illegible] विहित: = [illegible]

एवमेव = [illegible] नवात्मपिण्डप्रभृतिष्वपि = [illegible] (الكوش)

मालामन्त्रेष्वपि च = [illegible]

क्रमाक्रमपूर्वापरादि = [illegible]

भेदचोद्य प्राति = [illegible] - [illegible] प्रति विधाने = [illegible]

सिद्धमेव = [illegible] एवं भगवती = [illegible]

ह्रीं त्रफं ह्रीं [illegible] मालिन्येवं = [illegible] मुख्यपारमार्थिके = [illegible]

मद्यमाधाम प्राक्ति = [illegible]

ह्रीं म - क्षा ह्रीं [illegible] सतत्त्वम् = [illegible]

अत एवोक्तं श्रीपूर्वशास्त्रे = [illegible]

यथेष्टफलसंसिद्ध्यै मन्त्रतन्त्रानुवर्तिनाम्।
न्यसेच्छाक्तशरीरस्थं भिन्नयोनिं तु मालिनीम्॥

151/ यथेष्ट = [illegible] फल = [illegible] संसिद्ध्यै = [illegible]

मन्त्रतन्त्र अनुवर्तिनाम् = [illegible] न्यसेत् = [illegible]

शाक्तशरीरस्थं = [illegible] भिन्नयोनि तु = [illegible]

मालिनीम् = [illegible]

"न" → Travel

इति भिन्नयोनित्वे च वर्णितम् =

अन्यत्रापि =

न पुंसि न परे तत्त्वे शक्तौ मन्त्रं निवेशयेत्।
जडत्वान्निष्क्रियत्वाच्च न ते भोगापवर्गदाः ॥

न = पुंसि = न = परेतत्त्वे = शक्तौ मन्त्रं
विवेशयेत् = जडत्वात् = निष्क्रियत्वात्
न = ते = भोगापवर्गदाः

एवं च स्थिते = सर्वसर्वात्मकत्वात् =

यदेव = न ऋ लृ लॄ थ च ध ई ण उ ऊ व क ख ग

इत्यभिहितम् = इहेत्य परसंविदमपेक्ष्य =

क्रमेण = श्रोत्रं = "न"

नादात्मकभावरूपं =

योन्यात्मामृताप्याय =

कारिणि = बीजचतुष्कात्प्रायभमौ =

पतिते = वृंहितत्वमवाप्य =

झटिति =

ग्रहणात्मकरस =

Confusion — acceptance

"थ"

[illegible]

सतत्त्व = [illegible] रसनामयत्वे = [illegible]

प्रतिपद्य = [illegible] धरण्याकार = [illegible]

गन्धविशेषीभूय = [illegible] तत्रैव = [illegible] "संहृत्य"

स्पर्शकरणता [illegible] "चे" श्रित्वा = [illegible]

एतावत् च [illegible] शाक्ते = "श" [illegible]

योनं = [illegible] धाम = [illegible] I establish

ईशानबीजेनाधिष्ठाय = [illegible] "ई" [illegible]

वागात्मनि = [illegible] करणशक्तौ = [illegible]

प्रतिफलितं = [illegible]

ततोऽपि = [illegible] करणशक्ते = [illegible]

उन्मेषोर्ध्वाश्रयेण = [illegible] "उ"

बीजरूपतया = [illegible] बुद्धिरूपा = [illegible]

शाक्तयोनिमधिशय्य = [illegible] "ब"

क ख ग

पृथिव्यम्बुजोयोनि = [illegible] → "क" [illegible]

तेज → "ग"

समाविष्टु = [illegible] "ख" पश्यन्तीरूपानुसूत्या [illegible]

"न"

शिव तत्त्वम्
प्रोक्त भवति

तु = [illegible] "श्रोत्र" → [illegible] ग्रहणात्मकवाक्रूपायां = [illegible]

तत्रैव = [illegible] बीजेषु = [illegible]

"ग"

152 प्रसृत्य च शुद्धयो =

भुवि = पतित तत्सामान्यो =

Supreme Shudvidhya — शुद्धविद्या = करणे =

तत्सर्वान्त्यैकरणे च =

घ्राणे = → "ट" स्थित्वा =

ईशान वीजेनाक्रम्य = "ई"

श्रोत्रप्रान्तिम = "रा"

प्रालम्ब्यो = उन्मेषोद्भवे =

वीजयोगेन = "उ" "ऊ"

प्राणेन्द्रिय योनिगे =

"व" ←

सदाशिवेश्वर शुद्धविद्यामय भवति:

(ग) (ख) (क)

इति सर्वाग्रमध्यान्त गामित्वेनर

उपरिच्छिन्नमनन्तशक्ति =

शिवतत्त्वम् =

'व' → [illegible] 'व' → برابر ہیں

प्रोक्त भवति = [illegible]

मालिन्यामित्यापर = [illegible]

संविदनुसृत्या = [illegible]

पश्यन्त्यात्मक = [illegible] सत्तानुसृत्यां च =

क्रमेण = [illegible] वायुमाया ~~शक्ति~~ च

तारतम्यम् ~~......~~ घ ~~......~~ [illegible]

← नमः ईश्वरः च 'ढ' → [illegible]

इच्छैव = [illegible] → [illegible] → [illegible]

प्राद्धविद्या = [illegible] अनुत्तर एव = [illegible]

स्वतन्त्रोऽहंभावः = [illegible]

'श' शिवाख्यो ~~भाव~~ = [illegible]

← 'भ' कालः प्रकृतिश्च / 'य' रागः नियतिश्च [illegible]

विद्या पाशुच 'ह' → [illegible]

कला: "हकार:" ~~......~~ ज्ञानेन्द्रियं च → 'ढ' [illegible]

[illegible]

~~......~~ नाद्विश्व = [illegible] 'ह' [illegible] पुमांश्च =

[illegible]

'भ' प्रकृति रूपश्च → 'भ' [illegible]

(3) 'ज' → धीरूपं शंकरश्च → [illegible] 'ज'

'ज' अहंकृतं रूपं च → [illegible] 'ज'

'र' → मनः विद्या च → [illegible] 'र'

'ट' पादेन्द्रियम् श्रोत्रं च → [illegible] 'ट'

मनो त्वक् च 'प' → [illegible] 'प'

चक्षु रसः च 'इ' → [illegible] 'इ'

'ल' कालः रसना-कला च → 16+16 [illegible] 'ल'

आनन्द शक्तिः शैवी 'आ' घ्राणश्च → [illegible] 'आ'

'स' वाक् ईश्वरश्च → [illegible] 'स'

'अः' विसर्गश्च उपस्थं च 'अः' [illegible] 'अः'

वायु सदाशिवश्च 'ह' → [illegible] 'ह'

शुद्धविद्या पाणि च 'क्ष' [illegible] 'क्ष'

[illegible] ← पादेन्द्रिय शक्ति पृथिवी च 'क्ष' → [illegible] 'क्ष'

पुमान् शंकरश्च 'म' → [illegible] 'म'

स्पर्शः महामाया च 'श' → [illegible] 'श'

[illegible] 'स'

वैन्धवी शिव शक्तिः 'अं' रूपं च

[illegible] 'अं' [illegible] ([illegible])

154 नासिका रसना च 'त' → [illegible]

शिवशक्तिः सौक्ष्मी 'ए' गन्धः च → [illegible] 'ऐ' [illegible]

सैव ('ए' [illegible]) 'ऐ' [illegible] → [illegible] नमः"

तथैव वायुतेजसौ 'ओ' → [illegible] 'औ'

[illegible] 'औ' [illegible]

रूपः चक्षु च 'द' → [illegible] 'द'

संहृत - पृथिवी च 'फ' → [illegible] 'फ'

अत्रैव [illegible] यथाक्रम [illegible]

शरीर निवेशः - [illegible]

सर्वसर्वात्मकत्वम् भवेत् - [illegible]

निव्यूढं = [illegible] भवेत = [illegible]

पश्यन्ती में [illegible]

पराभट्टारिकैव हि = [illegible]

प्रोक्तनयेन = [illegible] पश्यन्त्यां = [illegible]

प्रतिबिम्बं = [illegible] स्वकर्मपर्यमाण = [illegible]

तत्समकालमेव = اسی وقت میں [illegible]

स्वात्मतादात्म्य = [illegible] व्यवस्थित = [illegible]

identity [illegible]

योनि = [illegible]
बीज = [illegible]

मध्यधाम्नि = [illegible] भिन्नयोनिताम् = [illegible]

प्रभुवाना = [illegible] तत्तद्योनिबीजै = [illegible]

परस्पर = آپس [illegible] संभेदवैचित्र्यस्य = [illegible]

आनन्त्याद् = [illegible] असंख्येनैव = بے شمار

प्रकारेण = [illegible] तत्तत्कुल = [illegible]

पुरुषादि = [illegible] भेदेना परिगणन = [illegible]

भेदेस्थागिनी = [illegible] मालिन्येव = [illegible]

यथोक्तम् = [illegible]

आनन्तैः कुलदेहैस्तु कुलशक्तिभिरेव च ।
मालिनीं तु यजेद्देवीं परिवारितविग्रहाम् ॥

आनन्त = [illegible] कुलदेहै = [illegible] कुलशक्ति = [illegible]

मालिनीं तु = [illegible] यजेत् देवी = [illegible] परिवारित = [illegible]

विग्रहाम् [illegible]

इति

इत्यनेन च = क्रमेण, बहिर्भुवनेषु =

तत्त्वेषु = असौ शारीरेषु च =

चक्रेषु = अभ्यासपरो योगी =

तत्तत्सिद्धिभाक् भवति = अत्रैव =

देह प्राण = भवति = |

यथा = काश्चिदेवौषध्यः =

समुदय किंचिदेव = कार्यं =

विदधते = तथा =

काश्चिदेव = समुदय भावना –

रूपा भावना

मन्त्रन्यास, होमादि =

कांचिदेव = सिद्धिं = वितरेत = |

अत्रापि = यावन्नियति व्यापार =

अनतिक्रमात | तथाहि

(जात)

प्रतिभासमन्यथा च =

अन्यथा च वर्णविवेकपुर : सरे

निज निज विज्ञान =

सीमित

ملی ہوئی

समुचित = [illegible] तत्तद्वर्णी भट्टारक = [illegible]

प्राधान्येन = [illegible] तत्तद्वर्णी प्रथम्यानुसारायात

नियत = [illegible] परिपाटी = [illegible] पिण्डितवर्णी =

वर्णसमूहरूपः = [illegible] प्रस्तारो निरूपितः = [illegible]

तत एव च = [illegible] मन्त्रोद्धारो निरूपितः =

तामेव [illegible] मातृकारूपा =

इसी रीति से तथाविध वीर्य = [illegible] यान = उपबृंहित =

मन्त्रस्फुरत्तादायिनी = [illegible] दर्शयितुं =

यथा = [illegible] श्रीनित्यातन्त्रेषु = [illegible]

~~एकारात्मक हृद्बीज~~ = ~~[illegible]~~

~~प्राधान्य = [illegible]~~ तु परनादात्म = [illegible]

निवेश = [illegible] प्राधान्यात = [illegible]

तदनुसारात पतित = [illegible]

श्रीमन्त्रादि = [illegible] फान्तकर्मणैव = [illegible] "च फ"

निवेशः = [illegible] अत्र = [illegible]

158

कुलपरूपाणां = [illegible] कुलशक्तीनां च = [illegible]

एष एव = [illegible] . निवेशो = [illegible] – तद्रूपता

अभिप्रायः = غرض न च वर्णमन्त्रादि गुप्तिमात्रमेव = [illegible]

फले = [illegible] यथा = [illegible] श्रीवाजसनेयतन्त्रे =

वर्णान् = [illegible] यथा = [illegible] निवेशयेत्क्रमम् = [illegible]

"इत्येतन्मातृकाचक्रं दिव्यं विष्णुपदास्पदम्।
ज्ञाते गुरुमुखात्सम्यक् पशोः पाशान्निकृन्तति॥"

इति एतत् = [illegible] मातृकाचक्रं [illegible] दिव्यं = [illegible]

विष्णुपदास्पदम् [illegible] ज्ञाते = [illegible] गुरुमुखात् [illegible]

सम्यक् = [illegible] पशोः पाशान् निकृन्तति = [illegible]

तथा श्रीत्रिकहृदयेऽपि = [illegible]

~~चक्रस्थूल~~

Delete first line

~~चक्र = [illegible] स्थूले = [illegible] अम्बुज = [illegible] आदीनां [illegible] पाणिनां~~ = [illegible]

~~सरितां [illegible] नागम्~~ = [illegible] आयुधानां च [illegible]

शक्तीनाम् = [illegible] अन्यस्यापि [illegible] कस्यचित् = [illegible]

द्वेषु = [illegible] वाणस्तु [illegible] यः = 3. निवेशः = [illegible] प्रस्तु = [illegible] वर्णानां [illegible]

तत् वीर्यं = [illegible] तत्र = [illegible] मन्त्रगणम् = [illegible]

तेन गुप्तेन = [illegible] ते गुप्ताः = [illegible]

(296) 1st July

अन्यथा त्वम् —
अन्यथा त्वम्.

इति। तथाहि मन्त्राणामक्षरमात्र = ان منتروں کا

अन्यथाभावेऽपि — منتروں کا روپ بدل جائے تیषامेव = ان منتروں کا ہی

शास्त्रेष्वाणव शाक्त शाम्भवादि =

विभागेन = ونبھاگ سے अन्यथात्वम् → | यथा-

मायाबीजस्य = (ह्रीं) प्रणवस्य = (ॐ)

सर्वस्यामृतबीजस्य = स्वौ

वैष्णव - शैव - वामादि शास्त्रेषु =

यथा वा = चतुष्कल भट्टारकस्य = ॐ

कौलोत्तरादौ = श्रीमद् स्वच्छन्दशास्त्रे च =

अन्यत्र च = कुलपुरुष = (یعنی شیو) कुलशक्ति च →

बहुभेद = प्रकटनायाम =

अभियुक्तानामुपायो =

लिख्यते =

۲۹۷

पूर्व = پہلے — परेषाम् = دوسروں کے — अपरे = دوسرے

पृथग्देव = الگ الگ دیوتا — पूर्वापि च = — यथा = جیسے — पूर्व = پہلے

मातृकाया = ماترکا کی — विधि = قاعدہ — मतः = مانا گیا ہے

सतत = ہمیشہ — अनुसारेण = — अभिन्नयोनि = — स्वरूपतः = سروپ سے

प्रकारादिसंख्या = — दैवीय = دیوتاؤں والی

परेनुत्तरे = — मालिनी = مالنی

संयुक्त

ऊर्ध्वाधो = اوپر نیچے — विनिक्षेप = رکھ کر — भेदसरूपेषु =

धामसु = — सकेन्दु = ایک بندو — प्राग = پہلے

अन्येषु = دوسروں میں — प्रान्ते = — अनन्त्य =

ग्राम = ماترکا — स्वपृष्ठगा च — संख्या

विनिवेश्य = رکھ کر — एकैकशः क्षिपेत् = ایک ایک کر کے رکھے

क्षिपेत् = رکھے — अस्माद

अन्यै = — भवे = — संख्या =

स्पृष्टे = — वष्टैः = — पुनः =

पुनः = پھر — यथोक्तः

कुलशास्त्राणां = — विधि = قاعدہ

अनन्त्ये — वेदने = جاننے پر

तदेतेन विधिना ये कुलपुरुष कुलशक्ति योगिनो निरधिकारी भूताः इति मन्त्रमहेश्वरा तेभ्यो नैवे मन्त्रोद्धारः ॥

कुल = پُرش
शक्तिः - شکتی

296

اس طریق سے اور ٣ شکتی اکوں کو سوم
(منتر اور مہیشور ...) کو یہ دو دو ہی نہیں گئی ہے

157

तदेतेन = اس لئے اس طریق سے

विधिना = طریقہ سے

ये = جو

کل بس وہ دو کی ہیں - دو اُدھکاری نہیں ہیں

कुलपुरुष प्रक्तियोगिनो = پُرش اور شکتی کے سمبندھ رکھنے والے جو سادھک ہیں

निरधिकारीभूताः = نر اُدھکاری

وہ منتر مہیشور اس لئے ہیں کیونکہ

(سوائے خود نجات پر چلتے ہیں - ... - لہذا وہ اُپدیش نہیں کر سکتے - ...

यथोक्रमम् = ... ہے

न तु मन्त्राः: منتر مہیشور اُپدیش نہیں - وہ اُپدیش نہیں کر سکتے ہیں

ब्रह्मादि = برہما وغیرہ

स्तम्ब पर्यन्ते = تک

जातमात्र = ...

जगत्य = جگت میں

प्रलयम = ...

मन्त्रानो = منتری

कोऽस्य = کوئی

स्थितः = ...

सीधाः = ...

शिवनियोजिताः = شیو کی طرف سے ...

अनुग्रहा = ...

अनुसंधातुं = ...

याताः = ...

परमं नामयम् = ...

इति मन्त्रमहेश्वराः = اس لئے یہ ہی منتر مہیشور ہیں

न तु मन्त्राः = نہیں ہیں منتر

तेषां = کیونکہ ان کو

وہ منتر مہیشور کی طرح نہیں کر سکتے

स्वलयावसरे = اپنے ... کے وقت

ज्ञानामय पदपर्यन्त तताभावः =

तेभ्यो = ان سے

नैव = نہیں ہے

मन्त्रोद्धारः = ان سے منتر اُدھار نہیں ہوتا

तस्य = لہذا ان ...

निष्फलत्वात् = نِش پھل ہے

~~तत्र एव~~ = ...

منتر مہیشور کا گرو اُدھار کر سکتے ہیں

وہ شماوی نہیں نکل سکتے ہیں - منتر مہیشور ہیں +

(299)

delete this line.

158 [~~अभिव्यक्ति ... नादरूपा ... कलौ युगे~~]

[illegible]

इति तदेव = [illegible] परा भगवती भट्टारिका = [illegible]

पदभेदप्रशालिनी = [illegible] मध्यमया = [illegible]

मुख्यया वृत्या = [illegible] भगवन्मालिनीरूपैव = [illegible]

अनन्ता = [illegible] परिगणन = बے شمار प्रदर्शितवे = [illegible]

वैखर्या = [illegible] स्वस्वरूपाप्रीति = [illegible]

तत्रापि च = [illegible] तथैव = [illegible] स्वात्मनि = [illegible]

सर्वात्मकत्वेनाध्वत्रयाद्भकात = [illegible]

वर्णपदमन्त्रात्मकत्वम् = [illegible]

सततम् = [illegible] शोधनकरणभावेन = [illegible]

इति = [illegible] मन्तव्यम् = [illegible]

पश्यन्त्यं शोभसन्तो = faint [illegible]

हि पाशाः = [illegible] सूक्ष्मा एव = [illegible]

शोध्या = [illegible] भवन्ति = [illegible]

[illegible]

Explain [illegible]

[illegible] (299) [illegible]

157

अन्तर्लीनत्व स्व =

पाशत्वात् = [illegible] | अदितोदित = [illegible]

विज्रम्भामय = [illegible] प्रसरे तु = [illegible]

मध्यमापदे = [illegible] शोधनुकरणतव = [illegible]

अन्तर्लीन = [illegible] परमुलाप = [illegible]

प्रसरेण = [illegible] → बाह्यस्थूलमलस्येव = [illegible]

तत = [illegible] परामट्टारिका = [illegible]

संविदन्तर्गत = [illegible] तु = [illegible]

वैखरीपदे = [illegible] → विमृश्यते [illegible]

नहि = [illegible] तत्रैव = [illegible]

वैखर्या = [illegible] असंभव = [illegible]

तथाहि = [illegible] बाला = [illegible]

द्वित्रैवर्षैः = [illegible] यद्यपि = [illegible]

[illegible]

158 स्फुटीभूत स्थान करणाः = [illegible]

भवन्ति = [illegible] तथापि = [illegible] एषोः = [illegible]

मासानुमासं दिनुदिनमेव वा = [illegible]

हि = [illegible] उत्पादितारादिकाधिकरूपतामेति = [illegible]

इति तावत् स्थितम् = [illegible]

तत्र यदि = [illegible] मध्यमापदे = [illegible]

तथाविध वैखरी = [illegible]

प्रसर स्फुटी = [illegible] भविष्यत् स्थानः = [illegible]

करणविभाग वर्णांश स्फुरणं = [illegible]

न स्यात् = [illegible]

तदहर्जातस्य = [illegible] बालकस्य = [illegible]

मासजातस्य = [illegible]

संवत्सरजातस्य = [illegible]

[illegible]

159 व्युत्पत्तौ न विशेषः स्यात् = [illegible] |

मध्यमैव = [illegible] सा = [illegible]

व्युत्पत्त्या = [illegible] विशिष्यते = [illegible]

इति चेत् = [illegible] कथमिति चेदुच्यते तावत् = [illegible]

शृण्वन्नेव = [illegible] तान्शब्दान् = [illegible]

पश्यंश्चार्थान् = [illegible] व्युत्पद्यते = [illegible]

वर्णांश्च = [illegible] श्रूयमाणानेव = [illegible]

परामृशेत् = [illegible]

श्रूयन्ते च = [illegible] वैखरीमयाः = [illegible]

तेषु च = [illegible] असौ = [illegible] रूपी इव = [illegible]

जात्यन्धवत् = [illegible] | तस्मात् = [illegible]

[illegible]

136 अन्तर्मध्यमात्मिका = [illegible] स्थान = جگہ —

करणादिमयी = [illegible] अस्त्येव = [illegible]

वैखरी = [illegible] मूकेऽपि = [illegible]

एवमेव = [illegible] सर्वात्मकत्वे च = [illegible]

संविदो = شعور کی भगवत्या = [illegible]

एवोक्तम् = [illegible] एवं च = [illegible] वैखरीपदमेव =

मध्यमाधाम = [illegible] लब्ध = [illegible]

विजृम्भं = [illegible] स्वांशे = [illegible]

परस्पर = آپس वैचित्र्य प्रथात्मनि = [illegible]

स्फुटकृत्य = [illegible] यावास्ते = جب تک

तावद् पराभट्टारिका = اس وقت [illegible]

तदन्तर्वीतिं = [illegible] मध्यमापरोल्लासे =

اس وقت [illegible]

परापरा = [illegible] पश्यन्त्युल्लासे च = [illegible] स्वरूपतो = [illegible]

भगवती देवी च = [illegible] इति = [illegible]

(२९४)

[illegible] जाते = [illegible] तत्त्व जालमन्तः कृत्य [illegible]

यावदास्ते = तावद् परा भट्टारिका [illegible]

तदन्तर्वीति मध्यमापदोल्लास = [illegible]

परापरा = पश्यन्त्युल्लासे च [illegible]

स्वरूपतो ~~भगवती~~ = [illegible] → भगवती देवी च =

[illegible] इति = प्रोधकभावेन = [illegible]

स्थिति = [illegible] नैधमेवावातिष्ठत = [illegible]

→ प्रोधको = [illegible] । हि = [illegible]

विश्वात्मा = [illegible] विततरूपो = [illegible]

[illegible] वैतत्यं = [illegible] चैवमेव = [illegible]

भवतीत्युक्तम् = [illegible] प्रोधनं प्रति तु [illegible]

[illegible] कर्तृत्वे [illegible] कर्तुरेव = [illegible]

[illegible]

[illegible]

١٦٥ →

स्वस्वातन्त्र्य गृहीत = [illegible]

संकोचस्य = [illegible] प्राक्समाहि विश्रान्तस्य = [illegible]

भगवतः = [illegible] | प्रोदयता = [illegible] तु = [illegible]

संकोचैकरूपस्य = [illegible]

सप्तात्रिंशाति क्रान्त = [illegible] 37 - [illegible]

त्रिकैकरूपभैरव भट्टारक = [illegible]

प्रविभक्त = [illegible] पराभट्टारिका = [illegible]

तुल्य कार्य्ये = [illegible] परापरादेवता = [illegible]

3.۹ क्षोभात्मक = [illegible] सदाशिव ज्ञान शक्ति = [illegible]

विस्फारित = [illegible] पशुशक्तिरूप = [illegible]

पश्यन्ती धाम = [illegible]

प्रथमा = [illegible] सूत्रित = [illegible] → foundation [illegible]

भेदात्मनो = [illegible] नरात्मनः = [illegible]

[illegible]

[illegible]

१६०/ पाशजालस्य = [illegible]

इति निर्णयः = [illegible]

यथोक्तं = [illegible] श्रीसोमानन्दपादैः [illegible]

शिवदृष्टौ : [illegible]

[illegible]

अस्मद्रूप समाविष्टः स्वात्मनात्मनिवारणे /

शिवः करोतु परया नमः शक्त्या ततात्मने ॥

[illegible]

अस्मद्रूप समाविष्टः = [illegible] ([illegible]) — [illegible]

स्वात्म — [illegible] आत्म — निवारणे = [illegible]

शिवः = [illegible] नमः = [illegible]

करोतु = [illegible] परा शक्त्या = [illegible]

शक्त्या — [illegible]

तत आत्मने

तत → आत्मने → [illegible]

[illegible]

161 इति सर्वक्रियाकलापे = एवं रूपानुचके =

शिवदृष्टौ = तत्रापि च = उत्तरोत्तरं =

शोध्यशोधकानामपि = विगलनम् =

त्यज धर्ममधर्मं च उभे सत्यानृते त्यज।
उभे सत्यानृते त्यक्त्वा येन त्यजसि तत्त्यज॥

त्यज = धर्ममधर्मं = च उभे = सत्यानृते = त्यज = त्यक्त्वा
त्यज = उभे =
येन = त्यजति = तत्त्यज

इति। तदियमेतावती = धारा =

यच्छोधकमपि = शोधनमपि =
शोध्यमेव = इति श्रीषडर्धशास्त्रे सर्वोत्तमम् =

एकोत्कर्षः = तिसृणामपि =

चासौ = युगपत् = स्थितिर्भवत्येव =

वक्ति ह्यन्यत् = विकल्पयंश्च =

अन्यत् = जल्पत्यविकल्पमेव =

clear युगपत्

[illegible]

161 अभ्युपगच्छति = [illegible] अपि तु = [illegible]

[illegible] परिपूर्ण एव = [illegible] तावति = [illegible]

[illegible] भगवान् सैव एव = [illegible]

[illegible] इत्याद्य [illegible] अनुभव संप्रदाय = [illegible]

उपदेश = [illegible] परिशीलनेन = [illegible]

अस्यार्थस्य = [illegible] स्वसंविन्मयस्य = [illegible]

अनपह्नापनीयत्वात् = [illegible]

युगपत [illegible] न तत् = [illegible] युगपत् अपि तु = [illegible]

[illegible] तथा = [illegible] सौक्ष्म्यादलक्ष्यम् " [illegible]

इति = [illegible] यौगपद्याभिमानः = [illegible]

[illegible] शिरीष कुसुम पल्लव शत तव्य इति भेद इव = [illegible]

[illegible] इति चेत् = [illegible] केयं = [illegible]

'युगपत्' [illegible]

खलु = भाषा = [illegible]

युगपत् इति = [illegible]

'युगपत' [illegible]

समानकालम् = [illegible]

इति चेत = اگر یہ کہو ... प्रतमुखे = [illegible]

संविदात्मनि = [illegible] प्रोक्तनयेन = [illegible]

कः कालः = [illegible] तस्य = [illegible] कालस्य

ज्ञेयरूप = [illegible] प्राणगमागमादिमया = [illegible]

आभास = [illegible] तदभावप्राणत्वात = [illegible]

ज्ञेयोपाधिगतोऽपि = [illegible]

ज्ञानम् अवस्कन्देत = [illegible] सः = [illegible]

इति चेत = اگر یہ کہیں

ज्ञेयस्य = [illegible] स्वात्मनि = [illegible]

भासामयेऽन्यथा वा = [illegible] कोऽस्य = کون سی ہے

विशेषो = [illegible] ज्ञानमुखेन उक्तः = [illegible]

इतरेतराश्रय = [illegible] संप्लवः = [illegible]

स्वतो = [illegible] भेदात = इत्यादि = [illegible]

सर्वमुच्यमाने = [illegible]

[illegible]

162 ज्ञानमुखमेवापतेत = [illegible]

तथाच = [illegible] सत्त्व = [illegible] दोषो = [illegible]

बहुतर कुसुमपल्लवप्रातव्यातिभेदोऽपि च =
[illegible]

प्रत्येक = [illegible] इत्युच्यमाने = [illegible]

सर्वत्र सूक्ष्मः = [illegible]

परमाणवन्तो = [illegible] बयवोगात् = [illegible]

नास्ति = [illegible] कर्म = [illegible] इत्यापतेत – [illegible]

न च = [illegible] अनुसंधाने = [illegible] ज्ञानाभावेन = [illegible]

सह स्यात = [illegible] अनुसंधाया = [illegible]

स्मृतिभेदे = [illegible] तस्याश्च = [illegible]

अनुभावोपजीवित्वे = [illegible]

अनुभवाभावात्। [illegible]

[illegible]

(305)

162 वितत्य च = [illegible] विचारितं = [illegible]

मयैतत् = [illegible] पदार्थ प्रवेश निर्णय टीकायाम = [illegible]

इति किमिह = [illegible] वृथा वाग् जालेन = [illegible]

प्रकृतोपदेश विघ्नपर्यवसायिना = [illegible]

एवं भगवति श्री परा पोषक भावेन = [illegible]

स्थिता = परापरापि च = [illegible] यत्र = [illegible]

भगवतीनाम घोरादीनां = [illegible]

शक्तीनां स्थितिः = [illegible]

यद्योगात = [illegible] विज्ञानाकल = [illegible]

साधकयोगिनो = [illegible] मन्त्रमहेश्वरादि रूपे [illegible]

अघोराद्याः = [illegible] संपन्नाः = [illegible]

ब्राह्म्यादि = [illegible] शक्त्यनुग्रहेणैव = [illegible]

साधकाणवो = [illegible]

ब्रह्मविष्ण्वादयः = [illegible] परमेश्वरो = [illegible]

अर्थात सम्पन्न [illegible]

हि = [illegible] भैरवसंहारकः = [illegible]

... [illegible] (विश्वशरीरम्) ... [illegible]

163 समग्र = ... प्रतिपुञ्ज = ... परिपूर्ण = ...

भरित-तनुः - निर्भर = ... वपु = ... निजशक्ति = ...

निवेशनया = ... ब्राह्म्यादीन = ...

स्वातन्त्र्यात् = ... करोति = ...

इति किमन्यत् = ...

एवं = ... प्रबोधकस्यापि = ...

प्रबोध्यत्वमित्यन्य = ... उत्कर्षः = ...

یہ دوسرا اُتکرش ہے اس تریک شاستر میں

"कुलात्परतरं त्रिकम् ।"

اس طرح کُل شاستروں سے اُوپر تریک شاستر ہے

प्रबोध्यत्वं संपद्यते ॥

इति स्थित्या = ... ततश्च = ...

प्रबोध्य प्रबोधन प्रबोधकानां = ...

सर्वत्रैव = ... त्र्यात्मकत्वात् = ...

त्रिकस्यापायि = ... You cannot do without its coexistence. | यथोक्तं स्तोत्रे =

"...... यत्र त्रिकाणां त्रितयं समस्तं"

یہاں تریک کا تریک برابر ہے

[illegible]

164 न च [illegible] एवम् = [illegible] अनवस्था =

सर्वस्यास्य = [illegible] भगवत्परसंविदेकमयत्वात् =

[illegible]

This are extension (this Trik also) of Samvid itself? त्रिकस्य

[illegible] येन त्यजसि तत्त्यज । [illegible]

इत्येवमेव = [illegible] मन्तव्यं = [illegible] शोधनमपि =

अन्ततः = [illegible] शोधकोऽपि वा = [illegible]

भेदांशोच्छलत्तया = [illegible] connect [illegible]

पापात्मकत्वात् = [illegible] शोध्य एव = [illegible]

शोधने च = [illegible] परमार्थतः = [illegible]

सर्वमलप्रोञ्छनचतुरभैरव = [illegible]

संविदग्नौ = [illegible] हुतवह एव [illegible]

सर्वस्यानुप्रवेशे [illegible]

परिपूर्णतैव = [illegible] यद्वक्ष्यति = [illegible]

"सर्वं यो वेत्ति तत्त्वेन"

[illegible]

ॐ [illegible] अघोरे ह्रीं
घोर रूपे हुं:

(308)

ह्रीं हूं फट — [illegible]

तत् = वह परसंविदकमय = [illegible]

परापरादिदेवतानां = [illegible]

सर्वात्मकत्वात् = [illegible]

"परापराङ्गसंभूता योगिन्योऽष्टौ महाबलाः।"

[illegible]

इत्यादिवचनात् = اس سے

लौकिकप्रा[illegible] = [illegible]

वाच्यवाचकानं = [illegible] अनन्त = [illegible]

संगृहीतम् = [illegible] तत् एव = [illegible]

कृतकारिष्यमाणाद्य = [illegible]

अनन्त = [illegible] सर्वो संकेतागभीकारेणैव:
[illegible]

अय = [illegible] शोध्य शोधकभावे = [illegible]

न च = [illegible] च अनवस्था =

[illegible]

कृत —
कारिष्यमाण —
[illegible]

⊕ अनुत्तर कथं देवा... [illegible]

(309)

* ये दोनों [illegible] — یہ دو شعر یہاں آکر منطبق ہو جاتے ہیں

164

नातिप्रसङ्गो = [illegible] नातिव्याप्तिः = [illegible]

सर्कीर्तितस्यापारमार्थिकता = [illegible]

इति स्थितम् = [illegible]

एवं स्थिते = [illegible] प्रकृतमनुसरामः = Let us take up the prime subject matter

प्रकाशस्य एव = [illegible] → तदसे [illegible]

कालयोगेन = [illegible] सोमसूर्यौ [illegible]

यौ = [illegible] तौ = [illegible] तदन्त = [illegible]

प्रकीर्तिताविति = [illegible] संबन्धः = [illegible]

तच्छब्देन = [illegible] प्राक्तनश्लोकोक्तम् कुल = [illegible]

तत → तत

भैरवात्मा = [illegible] परामृश्यते = [illegible]

तेनाकुलमेव = [illegible] अन्तरगृहीत कलनात्मकं = [illegible]

कुलशक्तेरत्रैव = [illegible] निवृत्ति = [illegible]

कलनात्मिका = [illegible] हि

विमर्शशक्तिः = [illegible] तामन्तरेण कुलमपि =

[illegible]

وہاں تو ریاست اور اگر ورش نہیں ہے - اگر ورش نہیں اس حالت میں تو
نہیں - کیونکہ ورش میں تو سفلی اور [illegible] ہے

165 ⇒ तुर्यातीत = تورياتيت نام = وہ جو کچھ نہیں ہے

न किंचित = ... सौषुप्तपद विभुत्वात = تو سفلی پد کی طرح

تو سفلی پد کی طرح وہ ادراک یعنی وہ کچھ پد تو سفلی جیسا ہے

तुर्यान्तरतायाः अपि = یعنی تو سفلی پد کے بعد ... جاگرت حالت

توریا اور توریاتیت کی ایک طرح کی حالت تو سفلی ہے

समानत्वात = ایک ہی جیسا ہونے سے - وہ کچھ بھی تو ریا حالت

विमर्श प्रतिभा = وہ ورش نہیں ہے परा = برا ہے

परमेश्वरी भैरवभट्टारकस्य = پرمیشوری بھیرو بھٹارک کی

دل کی جو ورش اور پرکاش ... اور جب یہ گرمی سے ... ہے اور ورش ... پرکاش

निरतिशय = بہت زیادہ स्वातन्त्र्यात्मिका: = سواتنتریہ والی

पूर्णकृशतदुभयात्म = پورن اور کرش ان دونوں ... ہے

तदुभयरहितत्वेन = ان دونوں سے رہت ہے

प्रवर्तिष्यते = ان دو حالت سے ... [ہو گا ...]

तत्र = یہاں यद्यपि = اگرچہ न = نہ कश्चिद = کچھ

अत्र = یہاں क्रमयौगपद्योयकलङ्क: = کرم اور یوگپدیہ کا داغ

پرکاش کی ... یوگپدیہ اور کرم [illegible]

प्रोक्त = کہا گیا उपदेशनयेन = اپدیش کی ریت سے एतावत्या: = اتنی

पराभट्टारिका = پرا بھٹارکا संविदो = ... کی سموت

سموت ہے ... اتنی کی سموت

[illegible]

311

अनन्तः = [illegible] आगामि = [illegible] प्रलयोदयात्मक = [illegible]

स्वस्वभाव = [illegible] विमर्श कथनत्वादिति = [illegible]

स्वतन्त्रः परिपूर्णोऽयं भगवान्भैरवो विभुः।
तन्नास्ति यन्न विमले भासयेत्स्वात्मदर्पणे ॥

स्वतन्त्रः = [illegible] परिपूर्णो = [illegible] अयं भगवान = [illegible] विभुः = [illegible]

तत्र = [illegible] न अस्ति = [illegible] यत् न = [illegible]

विमले = [illegible] स्वात्मदर्पणे = [illegible]

इति नीत्या = [illegible] क्रमयौगपद्यासहिष्णु = [illegible]

"युगपद्" [illegible]

स्वात्मरूपमध्य एव = [illegible] यावत् = [illegible]

क्रमाक्रमावभासः = [illegible] तावत् = [illegible]

तदनुसारेणायं = [illegible] क्रमो = [illegible]

विचारणीयः = [illegible] अक्रमस्य = [illegible]

तु = [illegible] तत्पूर्वकेण = [illegible] संविद एव = [illegible]

भावात्प्रतिपादनाय = [illegible]

अपरस्तु क्रमः : [illegible]

312

161

क्रम: = پیرافرسٹ

अस्तु ~~तत्र~~ = پراٹھ ~~स्वाभावत~~

तथा च = اس طرح   सर्व एवाय = سب یہ

वाग्रूप: =   परामर्श: = پرامرش ہے

क्रमिक एव = پرامرش سرسوٹ   अंत: = اندر

संवित्मयस्त्वक्रम एव = اس لئے وہ اکرم ہے

इति = یعنی   सदैवविमेव विधैव = سدا سروپ ایسی صحیح

एवमेव = ایسی   विचित्रा = وچترا ہے

पारमेश्वरी = پرمیشوری   पराभट्टारिका = پرابھٹاریکا

ततस्तत्क्रमानुसारेण =   कथं:

एतत् = (पश्य)   इत्यादिव्यपदेश: = ایسے کہلاتا ہے

उपर → اونتر → एतत् → with endless and Aham

एवं = لہذا   परमेश्वरस्य = پرمیشور کی

स्वात्माने = سروپ میں   इच्छात्मिका = اچھا روپ

स्वतन्त्र्यशक्ति: = سوانترشکتی   अनुन्मीलित

भावविकासा =

~~तथाविध~~ =   अपन्तर्धन =

संवित्स्वभाव = سوبھاؤ سوروپ   विमर्शसारा = ومرش سار

"अहं" इति उच्यते = یعنی اہم → سموروپ

(313)

167

सा च = وہ   अवस्था नित्य = ہمیشہ   अनेन = اس

ऽपेक्षेति = اچھا   व्यपदेश्या = کہی جاتی ہے

इष्यमाणानुदेका =

तत एव = اسی لئے   एव अनुत्तर सत्ता = انوتر سا کچھ ہے

परामर्शात्मिकैव   सैषा

परमेश्वर: = پرمیشور کی   सतत =

स्वस्वरूपामर्शकोऽकुलशक्ति पदात्मिकापि =

रूपम् = اس روپ   आमृशानू =

यद्यपि =   → कुलशक्ति =   अनुयातु =

तथापि = تو بھی   कुलशक्ती रनुयातु =

تو بھی

तथापि =   कुल परामर्शतोऽस्य =

स्यादेव   विशेष:

इति भैरवशक्तिमत् =   विमर्शसत्तेयं = سپتا

[illegible]

(314)

अन्तः = [illegible]

प्राण = [illegible] स्वस्वरूप = [illegible] उन्मेष उत्तर तर = [illegible]

=

ताद्रूप्येव = [illegible] पुनः = [illegible]

प्रसरन्ती = [illegible] आनन्द प्राप्ति = [illegible]

"आ" इति प्रसृता = [illegible] "आ" [illegible]

परिपूर्ण इच्छा [illegible] इच्छाशक्ति उमा कुमारी

'इ' इति = [illegible] इच्छैव = [illegible]

भाविज्ञान प्राकट्यात्मक स्वरूपेण = [illegible]

जिघृक्षन्ती = [illegible] ईशान रूपा 'ई' इति

उन्मिषन्ती तु = [illegible] ज्ञान प्राप्तिरिष्यमाण =

[illegible]

सकलभावोन्मेषमयी = [illegible]

'उ' इति = "उ" [illegible] ⊕ उन्मिषन्तैव उ

उन्मेषोत्तरैकरूपैरपि = [illegible]

अन्तःकरण वेद्य देशप्राय = [illegible]

→ Objective Surface - [illegible]

अस्फुट प्राय = [illegible]

only traces are visible yet.

[illegible]

[Left margin:]

⊕ अन्तः = [illegible]

[illegible] 168

इ = [illegible]

ई = [illegible]

उ = [illegible] →

[illegible]

[illegible] (315)

1670

भेदांशाभासमानभावराशिभिः = [illegible]

संकोचवशेन = [illegible]

ऊनीभूताऽनुत्तर = [illegible] अनुत्तरसंवित्: [illegible]

सर्वभावगर्भीकारेण = [illegible]

प्रकाशघनवीरूप परदेवतायां = [illegible]

udder

ऊधोरूपा [illegible] ओं सकलभावराशी = [illegible] अन्तःस्थितः

सुस्फुटा = [illegible] प्रसृता = [illegible] ज्ञानशक्ति = [illegible]

ॐ इति = [illegible] ॐ [illegible]

तदेवमेतत् = [illegible] परमेश्वरस्य ऐश्वर्य = [illegible]

(इ ई) 1
(उ ऊ) 2

द्वे शक्ती = [illegible] | प्रथमा = [illegible] (इ-ई) — [illegible]

(इ ई) [illegible]
(उ ऊ) [illegible]

स्वरूप = [illegible] परिपूर्णरूपारूपत्वात् = [illegible]

→ पूर्णा = [illegible] प्राकट्यव्यतिरीकात् च = [illegible]

सद्योमया = [illegible] वर्तेत इति = [illegible]

सोमरूपो = [illegible] स्वानन्द = [illegible]

विश्रान्तिभावा = [illegible]

316

इच्छाख्या = کلنا =

महासृष्टिव्यपदेश्या = کی کلنا جس میں ہے

यल्लक्ष्यते =

तद् = सृष्टि = यजे = दिति = इति

See Page 281 Shaloka 29.

द्वितीया = तु = तत्स्वरूपभावराशि =

रचना = अनुप्रवेशादन्ता =

तद्रचनादेव = कृशा =

भावमण्डल = प्रकाशन =

प्रसारणव्यापारा

सूर्यरूपा = स्वरूपभूता =

कुलसंवित्संजिहीर्षात्मिका =

महासंहारभूता = शक्ति ज्ञानाख्या =

[illegible] विपर्यय [illegible]

169

तत्रापि च = [illegible] प्रसरत्प्रमानरूप = [illegible]

पर्यालोचनावष्टम्भात् = [illegible]

स्वात्मनि = [illegible] यथाक्रमं = [illegible]

सोमसूर्यरूपता = [illegible]

युगलके = [illegible] भावेन = [illegible] अपेक्ष्यते [illegible]

~~स्वात्मनि~~ = यथाक्रमं = scene [illegible]

सोमसूर्येर [illegible]

स्वसंविदात्मके = [illegible] भावरूपे च = [illegible] सूत्र [illegible] →

(+) रूपमपेक्ष्यते [illegible] विपर्ययोऽपि = [illegible]

सोमसूर्यात्मके = [illegible] सृष्टिसंहृतिकलनयो [illegible]

न । च = [illegible] प्रमाणवस्था [illegible] इति वाच्यम् । [illegible] direct [illegible]

ज्ञानक्रियारूपे = [illegible]

about time [illegible]

(+) [illegible] 'ऊ' [illegible]

P.T.O.

Conclude کرنا چاہا

318

170

इति वाद्यम = [illegible] उपसंहरते = [illegible]

वाद्यविभ्रम भ्रमणं = [illegible]

तावत = اسکی تحقیق کرو

अनुप्राविशत = اندر جانا

सूक्ष्मो = [illegible] विमीशपदवीम = [illegible]

हि यावद्धि = [illegible]

घटादावपि = [illegible] विज्ञाने = [illegible]

जायते = [illegible] तावदेव = [illegible]

ज्ञेयघटाद्याभा = [illegible] प्रावलीकृत

कुंवरी कृत = [illegible]

स्वयं = [illegible] प्रथ ज्ञाने = [illegible]

प्रथत एव = [illegible] प्रथमम् ज्ञाने

तत्रापि च = [illegible] तद्रूपकुंवुरीभाव = [illegible]

घटादि = [illegible] प्रथम = [illegible]

सूक्ष्मोल्लासोऽपि = [illegible] संवेद्यः = अनुभावनीयः [illegible]

एकभावोदयमस्य = [illegible]

अन्यंत = [illegible] कृतश्चिदभावस्य = [illegible]

Its base is Shah vam Samvit

*- उपचय-अपचय रहिता:

(319)

[illegible]

170

प्रथमाभत्वात = [illegible] । संविद एव =

स्वातन्त्र्यं = [illegible] भावोद्विगमिषात्मकमीप्साने = [illegible]

स्वसंवित्प्रमाण = [illegible] लब्धमेव = [illegible]

*- तदाकानुचयरूपा = [illegible]

संविद्रूपा = [illegible] परिपूर्णा = [illegible]

स्वातन्त्र्य सत्तापि = [illegible] भवति। संविद्या = [illegible]

स्वात्मन्यानन्दघना = [illegible]

भवेत्तथा = [illegible] भवति [illegible] स्वतन्त्रास्यात् ॥ ~~[illegible]~~ = [illegible]

इत्यानन्दोऽपि = [illegible] न अपद्रवनीय: = [illegible]

अनुत्तरश्च = [illegible] प्रतिमान = [illegible]

अपदेश्य = [illegible] परा = [illegible]

*- चमत्कारसारो = [illegible] भैरवभट्टारक: = [illegible]

सर्वज्ञ = [illegible] कर्तृत्वेन = [illegible]

[illegible]

(320)

اُتپھن بھی اُبھار میں اکھنڈ ابھار کا شمہ درشن ہے پھر اُتر میں اکھنڈ بنی سنگی درشن

انیثر ہے آنند میں آنند شکتی کا درشن ہے

کرم میں ہکھنڈ ابھار

انیثر مادہ امت

بھاستے سر्व = [illegible]

तत्रापि तु =

त्वन्नु = [illegible] नोनताया

उन्मेष = [illegible]

स्वरूपविमर्श =

तेषामविच्छेद

ان کو ابوشر کا اوچھید ہے — یعنی یہ ساکھم ساکھم [illegible]

विच्छेद = [illegible] विचारणेन = [illegible]

ज्ञानभूमिम = [illegible] भेदशयानानां =

ता सर्व = [illegible] भगवत्य: = [illegible]

संविच्छक्तय: = [illegible] समापतन्त्यो — [illegible]

समापतन्त्यनन्या सर्व = [illegible]

स्व संविद = [illegible]

परिपूर्णत्वेनाभेदकल्पात

وہ اپاری بھی [illegible]

सर्वसंवेद्योपाधिक्षय = [illegible] भावात:

तस्य = [illegible] देह संवेद्यमात्र [illegible] तथैव भावात

[illegible]

श्रुतमेव = श्रीतन्त्रवटधानिकासारे =

निजोत्तमाङ्गच्छायां = तत्त्वम् =

इत्युक्तम् =

"स्वपदा स्वशिरश्छायां यद्वल्लङ्घितुमीहते
पादोद्देशे शिरो न स्यात्तथेयं बैन्दवी कला ॥"

तदेवं = पद = प्रवृत्तं =

ज्ञानप्राकत्यन्तम् =

क्रियाप्राप्तिस्तु = प्रसक्ती =

विचार्यते = इच्छाज्ञाने एव =

परस्पर = स्वरूप =

सांकर्य = वैचित्र्य = चमत्कारमय =

विपर्ययरूपता से ← पूर्वापरीभूत = स्वरूप =

परिग्रहे = संरम्भसारा =

क्रिया वेगवद्बहिवैसारा

(+) रहस्यक्रमो विवेचना: क्रियाद्वि निरञ्जनाः
स्तत्रय समावेशः शिवस्वरूपकः । शिवो भैरवे उच्यते
172 उच्यते ॥

Foreign element

तत्र = [illegible] यदिदं = [illegible] अन्यत् = [illegible] व्यामिश्रित = میل کر

सांकर्य मन्यं = [illegible] नतु चमत्कार संबन्धादेति = [illegible]

तत्त्वदशा = [illegible] अपना स्वकीयस्वरूप = [illegible]

प्राय = [illegible] स्वरूपाक्रमण = [illegible]

पुरःसारीकारेण = [illegible] तथा भवति = [illegible]

प्रवाहमिव [illegible] भेद भेकादि [illegible]

तत्र = [illegible] अनुत्तरानन्दात्मकं वपु [illegible]

न व्यपसरति = [illegible]

अन्यपदे प्रारूपत्वात = [illegible]

सर्वज्ञानेषु = [illegible] सर्वाधार = [illegible]

वृत्तित्वेन = [illegible] पर्यवस्यात = [illegible]

पर्यन्तमिति रूपत्वात = [illegible]

किंतु = مگر

[illegible] न = [illegible] कम सहिष्णुत्वात = [illegible]

संरम्भ में दृष्ट्वा विश्रान्तता = [illegible]

321

जगत् रहितः

संस्मर, पाइचैव

173

स्वात्मनि = … अनुत्तरानन्दपदे च …

प्रसरणक्षमा = … ततः सैव = …

शून्यात्मक = स्वे = … स्वे = … वपु = …

प्रवगाह्यमाना = … भास्वर = … रूप = …

→ तेजोमयमिव … प्रथम = …

गाह्यते = … इति …

यत्र हि ~~अवगाते~~ = … "उ ई" = …

इत्यनुगमो = … भास्वररूप = …

र … Trace only

रेफश्रुत्यनुगमश्च = … 'र' …

कथम = … अपह्नूयताम = …

यथाह = … भगवान्पुष्पदन्तः = …

'र' "रश्रुतिसामान्याद्वा सिद्धम्" …

इति । शून्ये … जगतवन्ध … हि = … निश्चले = …

रूपे = … अनुप्रविविक्षायां … भास्वर = …

रूपया = … अनुप्रवेशात् = … पार्थिवरूप =

सतत्त्व = … निश्चलतात्मक = …

114/ लृकार = [illegible] लृ श्रुत्यनुगमे = [illegible] लृ-लॄ

इति = तथा च = [illegible] पर्यन्ते = [illegible]

अन्तरहितेन ईशानरूपतैव = [illegible]

समग्र = [illegible] भावात्मस्वरूप = [illegible]

अप्लुद्धनेन = [illegible] दीर्घतर = [illegible]

प्लुत्वा = [illegible] निश्चलां = [illegible] शान्त्यां = [illegible]

सत्तामेतीते = [illegible] प्लुतत्वमयि = [illegible]

लृवर्णस्य = [illegible] दीर्घा = [illegible] न =

सन्ति = [illegible] इति न्यायात् = [illegible]

क, कु, कू ऋवर्णादीनां तु = [illegible] दीर्घस्यैव = [illegible]

दीर्घतरता = [illegible] प्लुतत्वे = [illegible]

तत च = [illegible] प्राङ्गीत्यां = समग्रभावात्मस्वरूपोऽप्लुतः [illegible] दीर्घतरं प्लुत्वा इति नीय

दीर्घत्वमेव = [illegible] पृथक् = [illegible]

पर्येषणीयम् = [illegible] इत्यास्तां =

तावत् = [illegible]

(323)

| ऋ, ॠ, ऌ, ॡ |

१७१ एतत् च = [illegible] तुष्क = [illegible] शून्यरूपतानुप्रवेशात् =

दग्धबीजमिव = [illegible] षण्डरूपं [illegible] भण्यते =

[illegible] produce [illegible]

न तु = [illegible] सर्वथा = [illegible] बीजरूपताभावात् =

बीजयोन्यात्मक = [illegible] द्विविधप्राकट्यमय =

प्रातिरेकिण = [illegible] कस्यचिदप्य =

प्राभावात् = [illegible]

श्री पूर्वादि शास्त्रेषु च = [illegible]

प्रतिभिधानात् = [illegible] लौकिक सुखादिषु च =

एवम् = [illegible] विद्धेव = [illegible] विश्रान्तिरानन्द =

रूपता इति |

~~रूपात~~ = तत एव = [illegible]

प्रमृतबीज = [illegible] चतुष्कमित्युक्तम = [illegible]

ई और ई

तदेवमिदं ह्रस्वे च = [illegible] आनन्दवपुषि =

अनुत्तर परधामनि च = [illegible]

प्राक्

प्राक्माविनि = [illegible] स्वरूपात् प्रत्ययाविनि =

अ+इ = ए
आ+ई = ए

(324)

अ+ए = ऐ
आ+ए = ऐ

आ+इ = ए
अ+ई = ए
अ+ए = ऐ

175 अनुप्रविष्टे = 'अ आ इ ई' इति च =

न तु = विपर्यये =

अ+इ = ए

यथाक्रमं = 'अवर्णे इवर्णे ए' इति

विषय → इ ई → आ अ

~~अनुप्रविष्टे च~~ = अनुत्तरपदानुप्रवेशे =

इ ई

स्यादपि = कश्चिद्विशेषः = | य, र, व ?

आनन्दपक्षानुप्रवेशे = आ हि = स्फुरता =

अनुत्तरधामसंभेदे = तु = सूक्ष्मता =

अ+इ = ए

तदपेक्षया = तथा हि = भगवान् =

भुजगविभुरादिष्टात् =

छन्दोगानां = उग्र =

पानीया = अर्धं इकार = इ 1/2 अर्ध = उ 1/2 अर्धयिते
उकार

लोकेऽपि = प्राकृतदेशभाषादौ

सभा: सन्निवेश:

स्फुट एव = प्रचुर = निवेशः =

-x- विजाती
और सजाती

अ + इ = ए
आ + ई = ए
अ + ए = ऐ
आ + ए = ऐ

325

175 पारमेश्वरेष्वपि = ... एकारौकारयोर = ए, ओ "ए" ओ

एकारौकारापेक्षया = ए, औ

यत = ओ. ह्रस्वत्वम् इव वक्त्रादि

विनियोगे दृश्यते =

तदेवमेव = ... मन्तव्यम् =

अथ एकार, = ए ... अथ. एव =

ओकाराभिप्रायेणैव = ओ

"ए ओ" इति बीजे स्थितम् =

एतदपि = ... तथा = ... प्रबलीभूत =

ए → ए और ओ

संविद्वपुः = ... तथैव च = ... तदैव =

अ, आ + ए = ऐ
अ, आ + उ = औ

रूपमेव वसत = ... "अ आ ए" इति

ऐ एवमुन्मेषेऽपि = ... वाच्यम् =

अ, आ, उ

अ आ उ ऊ इति = ओ =

अ आ ओ इति औ =

केवलमुन्मेषो = उ. अ ...

अ + आ + इ = ए
आ + ए = ऐ
अ + आ + उ = ओ
अ, आ + ओ = औ

ज्ञान प्रक्रियात्मा = [illegible] प्रसरद् = [illegible]

यद्यपि = [illegible] शून्यता वगाहने = [illegible]

कथित = [illegible] तथापि = [illegible]

अस्य प्रान चक्षुत्मको भयरूप एव प्राइत्व = [illegible]

ज्ञानस्य

शून्यता = [illegible] इच्छा ध्यानुयोस्तु = [illegible]

स्वपारवृत्तिरूप = [illegible] न प्रास्ति = [illegible]

इत्युक्तनयेनैव = [illegible] स्थिति = [illegible]

स्वामिच्छाज्ञान = [illegible] अनुत्तर स्वरूप = [illegible]

अनुप्रवेशन = [illegible] प्राप्तापचय = [illegible]

पश्चात = [illegible] परित्यज्य = [illegible]

तथाविधापादि = [illegible] परिस्पन्द [illegible]

सत्ताम = [illegible] भेद सत्ता = [illegible]

प्ररोहण =   चिन्मय पुरुषतत्त्वे =

सतत्त्ववेदन =   वेदनारूप =

बिन्दुमात्र =   प्रवेशेण वपुषा =

तथानुत्तरपदलीने =

'प्रमिति' = अ "म" ह | तथाहि =

औकार एव =   क्रिया शक्ति =

परिस्पन्द: =   परिसमाप्यते इति =

इच्छाज्ञानप्रसार =   प्रत्रैव अन्तरभावात् =

त्रिशूलरूपत्वमस्य =   षडर्धशास्त्रे =

निरूपितम् =

त्रिशूल

इत्य =   प्रश्न   अथ बिन्दु: =

पुनर्वेदनामात्रशेषतैव =

→ अविभाग वेदना.

176/177 सर्वस्य = کا   वेदनामात्राविप्रोक्षमपि =

विश्वं =   यदा = جب   स्वात्मन्येकगमनाय =

स्वस्मिन्

विसृजति = → स्वात्मनश्च =

सकाशात् = سے   तत् निर्माणेन = اس کی بنانے سے

विसृजति = → स्वस्मात्   स एव परमेश्वरः =

प्रथमं =   प्रतिबिम्बरूपप्रधानतया =

इदानीं तु = اب   तु =   प्राकृतविसर्गप्रधानतया =

"तु" इति =   पौकरपर्यन्ते हि =

निर्भरीभूते =   क्रियाप्राप्तिप्रसरे

एतावति

~~एतावद~~   अनुप्रविष्टम =   अनुप्रविष्टानुत्तरपदस्य ...

*अनुत्तरपदस्य =   भैरवभट्टारकस्य =

स्वरूपसत्तत्त्वस्य =

177 इच्छा-ज्ञान-क्रियात्मक शक्ति = اچھا۔ گیان۔ کریا روپ شکتی

परिस्पन्दादि = आदि मध्यान्त भागाः =

उल्लसिता = उल्लसन्तो

उल्लसितता स्वभावाः =

सूक्ष्मतम = प्रसंख्यान गृहीत =

तावत् = भूमिका = अधिरूढक्षे

योगिजन = स्फुटलक्षणीयाः

श्रीस्वच्छन्दादि प्रक्रियाशास्त्रेषु =

प्रबुद्ध प्रसरणावरणादिरूपत्वेन उक्ताः

एतस्व = शिवदृष्टिशास्त्रे

सप्तमाह्निके

आगा उक्ता ॥

सुनिर्भरत = अह्लाद = भरित = आकार स्तुवानि

विलीन = शक्तित्रितये =

परात्मत्त्व = अनुभाव = ज्ञात

[illegible]

विश्रान्त यस्य स (320)

शिव = ।

178

इत्यादि = [illegible]

तस्यापि = [illegible] शक्ति = [illegible] मृत्पिण्ड = [illegible]

शिवस्य शक्ति

धरादि = [illegible] विश्वरूपताम् = [illegible]

उत्पन्ने विश्वरूपे = [illegible]

एकमेव = [illegible] तत्तत्व = [illegible] संख्यात

हि

अतिरिक्त = [illegible]

यस्मात् इति यदि स्वतत्त्वमेव = [illegible]

अनन्त विचित्र स्वतन्त्रय = [illegible]

स्फार = स्फुरण = [illegible] प्रतिक्रिया चमत्कार = [illegible]

भरित = [illegible] उपोत्तम = [illegible] भैरवभाव = [illegible]

विनीतम् = [illegible] तत्त्वायमेव = [illegible] उक्तक्रम:

संप्रदाय = [illegible] प्रथमाह्निकेऽपि = [illegible]

स = [illegible] यद = [illegible] स्पर्श = [illegible] चित आह्लादमात्र

अनुभवत् [illegible] लय: = [illegible]

यत् इच्छा = [illegible] तावती = [illegible] तावत् ज्ञानं = [illegible]

तावत् क्रिया [illegible] हि सा = [illegible]

321

179

त्रितय समारस्येन वर्तते

सुसूक्ष्म

चिद्रूपाह्लाद परमो निर्विभाग:

पर: सदा

तथा घटम् =

घटादि = ग्राहकाले घट जानाति

सक्रिया = جانتی ہے जानाति ज्ञानमेव

निरिच्छस्य वेदनक्षति:

ओत्सुक्य प्रभावत:

तस्य निवृत्ति निवृति विना =

द्वेष्ये प्रवर्तते

नैव

न च वेत्ति विना चितिम

यत = इच्छति तत् ज्ञातु कर्तु

पुराक्रिया सेच्छाया क्रिया तस्या

पूर्वापरौ कल्पनीयौ

तत् भागौ =

(322)

तत्कर्म निवृत्ति = [illegible] प्राप्ति = [illegible] उन्मुखत्वे = [illegible]

तद्विकासिता = [illegible] न च उन्मुखत्वे [illegible] प्रसङ्गेन [illegible] शिव = [illegible]

180/181 अपरभाग → [illegible]

स्थूलत्व [illegible] भाक कश्चित = [illegible]

इत्यादि = [illegible] सतदा [illegible] सर्वस्वप्राणतयैव =

युक्तियुक्ततया = [illegible] हृदयंगमीकृत = [illegible]

स एष = [illegible] परमेश्वरो = [illegible]

विसृजति = [illegible] विश्वं = [illegible] ततश्च = [illegible]

धरादि = [illegible] प्राकट्यन्ते = [illegible]

कादि-क्षान्तरूपम् = [illegible] इति एतावती = [illegible]

विसर्ग प्राप्ति = [illegible] षोडषी कला [illegible]

इति गीयते = [illegible]

पुरुषे = [illegible] षोडश कले = [illegible] ताम् आहु [illegible] अमृतां कलाम् = [illegible]

इति एषा [illegible] = [illegible] हि = न = सांख्ययो [illegible]

नापि = [illegible] वैदान्तिकी = [illegible] हक [illegible]

अपि तु = [illegible] प्रौढ्येव = [illegible] विसर्गप्राप्तिरेव =

[illegible] च

पारमेश्वरी = [illegible] परमानन्दभूमिकाजम् =

[illegible]

(323)

182

सर्वे हि = [illegible] अकारादिरूपं →

धनतापस्था = [illegible] योनिरूपतां = [illegible]

गृहीत्वा = [illegible] स्वरूपात् प्रच्युतं = [illegible] तदेव = [illegible]

प्राप्तरूपताम्

स्वस्वरूप एव = [illegible] योनिरूपे [illegible]

संक्रामद्विसर्गपदमित्युच्यते = [illegible]

यथोक्तम् - [illegible]

स = [illegible] विसर्गः [illegible] महादेवि [illegible] यत्र [illegible] विश्रान्ति

गुरुवक्त्रे = [illegible] तदेव उक्तं = [illegible] शक्तिचक्रे = [illegible] तदुच्यते

इत्यादि = [illegible] अकारस्यैव = [illegible] धनता = [illegible] कवर्गः = क...

धनता [illegible]

- कण्ठ्यत्वात = [illegible] इकारस्य [illegible] 'चवर्गः' - तालव्यत्वात = [illegible]

उकारस्य 'पवर्गः' — ओष्ठ्यत्वात = [illegible]

ऋकारस्य 'ट' वर्गो - मूर्धन्यत्वात = [illegible]

"लृकारस्य तवर्गो" — दन्त्यत्वात = [illegible]

"यशौ" [illegible] चवर्गस्यान्तः =

"रषौ" [illegible] टवर्गस्य = र "लसौ" ल [illegible]

तवर्गस्य = [illegible] त वकारोऽपि = व [illegible]

तपवर्गयो = त, प, व [illegible] धनता = [illegible]

अनोधस्यामूर्तस्यापि = [illegible]

324

183

शिवभाव प्रसंग प्रथा में यदु फूल [illegible] शिवभाव [illegible] बीज [illegible]

चिन्मात्रस्यापि = [illegible] क्रियाशक्तिरूपतेव = [illegible]

साच = [illegible] उक्तनीत्या = [illegible]

ज्ञप्तिपदक्रमेणैव = [illegible] उपजायते = [illegible]

तेन = [illegible] पञ्च = 5 प्रसृताः = [illegible] 5

षड्गुणिता = [illegible] त्रिंशत् = 30

षाड्म = [illegible] सह = [illegible] षट्त्रिंशत = 36

भवन्ते = [illegible] इति = [illegible] तदेव = [illegible]

शिवबीजमेव = [illegible] स्वातन्त्र्यात = [illegible]

तद्युत = [illegible] योनिरित्य = [illegible] भिधीयते =

तदेव हि = [illegible] पुष्पं = [illegible] पूर्वोक्तनयेन = [illegible]

ग्राह्यग्रहणग्राहक = [illegible] कोणत्रयमये = [illegible]

वस्तुतः = [illegible] प्रसाति पश्चात = [illegible]

बीज संमिश्रतयैव — [illegible] — प्रसाति पद [illegible]

यस्य अन्यदा तु = [illegible] योग्यतयैव = [illegible]

यदि प्रथा है [illegible]

शिवभाव [illegible] प्रथा में [illegible] फूल [illegible]

तदेव पुष्पं पश्चात [illegible]

पुष्पयोनि तथा व्यपदेशा : । (325)

[illegible]

184

तथाव्यपदेश: = [illegible] ~~तत्र~~ च तत् = [illegible]

कुसुममेव = [illegible] त्रिकोणतया = [illegible]

योनिरूपं = [illegible] तत्स्फुटीभूत = [illegible]

विभक्त = [illegible] ग्राह्यादिरूप = [illegible]

सोमसूर्याग्निसृष्टिस्थितिसंहृति = [illegible]

इडापिङ्गलासुषुम्नाधर्माधर्म = [illegible]

प्रावलादि = [illegible] कोणत्रयतया = [illegible]

पारमीश्वरी भैरवी महारिका मुद्रा = [illegible]

तद्रूपयोन्याधारतया = [illegible]

योनिरिति = [illegible] निर्दिष्टा = [illegible]

तथा च = [illegible] श्रीकुब्जिकामते = [illegible]

खण्डचक्रविचारे = [illegible] Ring Chapter

प्रमुमेवार्थ = [illegible] प्रधानतयाधिकृत्यादिष्टम् = [illegible]

तयोपरि = [illegible] महामाया = [illegible] त्रिकोणानन्दरूपिणी = [illegible]

इत्यादि = [illegible] एतएव = [illegible] तथाविधि: [illegible]

बीज कुसुम = [illegible] एकघनभाव = [illegible]

समापत्ति →

(326) क, ख, ग, घ, ङ ... कवर्ग ... ४ का. ३

१८५

शिवशक्तिसंघट्टः = ... स्वयं स्वात्मनैव =

पूज्य = ... इत्युपदिष्टम् =

श्रीत्रिकतन्त्रसारे =

शिवशक्ति ... समापत्त्या = ... शिवशक्ति घस्मात्मक

शिवशक्तिसमा- ... परम् =

पत्ति त्रिके

इति = ... एवं च = ... ध्वनीभावोऽपि = अ कार आदि का ध्वनीभाव

वैखरीरूपे = ... यद्यपि = ... स्फुटीभवति =

तथापि = ... सर्वसर्वात्मनि =

परावाग्वपुषि = ... मुख्यतया =

प्रवर्तते = ... तत्र = ... परे =

कण्ठोष्ठस्थान करणान्यपि =

सर्वसर्वात्मकमेव =

इति विशेषः = ... तथाहि =

अन्तरपि ... संजल्पत =

पश्येदिति = ... → स्फुट एव प्रत्नुभवः =

अत एव = اس لئے — स्थानादिकृत एव = جگہ وغیرہ کا کیا ہوا

श्रुत्येकप्राणत्वात् = سننے میں ایک ہی جان ہونے کی وجہ سے — वर्णानां = حرفوں کا

किं = کیا — बहुना = بہت — बालोऽपि = بچہ بھی

व्युत्पाद्यमानस्तु = جب اسکو سکھایا ہوتا ہے — اندر

तथा रूपतया = ویسے روپ سے — विमृशति = وچار کرتا ہے

भावजात = سب چیزیں — اور پھر یہ گیان اور شکتی کا بھی وچار کرتا ہے

विपर्ययेण = الٹا — संशयेनापि वा = یا شک والے بھاؤ سے

मिर विमृशत्य = وچار کرکے

तावत्संवेद्यत एव = تب تک جانا جاتا ہے

स च = اور وہ — वाग्विमर्शीकृत एव =

अत एव = اس کارن سے — सर्वाराव वरलय =

प्राण = — महाप्राणता =

श्वास नाद = — अनुप्रदानादियोगोऽपि च =

अन्तस्तथा =

समुचितस्वभावः = — स्यादेव =

अन्यथा = — स्वस्थानेषु = اپنی اپنی جگہ

भेदायोगात् = بھید نہ ہونے سے

अन्तर्लीनतकरण प्राप्त्योऽपि = یہ سب شکتیاں اندر میں لپیٹ ہو جاتی

भैरवे ! स्युस्ते =

327

184
185

संजल स्पृतया

مثال → (328)

श्रृणोम्यश्रोषं = [illegible] पश्यामि यदाक्षं = [illegible]

संकल्पयामि = [illegible] समकल्पयामित्यादेरपि = [illegible]

186/187

संकल्पस्यान्यथा = [illegible] वैचित्र्यायोगात = [illegible]

"संकल्पयामि" [illegible]

तदनया = [illegible] युक्त्या = निभालितं = [illegible]

यान्तर = اندر अधिकमधिकम् = [illegible]

अनुप्रविश्य = परिशीलयतो = [illegible]

संविदे = [illegible] यत्र = [illegible] सर्वसर्वात्मक = [illegible]

बोधैकघन = [illegible] कर्णौ बुद्धि ध्वान्ति = [illegible]

तथाविध = [illegible] बोधैकघन = [illegible]

विमर्शात्मक = [illegible] स्वात्मसार = [illegible]

महामन्त्ररूप [illegible] वर्णभट्टारक = [illegible] निवेश

बोधैकघनता = [illegible] तस्मिन् [illegible] निर्विशेषतायाम्

इदं स्थानम् = [illegible] | इदं कारणम् = [illegible]

अयं वर्ण = [illegible] इति = [illegible] कारणं = [illegible] विभागः = [illegible]

इति चेत = [illegible] यदेवं = [illegible] स्वातन्त्र्ये = [illegible]

तथाविधे = [illegible] स्वात्मनि [illegible] घटोऽयं = [illegible]

सुखमिदं = [illegible] ज्ञानमिदं = [illegible]

(329)

187
188

सात्मकम् = [illegible] इत्यवभासयति =

तस्यैवंविध = [illegible] चित्रतररूपावभासेन =

कोवा = [illegible] कियान = [illegible] वा प्रयासः =

एतएव = [illegible] सर्वे = [illegible] पाषाणतरु

तिर्यङ्मनुजदेव = [illegible] रुद्रकेवलिमन्त्र =

तदीयातन्मन्त्रप्रादिका = [illegible] एकैव =

source

पराभट्टारिका भूमिः = [illegible] सर्वसर्वात्मनैव =

परमेश्वररूपेणास्ते इति =

तद् = तस्मात्

तद्विचित्रस्थानादि = [illegible] सार्वात्म्य =

विविधेषु = [illegible] स्फुटास्फुट =

व्यक्ताव्यक्तादि = [illegible] रूप-शब्दशरीरा =

मन्द्रवीर्यम् [illegible] इति गीयते =

तथाहि = [illegible] वीणा = [illegible] विपञ्चीकच्छपिकाम

musical instruments

[illegible]रुकादिषु = [illegible] स एव =

स स्वनोऽन्यतोऽन्यतो =

स्थानात्
space

देशादप्युद्भवन्नेकस्थान =

इति = कथ्यते = [illegible] एवं =

तारमध्यमन्द्रेष्वपि =

तत्स्थायिस्वरैकात्म्येऽपि = [illegible] वाद्यम् =

(330)

189 अत एव च = [illegible] स एव वर्णः = [illegible]

क्वचित्प्राणिनि = [illegible] स्थानान्तर = [illegible]

समुल्लासस्यापि = [illegible] भवति = [illegible]

यथा = [illegible] द्वांद्वोषु = [illegible] ककार टकार रेफाः

'र' 'ट' 'क'

उच्चरन्तः = [illegible] सर्वे एव = [illegible]

उदर-पायु-कण्ठ-तालु = [illegible]

निर्वत्यो = [illegible] उपलभ्यन्ते = [illegible]

अव्यक्तत्वेऽपि = [illegible] तएव = [illegible]

तावन्तः = [illegible] प्राकृतत्वात = [illegible]

प्राकृतस्य च = [illegible] मातृकातिरेकिणोऽभावात =

[illegible]

मातृकातिरेकयापि = [illegible] अव्यक्ता = [illegible]

प्राकृतोऽनुपयोगान्न = [illegible] संगृहीतञ्च =

इत्यप्युक्तम् = [illegible] अव्यक्तवर्णरूपस्यापि =

[illegible]

मौरजसामुद्रादिध्वनितस्य = [illegible]

इति परितापकारित्वमपि =

अत्यैव =

189
190. इति ... कोऽन्योऽभिमत उपयोगः =

परमेश्वरेऽपि = अन्यत्तद्ध्वने मुख्यतयैव =

प्रायशो = मन्त्रत्वे =

निरूपितम् =

अर्धचन्द्रादीनामेव =

मन्त्रव्याप्तिसारत्वेन =

अभिधानात् = | तत्र च =

निरोधिनीम = अनुप्राप्तः = शब्दः धुमधुम आयाति

इत्याद्युक्तम = घण्टाकांस्यादिध्वनीनां =

श्रोत्रघट्टनादीनां च = नादोपदेशे =

निरूपणात् =

यदा = ह्रेषाति = यत्वत च = वामन्त =

उद्रवतीव च सिंहो गर्जति = यद्वत च

उष्ट्रः = सीत्कुरुते = यथा =

उदीये पशोः = प्राणान

आकर्षन्ति बलाधिकाः = महामन्त्र =

प्रयोगः

Real mantra pervades in avekh kallas which are above.

(332)

इत्युक्तं = [illegible] गुह्ययोगिनीतन्त्रे = [illegible]

तन्त्र = ०६, उपायमात्रमेतत = [illegible]

१९७ वस्तुतस्तु = [illegible] आन्तर [illegible] एव असौ =

नादात्मा = [illegible] मन्त्र" [illegible] इति तु = [illegible]

कथ्यमाने = [illegible] भवद्भिरपि = [illegible] अस्माभिरपि:

[illegible]

व्यक्तवर्णमालादिमन्त्रवदि = [illegible]

न च = [illegible] संचारयितुं = [illegible]

पार्यते = [illegible] तस्मात = اس لئے [illegible] अव्यक्तो = [illegible]

वर्णात्मैव = [illegible] प्राणैः = [illegible]

यथा = [illegible] विदूरगतोऽपि = [illegible] घटो घटस्य:

[illegible]

इति स्थितम् = स: च = لہذا وہ بھی یہ اونگھت شبد

प्राणभेद्यादिभेदेन = [illegible]

स्थानान्तरमपि = [illegible] अनुसरन = [illegible]

स = [illegible] एवेत्यपि = [illegible] स्थितम =

अत एव = [illegible] इदानीं = [illegible] وہ اونگھت شبد [illegible]

"सर्वभूतरुतज्ञानं" = [illegible]

येच्छेवमुनिना (ماشی) = [illegible] ३.

रुत ज्ञान

383

191

भगवतोपदिष्टं = [illegible] तत् = हृदयंगमीभूतम् = [illegible]

अन्यथा = [illegible] शब्दार्थप्रत्ययानां = [illegible]

य = [illegible] इतरेतर = [illegible] अध्यासो = [illegible]

यत्र च = [illegible] ध्यान-धारणा = [illegible] समाधिसंयमेन = [illegible]

तत्प्रविभाग = [illegible] पर्यन्त परलाभः = [illegible]

स = [illegible] कथम् = [illegible] अस्फुटवर्णरूपत्वे = [illegible]

प्रतिरोकि = [illegible] विहगादि कूजित ज्ञानाय = [illegible]

पर्यवस्येत = [illegible] यदा तु = [illegible] त एव वर्णा =

वर्णमेव = [illegible] परमार्थतो = [illegible]

अर्थ तादात्म्य लक्षण = [illegible]

वाचकत्वे = [illegible] तदा = [illegible] युक्त्या = [illegible]

त एव = [illegible] विहगादिरुत ज्ञाने = [illegible]

मैत्र्यादिशब्दा अपि = [illegible] हि = [illegible]

अर्थवन्त एव = [illegible]

→ जय, जय सूचकतयोपदेशात [illegible]

विहगादिरुतवत = [illegible]

तदभिप्रायेणैव = [illegible] शिक्षासूत्रकार सूत्राणि = [illegible]

हविसर्जनीयावुरस्यावेकेषां = [illegible]

रदनमूलमेकेषाम् = [illegible]

इत्यादीनि = ________ वाचकी भवन्ति = ________

तु = ________ अपरथा = ________ कथं = ________

द्विरादि = ________ अपत एव = ________ किंचिदुच्चिन्त्यमालम्ब्य

अस्याम् = ________

192

अन्यत्वे च = ________ अपप्राडु मानि =

(विसर्जनीयो, जिह्वा = ________

अनुसर विसर्जनी यौ जिह्वा मूलीयु पध्मानीयौ पश्चेयमानीयौ लघुप्रयत्नतरात्

मूलीयौ पध्मानीयौ = ________

अनुनासिके भ्य : = ँ ँ

पश्चेयमानं = ________ डकार - ढकार - यरलवशा -

पञ्च च यमान्

तानव = ________) लघुप्रयत्नतरात् - ________

भेदेनाभिमन्य = ________

अ इ उ ऋ
×3 = 12

लृ
×2 = 2

ए ऐ ओ औ
×2 = 8

5 ________
5×5 = 25

यरलव = 4
5 यम् = 5
64

चतुष्षष्टिवर्णा = ________ 64 उक्ताः

अन्यत्वे च = ________ अत्र = ________ स्वर-व्यञ्जनयोरिव

स्वरवर्णे = ________ र स्वरवर्णे =

(335) श्री [illegible] कुलेऽपि [illegible] = [illegible]

[illegible] ८×८=६४ = [illegible] मातृका = [illegible] ता = [illegible] तदेव काल = [illegible]

[illegible] = [illegible] ज्ञात्

193

इति = [illegible] मातृकाज्ञानभेदे = [illegible] विस्तरतो = [illegible]

निरूपितमेतत = [illegible] इदन्तु = [illegible]

तत्प्रक्रियाविभिनिवेशः = [illegible]

पूर्णतैकसारत्वात = [illegible] तदेव = [illegible]

सर्वत्रायमीदृशः = [illegible] संविदनुप्रवेशक्रमः = [illegible]

पदार्थ = [illegible] संकल्पमानः = [illegible]

साक्षात् = [illegible] क्रियमाणो वा = [illegible] वा

मायीयां = [illegible] संकेतसांकेतिस्वरूपमेत = [illegible]

शुद्धविमर्शात्मा = [illegible] परवाङ्नाम्ना = [illegible]

महामहसि = [illegible] तावत = [illegible]

प्रतिष्ठां = [illegible] भजते = [illegible]

यत्र [illegible] संविवादिभिर्विकल्पा = [illegible]

दशा गीयते = [illegible] तत्र = [illegible]

परमन्त्रे = [illegible] महापृथिव्यादौ = [illegible]

शुद्धयामिश्रादि = [illegible] पारमार्थिक = [illegible]

बीजपिण्डरूपकादि = [illegible] वर्णात्मकमेव = [illegible]

(336)

अन्यथा = [illegible] मरुबद्ध रजत [illegible] ज्वलन भावाभाव = [illegible]

घट सुख नि । विकल्प = [illegible] ज्ञानानि = [illegible]

193/194

इत्येकमेव = [illegible] सर्वं स्यात् = [illegible]

विकल्पोऽपि = [illegible] तत्प्रमादोत्थः = [illegible]

तामेव = [illegible] सरणिमनुसरेत = [illegible]

न तु = [illegible] प्रत्युत = بلکہ तत्स्वरूपे = [illegible]

भिन्द्यात् = [illegible] तथा च = [illegible] यदेव = [illegible]

तद् सांकेतिकं = [illegible] मन्त्रवपुः = [illegible]

तदेव = [illegible] अन्योन्यविचित्ररूपे = [illegible]

पश्यदि = [illegible] सर्वज्ञैः = [illegible]

संकेतोपायमुपास्य तयो = [illegible]

उपादिश्यते = [illegible] तत्रैव च = [illegible]

असांकेतिके = [illegible] वाङ्मासि = [illegible]

तथा = [illegible] खलु = [illegible] मायीया = [illegible]

संकेताः = [illegible] पतन्ति = [illegible]

मायीया संकेताः एव

यतः = [illegible]
सदा = [illegible] ते = [illegible] एव = अमायीया

असंकेतित = [illegible] मन्त्रतादात्मये = [illegible]

[illegible]

(337) प्रतिपद्यन्ते = پہنچتے ہیں۔ तथा = ویسا ہی स्वरूपप्रतिपत्तिरेव हि = [illegible]

→ तेषां = ان کی वाचकताभानो = [illegible]

195/196

नान्यः = [illegible] कश्चित् = अत्र = یہاں

स्फुटमभिज्ञानमभ्यासवशात् = [illegible]

असांकेतिकतामापन्नः = [illegible]

चिरतर पूर्ववृत्तगोशब्द परामर्शः = [illegible]

तथैव = ویسا ہی संकेतकाले = [illegible]

गोपरामर्शोऽपि = [illegible] अन्यामायीया = [illegible]

सांकेतिक = [illegible] परामर्श धामन्येव = [illegible]

निपतति = [illegible] यावत् = [illegible] बालस्यापि = [illegible]

जन्मान्तरानुसरणेऽपि = [illegible]

चित्स्वभावस्यादौ = [illegible]

स्थितैवासांकेतिकी सत्ता = [illegible]

अन्यथानवस्थानात् = [illegible] एवमेव खलु = [illegible]

संकेतग्रहणोपपत्तिः = [illegible]

नान्यथा = [illegible] इतीश्वरप्रत्यभिज्ञाटीकायामपि = [illegible]

श्रीमदुत्पलदेवपादैर्निर्णीतम् = [illegible]

195 अपि त्र च = [illegible] अनुप्रवेशयुक्ति = [illegible]

पश्यन्त्य अन्यत् = [illegible] शृणोत्य अन्यत् [illegible] करोत्य अन्यत् = [illegible]

जल्पति अन्यत् [illegible] चिन्तयत्य अन्यत् [illegible] भुङ्क्ते [illegible] तत्र = [illegible] सांकेतिकी स्थिति

इति भट्टारकश्रीश्रीकण्ठपादा = [illegible]

मनो ऽपि = [illegible] निक्षिपे = [illegible] चक्षु अन्यत्र = [illegible] पातितम् = [illegible]

इत्याद्यप्युवाचन = [illegible] तदप्यसंकेतिकमन्त्रवपु: = [illegible]

स्वबीजमुखावदनुत्तरपद = [illegible]

पर्यवसायि भवति = [illegible] तदप्यनुत्तरपदे = [illegible]

सत्तथाविधानन्त = [illegible] समुदायवैचित्र्य = [illegible]

संरम्भसार = [illegible]

भवति = [illegible]

विसर्गहृदया = [illegible] प्रसरदेव = [illegible] विसर्गस्यैव = [illegible]

हकलापर्यन्ततया = [illegible] प्रसरति = [illegible] तस्यापि =

अपि = [illegible] हकाराख्य = [illegible] ह शक्तिकुण्डलिन्या = [illegible]

स्वरूपाभेदात्मक = [illegible] बिन्दुस्वरूपधारणा = [illegible]

अनुत्तरपद एव = [illegible] संक्रमात = [illegible]

स्वरूप एव = [illegible] विश्रामयति = [illegible]

(329)

एकाक्षर संवित् = [illegible] किल = [illegible] स्वरूप एव = [illegible]

विश्वमयात्मे = देशकाल [illegible] एकाक्षर कलनोपादानात् = [illegible]

195/196 नैरपेक्ष्ये नैव = [illegible] प्रागुत्तापूर्णात् स्वतंत्रयत्न = [illegible]

संगीति = [illegible] विसर्गभूमौ धावति = [illegible]

विसर्गभूमिक्षोभ एव = [illegible]

आनन्द इच्छा ईशन उन्मेष = [illegible]

अ, इ, ई, उ, ऊ

तत = [illegible] प्रसृति तत = [illegible] वैचित्र्य क्रियाशक्तिमया

ऋ ॠ ऌ ॡ

अकारादीनां = [illegible] स्थिति = [illegible]

स एव विसर्गः = [illegible] स्वसन्तान = [illegible]

अन्तरीयक = [illegible] तयैव = [illegible] तथैव =

प्रतिभरितया = [illegible] सत्तया = [illegible]

प्रसरन् = [illegible] झगित्येव = [illegible]

एकलामयः = [illegible] संपद्यते = [illegible]

एकाग्रमयता = [illegible] संपत्तिरेव = [illegible]

वस्तुतः = [illegible] कादिसन्तानन्ततत्त्वजाल = [illegible]

स्थिति = [illegible] एकैकेव च = [illegible] पुनरपि = [illegible]

बिन्दावनुप्रविश्यात्यनुत्तरपद एव = [illegible]

पर्यवस्यति = [illegible] इत्यके वाङ्मयपरिपूर्ण रूप = [illegible]

(340)

संवेदन = [illegible] सत्ता = [illegible] भट्टारिकेयं = [illegible]

196

197 परा भगवती = [illegible] परमेश्वरी = [illegible]

न त्वं = [illegible] अन्न = [illegible] क्रमादियोगः = [illegible]

कश्चित = [illegible] तदेतदुच्यते = [illegible]

"प्रहमिति" = [illegible] विपर्यये तु = [illegible] → संहृतौ = [illegible]

'अहमूं' इति = [illegible] द्वैधमपि च = [illegible]

इयमेकैव = [illegible] वस्तुतः = [illegible] संवित = [illegible]

एवम एष = [illegible] स सविन्न = [illegible] घट सुखादि = [illegible]

प्रकाशोऽपि = [illegible] स्वात्म विश्रान्ति = [illegible]

सर्वस्वभूतो ऽहंभावः = [illegible] यथोक्तं = [illegible]

[illegible] — That is the Treasure Source.

स च वस्तुतः = [illegible] सर्वात्मकः = [illegible]

समनन्तर = [illegible] निर्णीतनीत्या = [illegible]

इति = [illegible] पराभट्टारिकानुविद्धो = [illegible]

प्रकाशस्य = [illegible] आत्मविश्रान्ति = [illegible]

[illegible] परमेश्वरः - [illegible]

(341) भैरवात्मक एव — यथोक्तं मयैव स्तोत्रे =

198
199 विश्वात्र = भाव पदले = परिजृम्भमाण =

विच्छेदशून्य = परमार्थे = चमत्कृतिर्य = तां =

पूर्णवृत्ति — अहं इति = प्रथन स्वभावां = प्रणामकिरणे

स्वात्मस्थितिं = स्वरसतः = देवीम्

एष एव श्रीवामनविरचिते =

अद्वयसंपत्तिवार्तिके = उपदेशनयो =

बोद्धव्यः = तेन = स्थितम = सतत =

प्रकार एव = संवाद्यो = यत्रापि =

हविघ्ननीलादौ = हकारोद्या अपि =

वर्णाः = तत्रापि = तथाविधानन्त =

निजपूर्वापर = वर्ण समाक्षेप एव =

परथा = तस्यैव = ह्रादे =

समुदाययोगान्ते = परमाक्षिप्यमाणत्वाद =

एव = अन्तरनिलीना =

विकल्पगोचरत्वम प्राप्ताः =

अत एव = सर्वत्र = विज्ञाने =

सर्व एव = देवता = सममेव =

समुदायं = दधत्यग्रितां =

संविभ्रीत्ति = वर्तयन्ति =

नील, हर्ष-पट-घट

तदनन्तरैव प्रायेन =

(342) कालाधिकारादाविकस्मिन्नेव =

प्राणे = प्राणषोडशांशोऽपि वा =

षष्टितद्गुणाद्यशोदय पूर्वके = 120 - 60

मातृरुद्रलोकपालग्रहनागादीनाम =

199

उदय प्रलयाश्चित्रा = निरूपिता =

तत = चित्रानन्तोदय प्रलयसमय एव =

द्वितीयेऽपि = प्राणचारे =

इति कालकलितत्वमिव सत्त्वे = 800 - |

वस्तुतः = परमार्थे = ~~सादि~~ Delete

~~परमेतावन्मात्र = मायीयाध्यवसाया =~~

~~पराध्यवसायस्य इति = न प्रतिहत~~

~~तामिभवकारि~~) परसंविदि तु =

तत्काले = भासत एव = अतएव =

एकैस्यामेव = ज्ञानकलनायां =

(343)

पाश्चात्यन्यादि विकल्प यत्यन्यते = [illegible]

इत्याद्युपदेशेन = اس طرح کے اپدیش سے   यदुक्तं = جو کہا ہے

200/

देवतान्त्रयादिधिष्ठाने = دیوتا [illegible] (اعضاء [illegible])

तत्सर्वत्रैव = وہ سب ہی   अनपायि = جو دور نہ ہو [illegible]

सर्वाण्येव च = سب   संवि संवेदनानि = [illegible]

वस्तुतः = واقعی   प्रथमं इति = [illegible]   परमार्थानि = [illegible]

विमर्शमयान्येव [illegible]   तदेवं स्थितम् = [illegible]

स तं विश्वमन्तः स्थितमानन्द शक्ति = [illegible]

भरितो = بھرا ہوا   वमन् = [illegible]   ग्रसमानः = [illegible]

विसर्ग एव = [illegible]   परमेश्वरो घनीभूय = [illegible]

हकारात्मतां = [illegible]   प्रतिपद्यानन्त = [illegible]

अनन्त-संयोग वैचित्र्येण = क اور स [illegible]

क+स=क्ष   क्षरूपतामत्येति = [illegible] "क्ष" [illegible] حاصل کرتا ہے

स सर्वेष = क्ष (क اور स)   द्वयात्मक = [illegible]

प्राणयोनि संघट्ट = [illegible]   समुचित = [illegible]

[illegible]

वर्णात्मक = [illegible] ध्वनिरूप = [illegible] अनाहत = [illegible] नादरूपा = [illegible]

344

प्रक्षयेन = [illegible] मध्यम सौ जुम पदो चतुर्दल = [illegible]

तत तत = [illegible] अनन्त भाव परमात्मा = [illegible]

विसर्गी = [illegible] विभिन्नबयन = [illegible] ध्रुव धाम्नि = [illegible]

प्रबुत्तर पद स्वं = [illegible] प्रविशाति = [illegible]

इति प्रागादि = [illegible] उत्तमेतत् = [illegible]

प्रेमी = [illegible] चाकाराद्या: = [illegible]

स्थितिमन्तः = [illegible] प्राणे = [illegible] सिद्धि शील: [illegible]

तुटि षोडशकादि = [illegible] 16 [illegible] 36 [illegible] स्थित्या = [illegible]

एको = [illegible] तुटि [illegible] 2 1/4 [illegible] संधीकृत्य: = [illegible]

अर्धार्ध भागेन = [illegible] 1/2 प्रतयोदययो = [illegible]

बहिर्पि = [illegible] पञ्चदशारिनात्मक = [illegible] 15 [illegible]

कालरूपता = [illegible] तन्वत = [illegible] इति स्थित्या [illegible]

कालरूपा क्रा: = [illegible] षोडषप्रवे च = [illegible] 16 [illegible]

[illegible] ۱۶ [illegible] ۱۶ [illegible]

कला विप्रयोगात्मा विश्लिष्यन्ती → ... separate ... विघटन्

(345) ... involve ...

सप्तदशी कला = ...

श्री वाक्यादिदीपाकोषु

विघटतस्य —

(301)

विश्लिपता =

स कार अर्ध ह अर्ध ...

सात = ... सप्तदशी देवी ...

(½ ...)

विसर्गस्य = ... हकारार्धत्वात् = ... ततोऽपि

... involve ... involve ...

विश्लेषस्य = : अर्धत्वात् ... इति → निरवयवस्य =

एकवर्णस्य ... कथमेषा = ... विकल्पना =

इति चेत = ... प्रसरत्पक्षौ = ... एवमेव = ... प्रवयवे =

चिन्मयैक = ... एवमासीत् ... अन्तरकात् =

यथा हि च = ... स्वातंत्र्यादेव = ... प्रवयव =

अन् प्रवयवता = ... एवमोऽसऽपि = ... अवयवतवा =

इति तेन

प्रवर्तयिनी = ... तथा = ... इत्यादि = ...

प्रस्तु = ... को = ... विरोधः = ... एवमेव = ...

मात्रपूरकत्वे =

वर्णोपपत्ति = ... अपरथा = ... दन्त्यौष्ठ्यकण्ठ्यतालव्यादि वर्णेषु =

क्रमप्रसारी = ... पवन = ... आघातकः = ...

This Travelling takes place in succession

कथ = ... कण्ठ = ... हवा ... तालु ... इति = ...

इति = ... युगपदापूरकत्वऽपि = ... simultaneous

समानकालता = ... स्यात् = ...

यत्तु = [illegible] कण्ठधातोर्थे रूपं = [illegible] ہوتا ہے तत् तु = [illegible]

(346) तात्वाहतिजे = [illegible] सर्वत्र = ہر جگہ संभवति = [illegible]

202 श्वासनादयोश्च = [illegible] पश्चात्प्रतीयमानतया = [illegible]

रञ्जनत्वम् (अनुप्रदानत्वम्) = [illegible] उच्यते = [illegible] रञ्जनत्वम् द्विमात्रत्रिमात्रेषु च = [illegible]

द्विकादियोगे = [illegible] गम्भीकृत = [illegible] एकद्व्यादिरेव = [illegible]

तथैव = [illegible] मात्रिकेऽपि = [illegible] अर्धमात्रादियोगः = [illegible]

संवेद्यः = [illegible] यथोक्तं = [illegible] भट्टनारायणेन = [illegible]

इह तु = [illegible] पश्चाशद्वर्णा = [illegible] विश्वमपि वा = [illegible]

एकमेकमेव → [illegible] क्वचित् तु = [illegible]

सप्तादिषष्ठेषु = [illegible] विसर्गविश्लेषस्यैव = involve [illegible]

अनुत्तरपद = [illegible] सत्तालम्बनेन = [illegible]

षोडशी कला = [illegible] इत्यभ्युपगमः = [illegible]

तदेवमेताः = [illegible] कला एव = [illegible] स्पन्दनमात्र = [illegible]

चित्तवृत्त्यभावकाः = [illegible] स्वरा [illegible]

इत्युक्ताः = [illegible] → स्वरयन्ति = → शब्दयन्ति = [illegible]

→ सूचयन्ति = [illegible] चित्तं = [illegible] स्वं च = [illegible]

(34)

स्वरूपात्मान = ... रान्ति = ... स्वम् अति = ...

(दधाति)

~~प्रसर~~ ... परप्रमातरि = ... संक्रामयन्तो = ...

ददाति = ... स्वंच = ... → आत्मीय = ...

→ कादियोनिरूप = ... → रान्ति = ... →

→ बहिः = ... प्रकाशयन्तो = ... ददाति = ... इति स्वराः

एत स्व हि = ... चित्तवृत्तिसूचिका = ... प्रकाशयन्ति

नादात्मको = ... करुणा शृङ्गार = ... शान्तादिको = ...

चित्तवृत्तिमाक्रन्दन ... आक्रन्दन चाटुकर तुत्यादौ = ...

केवला वा = ... योविवर्णनाविष्टा वा = ...

तिर्यक् तदहजोतादिष्वपि = ...

प्रथमत = ... स्व- आपतन्त = ...

संकेत विग्रहादे = ... नैरपेक्ष्येणैव = ...

संविदासन्न = ... वर्तित्वात = ...

स्वरकाकारिरूपताम् = ... → प्रभुवानायं ...

→ प्रकाशयन्ति = ... इत्यर्थे धर्मी = ...

उदात्तादये = ... उपदेष्टाः = ...

तेषामेव = ... चित्तवृत्त्यनुभावक = ...

षड्जादि = ... स्वरूपत्वात = ... + सर्व सर्वत्र = ...

संवेदने = ... सवी = ... सवेत्ता = ...

वैचित्र्य चयी चार चतुरा = [illegible] 348

प्राकट्य = [illegible] आदिक्षान्ता = [illegible]

समापतन्त्यो = [illegible] अहमहमिकया = [illegible]

उपक्रममेव = [illegible] भासमाना = [illegible]

कलनामयतयैव = [illegible] मूर्तिक्रम [illegible]

संक्रमणमेव = [illegible] दीप्यमाने = [illegible]

देशामुत्थापयन्ति = [illegible] अन्यथा = [illegible]

* मेरुपरमाण्वोरविशेषात * [illegible]

इति न्यायेन = [illegible] गर्भीकृत = [illegible] देशात्मक = [illegible]

वैचित्र्य = [illegible] क्रियावैचित्र्यात्मक = [illegible]

क्रमरूपे = [illegible] काल = [illegible] (अन्तर्बाहि) बाह्येयोजनेय = [illegible]

उल्लासयन्त्य = [illegible] स्वात्मनि = [illegible]

युञ्जानत्वेन = [illegible] ग्रसमाना = [illegible]

प्रोल्लाससमयेऽपि = [illegible] इकारूपतया = [illegible]

उद्योग = [illegible] अवभास = [illegible] ~~संहार~~ = [illegible]

1. [illegible] 2. [illegible] चर्वण, 3.

विलापनरूपेण = [illegible]

4. [illegible]

द्वादशात्मिका = [illegible] १२ कृशरूपताम् = [illegible]

(दोलालीला)

like a Pendulum

आश्रयन्त्यः = [illegible] तद्गृहीत = [illegible] प्रमितिविगत = [illegible]

इयं गौः = [illegible] कला चतुष्टय = [illegible] परिपूर्णतयापि = [illegible]

प्रकटीभूय = [illegible] सालसं = Rest [illegible] षोडशात्मक = [illegible] १६

भरित = [illegible] पूर्णरूपतया = [illegible] प्रविशन्त्यो = [illegible]

अन्तर्बहिश्च = [illegible] तदमृतानन्द = [illegible] विश्रान्तिरूपं = [illegible]

चमत्कार = [illegible] सत्तासार = [illegible] कलाचतुष्के = [illegible]

विसृजन्त्य = [illegible] सर्वविधामेव = [illegible]

पूर्णकृशात्मक = [illegible] दोलालीलां = [illegible]

निर्विशमाना: = [illegible] सोमसूर्यकलाजाल = [illegible]

ग्रसन वमन चतुरा = [illegible] अकारसेवादितया = [illegible]

मध्ये च = [illegible] कादियोनिजातम् वासने च = [illegible]

बिन्दु = [illegible] ददती = [illegible] अहम् [illegible] इत्येवैव = [illegible]

भगवती = [illegible] सा हि: = [illegible] तदुक्तं = [illegible]

श्रीसोमानन्दपादै = [illegible] निजवृत्तौ = [illegible]

अः अ इत्येषैव = [illegible] विकृताविकृतरूपा = [illegible]

मातृका = [illegible] इत्यादि = [illegible]

ते तु = [illegible] इत्येतदनुत्तरमाकाराद्यक्षरं = [illegible]

(350) तिथयः = [illegible] यद्वा = [illegible] बिन्दुरेकारः = [illegible]

ओकाराद्य = [illegible] उपरि तथा = [illegible] तदन्तो = [illegible]

विसर्ग = [illegible] इत्यपि = [illegible] व्याचक्षते = [illegible]

तदेव = [illegible] संवित्सतत्त्वं = [illegible] स्पन्द [illegible]

इत्युपदिशन्ति = [illegible] स्पन्दनं च = [illegible]

किंचित् = [illegible] चलनं = [illegible] स्वरूपात् च = [illegible]

यदि = [illegible] वस्त्वन्तराक्रमण = [illegible]

तच्चलनमेव = [illegible] किंचित्त्वं = [illegible]

नो चेत् = [illegible] चलनमेव = [illegible] न = [illegible] किंचित =

तस्मात = [illegible] स्वरूप एव = [illegible]

क्रमादिपरिहारेण = [illegible] चमत्कारात्मिका = [illegible]

उच्छलत्ता [illegible] ऊर्मीरिति = [illegible]

मत्स्योदरीति = [illegible] प्रभृति शब्दै रागमेषु = [illegible]

निरूपिता = [illegible] स्पन्द [illegible] इत्युच्यते =

[illegible]

किंचित् = [illegible] चलनात्मकत्वात् = [illegible]

स च = [illegible] शिवशक्तिरूपः = [illegible] सामान्यविशेषात्मा =

[illegible]

(351) तदुक्तम् तथा तम् = [illegible] "आहारितथः" = [illegible]

बिन्दुनवसानगाः = [illegible] कालयोगेन = [illegible] सोमसूर्यौ = [illegible]

(208)

तस्यैव = [illegible] कुलस्यान्तः = [illegible] पृथिव्यादीनि = [illegible]

तस्यैवाकुलस्य तस्यैवा- अन्तः = [illegible] च

यावत् = [illegible] ब्रह्मपञ्चकं = [illegible] तावद्रूपा = [illegible]

श, ष, स, ह, क्ष

स्वराणामन्तः = [illegible] कथं [illegible] । क्रमात् = [illegible]

क्रम → क्रदनम् — भक्षण —

अथ च = [illegible] क्रमस्यादन = [illegible] → भक्षणं = [illegible] → कालग्रासः = [illegible]

तथा = [illegible] वृत्वांत = [illegible] क्रियाविशेषणं च = [illegible]

सुव्रते → [illegible]

शोभने = [illegible] व्रत = [illegible] भोग — [illegible] रिक्तत्वे — [illegible]

भोगनिवृत्तौ च = [illegible] पूर्णत्वे = [illegible] सुव्रते = [illegible]

आमन्त्रणमपि = [illegible] सततमेव = [illegible] व्याख्येयम् — [illegible]

एवममूला = [illegible] अकारमूला = [illegible] अविद्यमानमूला च = [illegible]

→ प्रश्नादित्वात् [illegible] सा क्रमो = [illegible] यस्याः = [illegible]

प्रश्लेषेणतात = [illegible] अततरूपो = [illegible] अन्यथारूपो = [illegible]

तथाप्यमूला = [illegible] अमूलस्य = [illegible] सदा ततमोतत = [illegible]

ततः = [illegible] तदेव च = [illegible] क्रमो = [illegible] यस्याः = [illegible]

एषा च = [illegible] ज्ञेया = [illegible] ज्ञातरूपा = [illegible]

एषैव च = [illegible] ज्ञेया = [illegible] अन्यस्याभावात् = [illegible]

object

अविद्यमान = [illegible] क्षान्त = [illegible] तूष्णीमान = [illegible]

अततम् — [illegible] अतत = [illegible]

सन्नम्, विरते = [illegible] — स्फुरितादिरूपत्वेन = [illegible]

प्रस्याम् = اس کا — प्राक्षाणाम = → शब्दस्मिकाणाम्

[illegible]

पदे → समीपे = نزدیک — प्राग्पर्यवसाना = [illegible] — या = و

भवेत — भवेदित्युपचार = [illegible] — प्रासाक्षान्ता = [illegible]

स्फुरि = [illegible] — पूर्विमाह्वरणे = [illegible] → स्वात्मानपदवृत्तात्म = [illegible]

संहाररूपे = [illegible] — यस्याम = جس کا — सर्वत्र च = [illegible]

क्रियात्मक = [illegible] — बीज प्रसररूपाणां = [illegible]

[illegible]

मननत्राणधर्माणां = [illegible] — सर्वेषामेव = ساروں میں

वाच्य वाचकादिरूप वर्णभट्टारकात्मनो = [illegible]

[illegible]

मन्त्राणां = [illegible] — प्राकत्यात्मक = [illegible]

योनि = [illegible] — स्पन्दानां = [illegible] — सर्वासां = ساروں

तद्बीजोयुतानां = [illegible] — वेदनारूपाणां = [illegible]

[illegible] — प्रख्याता

विद्यानाम् = [illegible] — इयं = یہی — समा = ساروں [illegible]

सर्वत्रानूनाधिका = [illegible] — सर्वेषु = سب

سب میں - ایک جیسا

(303)

तत्त्वेषु = [illegible] तन्मात्रासु च = [illegible] सर्वासु = [illegible]

क्रियासु = [illegible] सर्वकाले च = [illegible] सर्व = [illegible] ददती = [illegible]

सिद्धिमन्त्ररूपा = [illegible] वर्णाः = [illegible] प्रथमं = [illegible] तथा हि

तत्र एव शुद्धमन्त्ररूपा वर्णाः

प्रथमं = [illegible] पञ्चविधविपर्यय पञ्चविधविपर्यय = [illegible]

अशाक्त्यादिरूप = [illegible] प्रत्ययात्मकभाव = [illegible]

भावसृष्टितामेत्य = [illegible] स्वरूपमावृण्वते = [illegible]

पञ्च = [illegible] विपर्ययभेदा = [illegible] भवन्त्यः [illegible] अशक्तिश्च = [illegible] करणवैकल्यात् [illegible]

अष्टाविंशति = [illegible] तुष्टि नवधा = [illegible] अष्टधा सिद्धिः [illegible]
भेदा

[illegible]

इति हि = [illegible] एत एव = [illegible] प्रत्यया = [illegible]

पाशावसृष्टिरूपाः = [illegible] पाशा [illegible] मुख्यतया = [illegible]

यथोक्तम् = [illegible]

स्वरूपावरणे च = [illegible] अस्य = [illegible] शक्तिय = [illegible] सतत = [illegible]

उत्थिता = [illegible] यतः = [illegible] शब्द न विना [illegible]
प्रत्ययोद्भवः = [illegible] अनुवेधेन [illegible]

अपि तथा = [illegible]

परामृतरसा [illegible] अपायाः = [illegible] यः = [illegible] प्रत्ययोद्भव [illegible]

इत्यादि = एवं = [illegible] प्रत्ययसृष्टित्व = [illegible]

wind up [illegible] अन्तराली करणेन = [illegible]

स्फुरत् श्रूयमाण श्रुत्यात्मक = [illegible] सामासमान = [illegible]

[illegible]

(355)

मायीय = [illegible] वर्ण सन्निराद्ध = [illegible]

[illegible]

पारमार्थिके = [illegible] शुद्ध रूपालिङ्गिता =

तत्तत्कार्य फल = [illegible] प्रसवदायिनी = [illegible]

निरूपिता = [illegible] श्रीपर्वशास्त्रे = [illegible]

सर्वशास्त्रार्थ गर्भिण्यै = [illegible]

इत्येवं - विधया = [illegible]

अनया = [illegible] संप्रबुद्धः = [illegible] सद्म = [illegible] योनि = [illegible]

विक्षोभ्य = [illegible] शक्तितः = [illegible] तत्समान = [illegible] श्रुतीन् [illegible]

वर्णा = [illegible] तत्संख्या = [illegible] सृजत् प्रभुः = [illegible]

इत्यादि =

तै तै [illegible] आलिङ्गिताः = [illegible] सन्तः [illegible]

[illegible] = सर्वकामफलप्रदाः

इत्याद्येवमाख्याता = [illegible] प्रकटा = [illegible]

→ माया - धाना = [illegible] सर्वदैव = [illegible] ख्याता = [illegible]

→ प्रकाशा = [illegible] शुद्धस्वदनात्मिका = [illegible]

यस्याः = [illegible] सर्वत्र = [illegible] स्वस्वभावात्मकः = [illegible]

प्रभाव प्रख्या = [illegible] प्रशानिरोधा = [illegible]

प्रथम मात्र संक्षेपार्थ: =

(355)

स्वातन्त्र्यं = सकरस = आवेश = चमत्कार सकल लक्षण

पराभगवती नित्यं = भासते = भैरवी स्वयम्

तस्य स्वभाव योग या: = य: = स: अनिरुद्ध:

सदोदित: सदाप्रिय = धराति = नील = پیت پیلا पीत

सुखादिभि: = भासमाने = स्वस्वभावे स्वयं प्रथन शालिभि:

प्रथते = संविद आकार: स्वसंवेदन सारक

स्वस्वसंवेदने = नाम = प्रमाणमिति = वर्ण्यते

बाल = तिर्यक = सर्वविदां = सामर्थ्येन भासते

Elevated Soul

अक्रियाणि = त्रिरूपं च = लिङ्ग = परवच: =

सारुपं = अन्यथायोग: = प्रतीत्य =

यम अनुदय: - यम:

इत्यादिक: यस्य = सर्वे = द्वारमात्र निरूप्यते

तत् स्वसंवेदने प्रोक्तम् =

प्रविष्ट ईहद प्रयामयम् येषां न = न = अपेक्षा =

त्रिरूपादि = नाममात्र =

अभिज्ञात तेषामपि तिरस्कार हि

समा संवित् = [illegible]

प्रकाशते = [illegible]

स्वभासा = [illegible] स्वभावेन = [illegible] स्वरूपामर्शात्मिका = [illegible]

स्वरूपामर्शने [illegible] यतश्च तदेव = [illegible]

परवाग्वपु [illegible] तद्धि चित्र = [illegible] चित्प्रथनाम = [illegible] प्रथम प्रथने = [illegible]

स्वभावत्वात्

पारतन्त्र्यं [illegible] हि = [illegible] न जातु भजते = [illegible] क्वचित्.

अपारतन्त्र्यात् = [illegible] संकेतप्रत्ययादि [illegible] कथं स्थिति

अतः संकेतरहितं = [illegible] स्वस्वरूपविमर्शनम = [illegible]

देशकाल कला माया = [illegible] स्थान धात क्रिया = [illegible]

उत्तरम = [illegible] परिपूर्ण = [illegible] सर्वे = [illegible]

स्वतः

स्वीकार विलक्षणम् [illegible]

स्वाभाविता = [illegible] महासंविद् = [illegible] सत = [illegible] संस्कार सकलक्षणम् = [illegible]

शुद्धविद्यात्मकं रूप = [illegible] प्रथम इति = [illegible]

उच्चात्मकं = [illegible] (अ ह) तत्त्व = [illegible]

मातृकारूपं = [illegible] धरादीनां = [illegible] निजं वपु [illegible]

तत्परामर्शिकाकारं = [illegible] ज्ञातृप्रधान = [illegible]

आद्यास्वरूपतः [illegible] बीजयोन्यात्मकं [illegible]

शिवशक्तिस्वरूप = [illegible]
कम्

↓

क्रियाप्रधान

(३८१)

प्रविश्य तु पोस्तु = [illegible] संघट्टात् = [illegible] अन्योन्य = [illegible]

उद्दघाटित तत्त्वत = [illegible] — [illegible]

* तत प्रनुत्तरात्मना विपर्यस्य विश्लेषणता बहिर्भाव स्थितया स विसर्गः ॥

प्रन्तःस्थ

परस्पर = [illegible] समापत्ति = [illegible] जगत् आनन्द दायिनी = [illegible]

विश्वपर्यन्त [illegible] पारमार्थिक = [illegible] सत् वपुः = [illegible]

यत् वीर्यं इ = [illegible] इति निर्णीतं = [illegible] तत् = [illegible] विश्लेषणयोजना [illegible]

विसर्ग* इति = [illegible] तत्प्रोक्तं = [illegible] ध्रुवधाम [illegible] तदुच्यते

अनुत्तरपदावाप्तौ = [illegible] सत्य सुघटो = [illegible] विधिः = [illegible]

अस्मादेव तु = [illegible] मायीयात् वर्ण = [illegible] पुञ्जात् विसर्पित

मायामालम्ब्य = [illegible] भिन्नैव = [illegible] श्रीपूर्वे = [illegible]

सृष्टिराक्षारी [illegible] पश्चात् प्रात भेदं = [illegible] संभिन्न = [illegible]

प्रत्यय = [illegible] प्रसव = [illegible] आत्मिका = [illegible]

बन्धरूपा [illegible] स्वभावेन = [illegible] स्वरूपावरणात्मिका = [illegible]

अत्रैवान्तर्गता = [illegible] तास्ता = [illegible]

ता ता = [illegible] खेचर्यो = [illegible] विषयात्मिका = [illegible]

तन्वते [illegible] संसृतिं चित्रं [illegible] कर्म-माया- आणवतामय = [illegible]

अस्याः = [illegible] साम्यं = [illegible] स्वभावेन = [illegible] शुद्धभैरवतास्थम् [illegible]

प्रोक्तं = [illegible] प्रागेव = [illegible] जीवत्वे = [illegible]

मुक्तत्वे [illegible] = [illegible] पारमार्थिकम् [illegible]

भिन्नायाः [illegible] वर्णसृष्टि = [illegible] तद् अभिन्नं [illegible] वपु परम् =

वीर्यं इति उक्तं = [illegible] अत्रैव = [illegible]

यत = جو गुह्या = پوشیدہ سے پوشیدہ मन्त्रगुप्ता = منتر گپتا → तदेतत् ब्रह्म इति = इद

[illegible] – [illegible] [illegible] وہی [illegible]

विसर्गे अनुत्तरात्म = [illegible]

तदेतत् = وہ [illegible] कर्त = [illegible]

– [illegible]

[illegible] ہے

स्वस्वभावे = اپنی اپنی, पर = [illegible] जानत् = جانتا ہوا जीवन्मुक्ति [illegible]

सुकृत = [illegible] बुधाः = [illegible] [illegible]

प्रपन्नवस्तेतत्

सिद्धादि = [illegible] = [illegible]

कूर्मे کچھوا = [illegible] संकोच = [illegible] सन्नितम [illegible]

[illegible]

[illegible] नाभि = ناف कुण्डल = [illegible] हृदय = [illegible] व्योमानि = آکاش

योगिनः = جوگی ब्रह्म उपासते = [illegible]

तत एतत् = [illegible] काल = [illegible] निर्णीतं = [illegible] यथा = جیسے

गवीगर्भे [illegible] मनाक = [illegible]

[illegible]

स्वनो संविद् [illegible] आलम्बये [illegible] यत = جو स्यात् = ہوتا ہے

तत = وہ पृष्ठ्यतां [illegible] स्वचित = [illegible] – [illegible] – [illegible]

[illegible]

न = نہیں = तावत् एवं [illegible] तुलितं = [illegible] मार्गाद्यान्त = [illegible]

प्रयद्भात = [illegible]

[illegible]

[illegible]

(359)

216

अवतरति = [illegible] व्यवच्छिन्नश्च यः भैरवी संविद् = [illegible] हिकः

اس لئے یہ اس صورت کو ترک کرنی ہے

एतावान् = [illegible] प्रतिपात = [illegible] अथ = [illegible] अस्मासु = [illegible]

प्रविक्रमितः = [illegible]

येन = [illegible] अधिकारि = [illegible] तत् अस्माभिः

प्रकीकृतम् = [illegible]

अस्माकम् = [illegible] अन्यमा नाम [illegible] अथ [illegible] कालान्तरे [illegible] रूपे वा

भवत्याभूतश्च

भवत्य [illegible] प्रभूत्वौ = [illegible] भविता = [illegible] तकिः = [illegible]

सूक्ष्मतम् = [illegible] यतः = [illegible] प्रथमम् [illegible]

यः = [illegible] सवियोग [illegible] प्रकाशेषु = [illegible] गभस्तिमान्

प्रवयव

श्रीपूर्वशास्त्रे [illegible] विनीतो = [illegible] येन मुक्तश्च = [illegible]

मोचकः = [illegible]

एतत्तु = [illegible] सर्वथा = [illegible] ग्राह्ये [illegible] विमर्द्यं च

परेस्सुभि = [illegible] क्षणं = [illegible] मत्यौत्व सुलभ्यां

छित्वा सूर्या = [illegible] विचक्षवे = [illegible]

आलोचन = [illegible] क्षणं = [illegible] अदुधर्वे = [illegible] यतः = [illegible]

स्वतो [illegible] भवित [illegible] आत्मा नेस्थितं [illegible] चितके = [illegible]

रसात [illegible] अमलेव [illegible] तेन = [illegible] संशम्बे [illegible]

جیسے ایک شیر جو اپنے شکار کے اوپر جا پڑتا ہے
وہ اپنی ہی آتش میں ختم ہو جائیگا - مجھے بات ٹھیک لگا

217

(366) Connecting [illegible]

"उत्तरस्य प्यानुस्म" [illegible]

एवम् = [illegible] उत्तरस्याप्य = [illegible] अनुत्तरमिति = [illegible]

यदुक्तम् = [illegible] तन्मयोऽसावुत्तरस्य = [illegible]

इत्यंशेनोपात्तः = [illegible] कुलात्मा = [illegible] प्राक्त = [illegible]

सृष्टिप्रसरः = [illegible] स विस्तरतो = [illegible] निर्णीतः

ततश्च = [illegible] उत्तरमपि = [illegible] यथानुत्तरं = [illegible]

तथा = [illegible] निरूपितम् = [illegible] | इदानीं तु = [illegible] अनुत्तरपूर्वक भवति.

अनुत्तरमेव = [illegible] स्वरूपेण = [illegible] विस्तरतो = [illegible]

विचारपदवीम् ईक्षते = [illegible] एवं विदितश्चैवादौ = [illegible]

Connecting [illegible]

निर्वहतो = [illegible] यदि = [illegible] अनूद्यमानो = [illegible]

विधीयमानश्चापि = [illegible] स्वरूपतो = [illegible]

लक्षितौ च = [illegible] स्यातां = [illegible] | यथा = [illegible]

यदेव = [illegible] शिवनामस्मरणमेतत्तदेव = [illegible]

समस्तसौख्यकुलालयमिति = [illegible]

प्राप्यप्राप्तौ = [illegible] लक्ष्यौ = [illegible] | इह तु = [illegible]

यद्यपि = [illegible] अनुत्तरं नाम = [illegible]

किंचित = ... न अस्ति =

... तस्याप्यं उत्तरत्वे स्व = ... अभिपातान =

तथापि = ... स्वतन्त्र्य के प्रो... उपदेश्य उपदेश्य के

भावाभिप्रायेणेयं = ... व्यवस्था =

इत्युक्त प्राक = ... | ततश्च = ... विस्तरतो =

अनुत्तर = ... स्वरूपणाय = ...

ग्रन्थान्तरावतारे = ... तन्निरूपयाति = ...

चतुर्दशयुत = 14th ... प्र (15) भेद = ... तिथी प्रांत =

प्रान्ते = ... समन्वितम् = ...

I

तृतीय ब्रह्म = ... "स" सकारोगि = ... 1 2 3

हृदयं = ... भैरवात्म = ...

... "सौ" ... स सौ ... "सो:"

चतुर्दशयुत ... 14 युत = ... तिथी श = "अ"

प्रान्त = ... प्र → ... समन्वितम् = ...

तृतीयं ब्रह्म = ... 14 ...

... "प्रांदे" ...

३१८
४१९

स्तत = सौ न = प्रयोगिनी जातो

२१९ न प्रकृष्टो लभते स्फुटम्

हृदय देवदत्तस्य

स्थितो योग निमुक्तिदम्

प्रस्य ॐ उचारी कृते सम्यङ्

मन्त्रमुक्तागण = (مقر) महान =

स्थितः तन्मुक्तताम् याति =

स्वदेह आविष्ठ लक्षणम् =

He becomes one with these

मुहूर्त ४८ स्मरते

चुम्बकेन भ्रमिमुक्तिः =

नरः
स नरः = बध्नाति =

तदा सर्व

मन्त्रमुक्तागण नरः

glowe

अतीतान = گذری ہوئی ۔ अनागतान = آئندہ کی ۔ अर्थान = اُن بادشاہوں کے

पृष्टो = پوچھا گیا ۔ असो = ۔ कथयत्यापि = وہ کہہ دے گا

وہ ہر ایک بات ۔ ننھی بھوت ۔ بھوشیہ کی باتیں ہر ایک سے وہ کہہ سکتا ہے جب پوچھا جائے

219/220

प्रकरात = ایک سے ۔ यः = جو ۔ अभिप्रेत = جو چاہے

देवतारूपम = دیوتا روپ ۔ उदारम = اُدار ۔ جو دیوتا کا نام لے وہ سامنے حاضر ہو جاتا ہے ۔

साक्षात्पर्याय = ۔ संदिग्धम = اس میں کوئی شک نہیں

प्राकृष्ट = کھینچا ہوا ۔ रूपाणि = ۔ ان روپوں کو اپنے سامنے کھینچ کر لاتا ہے ۔

प्रहरद्वय = دو پہر ۔ मात्रेण = صرف ۔ (سمادھی میں)

योगस्थो = یوگ میں ۔ जायते = ہو جاتا ہے ۔ स्मरन = یاد کرنے والا ۔ آکاش میں جو ہر کسی کی سمرن ...

त्रायेण = ۔ मातरः सर्वा = سب مائیں

योगीश्वरो = یوگیوں کا ۔ महाबल = بہت بلوان

वीर = ۔ वीरेश्वरः = ۔ सिद्ध = سدھ ۔ कलवान = قابل

शाकिनीगणः = ۔ आगत्य = آکر ۔ समयं = appoint

दत्त्वा भैरवेण = ۔ प्रचोदिता = ۔

यच्छन्ति = دیتے ہیں ۔ परमां सिद्धिं = ۔ फल = پھل

यत वा = ۔ समीहितं = جو چاہا ہو ۔ وہ کبھی اسکو ملتے

[illegible] —

220/

श्रौः

पनेन = [illegible] सिद्धाः = [illegible] संत्स्यन्ति = [illegible]

साधयन्ति च = [illegible] मन्त्रिणः = [illegible]

सङ्कोचित = [illegible] भैरवे तन्त्रे = [illegible]

सर्वेन प्रस्मात [illegible] प्रसिद्ध्यन्ति = [illegible]

अष्टम मण्डलोऽध्याय = [illegible]

([illegible]) [illegible]

ذہن یہ گمانی نہیں رہا تھا۔

تینوں گمانوں کے جانے کے بعد

(۱) اپنا گمان

(۲) شاستر گمان

(۳) گرو کا دیا ہوا گمان

-x- ستری کی Thighs - اور [illegible] نہیں ہوتی

भैरवात्मनः ← न: ⊕

[illegible]

[illegible] विश्वस्य = — प्रद्रावितयुक्त्या =
प्रागस्य विज्ञापित = नररूप = अपराभट्टारिका स्वभाव:

शाक्तस्वभावस्य
प्राक् : = तस्य हृदय-सार = — विश्वरूप =

221 परमेश्वरया = श्रीमतशम भट्टारिकया =
समालिङ्गिते = भैरव प्राब्देन = विश्वस्य =

सर्वं सर्वात्मकता वपु: = वि प्राक्तरूप =
तत्साहितस्यात्मन: प्रति =
~~[illegible]~~ भेदस्य = नररूपस्य =

एतावत = द्विबात्मके = हृदये =
परेणाभेदेन = सर्वात्मकतया। एवं =
तेन = तया च = निव विनास्य =
भेदस्यैवायोगात = इत्युक्त प्राक =
"सुश्रोणि" - हृदयम् - इत्यामन्त्रणम् =
पेशोमन = त्र्यात्मकतायामपि =
अनुपते = प्रबुद्धचिन्मय = यदतत =
श्रोण्यां = हृदये = heart → योनिरूपमुक्त =
तत - न: - पतत कत = सकलमन्त्र =
भैरवात्मकम

महेश्वरादिभि: = वत = स्थावरान्तत -

पापातितत्व्यपदेशस्य = अहमात्मनो व्यपदेशस्य
इति = समुचिता = आपतितत

मेयात्म = पूर्णतालयम् =

22 प्रतरगतविश्ववीर्य सम्मुखीकृतसाम्मुखके =

कि विस्मय विमल जाव =

प्राकट्यकथन = | वृधन = बृहत =

→ व्यापके = बृंहिते च =

न तु = बदन्त पराङ्मुखीकृत =

केवल = كيول द्वन्द्ववादी विदर वृति ब्रह्मदर्शने इव

सुश्रोणि

एतत् च = तृतीय = → नरादपक्षता =

प्राक्परेकरणपन् = स्त एवामीषु =

शास्त्रेषु = अतो च = मुख्यतया =

लिङ्गद्वयसंघट्टानि कम हृदयं

तेन च = हृदयं = पूज्यतया प्रदिष्टम् =

मनुप्रविष्टं = तथा वीर्यव्याप्ति साक्षात्कृत्य आदि

तावन्मात्र = बाह्याचार परिशीलनेनैव =

क्रमवशा = शिथिलीभवत् =

Successively

शिथिलित विदलित दलित

पाशावनियम बन्धना = پاشس

स्तद्धृदयव्याप्ति =

स्वयमेव = آپ ہی خود ہی   समधिरोहते =

नहि   स्तत = हृदयानुप्रवेश एव =

स्तद्धृदयेऽनुप्रविष्टोऽस्मि इय देवी परा

इत्येतच्छ्रावक विकल्पकल्पनः =

अपि

प्रत्युत =   हृदयान्तर =

मार्गीणादित्युक्तं =   विस्तरतः

यदि तु =

नहि

संकोचयन्ति = हृदयं   शास्त्रपाशा   नो =   संविदं =

कलुष =   यतते =   लोच =

परिपूर्ण रूपा =

सम्यक =   स्वभाव पदवी =

सैव =   उल्लास =   लयभरा =

स्थिति स्यात् = ...

भवद्भक्त्या   प्रवेशाय =   विस्फारदृतर =   जातमनसां =

क्षोभेन =   एकावस्था   स्फुरतम्   सदाशिवस्य

एव हृदयम् =

एत स्व = [illegible] कोणेषु = کونوں میں · पूर्वाकृतसो [illegible]

मध्ये = [illegible] देवी = دیوی परानन्द भैरव = [illegible]

त्रिस्थितरूपा = [illegible] नित्यानन्द रस = [illegible]

प्रसरणव = [illegible] क्षोभात्मक विसर्गणी = [illegible]

इति = [illegible] देवतानां = [illegible] संप्रदायो = [illegible]

यामलयोगे = [illegible] वीराणामपि = [illegible]

आनन्देन्द्रिय = [illegible] नित्यानन्द क्षोभात्मक [illegible]

दूती = [illegible] संघट्टजेन = [illegible]

इति = [illegible] एकवीरतायामपि = [illegible]

स्वरूपानन्द = [illegible] विश्रान्तियोगेन = [illegible]

पुंसोऽपि = [illegible] आनन्देन्द्रियानि = सरणधाम = — [illegible]

त्रिकोणकन्दाधा = [illegible] विनिघु = [illegible]

चित्त निवेशात = [illegible] आनन्दक्षोभप्रसवे = [illegible]

करोति = तादिन्द्रियमूल = [illegible]

तत्पर्यन्त = [illegible]

संघट्टघनतायाम = [illegible]

(373)

अथो क्रमम् =

223

इति = एवमानन्दयोग एव :

हृदय पूजा = यथोक्त =

त्रिकतत्त्वसारे = त्रिकोणे =

आनन्द प्रसरः = पूजा = तो = तु

प्रकल्पित पुष्प = धूपादि गन्धः =

स्वहृत = संतोषकारिणीम् =

इति = सर्वे हि = मुद्राध्यानविद् =

ज्ञानक्रिया प्रकाशत्वात

केवल देवतासु = ज्ञानमुद्रा =

क्रियामुद्रा बहि

कृतरूढ़ि कौ =

वीरीषु = विपर्यया =

समतया =

अनुप्रवेशास्तु अनेनैवाभिप्रायेण =

विपर्ययाच्च = लिङ्ग =

ज्ञानप्राकत्यात्मक = समर्पणमुत्तमम्

क्रियाप्राप्ति =

'स' तृतीयं ब्रह्म

एवमतत = चतुरस्रदशासु =

विपर्यय

युते = [illegible] → संश्लिष्ट = [illegible] पञ्चदशात्मके = [illegible]

دونوں والا - یہ سمجھوں کا جو سوا ہے یعنی [illegible]

तिथीप्रान्तेव = [illegible] → विसर्गेण = [illegible]

षोडशाभान्वितम् = [illegible] यद्वा = [illegible]

(2) چودہ کی دوسرا ارتھ

चतुर्दश सहिते = [illegible] युते → युग्मे = [illegible]

یعنی مطلب 15 + 1 = 16

षोडश्यां तिथीनां = [illegible] 16 — पञ्चदशानामपि = [illegible]

विसर्ग = [illegible] तस्यान्ते = [illegible]

→ सप्तदश्यनुत्तरकला = [illegible] तदन्विते = [illegible]

हृदयं = [illegible] → सर्वाणि षट्सुखाक्षीनि = [illegible]

वस्तूनि = [illegible] तामेव = [illegible] बीजसत्ता = [illegible]

परमार्थरूपेण = [illegible] आक्रामन्तीत्युक्तं = [illegible]

विस्तरतः = [illegible] एतत् एव = [illegible] तत् = [illegible]

हृदयम् = [illegible] ~~सर्वं षोडश~~ [illegible]

हृदयसतत = [illegible] तथा = [illegible] अनुत्तरानुसारेण = [illegible]

ब्रह्म ← सामरस्यं

यदेतत् = [illegible] → ब्रह्मसामरस्यं = [illegible] वेद्यवेदकयोः स्वतस्पूर्णे

दशानाम् = [illegible] उद्योगादीनां = [illegible]

(375) समासादौ ... विभागम् : ... - प्राथमिकी

तथा ... → युतम् विभागि ... य स्तते

त्रिधीनामीप्सा = ... ओंकारान्ता = ... ओ

तत्प्रभवत्वात् ... अन्यस्योति = ... हि =

उक्तम् = ... तेषां = ... तिथीप्सानामन्ता =

प्रकृतवर्णाचत्वर : ... ते = ... सम्यगन्वितम् =

तत्र च = ... तृतीयं = ... → नराद्यपेक्षया

त्रिवरूपे पर = ... वेदकक्षतसमि =

दृशीभिरुल्लसत् = ... वेदमेव =

ताभिराप्यायकौतुकात्मना = ... तावत =

स्वाहृतकला : = ... स्वात्मानि =

एकीकुर्वन् = ... वेदवेदकक्षोभे समापत्त्या =

एकात्म्यलक्षणा = ... प्रसंख्यानेनाभ्यासेन वा =

गमय ... मेवात्मना = ... विश्वहृदयमुत्तर-

प्तौ प्रविशते = ... यथोक्तम् = ...

इति । इच्छोल्लसन्नामानि =

समनुस्मृत्य

→ आनन्दप्राप्ता = ... यदेतत = ... संहृत्य =

(376) अनुसृत्या = [illegible] क्रियाप्राप्तिमपेक्ष्य = [illegible]

तृतीये = [illegible] रूपमिच्छात्म = [illegible] तद्वत

प्राक्रोदाविष्यमाणाद्यकलषे = [illegible]

क्रमे = [illegible] चतुर्ये = [illegible] दश चत्वारिंशत = 40 = 4×10

सर्वमेवापेक्ष्या = [illegible] → परमेश्वर परशक्तित्रय

सहितानि = [illegible] तत्त्वानि = [illegible] यथाक्रमम् = $\frac{3}{4}$

40 = 4+36

= 36 [illegible]

इत्यादि = [illegible] तैर्युतम् = चतुर्दशयुतम् [illegible] | आनन्दशक्तेः = [illegible]

प्राक् पररूपा पूर्णी = [illegible], कथं तथी प्रोक्ता [illegible]

तदन्तैश्च = [illegible] योनिरूप धरादीनि = [illegible]

समन्वितम [illegible] इति क्रियाविशेषणम् [illegible]

तद्वद् हृदयं = कृत्वा [illegible] सर्वत्रमात्र = [illegible] सकादि मातं = [illegible]

प्रसंख्यानगम्यं रूपं = [illegible] मुख्यतः

तत्र = [illegible] योग्यानां = [illegible] तु = [illegible] परशक्तिपात = [illegible]

पवित्रितानां [illegible] वैधेन्द्रजालिक = [illegible]

(377) कलना, ता ~~सहकारी~~ का =

योगाभ्यास = इति मन्तव्यम् =

(5) यदृच्छाभिप्रायेण = → तृतीयमिदृशी =

तत च = बृंहितामल्यमानेन = →

उपमितेन = → पूर्ण ब्रह्म ~~चर्म~~ चतुर्दशी = 40

चत्वारिंशद्धा = 4×10 = 40 तानि = निर्विभाग =

आश्रित = यतः = सन्तरे = युत प्रोक्तो =

प्रविभक्त वाचि ~~वल्यपि~~ = | ~~युतसिद्धत्वादित्यादौ~~ = युत

तिथीश्वरस्य = ~~कुलमय~~ नुत्तर कलात्मनोऽन्तः = पश्चात

आनन्दः = तस्यान = स्थितम आत्

→ पश्चात = सम्यागितम् → बोधमयम् =

ईशानपक्षयो = तृतीयमिदृशरूपे =

प्रसरवशात = बहुतमतम = ईशानत =

आपन्न = चतुर्दशानां = ~~40~~ (4×10) →

→ चत्वारिंशत = 40 ~~आया~~ युत

→ परस्पर = व्यामिश्रता = यत्र =

युतम् → युत →

तिथीश्वरस्य = → अकुलमय मानो =

प्रान्तः —

क्रमान्त: = अंश — संहृति —

तेन →

→ कुलप्राप्ति = प्रथम स्पन्द: [illegible] तेनान्वितम् =

तिथि प्राप्त / समान

No. 7

उन्मेषात्मक = ॐकार ज्ञानप्राप्तिक्रियायोगेन =

तृतीये = ब्रह्मस्थानमेव = यदा =

चतुर्दशांशो = तस्या एव = "युत"

तत्त्व चत्वारिंशतो = 40 "युत" →

प्रथमविभागा यत्र तथाविध =

भवति = तथा = तिथीप्रान्तेन =

→ कुलशक्ति प्रथमस्पन्देन =

सम्यक् = → समन्वितम् → प्ररूक्षतया = — प्रारोहण — ३ = इच्छा

समन्वितम् = | संख्यादोऽन्तः =

→ भरणापेक्षा: =

No. 8

तज्ज्ञानप्राप्ति क्रियाप्राप्ति मध्यकोटिरूप =

प्रागनिर्वृत्ति = ऊ → ॐकार कलालम्बन =

तोदतारूक्षया = तदेतत् =

ब्रह्म = | यत्किञ्चित् = चराचर =

तदस्फुटं = [illegible] सूक्ष्म देशया = [illegible]

तृतीयं = [illegible] शुद्धसूक्ष्मात्मकं = [illegible] स्वरैः

यत् = [illegible] एतदेव = [illegible] तिथीश्वरैः = [illegible]

हृदयभूततथा = [illegible] तदन्ते च = [illegible]

कादिक्षान्तैः = [illegible] समन्वितम् = [illegible]

अथ = [illegible] शून्यं चतुष्कानुसृत्या = [illegible]

चतुर्णां = ४ शरादीनां दशा = [illegible]

विनाशात्मिका = [illegible] विद्यते = [illegible] यत्र = [illegible]

तद्व्योम = [illegible] तेन = [illegible] युतं = [illegible]

व्योम् [illegible]

तृतीयं = [illegible] ब्रह्मचक्रारव्यं = [illegible]

तिथीश्वरस्यार्कस्य = [illegible] एतेन = [illegible]

बाह्येन = [illegible] तेजसान्वितम् = [illegible]

ख्यातक्रमेण = [illegible] तृतीयं = [illegible]

ब्रह्मस्थानम् = [illegible] एतदपि = [illegible] एवमेव = [illegible]

तृतीयं = [illegible] ब्रह्मचक्रारव्यं = [illegible]

चतुर्णां =   ~~सहस्रशीर्षा~~ =

तेषां =   साधारतया =   समन्वित =

तिथीप्रान्तस्थ =   वृहे   तेजसो:

यदनुसरद्रूप =   तेन =   सहित

व्योमात्म =   तथैव =   तृतीय =

ब्रह्म =   चतुर्दशीयुतं   तिथीप्रान्त =

समन्वितं =   परिपूर्ण शून्य रूपत्वा =

Last State of Void

भैरवात्म =   इच्छा =   स्वत =

निजस्वभावभूते ध्यान संहिता =

2. वैद्यभूमैव्योम सज्ञा =   सदा क्रमात =

तदा =   किंचित्प्रकाश भुवि =

विभ्रमयु =   भीयीत =   अपरयक्ता =

कोषुपाण प्राया =   निश्चला =

व्योम - सुषिम =

अनुप्रविशति =

(381)

यत्रापवेद्य - सुषुप्ति महाव्योम - अनुप्रविष्ठान [illegible]

228/229 योगिनः प्रत्यय [illegible] उच्यते = [illegible]

मेरी = [illegible]

अधुनोक्तव्याप्ति = [illegible] यदेतत्परस्पररूप = [illegible]

ऐक्यं वैचित्र्यं = [illegible] प्राक्तीनां = [illegible]

ए = अ/आ + इ
ऐ = ए + इ

तदुद्देशेन = [illegible] स्वामिच्छा = [illegible] यदानुत्तरपद = [illegible]

प्रवेशशालिनी = [illegible] भवति = [illegible]

प्राक्क्षोभस्य = [illegible]

रसनादन्तरं = [illegible]

तत्रोच्यते = [illegible]

विलम्बितमध्यद्रुताना = [illegible]

चिद्विशेषस्पन्दानां = [illegible] सत्त्वादियोगयुषा च = [illegible]

तुः शब्दोपलक्षिता [illegible] चतुर्थी दशा = [illegible]

यत्रास्ति = [illegible] सामान्यस्पन्दरूपा = [illegible]

तदकुल = [illegible] तेनाकुलेन = [illegible] अनुत्तरेण = [illegible]

युक्ते = तृतीयं = [illegible] ब्रह्मेद्धात्म = [illegible]

एकार रूप से

ईशानसहितं = [illegible] त्रिशीर्षस्याकारस्य = [illegible]

(382) अनन्तेनानन्द प्राकत्यात्मा = [illegible] अन्वितम् = [illegible]

[illegible] ऐ, ऐ [illegible] आ' ए कार रूप

इ + अ [illegible] = ए

229/230 तदपि = [illegible] तथैव = [illegible] पुनरपि = [illegible] परा = پھر بھی

[illegible]

स्वधाम = [illegible] अनुप्रविशति = [illegible] यदा = [illegible]

[illegible]

तदा = [illegible] भैरवात्म = [illegible] - परिपूर्ण = [illegible]

[illegible]

- धीधीभूत → व: = [illegible]

ई + आ = ऐ

→ भैरवात्मन: ←

भैरवात्मन: [illegible]

परमाकम इति = [illegible] ~~[illegible]~~

एत = [illegible] एवैतदेव = [illegible] बीजयुग्मम = अ + इ = ए ; अ + ए = ऐ

ए [illegible] ऐ [illegible]

एवंविधबीजवैचित्र्यानुप्रवेशात् - [illegible]

[illegible]

प्राक्तद्भव प्रसव समर्थम [illegible]

[illegible]

इति = [illegible] कामवाक्तत्वोपयोगेन = [illegible]

उच्यते = [illegible] ए = [illegible] ऐ = [illegible]

ए → [illegible] → [illegible] ऐ → [illegible] → ऐ - [illegible]

कामेन [illegible] ; कामयेत [illegible] कामान्काम = [illegible]

कामेव [illegible] योजयेत = [illegible]

[illegible] ज्ञानदानादि [illegible]

ए ओकारगत बीज = ए, ऐ [illegible] आ [illegible] = ए [illegible] ऐ [illegible]

ए कार [illegible] ऐ [illegible] आ [illegible]

आ कार [illegible] अ [illegible]

आ [illegible] बीज [illegible]

[illegible] ए ऐ ओ औ [illegible]

(383)

... पुरुषस्य ...

चतुर्दशभुवत = 14 ... तृतीया ब्रह्म =

$4 \times 10 = 40$

230

तिथि ... प्रान्त = समन्वित =

तदेव = ... भैरवात्म = ... अनुत्तरपदानुप्रविष्टम् =

सतत ... ब्रह्म च = ... चत्वारिंशद्युतमुन्नीत्या =

तिथी = ... प्रान्तसमन्वित = ... भैरवात्मवेदवेदरूपतया =

बिन्द्वात्मके = ... हृदयम् = ... | सकलमिदं = ... 16

तत्त्वजालं = ... भैरवात्मतया उच्छलत् ...

सततं = ... बहिर्विसृज्यमाने = ...

बृंहितं ... ब्रह्म = ... → विसर्गात्मक

बहिः ... स्थितं च = ... भैरवात्मतयैकीभूतं = ...

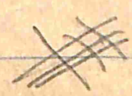
भेदात्मकं एव इदं = ... यदि व्यापकसारेण =

सर्वसर्वात्मकपद = ... प्राप्त्या =

बृंहितम् = ... इति विसर्गपद = ...

निर्णीते च = ... सततं = ... प्रवधानेन =

ہوشیاری سے



(384)

230

एवं = [illegible] जो उद्घात्मिका = [illegible] 16 बीजव्याप्तिता = [illegible]

योनिव्याप्तिस्तु = [illegible] प्रविकृण = [illegible]

प्राणबोधना = [illegible] वशीकरणाभिप्रायेण तु = [illegible]

निरूपणीया = [illegible] बाल्य यौवन स्थाविरे [illegible]

विदेहान्तर = [illegible] गहनरूपदृशा = [illegible]

चतुष्टय = [illegible] समस्तारमय = [illegible] पाञ्चभौतिकमन्तः

स्थिति प्राप्ते = [illegible] → प्रवेशनिर्गमनात्मना = [illegible]

प्राणापानरूपेण = [illegible] युत = [illegible] तृतीयं च = [illegible]

पुर्यष्टकात्म ब्रह्म = [illegible] बृहत्त्वात् च = [illegible]

Very vast endless Void

प्रस्थम = [illegible] प्रत्र च यत = [illegible] हृदय = [illegible]

प्रत्यात्म = [illegible] त स्ते = [illegible] सर्वसत = [illegible]

शरीर-प्राण-पुर्यष्टक शून्य = [illegible] तुर्यप्रान्तिरूपा = [illegible]

बोधात्मक = [illegible] शिववीज = [illegible] सातिशय = [illegible]

घनता = [illegible] क्रमप्राप्त क्रमिक = [illegible]

(385)

231
232

तथा भावा = ... बाह्यात्मभूतात्म =

x plural

प्रतिवाहकात्म = ... अन्तरात्म = ... परमात्मव्यपदेश्या:

प्रमातरि ... एतत् भैरवात्म हृदयम्

प्रविष्टप्रायोऽत्र = ... → सर्वा = ... प्रमातृभूमी

अनवच्छिन्नाकामित = ... x | ...

अन्तर्वाह्यकरणं ... त्रयोदशकं =

प्रकाश ... संकुच = ... चतुर्दश =

→ चत्वारिंशद्भुत = 40 ... 36 + 4 ... 40 = ... → द्विगुणितमप्रीति = 40 + 40 = 80

भुत → द्विगुण ... 80

तिथय: = $\frac{\ }{15}$ → पञ्चदश = 15 |

(80+15+11+6 = 112)

रुद्रा → रुद्रा (... 11) ... → एकादश = ... युक्ता: = (समन्वित)

कालास्त्रय: ... $6 = 3 \times 2$

... सेव ... 112

द्वादशोत्तर = ... 112 शतमसंगत = ... स्थूल सूक्ष्म

100

परद्वारसकार स्पन्द ... मन्त्रवीर्य =

विकास = ... स्फुरीकृत ... विसर्गविश्लेषण = ...

union agitation

सघट्टक्षोभात्मिकां = ... शरीरसत्तामेव =

भैरवरूपां = ... परिशीलयेत =

... 112 ...

386 युगपत = * simultaneously. विवेक =

386 चतस्रो = 4 मधुरकषाय =

232
233

सुस्थ = मधुसुरासवादि =

तत = तिथी-प्राप्तम् = — Substance

उभय विसर्गात्म = द्रव्यसमन्वित =

→ तदिन्द्रियद्वयान्तवीर्ति — वही मीठा दो — ordinary, beautiful, ... — मोतके कुण्ड

कुसुम प्रादुर्वाच्य = मल =

तृतीय ब्रह्म = — जगदिन्धनदाहदोष =

भस्म = भैरवात्म =

→ भैरितावारम =

हृदय चं = उभयविसर्ग सविसर्गात्म =

प्रीति रसाप्रयोगो भयरूपं =

तदेतानि = द्रव्याणि = Substance

यथालाभं = only with ones married wife. भेदमल =

विलापकानि = तथा हि =

दृश्यते = समाये = क्रमः =

اسی بات کو سمجھ کر

(387)

आदित्य = अंकोत्पादिका = سدا رہنے

شعاعیں — समुल्लसन्ती = اٹھی ہوئی — उठती

Urdu note (top right): پیدا — یعنی زبانی میں

233 / 235

फलपर्यन्ता = پھل دینے تک — संसार बीजांतरो = سنسار کا بیج

प्रथमाङ्कुर स्फीति = آنکھ کو —

सा च =

प्रफुल्लतान =

प्रीति =

جو اوپر والے ان دونوں میں سما رہے ہیں

स्थिति = अवेत =

इति प्रबुद्धे : कल्पिततर =

बालाव प्रीति च = कल्प्यमानापि च =

तेषां स्वहा = वैचित्र्येणैव =

ان کو سب میں وجود یا ..... ایک .....

फलान्ति = प्रतीतं एव = वैचित्र्यकल्पनादेव =

सा = बहुविधा धर्मादि = प्रकट =

निर्दिष्टया = प्रतिभासे =

प्रतिस्फुरं च = अन्यान्यस्पर्शा =

यथोत्तरम् =

* ..... — ..... — .....

ان رنگوں ..... کی

(388)

235
236

सेयं = [illegible] सदा = [illegible] क्रियते = [illegible] विशोधिता = [illegible]

भवेत् = [illegible] तदा = [illegible] निरस्त पापा च [illegible] कलङ्कोः [illegible]

भैरव हृदयानुप्रविष्टो भवेत् = [illegible]

इति सर्वथा = [illegible] एतद्भ्यासे [illegible] यतितव्यम् = [illegible]

श्री तिलकशास्त्रेऽयं भावः = [illegible]

श्री भगोशिखायामपि उक्तम् = [illegible]

वीर व्रतं = [illegible] च प्राभिनन्द = [illegible] यथा योगं तथा = [illegible]

इत्यादि। श्री सर्वाचारेऽपि = [illegible] अभ्यस्ते उपकृतभोग करहृण: [illegible]

अज्ञान = [illegible] आच्छादित = [illegible] मूढ: = [illegible] ततः सृष्टिश्च - = [illegible] संहृति [illegible]

मन्त्रा = [illegible] मान्वर्णात्मका = [illegible] सर्वे वर्णाः सर्व शिवात्मका [illegible]

पेय अपेयं = [illegible] स्मृता आपो = [illegible] भक्ष्य अभक्ष्ये = [illegible]

पार्थिवम् = [illegible] सरूपं च विरूपं च = [illegible]

तत्सर्वं तेज उच्यते = [illegible]

स्पृश्यास्पृश्य यः = [illegible] स्मृतो वायु = [illegible]

छिद्रम् [illegible] आकाश उच्यते = [illegible] नैवेद्यं च = [illegible]

निवेद्यं च = [illegible] गृह्यते च = [illegible] यतः [illegible]

सर्वं = [illegible] पञ्चात्मकं [illegible]

कश्चित् = [illegible] इच्छाम् उत्पादयेत् [illegible] न तेन रहित [illegible]

श्रीचीरावलिद्वादि = [illegible] अत एव अभिप्राय =

[illegible] क्रमस्तोत्रे [illegible]

सर्वार्थ = [illegible] संक्षेप = [illegible] संयमस्य = [illegible]

यमे = [illegible] यन्तु = [illegible] जगतीयमस्य = [illegible] युक्तं वपु = [illegible]

महामास [illegible] विलास [illegible]

सक्त [illegible] संकेतं [illegible] प्रणीमासि [illegible] कालीन

राजात्

व्याख्यात च = [illegible] तन्मया = [illegible] तट्टीकायामेव = [illegible]

क्रमकेलौ = [illegible] विस्तरतः = [illegible] | अत एव = [illegible]

षडर्धशास्त्रेष्वेव = [illegible] क्रियाप्रायो = [illegible]

नियन्त्रणारहितत्वेन = [illegible] पूजा = [illegible]

तत्वार्थपूरणायैव [illegible] सर्वद्रव्यलाभात = [illegible]

~~[illegible] = [illegible] सकृद्वा = [illegible]~~

~~पवित्र [illegible]~~ [illegible]

क्रियायाः पूर्णार्थम् = [illegible] योगाज्ञा [illegible] पूर्णाय च = [illegible]

चेत् = [illegible] सकृद्वा = [illegible] यः कुर्यात् = [illegible] स पवित्र = निष्फलः

इति विज्ञानक्रमो विस्तरत उक्तः [illegible]

जातीनां च = [illegible] ब्राह्मणादीनां = [illegible] नास्ति =

स्थिति = [illegible] कल्पितत्वात् [illegible]

उपदेशान्यङ्गतेति तु = [illegible] दुर्बुद्धिन् = [illegible]

पप्लुव = [illegible] प्रत्याययेत = [illegible]

स इति च भगवता = [illegible] मुकुरसंहितायां = [illegible]

(३७) विस्तरतो = [illegible] निर्णीतम् = [illegible]

236/237 इह = [illegible] प्रयत्नसिद्धमेव = [illegible]

~~[illegible]~~ = [illegible] ~~निर्णीतावत्~~तुदश = [illegible]

स्वरेभ्य = [illegible] औकार - "औकार" म[illegible]

तिथीशान्तो: = [illegible] विसर्ग: = [illegible]

तृतीयं ब्रह्म = [illegible] ष - ह मध्यगम = [illegible] "स" [illegible]

एतत बीजं = "सौ:" [illegible] वस्तुतो = [illegible] विश्वस्य = [illegible]

तथाहि = [illegible] "सौ:" [illegible] 'स' [illegible]

यत्किंचित = [illegible] सत = [illegible] पार्थिव प्राकृत =

मायीयरूपं = [illegible] भासते = [illegible] 'स' [illegible]

तत = [illegible] इच्छायां = [illegible] ज्ञाने वा = [illegible]

[illegible] 'स' [illegible]

क्रियायां वा = [illegible] औ [illegible] पतितमपि = [illegible]

सर्वात्मकत्वात = [illegible] त्रिकरूपं = [illegible]

परत्र = [illegible] शिवपदे = [illegible] अधिकरण [illegible] विसृज्यते = [illegible]

सर्वं च = [illegible] शिवपदात = [illegible] विसृज्यते = [illegible]

इत्यं विरतमेष एव = [illegible] प्रबन्धो = [illegible]

[illegible]

निर्विकल्पक : — [illegible] विकल्पितः [illegible]

(391)

क्रमशःप्राप्ति प्रभृतिरेव कार्य भूत — [illegible]

237
238

भूत एककारी भवति = [illegible]

एककारी = [illegible] भविष्यतीति [illegible]

वर्तमानकालत्रयानुसंधितो = [illegible]

भेद पारमार्थिकतयैव = [illegible] विसृष्टः = [illegible]

इति प्रत्युत = [illegible] मोक्षमय प्रावभासि =

सदैव = [illegible] दैवदग्धानां = [illegible] unfortunate ones

संसार भयभस्म, महाटवी = [illegible]

सपना = [illegible]

जलात् = [illegible] सृजित् = [illegible] ज्वाला = [illegible] जटिल = [illegible]

वडवावह्नि = [illegible] निवह, [illegible] सुधाधाम्नः = [illegible]

पूणाढ्क = [illegible] भयसदन = [illegible] दुमोल = [illegible]

विकल्पात् = [illegible] ऐश्वर्य प्रसरः [illegible]

संसृतिदरः = [illegible] कियत् = [illegible] चित्रोक्ति [illegible]

द्रुतविधि विकासात् = [illegible]

प्रसरति [illegible]

ईश्वरप्रत्यभिज्ञायामप्युक्तम् = [illegible]

सर्वो ममायं विभवः = [illegible] इत्येवं = [illegible] परि[illegible]

विश्वात्मनो = [illegible] विकल्पानां [illegible] प्रसरेऽपि = [illegible]

388/391 महेशतो [illegible]

यथा च = [illegible] आकृतिमध्य एव = [illegible] चतुर्भुज त्रिनयन = [illegible]

पूर्णरूपमस्य = [illegible] आकृतयो = [illegible] देव्यमध्य [illegible]

→ सुरासवाद्या = [illegible] बलादेव = [illegible] तो = [illegible] संज्ञो = [illegible]

समाधिप्रायपर्यन्त = [illegible] ~~लिप्यवदारणीव~~ = [illegible]

~~सर्वो~~ = [illegible] ~~प्रवीणभूमिः~~ = [illegible]

ان دیوتاؤں کی آکرتی اصل میں [illegible]

~~इत्युक्तवैभोगित्वेयोगम्~~ = [illegible]

एवं = [illegible] सर्ववर्णमध्यादि = [illegible] प्रियवर्णे [illegible]

یہ بھی اسی طریقے سے [illegible] کی ہدایت کرتا ہے

तथाहि = [illegible] सकारस्तावत् = [illegible] स

परमानन्दामृतस्वभाव = [illegible] उल्लसन सः [illegible]

समस्तं = [illegible] वर्णजालमाक्षिप्य = [illegible]

उल्लसति = [illegible] यत् यत् सत्य सुख = [illegible]

सम्पत्सत्तादीनां = [illegible] पारमार्थिकं वपुः = [illegible] (उपलक्षयम्) [illegible]

→ सीत्कारसमुल्लास = [illegible] प्रोपकम्प = [illegible]

वराङ्गसंकोच = [illegible] विकासोपलक्ष्यम = [illegible]

[illegible]

(३९३)

तदेव हि = सत्यादिनाम = मायीयं

असतो रूपं = तथा हि =

परहृदयग्रहणेङ्गित = निपुणा =

गगन गवय गवाक्ष = (ग॰ व॰) अनन्तपदे =

प्राङ्ध्यात = भाविनोऽपि वर्णा

गकारादिमात्रात एव = 'ग' ... 'स'

अचिन्वते = तावति = सत्यपदेऽनुप्रवेशात =

एवमेकैकस्यैव = वर्णस्य =

वास्तवे = वाचकत्वम् = यथोक्तम् =

शब्दार्थ प्रत्य प्रत्यानाम् इतरेतराध्यास =

संकरः = तत = प्रविभाग = संयमात =

सर्वभूत = रुतज्ञानम् =

इति अत एव = प्रायप्रोऽमी = वर्णा 'अ' 'च'

अकार- चकाराद्या = ~~एकवर्णात्मानो~~ =

निपात = विभक्त्यादयो =

मायापदेऽपि = पारमार्थिकमिव =

प्रमातपदलीनमिदन्ता = पराङ्मुख =

लिङ्गादि वचन रहितम्

असत्त्वमत = तत तत =

الگ الگ ان دونوں کا آکاش کوئی مطلب نہیں۔ بلکہ یہ گگن بنتا ہے لیکن سوکھم شبد ان کا الگ "गगन" X

(394)

निषिध्यमान = discard [illegible]   समुच्चीयमान = accept [illegible]

250/251 प्रतिसंहारूप = [illegible]   विषेधसमुच्चयादिकम = [illegible]

प्रथम = [illegible]   अभिदधाति = [illegible]

ब्रहुरूत = [illegible]   भावस्तत्र भवतो = [illegible] →

भर्तृहरे = [illegible]   यदाह = [illegible]

पदम = [illegible]   अद्यो = [illegible]   पृथक = [illegible]   साकाङ्क्षमि = [illegible]

सर्वपदैः [illegible]

इति वाक्यविचार = [illegible]   तथा च = [illegible]

सर्वाद्यम पदम् पृथक [illegible]

वेदव्याकरणे = [illegible]   पारमेश्वरेषु = [illegible]   शास्त्रेषु च

मन्त्रदीक्षादि प्रबन्धेषु = [illegible]

निर्वचन =

अक्षरवर्ण साम्यात = [illegible]   निर्वचनमुपलब्ध = [illegible]

ततः तु = [illegible]   न रूढे = [illegible]   वियातवशादाति = [illegible]

न = [illegible]   लोक पर्यन्ते = [illegible]   तदेव = [illegible]

सकार = स [illegible]   इदम् = [illegible]

औकारविसर्गावपि = [illegible]   औ   व्याख्यातो = [illegible]

तदुक्तं श्रीपूर्वशास्त्रे = [illegible]

(३९५)

सांगेन = ... स ग्रितयं = ... व्याप्ते = ... त्रिपदलोम = ...

चतुर्थकम् = ... (...) सवीतीतं = ... विसर्गेण ...

... "स" ... بزرگ سے ...

२५१
२५२ तथा = ...

शिष्येणापि = ... तदा ग्राह्या = ... यदा संतोषितो = ...
गुरुः ...

शरीर = ... द्रव्य = ... विज्ञान = ... जाति = ... कर्मगुणादिभि ... 3

भेदिता तु यदा = ... गुरुणा = ... हृष्टचेतसा = ... तदा = ...
तेने सिद्धिप्रदा ... न सन्यथा = ...

इति । अन्यत्रापि = ... वीरा ...

एके = ... सृष्टिमयं = ... बीजम् = ...

अत एव = ... आलेख्यं = ... पुस्तके = ...

इति नियम = ... श्रीपूर्वशास्त्रेऽपि = ... पारम्पर्यक्रमागतः

वाम = ... जङ्गाम ... "औ" ... वितो = ... जीवः = ...
"स"

इत्यपि वक्ष्यते = ... यथा न्यग्रोधबीजस्थः ...

एतत न योगिनि जातो →

तदेतत् = ... भैरवात्मनो हृदयं = ... "सौ" ...

~~मालिनीविद्या~~ = ... नकारात् = ... न ~~...~~ = ...
→ न ... योगिनि जातेः

अकाराद्यो गित्याख्य = ... विसर्गपाते = ...

जात = ... → प्रादुर्भूतप्रमातृभावो = ...

रुद्रो रोधको = ... Audible ... श्रावकश्च = ... पाशानां = ... 3

स एव नो = ... पुरुषः = ...

एतत् = [illegible] स्फुरं = [illegible] लभते = [illegible] न तु [illegible] = [illegible]

(319) नापि = [illegible] योगिनीगर्भः = [illegible] संभव: = [illegible]

243

सद्यो योगमे = [illegible] भैरवैकात्मये = [illegible]

स एव = [illegible] मोक्षो = [illegible] निर्णीत: = [illegible]

तं = اسکو ददातीति = [illegible] | इति यो = [illegible] लभते = [illegible]

स एवंविधो [illegible] न अन्य: = [illegible]

यश्चैवंविध: = [illegible] स स्फुरं लभते = [illegible]

एवम् हृदयमेव लभते = [illegible]

सद्योभोगविमोक्षदमेवति = [illegible] सर्वतो नियम: = [illegible]

मन्त्रा-वर्णभट्टारका = [illegible] लौकिक = [illegible]

पारमेश्वरादिरूपा = [illegible] मनन त्राणरूपाः = [illegible]

विकल्पसंविन्मया: = [illegible]

मुद्राश्च = [illegible] → सकलकरचरणादि = [illegible]

करणव्यापारमय्य: = [illegible] क्रियाशक्तिरूपा = [illegible]

तत्कृतो गण: = [illegible] समूहात्म: = [illegible]

परप्राप्ति एकरूप: = [illegible]

स्वस्या... = [illegible] प्राण-पृथिव्यादि देहस्य = [illegible]

(397) 241

य प्रवेशः = [illegible] → भवति = [illegible]

परस्य... = [illegible] अनुप्रवेशेन = [illegible]

पारतन्त्र्यात्मक = [illegible] जडतातिरोधानेन = [illegible]

स्वतन्त्रकृत = [illegible] अनुविद्ध = [illegible] प्रमातृतोदय [illegible]

तथा = [illegible] स्व = [illegible] स्वभावे = [illegible] पदार्थस्य = [illegible]

द्ध्यासीति = [illegible] ⟷ स्वादृ = [illegible]

ईशा = इच्छाद्या = [illegible] कियत्ता = [illegible] प्रसृति तया = [illegible]

प्रवेशः = [illegible] तदेव = [illegible] लक्षणं [illegible] यत्रः = [illegible]

तथा = [illegible] कृत्वा [illegible] य = [illegible] उदेति = [illegible] सोऽस्य = [illegible]

बीजस्योच्चार = [illegible] ऊर्ध्वे चरणं [illegible] स्थितौ = [illegible]

सत्याम् [illegible] परस्य = [illegible] ~~प्रकारस्य~~ = उच्चारत [illegible]

यथैतत् = [illegible] तथा = [illegible] निर्णीतं = [illegible] बहुधा = [illegible]

सद्य = [illegible] इत्यनेन = [illegible] स = [illegible] ~~अजस्रत~~ [illegible]

इत्यनुप्रवेशः = [illegible] सूच्यते = [illegible] तन्मुखता = →

→ तत्परं रूपं = [illegible] प्राधान्यमेति = [illegible]

245 (898)

न त. = [illegible] फलूनामिव = [illegible] तद्रूप = [illegible]

प्रत्युत = [illegible] तिरोधत्ते = [illegible]

मत एव = [illegible] मुहूर्तम् = [illegible]

त्रैकाल कलित त्वेऽपि = [illegible] परकलनापेक्षया = [illegible]

उन्मेषमात्रे = [illegible] स्मरति = [illegible] समावेश्योन स्मरति

अनुसंधत्ते = [illegible] स एव = [illegible] व्याख्याते = [illegible] मन्त्रमुद्राणां = [illegible]

संमुद्धाति = [illegible] स्वात्मन्यैकीकरोति = [illegible] समुदयते = [illegible]

कथं = [illegible] चुम्बकेन = [illegible] विश्वस्पष्टीकेच = [illegible]

ध्यानेन [illegible] रूपेणाभित = [illegible] सर्वतो = [illegible]

मुद्रित = [illegible] मुद्रण = [illegible] कृत्वा = [illegible]

तत्त्वधारणे = [illegible] स एव [illegible] प्राकस्पन्दमुदित = [illegible]

स्वविवृत तत्त्वमय = [illegible] शिवस्थानसंधायके = [illegible] 3.

स = [illegible] सर्वेवं = [illegible] करोति = [illegible] नतु = [illegible]

नैरन्तर्य [illegible] पाषाणादि [illegible] यदतीत = [illegible]

यच्चानागत = [illegible] सत्यथीरूप = [illegible] प्रागन्याभावात = [illegible]

उतरत्वपि = [illegible] स एव = [illegible] कथयति = [illegible]

कथापर्यन्तता = [illegible] नयति = [illegible] कथं — सर्वसंकल्पनात = [illegible]

कथं = [illegible]

[illegible]

पृष्ठः = [illegible] [illegible] — तत्र = यस्य [illegible] = [illegible]

स = [illegible] तथा = [illegible] यदेव = [illegible] किल = [illegible] [illegible] = [illegible]

तत्तदेव = [illegible] [illegible] = [illegible]

यथोक्तम् = [illegible] — स्थान [illegible] = [illegible]

यथेच्छाभ्यर्थितो = [illegible] धाता = [illegible] जाग्रतो = [illegible]

सोमसूर्यादये = [illegible] कृत्वा = संपादयति देहिना = [illegible]

एका हि असौ = [illegible] स्मरणात्प्रेक्षणाद्वापि = [illegible]

तावानेव = [illegible] वर्तमाना = [illegible] नस्तो = [illegible]

भूतभाविष्यती = [illegible] यथोक्त = [illegible]

प्राग्भवतः = [illegible] [illegible] कस्य = [illegible] पुनरिदं = [illegible]

जानाति = [illegible] करोति = [illegible] इत्यादि संकोच = [illegible]

प्रसाद = [illegible] सकद्विभातत्वत = [illegible]

~~सतु एवो~~ = [illegible] → भूताद्यपेक्षया = [illegible]

वर्तमानकालस्य = [illegible] तदभावे = [illegible] वस्तुतो = [illegible]

~~[illegible]~~ = [illegible] अकालकलितत्वमेव = [illegible]

वस्तुतत्त्वम् = [illegible] इति हि उत्तमं सकृते = [illegible]

स एव तु = [illegible] कालप्राक्मेव भासयाति = [illegible]

चित्रामं = [illegible]

(400)

किंच = [illegible] जाग्रत = [illegible] कासिंमश्चित = [illegible] घटिका = [illegible]

अभिमताऽपि = [illegible] तस्यामेव = [illegible] प्रभातः = [illegible]

246 चित्रताजुषः = [illegible] [illegible] दिन = [illegible] प्रहर

247 वैचित्र्यमाप्तं [illegible] चिन्वते = [illegible]

इति बीत्या = [illegible] प्रकृष्टो = [illegible] → हरः

→ संहारोऽकुलाख्यः = [illegible] ततः = [illegible] प्रबोधोत्तरम् = [illegible]

अभिप्रेते = [illegible] → प्रेत शब्द वाच्य = [illegible]

→ सदाशिव तत्व = [illegible] निविष्टः = [illegible]

ज्ञानशक्त्याभिमुखेन = [illegible] देवतायाः = [illegible]

→ इच्छाया रूपं = [illegible] → रूपाणां = [illegible] उच्चारणं — कलनम् = [illegible]

→ साक्षस्य = [illegible] → सेन्द्रियस्य = [illegible]

रूपस्यादने = [illegible] → भक्षणमेतदेव च = [illegible]

→ सातत्यगमने = [illegible] प्रसादेऽघ = [illegible] पश्यति कृत्वा = [illegible]

इति = [illegible] = [illegible] पश्यति = [illegible]

एतदुक्तं = [illegible] भवति = [illegible] →

यदिदं दर्शनं = [illegible] नाम = [illegible]

तत्सर्वैतरङ्ग प्रायम् = [illegible] तन्मयाख्यं → [illegible]

अकुलमतो = [illegible] आधिपत्यकिमतः

आधिपत्यस्य, अनन्तमहिमसातन्त्र्ययोगात् (भवति)

सैवेद्या = [illegible] स्वातन्त्र्यगता = [illegible]

इदयंगमवस्तव = [illegible] ईषद स्फुट = جو تھوڑا [illegible]

भेदाभावसमनस्य = [illegible] स्मर

'स्मरण' [illegible]

ज्ञान प्राकट्यात्मकतामिति =

तत्ज्ञान प्राप्ति = [illegible] विप्रोज स्पन्दनरूप: = [illegible]

समस्तेन्द्रियाणां = سب اندریوں [illegible] न हीरोधनम् = باہر جانا بند کرنا [illegible]

एतदेव = یہی सातत्यगमनम् = [illegible]

व्रत च = [illegible] द्राविणं = [illegible] तदेव = [illegible]

भक्षणम् = [illegible] एतेसव = [illegible] वमनभक्षणे = [illegible]

दृष्टान्तस्य = [illegible] → सर्व प्रथिकमयत्वात = [illegible]

प्रथायांश्च = [illegible] तथाविध = [illegible] वाविध्ययागात = [illegible]

अनिश्चितोभयालम्बनत्वमपि = [illegible]

स्थाणु = [illegible] पुरुषादावपि = [illegible]

असंदिग्धमेव = [illegible] एव दुष्कृतमयी = [illegible]

परमेश्वरप्राप्ति: = [illegible] एव तु प्रसौ = [illegible]

परापररूप स्मृति प्राप्तिमान् = [illegible]

भैरव = [illegible] इत्याह = [illegible]

→ प्रहरद्वयेत्यादि = [illegible]

तदानीं [illegible]

एव तु = [illegible] स्मरन = [illegible] जायते = [illegible]

ध्यानमस्थो जायते [illegible] तदानीम् [illegible] इदानीम् [illegible]

व्योम = विद्यते = यत्र = तुरीयके =

(405)

प्रास्य च = तत्प्रमातृरूपतामादधावः

प्रहरोपलक्षित = दर्शनारण्य रूप =

यदा = पुनः पुनः = بار بار परामृशति =

स्मरत्यपि च = प्रागवत = साक्षात्पश्यत्य

संदिग्धमाकृष्ठो = मनु संधानकाले

स्वप्नप्राप्तिभिः =

इति संबन्धः = | तावद्धि = तदपि =

स्वप्नमेव = इत्युक्तम =

एवं तु = "प्रपरात्मकं विकल्पप्राप्तियुक्तः" =

इत्युच्यते = त्रयेणति =

पश्यन = स्मरश्च = व्योमस्थो =

यदा = पुनरपि = पश्यति = तदनेव =

प्रहरोपलक्षित = दर्शनत्रयेन = इदमीद तदीनतत्व

प्रमातरो ... परमेश्वरात् ... (417, 418)

प्रमातृमध्य: = پرماتر بیچ میں

तावत् = وہ تک

प्रमातृवादेव = ... सिद्धा: =

प्रमात्रन्तर = ... विषयसिद्ध्यनपेक्षा: =

तद्रूपैकात्म्यलक्षणेन = ... योग न श्रेय: =

तथा = ... गृहीत = ... स्वातन्त्र्यांशा: = ... महता =

बाह्येन्द्रिय = ... वृत्त्यपेक्षया = ... ननु इन्द्रियादि ... न देश्यता

सर्वत्राप्रतिहतप्रसरत्वे = ... काले =

यासो = ... ता = ... अपत: = ...

करणादोषितय: = ... तासपि = وہ بھی

सिद्धा एव = ... विश्वत्र = ... - सर्वत्र

पाशावबद्धासन् = ... यन्त्रणा = ...

निरपेक्षतयैव = ... सरभस प्रवृत्तिरूपत्वात् - सिद्धा: =

वीरा - ... बुद्धिकर्मेन्द्रियाख्या: = ... तेऽपि = وہ بھی

(बुद्धि कर्म) सिद्धा एव = ... तेषामपि च = ... ईश्वरा: = ...

कादिवर्णात्मन: = ... क ... तेऽपि = ... सिद्धा: = ...

ता हैं → तत: = ... क ... = ... sprout ...

248/249

(404)

तत् तत् = [illegible] द्वेषरागादि = [illegible] चित्तवृत्ति रसमय = [illegible]

प्राप्तिसमूहः = [illegible] सोऽपि = [illegible] सिद्ध एव = [illegible]

प्रेत एव = [illegible] बलवान् = [illegible] एते सर्वे = [illegible]

सम्भूय = [illegible] पराश्रयो = [illegible] → परस्य [illegible]

मानमयीम् = [illegible] प्रसौ = [illegible] पर = [illegible] इति = [illegible]

विकल्पात्मिका = [illegible] सिद्धिम् = [illegible]

कामशरादीनाम्

यद्वा = [illegible] समीहित = [illegible] फलमेव = [illegible]

प्रेहे = [illegible] ददाति = [illegible] → प्रयच्छन्ति = [illegible]

प्रज्ञातार्थक्रिये = [illegible] ज्ञातार्थक्रिये च एव = [illegible] प्रमितिमये योगिनि

प्रमाणमये जीवे

एवं क्रमेण = [illegible] विकल्पयोग = [illegible] परामर्शयोग :

साधकः शास्त्र

किं बहुना = [illegible] ये मन्त्रिणोऽपर~~कल्प~~ = [illegible]

मन्त्रसिद्धा = [illegible] प्रापि = [illegible] ~~साधयन्त्यपि च~~

साधयन्ति [illegible]

→ तेऽपि = [illegible] एतेन = [illegible] हृदयेन = [illegible]

सात्म्ययन्ति = [illegible] → जीवन्मुक्ताः

एतेन विना = [illegible] पारमार्थिकी = [illegible]

सिद्धिः = [illegible] न भवतीति = [illegible] भावः = [illegible]

२५१ यत्किं किंचिद्‌ इत्यादि [illegible] तथा = [illegible] ये = [illegible]

२५२ —

(ज्ञानेन) ज्ञानेन

सिद्धाः = [illegible] साधयन्ति च = [illegible] ये च = [illegible]

योगेण.

अणिमादियोगा

येतस्यान्त = [illegible] अणिमादियोगात् = [illegible]

तेऽपि = [illegible] अनेनैव = [illegible] ~~ज्ञानेन~~ =

नहि = [illegible] एतत हृदयानुप्रवेशं विना = [illegible]

व्यावहारिक्यापि सिद्धिः = [illegible] यतो = [illegible]

भैरव = [illegible] विश्वात्मनि = [illegible] तन्त्रे = [illegible]

क्रियाकलाप = [illegible] यत किंचित = [illegible]

सिद्धि जाते = [illegible] तदत एव = [illegible]

एवमपि = [illegible] परमेश्वर एव = [illegible]

हृदयात्मा = [illegible] स्वरूपतया = [illegible]

प्रतिप्रतितय = [illegible] वृंहित = [illegible] सततोदयमान =

संस्थियमान = [illegible] अपवन्त = [illegible] संविद् = [illegible]

एकघाहुली = [illegible] परिकल्पितः मन = [illegible]

[illegible]

एवं

~~अहं सद्भावेनोचितम्~~ = [illegible] अख्यातिरूपम् : [illegible]

प्रपञ्चमायामलम् [illegible] अपञ्च च = [illegible] →

भावना = [illegible] → भेदारम्ये सारे = [illegible]

लुम्पति = [illegible] सततरूद्धम् | ~~एवमहम्~~ [illegible]

एतत् हृदयमण्डले/ऽप्य च = [illegible] (△) [illegible]

चत्वार्यण्डान्येव : [illegible]

लोप → संकोच = [illegible] → तद्योग = [illegible]

→ एवमपि [illegible] विद्यामायाभयामी : [illegible]

परमेश्वर = [illegible] एकएव = [illegible]

चिद्घन = [illegible] यथोक्तम् = [illegible]

दशानां तु → [illegible] परादेवी = [illegible] स्मरणच = [illegible] परापरा

विकल्पातु अपरा = [illegible] देवीत्रिकाप्रतिभया: [illegible] प्रभु: [illegible]

मायाविद्या = [illegible] इमे = [illegible] तस्य माया = [illegible]

मायातु चतुरण्डिका = [illegible] विद्यास्वरूप = [illegible]

संवित्

अनुग्रहमयी [illegible] तस्य प्राणा - = [illegible]

तस्य शिवस्वरूप [illegible]

आदौ तु = [illegible]   योगप्राधान्यं = یوگ پردھانتا سے

तदा = تب   श्री पूर्वादि शास्त्र निरूपिते = [illegible]

पूर्वमेव = پہلے   व्रतादि = ورت دھارن   कृत्वा = کر

अस्य अस्योच्चारे कृते = [illegible]

इत्यादि =   स्पष्टमेव = [illegible]   व्याख्येव =

यतो = [illegible]   इष्टकार्येषु = [illegible]

नियतिपरतन्त्री = [illegible] — क्रियाकलापम् =

नियतमेवाक्षिपात = [illegible]

योगिनामपि हि = [illegible]   नाडीचक्रकरण = [illegible]

भावना = [illegible]   संवेदनयुक्तया = [illegible]

नियम एव = [illegible]

अस्येदानीं = [illegible]   त्रिकार्थस्य = [illegible]   यदुक्तं =

अस्य त्रिकार्थस्य इदानीं यदुक्तं [illegible] "कुलात् परतरं त्रिकम् इत्यादौ सर्वोत्तरमनुत्तरत्वं" तत् निरूपयति

कुलात्परतरं = [illegible]   त्रिकम् = [illegible]

इति = [illegible]   सर्वोत्तरमनुत्तरत्वं = [illegible]   तत् निरूपयति =

अष्टमण्डल = [illegible] च [illegible] यावत् =

वेत्ति = جانتا ہے   तत्त्वतः = [illegible]

स सिद्धिमाग्भवेत् = [illegible]   नित्ये = [illegible]   स योगी = [illegible]

स च दीक्षितः = [illegible]

मण्डल → देवताचक्रम् = [illegible]   अपश्यन्नपि = [illegible]

→ पापाप्रमलकोऽपि = [illegible]   चर्यानिष्ठादिना = [illegible]

मण्डलानि → [illegible]   शरीरनाडीचक्र = [illegible]

पद्मचक्रकराणि = [illegible]   योगाभ्यासेनासाक्षात्कुर्वन्नपि = [illegible]

त्रिशूलाब्जादि = [illegible]   मण्डलमदृष्ट्वापि = [illegible]

नात्र = [illegible]   मण्डलादि दीक्षापयोगः = [illegible]

एवमेव = [illegible]   कश्चित् = [illegible] → परप्राप्तिपातानुगृहीतो =

वेत्ति यः = [illegible]   एतज्ज्ञानमेव = [illegible]

हि = [illegible]   दीक्षा = [illegible]   कान्याऽपि [illegible]   दीक्षा [illegible]

अतएवं = [illegible]   सर्वं = [illegible]   जानन् = [illegible]   विमुना = [illegible]

भैरवमनुस्मरेण = [illegible] दीक्षितोऽस्ति एवं = [illegible]

स्वयं = [illegible] गृहीतमन्त्रश्च = [illegible]

इत्येतद्द्वयातिरिक्तमन्त्र = [illegible] विषयम् = [illegible]

नहि = [illegible] अस्य मन्त्रो = [illegible] हृदयमयत्वात् = [illegible]

मन्त्रमहेश्वरात् महेश्वरस्य = [illegible]

उत्तीर्णत्वात् = अस्य = [illegible]

पुस्तकेष्वलेख्यमेवेदं = [illegible]

'हृदयमिति' = [illegible]

परशक्तिपातानुग्रहादेव = [illegible]

स तल्लाभस्तत्त्वत = [illegible] इति निर्णीतम् = [illegible]

तथा यः कांक्षेदिति = [illegible]

जातिव्रत = [illegible] चर्यादिनैरपेक्ष्यमत्र = [illegible]

वेदनमेव = [illegible] हि = [illegible] प्रधानम् = [illegible]

स = [illegible] सोऽद्भुभाक् योगी = [illegible]

'योगमेकत्वमिच्छन्ति' = [illegible]

इति = यतो = [illegible] ज्ञानदानमाया = [illegible]

क्षपणलक्षणा च = [illegible]

तस्यैव दीक्षा ... चकारोऽवधारणे

→ ततश्च = ... सर्वतो = ... मन्तव्यः ... तदाह = (410)

سب طرف سے یہی بات سمجھی جائے

स एव सिद्धिभाग्योगी —

252/253 स एव ... — दीक्षितः

वित्यमिति =

एवेन ... ज्ञातमात्रेण = ... ज्ञायते सर्वशक्तिभिः

اسکو introduce کیا جاتا ہے

सर्वाभिः = ... देवताभिः = ... सर्वशक्तिभिश्च =

सर्वैरसौ = ... ज्ञायते = ... एतज्ज्ञानेनैव =

इतरापि = ... यत्किंचित् = ... ज्ञायते =

तदनेन = ... ज्ञानमात्रेण = ... ज्ञायते = ... इति

प्रागवत् = ... सर्वाभिः = ... शक्तिभिरिति

करणे = ... तृतीया =

तथा =

शाकिनीकुल = ... सामान्यो = ... भवेत् =

योगी विनापि हि = ... [...]

ॐ इति [illegible]

तदेवयस्य [illegible]

विशेषस्पन्दात्मन: = [illegible] सामान्यस्पन्दरूप: = [illegible]

प्रकृतरूप [illegible]

शक्तिचक्रेश्वरो = [illegible]

भवादिति = [illegible]

किं च = [illegible]

प्रविधितो [illegible] विधानज्ञो जायते [illegible]

यजन प्रीति = [illegible]

विधि: → क्रिया ज्ञान = [illegible] तदस्य - [illegible]

नास्ति = [illegible] स = [illegible] पशु: [illegible]

यथोक्तं = [illegible] किरणायाम् = [illegible]

पशु = [illegible] नित्य: [illegible] हि [illegible] अज्ञो [illegible]

निष्क्रियो = [illegible] निर्गुण: = [illegible] प्रभु: = [illegible] व्यापी = [illegible]

मायोदरस्थितो = [illegible] भोगोपाय विचिन्तक: [illegible]

इति = स = [illegible] पशुरिति = [illegible] अनव [illegible]

ज्ञातमात्रेण = विधाने = [illegible] → ज्ञो च = [illegible]

यस्य = स = → कर्ता ज्ञाता च = [illegible]

[illegible] (413)

विषयसंगत करणे घात = [illegible]

मायते = [illegible] योजने च = [illegible]

255 [illegible]

रस्योपूर्णमाप = [illegible] पूर्ण = [illegible]

भवतीति = [illegible] सर्वमयत्वात = (ह) [illegible]

हृदयस्य = [illegible] तथाहि = [illegible]

कालाग्निमादितः = [illegible] कृत्वा = [illegible] मायान्तं [illegible]

[illegible] — 'सत्' [illegible] (ॐ तत् सत्)

[illegible] ब्रह्मेदृगमं = [illegible] (सत्) शिवो = [illegible]

विश्वाद्यन्तं = [illegible] सत् = शिवः अनन्त तावत्ः — [illegible]

[illegible] पर [illegible] तावत्

[illegible] मतम् = [illegible] — 'मतम्' [illegible] = [illegible]

कालाग्नि —

कालाग्निधरात त्वादि = [illegible] भुवनात् = [illegible]

मायातत्त्वं = [illegible] यावत् =

ब्रह्मणः → [illegible] सकारस्य = 'स' देह = [illegible]

विश्वभुवनात = [illegible] → विद्यातत्त्वादरारभ्य = [illegible]

शिवः →

यावत् = [illegible] शिवाऽनाश्रतशान्तरूपः च = [illegible]

अनन्तस्य = "अ" [illegible] → प्रकाशस्य =

रूपः [illegible]

अन्तः = [illegible] परे = [illegible]

supreme [illegible]

२५ विसर्गात्मकं = [illegible] प्रसरात्मकम् . प्रातित्रयं = [illegible] तद्य: = [illegible]

(413) मतम् [illegible] उक्तं च = [illegible] साणैन [illegible]

२५५/२५६ इत्यादि = [illegible]

तद्-नुवर्ति = [illegible] = [illegible] यत्किंचित = [illegible]

पुरुषमाप्ती [illegible] व्यवस्थितम् = [illegible] प्रपूर्ण = [illegible]

पुरुषम् = [illegible] प्रचिरात् = [illegible]

ईश्वरे ज्ञाने = [illegible] प्रश्नुते = [illegible]

यत् किंचित् वस्तु = [illegible] व्यवस्थिते — [illegible]

विचित्रावस्थं = [illegible] तत = [illegible] हृदयबीजान्तर्वर्ति = [illegible]

पूर्णः = [illegible] भवेत् = [illegible] तदेव च = [illegible] स ईश्वर: =

२५६ श्रावम् = [illegible] । श्रणु: → [illegible] श्रृण्वत = →

[illegible] उच्चारण

प्रोणीति = [illegible] प्रणीत: → नदात = [illegible] –

परिमितो च्चारात = [illegible] मूर्धान्यो = [illegible] – ([illegible]

~~भावत्-भगवद्~~ तत चिरादेव = [illegible] प्राप्नोति = [illegible]

[illegible]

कथम् = [illegible] کس

257 तत = [illegible] चोदको = [illegible] शिवः, = [illegible]

सर्वेशः = [illegible] परमेश्वरः = [illegible] beyond [illegible] (414)

your control
Slowly

सर्वेगी = [illegible] निर्मलः = [illegible] स्वच्छ [illegible]

तृप्तः = [illegible] स्वायतन = [illegible] शुचि = [illegible]

यः = जो तत चोदको = [illegible] गुरुः = [illegible] सः शिव एव

ज्ञेयः | शिव एव = [illegible] तत चोदकः = [illegible]

सचज्ञेयो = [illegible] ज्ञातैव = [illegible] Knower [illegible] | स्वायतनः = [illegible]

→ स्वान् = 3 [illegible] ध्यान = → विज्ञानरूपान = [illegible]

भावोस्तनोमीति = [illegible] सर्वे = [illegible]

चैतद्विस्तरतो = [illegible] निरु निगमीतमेव = [illegible]

एवं [illegible] विस्तरतोऽभिधाय = [illegible] तात्पर्येण = [illegible]

निगमयति = [illegible] → सिद्धं सिद्धं हृदयबीजे साधयति [illegible]

258 यथा = [illegible] न्यग्रोध = [illegible] शक्तिरूपो = [illegible] तथा हृदय [illegible]
बीजस्थाः महाद्रुमः = [illegible] बीजस्थ = [illegible]

जगत् एतत् चराचरम् [illegible] सर्व यः = [illegible] वेत्ति [illegible] तत्त्वेन = [illegible]

तस्य = [illegible] निर्वाणगामि [illegible] दीक्षा = [illegible]
नी [illegible] भवेत् [illegible]

संदिग्धा = [illegible] → तिल- आज्य - = [illegible]
वर्जिता [illegible]

३३ = [illegible] अमृत = [illegible] तावन्न [illegible] किञ्चित = [illegible]

इत्युक्त [illegible] विश्वं च = [illegible] — विश्वात्मकमिति = [illegible]

ततश्च = [illegible] यथा = [illegible] वटबीजे = [illegible]

तत्समुचितेनैव [illegible] वपुषा = [illegible] अङ्कुरविटप = [illegible]

फलकलादि = [illegible] तिष्ठन्ति एवं = [illegible]

विश्वमिदं = [illegible] हृदयान्तः | [illegible] एवं परिज्ञानमेव = [illegible]

असंदिग्धा = [illegible] निर्वाणदीक्षा = [illegible] यथाकाम = [illegible]

येयमेव = [illegible] अकृतप्राप्ति = [illegible] ययमेव = [illegible] आत्मनो [illegible]

निर्वाण = [illegible] दीक्षा च = [illegible] शिवसद्भाव = दायिनी — [illegible]

क्रिया अपि = [illegible] दीक्षा = [illegible] श्रीमान = [illegible]

वितरेयुरपि = [illegible] एतत्परिज्ञानमेव = [illegible] तु =

तत्त्वतो = [illegible] दीक्षेति = [illegible] तत एवात्र = [illegible]

सर्वोत्तीर्णतत्त्व = [illegible] | कुलशास्त्रेष्वपि = [illegible]

आधिक्यात = [illegible] यथाहि = [illegible] तुलाद्वये = [illegible]

[illegible] ([illegible]) weight [illegible]

ऊर्ध्वमूर्ध्वं = [illegible] परिमितोऽपि = [illegible]

अत्यवनीतियोगेऽनन्तमन्तर = [illegible]

परिमाणस्य = [illegible] भवति = [illegible]

एवमुद्बोधित्वे तत्त्वेषु = [illegible] देशकालभेद = [illegible]

२८०/ संवित्संवेदनानाम = [illegible] अनन्तमेव = [illegible]

अन्तरामिति = [illegible] ~~एवमवाधिकीभवेत~~ [illegible]

एवं षट्त्रिंशतोऽपि = [illegible] 36 अधिकं = [illegible] भवेदिति = [illegible]

यतश्च = [illegible] संवेदनमेव = [illegible] दीक्षा = [illegible]

तत एव = [illegible] उक्तमेतत्संविदनुप्रविष्टो = [illegible]

वीरो वा = [illegible] योगिनी वा = [illegible]

[illegible]परसत्तासततोदिता = [illegible]

मायायां बाह्यान्त = [illegible] करणरश्मिदेवता = [illegible]

द्वादशक चक्रेश्वर = [illegible] 12 परभैरवभट्टारकात्मक = [illegible]

निर्णीत तत्त्वाहंरूपानुगृहीतेन = [illegible]

कृतदीक्षादाविति = [illegible] एवमनुत्तरपदमुत्तररूप [illegible]

परित्यागेनैव = [illegible] यथा भवति = [illegible]

तथा = [illegible] व्याससमासाभ्यां = [illegible] भूयसा = [illegible]

निर्णीतमे = [illegible] अधुना = [illegible] तु इदं = [illegible]

तत्तन्नयमुद्भयत [illegible] तावत्संविदामेकु [illegible]

[illegible]

इति = [illegible] तत्कथमस्योपासा = [illegible] तथापि = [illegible]

यानुत्तरसमयानापि [illegible] भाव्यम् = [illegible]

प्रनुत्तरत्वादेव = [illegible] सा च: कथम् = [illegible]

इत्याकाङ्क्षा = [illegible] निम्नां निर्णीतेषु ग्रन्थान्तरम् =

प्रवतारयाति = [illegible]

मूर्ध्नि [illegible] वक्त्रे = [illegible] हृदये [illegible] गुह्ये [illegible]

मूर्तौ तथैव च [illegible] न्यासं कृत्वा = [illegible] 25

शिखां बद्ध्वा [illegible] सप्तविंशति = 27 मन्त्रिताम् = [illegible]

[illegible] सौः

दिशो

एकैकं तु [illegible] शिखाबन्धं [illegible] दशानां

योजयते [illegible] तालत्रयं [illegible] पुरा दत्त्वा [illegible]

सशब्दं विघ्नशान्तये [illegible] शिखा संख्याभि = [illegible] 27 [illegible]

स जप्तेन = [illegible] तोयेनाभ्युक्षयेत्ततः [illegible]

पुष्पादिकं = [illegible]

क्रमात् = [illegible] सर्वं = [illegible] लिङ्गं वा = [illegible]

स्थण्डिले = [illegible] चतुर्दशाभिजप्तेन = [illegible] 14

कुशेन वा [illegible]

262

पुष्पेण = [illegible] आसनं = [illegible] ततः (51) = [illegible]

पश्चात ..... = [illegible]

= [illegible] = [illegible] = [illegible]

- [illegible] = [illegible]

स वीत त्वं सुसंपूर्णं [illegible] सर्वाभरणभूषिताम् [illegible]

यजेत देवीं = [illegible] महेशानीं [illegible] सम्यक् विप्राति मन्त्रताम् [illegible]

ततः सुगन्धपुष्पैस्तु [illegible] यथाशक्त्या [illegible] समर्चयेत [illegible]

पूजयेत परया भक्त्या = [illegible] प्रणामं च = [illegible] निवेदयेत

एवं यजनम = [illegible] आख्यातम् [illegible]

पुष्पादिकादि प्रपिप्रेय = [illegible] विधि = [illegible]

मूर्धादीनि = [illegible] बाह्यतया चितरूपाणि = [illegible] वस्तुतः = [illegible]

परब्रह्मरूपाभिहित = [illegible] पञ्चात्मक व्योमादि धारण्यन्त = [illegible]

सतत्त्वेष्वाधारादि सार = [illegible] → चितउन्मेष ह्रस्त्रज्ञानं क्रियारूपाण्येव [illegible]

मन्त्रालिङ्गात [illegible] यथा मन्त्री = [illegible]

अति = [illegible] तत्र = [illegible] सतत = [illegible] पञ्चकाविभागात्मकम् = [illegible]

उपक्रमोपसंहारयो = [illegible] रूपमिति = [illegible] हेतु = [illegible]

[illegible]

मध्ये = [illegible] प्रोल्लसति = [illegible] विभागत्वे = [illegible] (4/9)

263 पल्लवानाम् = [illegible] एकैकपत्राः = ایک ایک کر पञ्चात्मकाः = ایک ایک کی 5 ہے [illegible]

इति पञ्चविंशति = پچیس [illegible]

प्रत्येक = [illegible] शालिन्यादि सप्तानाम् तु प्रत्येकं = [illegible]

त्रिसंख्य = [illegible] देव्यः = [illegible] प्रत्येकमिच्छादि त्रययोगात् = [illegible]

नवात्मतो = [illegible] प्राप्ताः = [illegible] पुनरपि = [illegible]

सृष्टिस्थितिसंहृतिवशात् = [illegible] त्रैधमापन्नाः = [illegible]

इति = [illegible] सप्तविंशति = [illegible] 27 संस्थित = [illegible] 27 [illegible]

हृच्चक्रेण = [illegible] पिधाय = [illegible] → सर्वरन्ध्रपर्यन्त = [illegible]

परिकल्पित = [illegible] स्वातन्त्र्यरूपायाः = [illegible]

पराविद्युद्दिस्पर्शी = [illegible] प्राणब्रह्मरन्ध्रे = [illegible]

बाह्यरूपे रूपे = [illegible] अचर्यमाणाया [illegible]

नक्षत्रे = [illegible] सर्वविभागसारे [illegible]

तादात्म्यम् = मूलादिषु = [illegible]

केवलत्वादि = [illegible] प्रत्येक = [illegible] सर्वाणि = [illegible]

चक्रादीनि = [illegible] परस्परे = [illegible] विशेषणानि = →

तत्र = [illegible] निर्णीतमेव = ↑ [illegible]

सर्वसर्वात्मकत्व = [illegible] निर्णयेनैव = [illegible]

द्विधेयमानो = [illegible] धरायां इव = [illegible] द्विधा = [illegible]

263 ताश्च = [illegible] स्वापेक्षया = [illegible] दैशीव = [illegible] भवन्ति = [illegible]

तत्रापि = [illegible] एतदेव = [illegible] बन्धनम् [illegible]

आत्मसाक्षात्कारात्मकम् = [illegible] एतच्च = [illegible]

तालत्रयेण = [illegible] — ताला = → प्रतिष्ठा = [illegible]

विश्रान्तिः = [illegible] तत्र = [illegible] → सकारादि = [illegible]

हृदयमेव = [illegible] तत च = [illegible] सप्रादे = [illegible] →

मध्यमान्ते = [illegible] प्रादर्ने हि = [illegible] → प्रादे = [illegible]

तच्च = [illegible] मध्यमैव = [illegible] वैखरी = [illegible]

तच्छेषात्मकत्वात् = [illegible] इत्युक्तं = [illegible] बहुशः = [illegible]

एषा च = [illegible] विद्वानाम् = [illegible] →

अभेदात्मनि = [illegible] अखण्डिते = [illegible] परमात्मनि = [illegible]

खण्डनात्मक = [illegible] संकोचसार भेद = [illegible]

कल्लोलकलङ्कनो = [illegible] भ्रान्तिः = [illegible] →

अभेद मैरवाणेव तादात्म्यमेव = [illegible]

यदाहुः = [illegible] श्रीसोमानन्दपादाः = [illegible]

स्वरूप समाविष्टः = [illegible] — [illegible] स्वात्मनात्म = [illegible] विचारणे = [illegible]

(४४)

प्रियवः = [illegible] कुर्यात् = [illegible] पर [illegible] यः शास्त्रं ततात्मने = [illegible] नमः = [illegible]

263
264.

स्वमेव = [illegible] संसारि प्रतिजपं = [illegible]

तोयमित्यधिपाक विदित = [illegible] तोयमत्र = [illegible]

सर्वमेव = [illegible] हृदयद्रवात्म = [illegible]

अपरिच्छिन्नत्वात = unlimited [illegible] संकोचप्रधानत्व = [illegible]

पुष्टं = [illegible] व्याख्यातम् = [illegible] लिङ्गं च = [illegible]

इत्येतदपि = [illegible] निर्णीतमेव = [illegible]

विश्वात्मनि = [illegible] तत्त्वे = [illegible] भासि = [illegible]

क्रियायाम = [illegible] अधिकरणस्य = [illegible] कर्तृश्च = [illegible]

आसनस्य = [illegible] स्वातन्त्र्यात् = [illegible]

कल्प्यमानस्य = [illegible] स्वातन्त्र्येण = [illegible]

कल्प्यमानत्वं = [illegible] चतुर्दशेन = [illegible] आकारेण = [illegible]

तस्यैव = तस्यैव = निष्कलरूपत्वात् =

इत्युक्तमेव = सृष्टि = [illegible]

अधिष्ठितं = [illegible] तादात्म्यमयं = [illegible] हृदयं =

265 शाक्ति गुह्यामिति = [illegible] विरत्वम् = [illegible]

एतत् एव = [illegible] आसमाप्ति = [illegible] सर्वं तत्रैव = [illegible]

→ आधाराधेययोः = آدھار اور آدھے کو [illegible] परस्परैकरूपत्वात् = [illegible]

यथोक्तम् = جیسا کہا ہے

इत्यादि = وغیرہ | संपुटीकरण सृष्ट्यादिक्षान्तायां = [illegible]

प्रत्येकं = ہر ایک सर्वप्राणी = ہر ایک [illegible] हृदयबीजेन = [illegible]

परतत्त्व = [illegible] स्वोल्लासात = [illegible] संहारश्च = وکاس اور سمہار

न च = अनवस्थेत्युक्तमेव = [illegible]

सृष्टेश्च = [illegible] संपुटीकरणमुभय = [illegible]

संघट्टक्षोभानन्दरूपं = [illegible] तदुत्थयन्योपयोगोऽपि = [illegible]

कृत्वा = [illegible] एतत् = [illegible] एवं प्रतीति पोवीयमात्रे = [illegible]

सर्वतत्त्वे = [illegible] सुषु = [illegible] → प्रभेदन = [illegible]

→ सम्यगनपायितया = [illegible] पूर्णत्वे = [illegible]

सर्वत्र च = [illegible] → परमाणावपि = [illegible] यदा = [illegible]

समन्तात् = ہر طرف سے भरणं = [illegible]

(423)

→ सकीर्तनकरणं = [illegible] तावैवा = [illegible]

सुखवर्तियद्वार = [illegible] विरञ्चि । विष्णु रुद्र मन्त्र [illegible]

सदाशिवादि = [illegible] प्रमातृरूपे = [illegible]

अवयवभावे = [illegible] इत्थमेकरस सावयवित्वे = [illegible]

निर्णीचेतेव = [illegible] अत एव = [illegible]

विशिष्टाकृत्यायुधादि = [illegible] ध्यानम् = [illegible] अत्र = [illegible]

वोत्तमम् = [illegible] तस्य = [illegible] निर्मेयत्वात् = [illegible]

आरुरुक्षुरेतावत्रिकार्थे = [illegible]

अभिलाषुकस्य = [illegible] कथमारोहतु [illegible]

इति चेत् = [illegible] कस्यायमाधिभावो = [illegible]

मा = [illegible] तर्हि = [illegible] आरुरुक्षत = [illegible]

सिद्धान्तज्ञानादि = [illegible] विधिमेव = [illegible] तदुपायमेव = [illegible]

विरूपितत्तद्ध्यानादि = [illegible] संकोचमाख्यातम् = [illegible]

असंकोचितानुत्तरपदे = [illegible] हि = [illegible]

अनधिकृत एव = [illegible] एष एव = [illegible] सदोदितो = [illegible]

योगः = [illegible] गन्धपुष्पादि = [illegible] निर्णीतम् = [illegible]

265/266 यथा प्राह: [illegible] सहार्थे = [illegible] 'सह' [illegible]

तृतीया से [illegible] तत्रैवोक्तम् = [illegible]

→परस्यैव = [illegible] हृदयरूपया = [illegible] पूज्यते [illegible]

कथं = [illegible] भक्त्या — [illegible] → तादात्म्यानुप्रवेशेन — [illegible]

प्रह्वतात्मनो = [illegible] भक्त्या = [illegible] स्वयं कृतेन = [illegible]

पूज्यपूजकविभागेन = [illegible] पूज्यो हि = [illegible]

स्वयं = [illegible] स पूज्यते = [illegible] स परे = [illegible]

स्वतन्त्रचिन्मयता परमार्थ एव = [illegible]

अनुत्तर स्वातन्त्र्यबलात् = [illegible] न घटादिरिव [illegible]

जड इति = [illegible] विशेषोऽत्र = [illegible]

तदुक्तं = श्रीप्रत्यभिज्ञायाम् =

भक्त्या च = [illegible] लक्षणया = [illegible] पूजनेन = [illegible]

परे तत्त्वे = [illegible] लक्ष्यते = [illegible] सर्वक्रियास्वेवरूपता = [illegible]

प्रत्यभिज्ञानम् = [illegible] उपायत्वात् = [illegible]

लिप्यक्षरस्थेव [illegible] मायीयवर्णे = [illegible]

व्युत्पत्तौ [illegible] तस्यापि च = [illegible]

वर्णवीर्यानुप्रवेशे = [illegible]

[illegible]

एवमात्मानं = [illegible] निवेदयेत = [illegible] अन्यस्य = [illegible]

267. निवेद्यस्याभावात् = [illegible] → एवं च = [illegible] (425)

आत्मानमेव = [illegible] निःशेषेण = [illegible]

निरुत्तरपदे = [illegible] वेदयेत = [illegible] अनुत्तरसत्तानुसारेण = [illegible]

अत्र = [illegible] संभावनायां = लिङ् [illegible]

→ सततमेव मयत्वेनैव = [illegible] अवस्थिते = [illegible]

अतीहि = 3 उत्तम = [illegible] उपासानुसारेण = (उपमान) [illegible]

तु = [illegible] नियोगादावपि = [illegible] एवम् अ- ← अप्रा [illegible]

समन्तात = [illegible] सर्वत्र = [illegible] सदा = [illegible] यत ख्याते = [illegible]

पारमार्थिक पूर्ण = [illegible] शिवस्वरूप पर्यात्मिका = [illegible]

ख्याति = [illegible] तदेव = [illegible] यजनं = [illegible]

परभैरवसंविद्देवतायां = [illegible] पूजनात = [illegible]

तया च = [illegible] तादात्म्यसम्यग्गमनरूपताकरणात = [illegible]

→ सर्वत्र च = [illegible] परिमितात्मीयात्मरूप स्वत्वाविवृत्तया = [illegible]

परिपूर्णचिद्घन = [illegible] शिवप्राकट्यात्मकात्मीयरूप = [illegible]

267. परस्वत्वापादनात्मकात् = [illegible] (426)

ज्ञानाख्य = [illegible] सतदेव = [illegible]

अग्निकार्ये = [illegible] → सर्ववासनाबीजानां = [illegible]

सर्वपदार्थेन्धन = [illegible] ग्रास लाम्पट्य जाज्वल्यमाने = [illegible]

शिवसंघट्ट - क्षोभ - क्षुभित = [illegible]

परप्राक्स्यरणिस्थ [illegible] सतत समुदित = [illegible]

परभैरव महामहसि = [illegible]

सर्वाभिष्वङ्ग रूपन = [illegible] महासि हव्यपताप

हवनात = [illegible] अन्तर्दीहात = [illegible]

→ अयमेव = [illegible] अग्निकार्ये = [illegible]

विधिदीक्षा पर्यन्तोऽपि = [illegible]

नान्यः पृथक कश्चित = [illegible]

इति तात्पर्यम् = [illegible]

स्वरूपपरिज्ञाने = [illegible] मन्त्रोऽयं = [illegible] पारमार्थिक = [illegible]

दीक्षयमेव [illegible]

क्रियादाम अध्वन्हारः = [illegible] यागश्च = [illegible]

२७७ (427)

श्रुत एव = [illegible] प्रागेवोक्तम् = [illegible]

यथान्यत्र = [illegible] मन्त्रोपास्त्यादि क्रियान्तरेण = [illegible]

ज्ञानगर्भ क्रियोन्नीयते = [illegible] नैवमिहेति [illegible]

यदुक्तम् = [illegible] 'उत्तरस्याप्यनुत्तरम्' = [illegible]

इति सूत्रे = [illegible] तदेवैतदन्तेन = [illegible] Last chapter

ग्रन्थेन = [illegible] निर्व्यूढ = [illegible]

हृदयस्यैव = [illegible] यागदीक्षाक्रियारूपत्वात् = [illegible]

तस्य च = [illegible] अनन्तरत्वात् = [illegible]

श्रीसोमानन्दपादैस्तु = [illegible] स्रुक्स्रुवसंस्कारादि = [illegible]

सर्वसहत्व प्रतिपादनेनापि = [illegible]

एकखण्डतयाभिप्रायेण [illegible]

विरूपितम् = [illegible] स्रुवमादौ = [illegible]

अङ्गुष्ठरेखधूलिभेदाद्यादि = [illegible]

तद्रूपे = [illegible] युज्यते = [illegible] न किंचित् = [illegible]

नाप्युपपद्यते = [illegible] वाप्यास्ते = [illegible]

नाप्यथ रक्षापातित्वेन = [illegible]

तदुपजीवकत्वम् = [illegible] इति विनीतप्रायमेव = [illegible]

269/ किमेवमुपासायो भवति? = [illegible] इत्यवतरति = [illegible]

कृतपूजाविधि = [illegible] स्मयक् = [illegible] (428)

सम्यक् स्मरन्बीजं [illegible] प्रसिद्ध्यति = [illegible]

एवमनवरतं = [illegible] व्यवहारेष्वपि = [illegible]

बीजं स्मरन्नेव = [illegible] स्मरणादेव =

कृतपूजाविधिः = [illegible] प्रकर्षेणान्यकुलशास्त्रादि = [illegible]

शैववैष्णवान्तशास्त्रातिरेकेणैव = [illegible]

भैरवमुद्रैव भट्टारकरूपं = [illegible] समाविष्टः [illegible]

विज्ञपरसंविच्चमत्कारवशा = [illegible]

निमितिभाव = [illegible] क्रीडाडम्बरो = [illegible]

जीवन्मुक्त एव = [illegible] प्रथमोन्नयेन भवति = [illegible]

इत्यनुभव = [illegible] स्वायमावर्तते = [illegible]

न = [illegible] त्वन्यत = [illegible] किञ्चिदादि = [illegible]

"स्मरणम्" = [illegible] इत्याम् = [illegible]

270 श्रीमत शास्त्र द्वैवमव = [illegible] उपासकत्वं = [illegible]

271 (622) अनुप्रविष्टु = [illegible] वीर्य सत्तासार हृदयोऽपि = [illegible]

269
270

क्रमपूजामाहात्म्यात = [illegible] बीजे = [illegible] सम्यक = [illegible]

प्रासहृयाति

स्मरन् = [illegible] प्राप्तहृदयारण्य = [illegible]

तत्वमन्त्रवीर्य = [illegible] प्रकटेनी = [illegible]

सिद्धाति = [illegible] क्रमपूजामाहात्म्यादेव = [illegible]

तारतम्यात तत्पर्यात = [illegible] स्वयं वा = [illegible]

प्रसन्नगुरु भट्टारक वदन = [illegible] कमलाद्वा =

मन्त्रवीर्य = [illegible] हृदयात्मक = [illegible] प्रासादयाति = [illegible]

जीवन्मुक्तस्य = [illegible] भवतीति = [illegible] यावत = [illegible]

पुत्रो = [illegible] द्वारपरिवार गुरुपूजनं = [illegible] गुणं = [illegible]

खण्डनो वा = [illegible] न वा वहति = [illegible]

तत एव = महत्पादे = न्यरूपि = [illegible]

पुत्रं तु = [illegible] कुलपवीणि = [illegible] पवित्रं च =

इति चौति = [illegible] सम्यक्त्वे = [illegible]

पूजाविधेः = [illegible]

परम (45?)

तथा = [illegible] यत्रान्तर हृदये = [illegible] भाति स्वविले = [illegible]

[illegible]

यत च सर्वत्र म = [illegible] भासते = [illegible] स्फुरत्येव हि सा = [illegible]

स्वं जगत [illegible]

रासभी वा
वडवा = [illegible] स्रापि = [illegible] जन्मधाम = [illegible] यत = [illegible]

समकालं = [illegible] विकास्यैव = [illegible] संकोचय = [illegible] हृदि स्थाति = [illegible]

तथा = [illegible] उभय = [illegible] महानन्द = [illegible]

सौषुम्न हृदय अन्तरे = [illegible] स्पन्दमान उपासीत = [illegible]

सृष्टिलक्षणम् = [illegible]

ध्यायन = [illegible] स्मरन = [illegible] विमृशन = [illegible] कुर्वन्तो [illegible]

यत्र कुत्रचित = [illegible] विश्रान्तिम् इति = [illegible] यस्मात च = [illegible]

प्रोल्लसेद हृदये तुतम् = [illegible] ([illegible])

तदेकमेव = [illegible] ([illegible]) यत्र तत = [illegible] वैकल्पिक = [illegible]
ज्ञाव

तत्त्वानि = [illegible] भुवना भोगा = [illegible]

द्विवादि = [illegible] पद्म मातरः = [illegible]

स्वे स्वे = [illegible] विचित्र = [illegible] विन्दन्ति = [illegible] स्वरूप पारमार्थिकम् =

चित्रीकुर्वन्त्येव = [illegible] यान्ति = [illegible]

तां चित्रांसविद = [illegible]
परामं

[illegible]

किया

विस्तरतो = [illegible]

द्रष्टा = [illegible]

स्थाने = [illegible] ज्ञानादि [illegible] सविषः = [illegible]

भावनाध्वनवकाष्ठः = [illegible]

परा [illegible] सन्त्रा [illegible]

पूजास्य — [illegible]

सत्त्वो चित [illegible]

हृदयङ्गमतात्मक = [illegible]

वाक्य पर्यन्त [illegible]

क्रम पूजन मा [illegible]

कुल पवित्रके = [illegible]

पवित्रके = [illegible] सह [illegible]

साधनानि = [illegible]

पूजने प्रोक्तं = اس کو جانا گیا ہے

योगो [illegible] व क्रमश्यः = [illegible]

स्वभक्त्वे = [illegible]

त्रिकशासने = اس شاستر میں کہا

लौकिक = [illegible]

यथोत्क्रमम् = اس ترتیب سے کہا ہے

द्रवाणाम् इव = [illegible]

शरीरे [illegible]

वर्णाना [illegible]

यथाक्रमम् = [illegible]

सृष्टिबीजकम् = [illegible]

शासनानां त्रिक शास्त्र = [illegible]

मोक्षाणां भैरवी स्थितिः = [illegible]

उपासायाः समापा [illegible] = [illegible]

स्वरूपस्य = [illegible] नास्ति = [illegible]

व्रताना वीरवृत्तिता = [illegible]

परमं
बुधा — यत्रान्तर हृदये
यत च सर्वेन्नम — भासते
रासभी वा वडवा —
समकाल — विकास्त्वैव
तथा — उभय
सोऽभुन्न हृदय अन्तरे
सृष्टिलक्षणम्
ध्यायन — स्मरन
यत्र कुत्रापि — विश्रा
प्रोल्लसेद हृदये तु तत्र
तत्कमेव — यत्र तत
तत्त्वानि — भुवन
द्वीपादि — पद्म
स्वे स्वे — विचित्र
चित्रीकुर्वन्ति — यान्ति
तां चित्रांसंविद
परामं

तथैव — एवं महद्दे तु
कुलप्रवीणा
(432) प्रासते —
सर्वेषां चापि योगानां
पूणाय पवित्रकम
पवित्रकं न कुर्वन्ति —
चतुस्त्रिंद्वि सकृत्तु
कुलपैव न जानन्ति —
तेषां वीर्यं न रोहति —

272

(433) स्वभावानुसार स्वरूपं = [illegible] विस्तरतो = [illegible]

273 निर्णीतं = [illegible] यत्र = [illegible] भावनाध्वनवकाशः = [illegible]

प्रसंख्यानमात्रमेव = [illegible]

इदं चमत्कारलक्षणं = [illegible] हृदयङ्गमतात्मक = [illegible]

प्रतिपादितः [illegible] वाक्ये पर्यवसिते [illegible]

यत्रोपाय = [illegible] धौरेय धारा धरीणि = [illegible] धत्ते = [illegible]

सिद्धिप्रेप्सुषु तु = [illegible] योगी [illegible] व तान्ये: = [illegible]

स्वातन्त्र्यमानीयमानास्वपि: [illegible]

इष्टप्रयोग = [illegible] सिद्धिषु = [illegible] लौकिक = [illegible]

[illegible]

प्रसिद्धिनियत्युत्तरत्वेऽपि [illegible]

[illegible]

पारमेश्वर्यव्यवस्थारूपा [illegible]

नियत्यनतिक्रमात् = universal [illegible] यदुक्तम् = [illegible]

द्विवदष्ट्यौ = [illegible]

2 तत्रापि च = [illegible] प्रवृत्तरूपस्य = [illegible] नास्ति = [illegible]

[illegible]

खण्डना = काचित् = [illegible]

परमं
बुधा = [illegible] यत्रान्तर हृदये = [illegible]
यत च सर्वत्र म = [illegible] भासते

रासभी वा वडवा = [illegible] = [illegible]

समकाल = [illegible] विकास्वैव = [illegible]

तथा = [illegible] उभय = [illegible]

कौस्तुभ हृदय अन्तरे = [illegible]

सृष्टिलक्षणम् = [illegible]

ध्यायन = [illegible] स्मरन = [illegible]

यत्र कुत्रचित = [illegible] विश्रा[illegible]

प्रोल्लसेद हृदये तु तत = [illegible]

तदेकमेव = [illegible] यत्र तत्र जाने[illegible]

तत्त्वानि = [illegible] भुवन[illegible]

द्विवादि = [illegible] पद्म[illegible]

स्वे स्वे = [illegible] विचित्र = [illegible]

चित्री कुर्वन्त्येव = [illegible] यान्ति

तां चित्रां संविद = [illegible]
परामं

तथैव = [illegible]
कुलप्रवीणा = [illegible]

(432) प्रासने = [illegible]

सर्वेषां च अपि योगानां = [illegible]
प्रणाय पवित्रकम् = [illegible]

पवित्रके न कुर्वन्ति = [illegible]
= [illegible]

चतुस्त्रिद्वि सकृत्तु = [illegible]

कुलपर्व न जानन्ति = [illegible]
= [illegible]

तेषां वीर्यं न रोहति = [illegible]
= [illegible]

272

(433) प्रथमानुत्तरस्वरूपं = [illegible] विस्तरतो = [illegible]

273 निर्णीते = [illegible] यत्र = [illegible] भावनाद्यनवकाशः = [illegible]

प्रसंख्यानमात्रमेव = [illegible]

दृढचमत्कारलक्षण = [illegible] हृदयङ्गमतात्मक = [illegible]

प्रतिपादितः = [illegible] यावद्ध्येयपर्यन्त = [illegible]

यत्नोपाय = [illegible] धौरेय धारा धराणि = [illegible] धत्ते = [illegible]

सिद्धिप्रेप्सुषु = [illegible] योगी [illegible] वक्तव्यः = [illegible]

स्वातन्त्र्यायमानास्वपि = [illegible]

हठयोग = [illegible] सिद्धिषु = [illegible] लौकिक = [illegible]

प्रसिद्धिनियत्युत्तरत्वेऽपि [illegible]

पारमेश्वर्यावस्थारूपा = [illegible]

नियत्यनतिक्रमात् = Universal [illegible] यदुक्तम् = [illegible]

द्विवक्षौ = [illegible]

२ तत्रापि च = [illegible] प्रवृत्तरूपस्य = [illegible] नास्ति = [illegible]

खण्डना = [illegible] काचित् = [illegible]

273/274

(434)

इष्टसिद्धौ प्रसाय तस्यैव = [illegible] तदाप्ति = [illegible]

तत्फल = اس پھل پر विश्रान्त्यादेरपि = [illegible]

[illegible]

पैरकरमयत्वात = [illegible] किन्तु = [illegible]

जीवन्मुक्तापेक्षया = [illegible] मन्दप्राप्तिपातो = [illegible]

असौ उदयेत = [illegible] अपूर्णप्रायत्वात =

ते योगमार्गे निरूपयितु = اس یوگ مارگ [illegible]

ग्रन्थप्रकोप तरति = [illegible]

[illegible]

ध्यायत = [illegible]

एतदेव = [illegible] हृदयबीजं = [illegible] दीपकाभावात = [illegible]

गुणागमप्रायत्वात = [illegible] सततास्तत्वात च = → [illegible]

मनोरमत = [illegible] तदेव = [illegible] विकसत = → [illegible]

अपरिपूर्णत्व = [illegible] यातं = گیا ہوا तिष्ठीना = [illegible]

(435)

मद सुगन्ध ~~सुरुवाविर~~

संकोच विकास धर्मो पचारित = ( )

पक्ष्मभावे ... कन्दे = ... मुद्यो

हृदीव —

... द्रावित = ... किंच =

... ध्यानमात = ... सामाद्य =

षोडशाकलात्मक = ... सामरुपम्

प्रमित : = ... समन्तादुस्थित =

چاروں طرف

क्षिपेत = ... परिपूर्ण च दुस्थारय ( )

हृत्कर्णिका = ... निवाशिकलया =

स्वस्व द्वादशान्ते = ... गपुष्पाद्युदय स्थानात =

प्राहृतामृतस्पर्श: ... प्रोद्भावानुसार =

चुम्बि कोलक्षण काक चञ्चुपुट मुद्रामुदित: =

पुन: = ... तत पश्चात = ... शिशिरामृत: =

رسا स्वाद = ... विकस्वर हृदि =

(431)

सोम प्रसराद्यादि = [illegible] विमोचित = [illegible]

274 सुधापात्र = [illegible] द्रवित चन्द्रमा = [illegible]

पुनः 2 [illegible] सूर्यकलोदयमयानन्दकसकारमात्र विश्रान्ता: = [illegible] स [illegible]

सो रोमाञ्चार-, तो मोतपतनवाष्प = [illegible]

कम्प[illegible]धा = [illegible]

अगृहीतदेहोऽभ्यासे = [illegible] कुर्यादिति = [illegible]

भद्रघनेश्वरशर्मा = [illegible]

आद्यन्तरहिते = [illegible] सकारमात्रे = [illegible] स [illegible]

षोडशाकारादितिथि सहिते = [illegible] श्री [illegible] सौ [illegible] 16

[illegible] 14

कलाग्रासक्रमेण = [illegible] हृदये ज्ञात्वा निक्षिपेत = [illegible]

ज्वालिकाजालाकर्षणवत् = [illegible]

चलनकम्पन = [illegible] स्पन्दन = [illegible]

क्षमाविद्धमूलाधार = [illegible] त्रिकोणभद्रकन्द = [illegible]

हृन्मुखमुद्रासु = [illegible] युगपदेव = [illegible]

विलम्बितमध्यद्रुततर = [illegible]

तदातिप्रायादि = [illegible] धारा प्राप्ति वशा =

275

(437)

ग्रसितं = [illegible] सूर्यसोमकलाजालग्रासे = [illegible] 16 12

आद्यन्तरहितं कृत्वा = [illegible] → आद्यन्ताभ्याम = آدی انت سے

सततं = [illegible] बीजमातृकापदाय = [illegible]

ओंकारसकाराभ्यां = "स" اور "औ" रहितं = [illegible]

विश्लेषणयुक्तिलब्धं = [illegible] वीर्यपरिचयं = [illegible]

ध्रुवं = [illegible] 2 विसर्गात्मकं [illegible] विकसत् = [illegible]

पञ्चदशानां = [illegible] 15 तिथीनां = [illegible] यन्मध्यं = [illegible]

तिथिरहितमेव → ग्रासकाले = [illegible]

षोडशं = [illegible] 16 ततोऽपि = [illegible] गच्छति = [illegible]

यत् = [illegible] "सप्तदशी कला" [illegible] 17 इत्युत्तमं [illegible]

सोमस्य = [illegible] षोडशात्मकम् = [illegible]

अमृतमंशं = [illegible] हृत्कमले = [illegible]

ध्यायेत् = [illegible] तदेव = [illegible] नित्यमभ्यस्येत् = [illegible]

अस्मत्गुरवः = [illegible] तथाहि = [illegible]

सहोमया = [illegible] भगवत्या = [illegible]

संघट्टात्मकं = [illegible] समापत्तिक्षोभेण = [illegible]

275 तत्त्वनिमेषमात्मना = [illegible] वर्तते = [illegible]
276 [illegible]

(438) इति = اس سے सोमो = سوم مبارک भट्टारक: = ہے

तस्य = اس کا समग्रभावावयविन: = [illegible]

→ परिपूर्णाहमात्मनो ऽ प्रो = [illegible]

नीसुखकादि = [illegible] तदेवमभ्यस्यति = [illegible]

→ स्वस्वरूपावर्तन = [illegible] सृष्टिसंहारावर्ति [illegible]

चक्राक्षमालिकया = [illegible] पुन: = پھر اور

पुनरावर्तयतीति = [illegible] यत् सर्वं = [illegible]

भाव्यते = [illegible] स एव एष = وہی ہے

सततोदितो = [illegible] हृदयजप: = [illegible]

संभावनायां = [illegible] लिङ् = [illegible]

अन्ये तु = اور [illegible] तु = हृत्स्थानात् = [illegible]

द्वादशान्त = [illegible] यश्चार: = [illegible] →

षट्त्रिंशदङ्गुल = [illegible] 36 तत्र = وہاں सूर्यरूपतयोल्लास्य: [illegible]

बहिरर्धतुटिमात्रं = باہر [illegible] विश्रम्य = ٹھہر کر

आविनाड्य मृतरूप्य = [illegible] विसर्गरूप = [illegible]

276 सोमकलोदये = سوم کلا کے اودے میں
(یعنی سومی کلا اندر جانا)
(430)

सपादाङ्गुलद्वितय मात्रायां = یا دو انگل سوا ماترا جس میں ترٹی گزرتی ہو

तुटौ = तुटौ = प्रत्येक = ہر ایک
[illegible]

चन्द्रकलापरिपूरणे = چندر کلا کی پورنتا میں
पञ्चदशस्यां = جب پندرہ ترٹی گزر جائے۔

तुटौ = ترٹی میں
प्रणायां = پورنتا ہونے میں
हृत्पद्मे = دل کے کنول میں
प्रणष्टे भवति = پورنا ہو جاتا ہے۔

अर्धतुटिमात्रे च = آدھی ترٹی ماترا میں
तत्रापि = وہاں

विश्रान्तिः = قرار رہتا ہے۔

एवं षोडशात्तु त्यात्मा = اس طرح 16 ترٹی تک

षट्त्रिंशदङ्गुलचारे भवति = 36 انگل کا گزرنا ہوتا ہے۔

इत्यवस्थायामाद्यन्तरहितम् = اس حالت میں آدی اور انت رہت

पुनरस्तमितत्वात् = پھر اس کے (ڈوبنے) سے
विकस्तु = لیکن

द्वितीयादिषु = دوسری وغیرہ کلا میں
अन्तर्गतं = اندر گیا ہوا!

सोमांशे = سوم کے انش میں
विसर्गरूपे = وسرگ روپ (ترٹی)

हृत्पद्ममध्ये = دل کے کنول کے اندر
विश्लिष्य = جدا کرکے

सप्तदशात्मकं = سترہ کلا
परिशीलनेन = [illegible]

ध्यायेत् = دھیان کرے
कलाग्रासाभ्यासे = کلا گراس کے ابھیاس میں

कथयेत् = کہے

276

(440)

इत्यादि समादिष्टान् = [illegible] सविचैतत् = [illegible]

युक्तमेव = [illegible] मन्तव्यम् = [illegible]

अपि च = [illegible] प्रवृत्त्यानन्तं = [illegible]

व्याख्याने = [illegible] सूत्रत्वादुपपन्नमेव = [illegible]

यत् = [illegible] इत्याम् = [illegible]

प्रवन्तार्थसूचनात्सूत्रम् = इति [illegible]

त्रिपिटक च = [illegible] अनुत्तरसूत्रम् = [illegible]

इति मुख: = [illegible] एवं पूर्वपक्षवादि:

औक्तसूत्रेषु = [illegible]

= [illegible]

= [illegible]

याम याम = [illegible] कामयते = [illegible] कामं = [illegible] ताम इत्याम [illegible]

एकाप्युयात् = [illegible] तस्मात् [illegible] प्रत्यक्षातम = [illegible]

येति = [illegible] सर्वज्ञत्वे = [illegible]

न समश्रय = [illegible]

277

(451) एवमभ्यासात् = [illegible] यद्यत्कामयते = [illegible]

तत्तदचिरादेव = [illegible] तथाविधसर्वमय = [illegible]

हृदयवीर्य = [illegible] समुच्छलिते च शक्तिप्रसरे = [illegible]

अवक्रमभोविरोध = [illegible] कालोद्योग = [illegible]

संरम्भ सोत्साह: = [illegible]

पुन: पुन: = بار بار तावत्स्थितिरूपाभ्यासात् = [illegible]

प्राप्नोति = [illegible] किं बहुना = [illegible] सर्वतत्त्वे = [illegible]

→परभैरवात्मकत्वमनेनैव = [illegible]

देहेन = [illegible] इति सर्वमुक्त्वोपसंह्रियते = [illegible]

पर्यन्ते हि = [illegible] प्रसरस्योपसंहारे = [illegible]

विश्रान्तिरूप = [illegible] अकुलसत्तासादने = [illegible]

भैरवता = [illegible] इत्युक्तम् सकृत् = [illegible]

सोऽयं = [illegible] उपसंहारग्रन्थ: = [illegible] एवं मन्त्रफल = [illegible]

अवाप्ति = [illegible] प्रसिद्धिरेतत् = [illegible] रुद्रयामलम् = [illegible]

एतत् अभ्यासत: [illegible] सिद्धि: = [illegible]

= सर्वज्ञत्वम् [illegible]

अवाप्यते = [illegible]

(५५२) 278

मन्त्राणां = [illegible] शाखान्तरीयाणां = [illegible]

वर्णानां च = [illegible] फलमेवमवाप्यते = [illegible]

नान्यथेति = [illegible] समाप्तौ = [illegible] रुद्रस्य [illegible]

रुद्रायाश्च = [illegible] यद्यामले → [illegible]

संग्रहः = विविभाग प्रश्नोत्तर रूपे = [illegible]

स्वरूपामर्शन [illegible] प्रसरात = [illegible]

प्रारभ्य = [illegible] यावत् = [illegible] बहिर्सन्ता = [illegible]

परिगणनीय सृष्टि संहार प्रतिभासने [illegible]

यन्त्रान्त = [illegible] तदेतत्कलापसंहृतमेव

इति प्रसंख्यानाविगमनम् [illegible]

एतत्स्याससर्वस्वम् [illegible]

इति योगफलाविगमनम् = [illegible]

सततोदितं हि = [illegible] एतत्सर्वस्वं = [illegible]

इति द्राविम् = [illegible]

रूपादि प्रसिद्ध

इत्थं ... प्रपन्नजनता: = ... उद्धरण प्रवृत्त ... प्रवृत्त = ...

श्रीमान् = ... महेश्वर = ... पदाम्बुज = ... चञ्चरीक

वृत्तिं = ... व्याख्या ... त्रिक

विमर्शगर्भां = ... काश्मीरिकाः = ...

अधिगम्य ... जन्म = ... एतावत् = ...

कः ... तुतुषेत = ... प्रसन्न ...

अनयाभितात्र वाक्यः = ... एतत्तु = ... तावत् ...

... धन्ते = ... ततो = اس سے ...

सुधियो ... न पराङ्मुखाः स्युः ...

प्रचारस्य = ... संशय = شک

स्थाने = ... प्रकम्पराहित्ये = ... प्रकरोति ...

हृदय प्रतिभा

रहस्य ... निश्चय कृत्वा

संक्रान्ति = ... प्रकुरुते = ... कृति = ... उद्धरणम्

= ... = ... = ...

= ... = ... = ...

= ... = ... = ...

= ... = ... = ...

(५५५)

[illegible Urdu notes]

यशास्करस्य = [illegible] — नृप = [illegible]

प्रमायाग्रणी = [illegible] — रत्यं = [illegible]

= [illegible] यः = 3. = [illegible]

तस्य स्वादु भवः

[illegible] प्रसिद्धि पदवी — [illegible]

गुणैः = [illegible] श्री शौरिः = [illegible]

= [illegible] = [illegible]

= [illegible] र = [illegible]

[illegible] = [illegible] = [illegible]

ननिर्मू = [illegible] वात्सल्यस्य

Humourous

स = [illegible] = [illegible]

= [illegible] = [illegible]

= [illegible] = [illegible]

= [illegible]

(داستانی کا) اسی کا ۹۵

شیوشنکر تھی ۔ جاتیشا ۔ گنگا دھر تھی گھر سان [illegible]

ستیان

گنگا کی سنسرتی اور گئی

زبانی میں ماں ہوتی تھی

یہ راز جانتی تھی

تھا دیا شوہر

اس پر [illegible] تھا

سکندر ماہ وچھان
دور ہو گیا

اسکا شوہر

اس والشو کا
ستیان کا — کرن نام تھا

اس کے بیٹوں پر آ کتھی مجبور کر [illegible] کو جوانی میں

دو بیٹا = ۲۱

بچپن میں ہی

درگھی پر

آنتر کرم

بہو مقطوع

زبانی سے خواہشمند تھی

جو مسئلہ کو حل سے نکالتے
والا ہو

اس شوہر
تھا کی نقل دوراتی
زبانی سے خواہشمند تھی

لدو شیوا سنکر پیدا ہوئے تھا

اس مرحوم شوہر

شنکر لدو شنکر نکار

۳ = ۲۱

ملنی کو گنگ نام تھا

دو چار کرنے خواہشمند تھا

لدو سنسار [illegible]

[illegible]

شوہر

پہ واکر [illegible] جاننے والا تھا

شوہر شنکر [illegible] کی شوق تھا

رام دیو نام تھا

ایک [illegible] کا [illegible]

شوہر کا سب [illegible]
ہوسکتا تھا

جو چھوڑ دیا

اسی پر [illegible]

[illegible]

[illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] ۸ [illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] - [illegible] -

[illegible] - [illegible] - [illegible] -

[illegible] 4 = [illegible]

[illegible] - [illegible] - [illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] - [illegible] - [illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] = [illegible] =

[illegible] -

=

[illegible] = [illegible] =

[illegible] = [illegible]

[illegible]

[illegible] olde [illegible]

[illegible] = [illegible] =

[illegible] [illegible] [illegible] = [illegible]

Coo[illegible]

[illegible] = [illegible] =

[illegible] = [illegible]

[illegible]

Cutul [illegible] = [illegible] =

See [illegible] on Page

See Page 178 & 179

